तीसरी आंख

☐ संस्करण 1989

☐ प्रकाशक अभिनव प्रकाशन
ब्रह्मपुरी रोड, पो बा न 118
अजमेर-305001

☐ मुद्रक वैदिक यन्त्रालय, अजमेर

☐ मूल्य पिचहत्तर रुपये

TISARI AUNKH (Science fiction) by Harish Goyal Rs 75

वैज्ञानिक दृष्टि मनुष्य की तीसरी आंख है। जब यह खुलती है तो मनुष्य को एक ऐसे संसार में ले जाती है जो अभूतपूर्व, अनूठा और अलौकिक होते हुए भी सत्य है। कैसा है यह जीवन, जगत और अनन्त ब्रह्माण्ड? और इस अनन्त ब्रह्माण्ड के बीच संघर्षरत मानव!

इस संसार को जानने के लिए पढ़िये—'तीसरी आंख'।

तीसरी आंख

एड्स : एक समर-भूमि

'तरुण' ! प्रयोगशाला कक्ष के बाहर खड़ी हुई पूनम आवाज देती है।

कोई प्रत्युत्तर नहीं।

'तरुण ।'

'ओह ' पूनम तुम !'

'किस खयाल में डूबे हुए हो ! तुम्हें कुछ पता है, मैं कितनी देर से यहाँ खड़ी हूँ ?'

'ऊ हूँ ।' तरुण ने सिर हिलाया।

'पूरे पाँच मिनट हो चुके हैं।'

'अच्छा।'

'मैंने तुम्हें कम से कम तीन-चार आवाज दी।'

सॉरी, पूनम !

'कितना कन्सन्ट्रेशन है तुम्हारा ? एक योगी जैसा !'

'नो, इट इज क्वाइट नॉर्मल।'

नॉर्मल ? केवल तुम्हारी दृष्टि में अन्यथा तुम्हारा यह कन्सन्ट्रेशन पूर्णतया एबनॉर्मल है ।'

'मैं इसे एब्नार्मलिटी के रूप में नहीं बल्कि 'डीप' कन्सन्ट्रेशन के रूप में लेता हूँ।'

'मैंने किसी मेडिकल छात्र को माइक्रोस्कोप में इतना सूक्ष्म अवलोकन करते नहीं देखा ।'

'यह सब अध्ययन की गहराई पर निर्भर करता है जितना गहरा अध्ययन होगा उतना ही सूक्ष्म अवलोकन भी होगा।'

'तरुण ! अवलोकन करते हुए तुम 'सब्जेक्ट' से बहुत दूर खिसक जाते हो।'

'हाँ, कल्पना का होना अत्यन्त आवश्यक है पूनम। इसके बिना रिसर्च में स्फूर्ति नहीं आती।'

'तुम इतना अधिक माइक्रोस्कोप में दृष्टि गढ़ाये रहते हो क्या तुम्हारी आँखें नहीं थकती ?'

'नहीं, आँखो को और अधिक रक्त से ऊर्जा मिलने लगती है '
'हा हा हा ।'
'तरुण तुमने कहा बाहर घूमने के लिये कहा था '
'ओह ! हाँ, मैं यह बिल्कुल भूल गया था '
'यह तो तुम्हारी पुरानी आदत है । जनाब, छ बज चुके हैं ।
"आओ चलें ।"
तरुण और पूनम दोनो श्रीनगर मेडिकल कॉलिज की प्रयोगशाला से निकल कर झेलम के किनारे पहुँचते हैं । रक्तरंजित सूरज का गोला डूबता हुआ लहरो से अठखेलियाँ कर रहा था । दोनो "शिकारा" मे सैर करते हुए लहरो की तरह एक दूसरे मे डूबने और उतरने लगते हैं ।
'तरुण ! इस तरह क्या देख रहे हो ? एक टक ।'
'पूनम, देखो किस प्रकार यह सूरज लहरो से अठखेलियाँ कर रहा है ।"
'हाँ तरुण, जसे इसने अपना सारा मन लहरो मे उडेल दिया हो ।'
'हम भी अपने मन को क्यो नही सूरज की तरह खुला छोड दें ।'
'हा, हमारे मन लहरो की तरह गतिमान हो जायें इनकी तरह थिरकते रहें हिचकोले लेते रहें अबाध गति से ।'
पूनम, आकाश मे देखो । कैसे श्वेत बगुलो ने परबाजी करते हुए अपने मन को खुला छोड दिया है ।'
'ओह ! यहा कितना खुलापन है ।' कितना सौन्दर्य है । चारो तरफ बिखरा हुआ ।'
'और उस सुदरता मे चार चाँद लगा दिये है तुमने । नयन हटने का नाम नही लेते । लगता है प्रेम का सोता मन मे कल-कल करता हुआ नेत्रो से झर-झर बह रहा हो ।
'तरुण । क्या मैं इतनी सुदर हूँ ।'
'हाँ पूनम ! मैं पहली बार समझ पाया हूँ तुम्हारी नीली आँखो का झील-सी गहराई को । पूनम, जी नही चाहता कि तुम्हारे प्यार बरसाते नयनो से अपनी नजर हटाऊँ पूनम, तुम्हारे इन नयनो की भोली भाषा से ऐसा लगता है, जैसे प्राणो के तार मे झंकार पैदा हो रही है ।'
'तरुण !' पूनम इतनी अधिक भावविह्वल हो उठी कि उसने तरुण को बाहो मे समेट लिया ।

'पूनम, कश्मीर की वादियो मे घुली तुम्हारी देह की चंदनी खुशबू से आज पोर-पोर गंध से भर गया। पूनम, आज मैं पहली बार महसूसता हूँ तुम्हारी जुल्फ मे कजरारे मेघ तुम्हारे होठों पर शबनमी गुलाब ।'

'तरुण जी चाहता है तुम बाहो की पांख और कसे लें। शीशा सा पिघला दो मुझे। हम हम न रहे।'

'हां पूनम! हम इस क्षण को बांध ले। कभी न खुले इस क्षण की गांठ। फिर विस्तीर्ण होता चला जाय यह क्षण अंतहीन आकाश-सा चतुर्विम के समय सा ।'

'हां तरुण, यह क्षण थम जाये और हम इस क्षण मे विलीन हो जायें।'

वे एक दूसरे मे डूबते चले जाते हैं सागर की अतल गहराई जैसे।

□□

लेकिन क्षण थमता नही है। यह नदी के प्रवाह की तरह है जो निरन्तर गतिशील रहता है। तरुण तथा पूनम एक दूसरे के इतने निकट आ चुके थे कि उनके प्रेम की परिणति विवाह मे हो गई। वे दोनो एम एस कर चुके थे। उन्हे डॉक्टरी करते पांच वर्ष बीत चुके थे।

लेकिन अब एक खास अनुसधान पर तरुण का ध्यान केंद्रित हो गया। कैन्सर अभी भी एक अनबुझा प्रश्न बना हुआ है? क्या कभी हम इसका हल ढूढ पायेंगे? क्या कभी हम इसे समूल नष्ट कर पायेंगे? कुछ मामलो मे प्राथमिक स्तर पर इसका इलाज सभव है, लेकिन इसकी भयावहना मे कोई कमी नही आई है। इस भयावहता मे योगदान दिया है चन्द प्रशासको ने। तरुण सोचता है, एक वैज्ञानिक अपना सर्वस्व समर्पित कर देता है, इस अनुसधान के लिये। ऐसे अनुसधान मे चिर साधना की आवश्यकता होती है। ये वैज्ञानिक सच्ची साधना करते है। इनकी साधना किसी योगी की साधना से कम नही होती। प्रयोगशाला इनका पावन पूजा स्थल है। मन्दिर है। अनुसधान मे प्रवृत्त रहना ही इनकी सच्ची पूजा है, साधना है और साध्य इनकी देवी है। मानवता की सेवा के लिये ये पूर्ण समर्पित हैं और एक तरफ प्रशासक या एडमिनिस्ट्रेटर व चिकित्सक हैं जो मानवता को डस रहे हैं, उसे

समूचा निगल जाना चाहते हैं। कितना फर्क है विज्ञानियों में और चिकित्सकों में? क्यों साधारण और गरीब तथा भोले-भाले मानस के लोगों को इलाज की सुविधा नहीं मिलती है?

साँझ का समय। लॉन में एक बेंत चेयर में धँसा हुआ यह सब कुछ सोचता है तरुण। पूनम अस्पताल से आने के बाद नहीं की निराशाजनक स्थिति बतिया रही है।

आज ही किसी डॉक्टर ने गलत रिपोर्ट दी—मरीज के फ्रैक्चर दायीं टाग में था लेकिन प्लास्टर बायीं टाग में चढ़ा दिया गया। 'ब्लड ट्रांसफ्यूजन' के लिये 'ए' ग्रुप का रक्त देना था लेकिन नर्स ने 'बी' ग्रुप का रक्त दे दिया। रेडियो थ्येरेपी के दौरान कैंसरयुक्त कोशिकाओं को जलाना था, लेकिन सामान्य कोशिकाएँ चपेट में आ गईं। कल एक मरीज को अनेस्थेसिया अधिक दे दिया गया। इंजेक्शन गलत लगाना आये दिन का काम हो गया। ठीक से स्टेरलाइजेशन नहीं किया जाता, मरीज अपने उपचार से संतुष्ट नहीं होते। दवाइयाँ प्रभावशाली नहीं होतीं। ओह! यह कितना बड़ा अपराध है कि जीवनरक्षक दवाओं तक में मिलावट होती है। डॉक्टर को कुछ नहीं चाहिये सिर्फ पैसा। मरीज मरता है तो मरता रहे उन्हें क्या चिन्ता डॉक्टर जो किसी समय मानवता के प्रहरी थे, आज अभिशाप बन गये।

दुनिया में कुछ भी होता रहे, उसे तो अपने अनुसंधान में प्रवृत्त रहना है। यह सोचते हुए तरुण पुनः प्रयोगशाला में आ जाता है। लैब में विभिन्न स्लाइड्स, रासायनिक पदार्थ, उपकरण तथा कम्प्यूटर रखे हुए हैं। तरुण माइक्रोस्कोप में ओंको जीन्स पर अपनी दृष्टि सेट कर देता है। इस माइक्रोस्कोप का सम्बन्ध एक कम्प्यूटर से होता है जो स्क्रीन पर 'ओंको जीन्स' का 'त्रिविम' चित्र प्रस्तुत करता है। 'ओंको जीन्स' कैन्सर उत्पन्न करने वाले जीन्स हैं। ये ओन्को जीन्स सामान्य कोशिकाओं में निष्क्रिय रहते हैं। ओंको-जीन्स इतने अधिक संवेदनशील होते हैं कि कॉस्मिक विकिरण से लेकर किसी भी विकिरण से, भोजन, धूम्रपान यहाँ तक कि स्वतः उत्परिवर्तन से भी सक्रिय हो उठते हैं।

तरुण यह पता लगाने का प्रयत्न कर रहा है कि ये निष्क्रिय ओन्को जीन्स सक्रिय कैसे हो उठते हैं। यदि यह गुत्थी सुलझ जाती है तो कैंसर का इलाज संभव हो पायेगा। वह सोचता है, क्या उसका यह स्वप्न पूरा होगा? आज कैंसर से पीड़ित होना कितनी सामान्य बात

हो गई है। हर दस घरो मे एक घर ऐसा होगा जिसमे कोई न कोई व्यक्ति कैंसर के घातक रोग से ग्रसित होगा। यह विस्फोटक स्थिति क्यो पैदा हुई ? क्या परमाणु रिएक्टर उन अनेक कारणो मे मे एक नही है जो जाने-अनजाने अपनी महत्वपूर्ण दुस्साहसिक भूमिका निभा रहा है ? कौन भूल सकता है चरनोबिल विस्फोट की त्रासदी को सम्पूण यूरोप, मध्य व दक्षिण एशियाई देश इसकी चपेट मे आ गये। रेडियोधर्मी कणो की उच्च मात्रा भारत मे भी आकी गई। उसे याद आता है कि किस तरह से स्वीडन मे आयोडीन की गोलियो का स्टॉक बाजार से तुरन्त समाप्त हो गया और लोग आयोडीन की गोलियो के लिये तरसते रहे। केवल कीव प्रदेश मे ही नही बल्कि यूरोप तथा एशिया के विभिन्न क्षेत्रो मे भी रेडियोधर्मिता अपना ताडव नृत्य करने लगी थी। इसका पता तुरन्त नही बल्कि कुछ वर्षों पश्चात् चला। किस प्रकार कैंसर से ग्रसित लोगो की सख्या बढने लगी थी। बावजूद इसके इस क्षेत्र मे गम्भीर प्रयास नही किये गये। परमाणु सयत्रो मे विस्फोटो की सख्या बढने लगी। रेडियोधर्मी कणो का गुबार मशरूम बादलो की शक्ल लेता हुआ सारे ससार मे फल गया। राष्ट्र कितने अधिक सवेदन-हीन हो चुके थे। अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठियो से जहाँ परस्पर सहयोग तथा सहमति का वातावरण बनना चाहिये था, वहाँ राष्ट्रो के बीच कटुता बढ़ गई, विश्व तृतीय विश्वयुद्ध के ज्वालामुखीय कगार पर खडा था किसी भी क्षण यह लावा फूट सकता था, लेकिन विपुल जन-समूह का इससे कोई लेना-देना नही था। कितना सवेदनहीन हो चुका था मानव । रेडियोधर्मिता की मार को मानव जाने-अनजाने सहन कर रहा था। मानव मे यह रेडियोधर्मिता कैंसर के रूप मे फूट रही थी। भले ही राष्ट्र अमानवीय कृत्य मे शरीक हो जाये लेकिन विज्ञानी अपना धम समझते हैं। वे मानवता को कसर के क्रूर पजो से छुटकारा दिलाने का प्रयत्न करेंगे। तरुण इस स्वप्न को पूरा होते हुए अवश्य देखेगा उसका मन कहता है।

वह पुन अपनी दृष्टि 'ओन्को जीन्स' पर जमा देता है। माइक्रो-स्कोप मे उसे कई ओन्को जीन्स सक्रिय दिखाई पडते है। बेचारी सामान्य कोशिका की क्या मजाल जो ओन्को जीन्स के आक्रमण को झेल सके। लो, देखते ही देखते वह सामान्य कोशिका भी कैंसर मे ग्रस्त हो गई। अरे ! यह कैसे हुआ ? ओन्को जीन्स कसे आक्रमण पर अचानक उतारु

हो गये ? विकिरणो ने ग्रोको जीन्स मे ऐसा क्या किया कि ये सक्रिय हो गये ? तरुण कुछ समझ नही पाया। उसे कोशिका की शक्ल बदलते दिखाई पड रही थी। कितनी विकृत हो चुकी थी यह कोशिका। सामान्य कोशिका दम तोड चुकी थी, कैन्सर कोशिका अपने पूर्ण शबाब पर थी।

□ □

पूनम ने प्रयोगशाला मे प्रवेश किया।

'तरुण।'

' ।' तरुण के निरुत्तर रहने पर वह उसे पुन पुकारती है। तरुण ग्रोन्को जीन्स पर दृष्टि गडाये हुए इतना तल्लीन था कि उसने कोई प्रतिक्रिया अभिव्यक्त नही की। पूनम ने उसके गले मे बाहें डाल दी लेकिन फिर भी वह माइक्रोस्कोप के आई पीस से अपनी दृष्टि नही हटाता।

'तरुण! कब तक तुम यो ही माइक्रोस्कोप मे दृष्टि गडाये रहोगे। चलो तरुण। इस प्रयोगशाला से बाहर चलें। क्या तुम भूल गये कि आज हमे पिक्चर जाना है। पिक्चर का समय हो गया, उठो अब।'

'सॉरी पूनम। आज हम नही चल सकेंगे।"

"तरुण, मैं देख रही हू कि इन दिनो तुम बहुत अधिक व्यस्त रहने लगे हो। मेरे लिये बिल्कुल समय नही निकाल पाते।"

'ऐसी बात नही है, लेकिन आज पिक्चर जाना बिल्कुल सभव नहीं है।"

'जाना कैसे सभव नही है, यह कार्य तो कल भी किया जा सकता है।'

'एक मेडिकल ग्रेजुएट से इस बात की अपेक्षा नही की जा सकती।'

'तुम कुछ भी समझो तुम्हे पिक्चर चलना ही होगा।'

'मुझे विवश नही करो पूनम, प्लीज ।'

'आखिर क्यो ?' पूनम झल्लायी थी।

'देखो! मुझे पहली बार दिखाई पडे हैं 'प्रोटोग्रोन्को जीन्स'।

'प्रोटोग्रोन्को जीन्स ?'

'हा प्रोटोग्रोन्को जीन्स यह वह स्विच है जो सामान्य कोशिका को कैंसर कोशिका मे बदल देता है। लो, मैं तुम्हें दिखाता हूँ प्रोटो-ग्रोन्को जीन्स।'

तरुण ने उपकरण का स्विच ऑन किया। स्क्रीन पर प्रोटोग्रोन्को जीन्स का कम्प्यूटर मॉडल प्रकट हुआ।

'ठीक है, तुम अपने काय मे लगे रहो मैं जाती हूँ।' इससे पहले कि तरुण कुछ कहता, पूनम रोष मे तमतमाते हुए बाहर चली गई।

पूनम दूसरे दिन भी मन मसोस कर रह गई। तीसरे दिन उसने जिद पर अड़े रहने का फैसला किया।

'तरुण! पिक्चर का समय हो गया है।

'हा,।'

'क्या आज भी तुम्हारा इरादा इन्कार करने का है?

'हा, मैं एक कदम और आगे बढा हूँ।'

'मैंने टिकट बुक करवा लिये है।'

'लेकिन मैं किसी गंभीर बात को समझ रहा हूँ।'

'तरुण प्लीज' !'

'पूनम, आज मे ग्रोन्को जीन्स से कोशिका मे हो रहे जैव-रासायनिक परिवतन को समझने का प्रयत्न कर रहा हूँ आज बडी कामयाबी का दिन है आज मुझे इन परिवर्तनो की कुछ झलक मिली है।'

'उफ तरुण! यह तुम्हारी कोई रिसर्च हुई या ।'

'मुझे समझने का प्रयत्न करो पूनम'

'मैं जानती थी, तुम हर्गिज नही चलोगे ठीक है मैं जाती हूँ।'

प्रयोगशाला से बाहर निकल कर पूनम सिसकियाँ भरने लगी। कुछ समय पश्चात् तरुण उसके निकट आया।

'लो मैं आ गया हूँ। अब पिक्चर चलते है।'

'तुम्हें फुसत कैसे मिल गई?'—पूनम ने क्रोध मे तमतमाते हुए कहा।

'मेरा मन उद्विग्न हो चुका था।'

'तुम्हारा भी कभी मन उद्विग्न होता है निष्ठुर कही के।'

तुम्हारे बाहर निकलने के बाद मैं कन्सन्ट्रेट नही कर पा रहा था।'

'आज यह बेरहम दिल कैसे पसीज गया?'

'समय कम है, तुरन्त तैयार हो जाओ।'

'लेकिन शो तो प्रारम्भ हो चुका है।
अभी तो ट्रेलर दिखाया जा रहा होगा।'
'नही तरुण, अब मैं नही जाऊँगी।'
'पूनम प्लीज।'
'नही अब मेरा मूड बिगड चुका है।'
'वह तो ठीक हो जायेगा ।'
'नही तरुण, मुझे अकेला छोड दो तरुण प्लीज।'
तरुण असहाय प्रयोगशाला मे लौट आया।



इस छोटी सी घटना ने पूनम के हृदय को बहुत ठेस पहुँचाई। वह उखडी-उखडी सी रहने लगी थी। इस बीच वह मिस विजया के सम्पर्क मे आयी। शनै शनै उसका यह सम्पर्क प्रगाढ मित्रता मे बदल गया। विजया की जिंदगी उसे चमकती-दमकती दिखाई पडती। क्लबो मे उसका आना-जाना था। कई जेन्ट्स उसके मित्र बन चुके थे जो भौरे की तरह उसके ईद-गिद मडराते थे। क्लब की मस्ती मे झूमती वह पूनम से कहा करती थी यार, जिन्दगी हो तो ऐसी ।' पूनम भी उसके साथ-साथ क्लब जाने लगी थी।

पूनम क्लब के लिए इस्त्री की गयी सिल्क की साडी या कुर्ते की सल्वटे, चिकनी मुस्कराहटें, रुज की पत और कट ऑउट अभिव्यक्तियो, हिप्पी कट वहशी खिलखिलाहटें तथा नग्न बाहो पर बिखर आये बालो की त्रिस्ट नाइट गध की ओर सम्मोहित होती चली गई। क्लब की सस्कृति को अपनाने की एक तीव्र लालसा उसमे उत्पन्न हो उठी। वह कभी विजया से कहा करती थी । 'वाट ए शिमरिंग लाइफ।'

अब तो पूनम नित्य क्लब जाया करती। वहा शराब पीना, नृत्य करना, चुम्बन लेना अत्यन्त सामान्य बात थी। उसका सम्पर्क विदेशियों से भी हो गया था। पूनम घर के लिये बहुत कम समय देने लगी थी। उसका अधिकाश समय क्लब मे या फिर अन्य मित्रो के बीच गुजरता। अब वह रूढिवादी गृहपत्नी नही रही थी। उसने घर का सारा काय नौकर-चाकरों पर छोड दिया था। एक 'कुक' तरुण के लिये खाना बनाता था। पूनम भोजन क्लब मे ही किया करती थी। उसका केवल लिबास ही अल्टामॉडर्न नहीं हो गया था बल्कि बोलने का लहजा

भी विदेशी हो आया था। न केवल अंग्रेजी बल्कि फ्रेंच भी वह धारा-प्रवाह बोलने लगी थी। घर रहती तो फैशन मे लिप्त रहती। नित्य हेयर स्टाइल बदराती। पॉप म्गीत भी अब उसके मन मे थिरकने लगा था।

अब उसे विजया की जरूरत महसूस नही होती, वह अकेली ही क्लब जाने लगी थी।

सांझ का समय। आज पूनम के मन मे खास उत्साह था। वह उल्लसित मन से ड्रेसिंग टेबुल के सामने खडी हो गई। आज उसके मन मे सवरने की विशेष चाह थी। उसने एक दृष्टि मेक-अप आइटम्स पर डाली। ड्रेसिंग सेल्फ पर विभिन्न क्लींसिग क्रीम, मास्क्स, वाशिंग लोशन, स्किन टॉनिक, मेसेज पेस्ट क्रीम, ऑइल तथा बॉडी लोशन रखे हुए थे। आज उसके पास पर्याप्त समय था। अत वह प्रत्येक वस्तु को गौर से देख रही थी। कभी वह किसी आइटम को उठाती, कभी रखती। कभी-कभी तो चयन करना ही कठिन हो जाता। लेडीज मेकअप कितना दत्त चित्त होकर करती है लगता है जैसे उनकी सुपुप्त भावनाएँ इसमे मुखरित होती हैं। पूनम चेहरे से झुरिया हटाने मे रत थी। वह 'मैसाज' के विभिन्न तरीके अपना रही थी, कभी स्ट्रोकिंग, वाइब्रेटिंग, प्रेसिंग तथा नीडिंग (मदन) तो कभी चिहुट या (पिंचिग), निचोड या स्क्वीजिंग, थपक या परक्यूशन तो कभी रेपिंग, पेटिंग और क्लेपिंग। चेहरे पर उभरी हल्की झुरिया तथा रेखाएँ हटाने मे उसने घण्टा भर लगा दिया। और अब वह बॉडी-लोशन का उपयोग करने लगी थी। फिर उसका ध्यान आंखो की ओर गया। उसको समन्दर-सी नीली आखे वैसे ही आकर्षक तथा मन भावन प्रतीत होती थी और फिर मेक-अप ? उपयुक्त मेसाज के पश्चात वह 'आई-रिसाइप्स' का उपयोग करने लगी। इसमे उसकी आँखें दमकने लगी थी।

हेयर ड्रेसिंग के लिये उसके पास क्या प्रसाधन नही था। विभिन्न शेम्पू, डाइज, हेयर कडीशनर्स, सेटिंग लोशन, ब्रिलियेन्टाइन, हेयर परफ्यूम आदि सभी कुछ तो था। वह हेना तथा केमिकल डाइज का उपयोग करते हुए बालो को चमकीला प्रज्वलित लाल बना रही थी। अब उसका अग-अग महकने लगा था। उसने हर कोण से चेहरे तथा केशो को निहारा। एक हल्की स्मित उसके होठो पर खिल आई थी। अब वह किसी 'ब्यूटी क्वीन' से कम दिखाई नही पडेगी। गुलाब की

पखुडियो की तरह यह खिलेगी, अपनी खुशबू बिखेरेगी । सारा जहाँ उसक लिये होगा । हर कोई उससे परिचय प्राप्त करने के लिये बेताब होगा ।

उसका मन हिलोरे लेने लगा था । बार-बार उसके समक्ष अनिरुद्ध का चेहरा तिर आता । अनिरुद्ध होटल 'स्वीटड्रीम' मे एक पॉप सिगर था । वह पॉप-कल्चर का बेताज बादशाह था । चद दिनो की मुलाकातें पूनम और अनिरुद्ध को एक दूसरे के अत्यन्त निकट ले आई थी । और आज पहला मौका था जब वह उसके साथ पॉप नृत्य का प्रदर्शन करने जा रही थी । उसे याद आया कि किस प्रकार वह उसकी ओर पहली मुलाकात मे ही आकृष्ट हो गई थी । दो-तीन मुलाकातें और हुई होगी कि अनिरुद्ध भी उसे चाहने लगा था । वह उससे पॉप-डास सीखने लगी । अनिरुद्ध ने उसे पॉप-नृत्य सिखाने मे कोई कसर नही छोडी । जिस तीव्र गति से उसने नृत्य सीखा, इससे उसके लगन का अदाज लगाया जा सकता था ।

लैम्प पोस्ट ट्रैफिक लाइट की लाल पीली हरी रोशनियों, फोर्ड, हडसन, ब्यूक, मर्सेडीज, मारुति, डिसोटी, डोज, शिवर्लेट, प्लिमाउट, नोवा, क्रिसलर आदि कम्प्यूटराइज्ड कारें, बसो, टैक्सियों, मोपेड, लारियो की रोशनियों, चमक-दमक तथा हॉर्नों की तीखी आवाजों के मध्य होती हुई वह होटल 'स्वीट ड्रीम' पहुँची । अनिरुद्ध वहाँ पहले से ही उपस्थित था । पूनम ने उसका तीखा चुम्बन लिया । अनिरुद्ध ने रिस्पास दिया । हॉल मे पॉप सगीत की धुनें गूज रही थी । पूनम तथा अनिरुद्ध नृत्य का प्रदर्शन करने लगे थे । लगता था जैसे रग-बिरगी रोशनियाँ नृत्य कर रही हो । पूनम का अग-अग थिरक रहा था । वह आनन्दित, हर्षित, उल्लसित होते हुए, उल्लास, उमग, धुन, अनुराग तथा मनोभाव के साथ नृत्य कर रही थी । वह सब कुछ भूल चुकी थी अपनी अप्रतिम सुन्दरता के विजयोल्लास मे तथा शानदार सुप्रत्याशी सफलता के प्रभामडल मे । यह जो विजयोल्लास था या सफलता का प्रभामडल, यह सब लोगो के उसके प्रति ध्यानाकर्षण से बनाया । सब लोगो की उसके लिये हो रही प्रशसा, उसकी जागृत कामनाओ की पूर्ति से बना था । और वह उस प्रभामडल की चौंधियाहट मे पिघल रही थी, समाहित हो रही थी ।

नृत्य पूरे शबाब पर था। सभी लोग नृत्य मे शामिल हो चुके थे। थिरकते गोरे चिट्टे अगो पर चुम्बनो की बौछार हो रही थी। थिरकते अग परस्पर गुथते हुए मन को मादक बना रहे थे। तेज रगीन रोशनियां तथा तीक्ष्ण सगीत । ऐसा लगता था जैसे प्लेंचेट हो रहा हो हरी नीली तश्तरियो पर मृत आत्माएँ बुलाई जा रही हो दी चक्र, बीज चक्र, भैरवी चक्र बैठाये जा रहे हो प्लेयर पर भारी तथा तीक्ष्ण ध्वनियो का प्रसारण। ड्रमो पर पेड की बौछार कुछ भारतीय तथा कुछ विदेशी होठ पर होठ रखे जा रहे थे दम खीचने वाला तेज चुम्बन, हब्शियो की मादक आलापें प्रतिध्वनित होता हॉल उफनती बीयर तथा रम की गध ओल्ड मौंक से लेकर आधुनिकतम शराब से उन्हे सतुष्टि नही वे मदहोश बने रहना चाहते थे, मदहोश की चरम सीमा तक पहुँचना चाहते थे। वे तनाव से पूर्ण छुटकारा चाहते थे उनमे अपने-आपको खुला छोड देने की छटपटाहट थी बीयर से वे सतुष्ट नही थे, अब उन्हे चाहिये नशीले पदाथ हेरोइन से लेकर 'लवड्रग' तक। हाँ, लवड्रग बाजार मे एक्स्टेसी के नाम से मशहूर है लेकिन प्रयोग-शाला में 3-4 मिथाइलीन डाई आक्सी मिथेम्फिटेमाइन के नाम से जानी जाती है। साइकियेट्रिस्ट की दुनिया मे एम डी एम एस एक थिराप्युटिक मार्वेल एक आश्चय है

इधर लोग एक्स्टेसी यानी परमानन्द के लिये तरस रहे थे और उधर कुछ विज्ञानी थे जो मानव को कैन्सर जैसी यातनाओ से मुक्ति दिलाने के लिये कठोर साधना कर रहे थे। इधर पेग पर पेग उडेले जा रहे थे। उधर माइक्रोस्कोप मे विज्ञानियो की दृष्टि गडी हुई थी। एक तरफ चीखता पॉप सगीत तथा प्रतिध्वनित होता हॉल था तो दूसरी तरफ मरघट की सी शान्ति तथा यदा कदा उठती बीप-बीप की ध्वनि थी। जहाँ एक ओर पूनम चीखते पॉप सगीत के बीच, 'लव ड्रग' से मदहोश, अनिरुद्ध के साथ थिरकते हुए अग-प्रदशन कर रही थी, वहाँ दूसरी ओर तरुण प्रयोगशाला में 'ओन्को जीन्स' का ताण्डव नृत्य देख, दुखी हो रहा था। किस प्रकार ओन्को जीन्स सामान्य कोशिकाओ को कैंसर कोशिकाओ मे परिवर्तित कर रहे थे। बेचारे कैंसर की मार सहते लोग। क्लब मे रूप, रग और गध की वर्षा हो रही थी तो प्रयोगशाला मे ओन्को जीन्स नई तथा घातक जैव-रासायनिक क्रिया में सलग्न थे। इससे कोशिका मे कैंसर जन्य जैव रसायनो की वर्षा हो रही थी।

उधर चेहरे निखर-निखर जा रहे थे तो इधर प्रयोगशाला में कोशिकाएं मुरझा रही थी। जहाँ एक ओर तीक्ष्ण चुम्बन लिये जा रहे थे, वहां ओंको जीन्स का वरण कर सामान्य कोशिकाएँ मौत का चुम्बन ले रही थी। स्वीट ड्रीम क्लब मे लोग 'लव-ड्रग' से मदहोश थिरकते हुए आनन्दातिरेक हो रहे थे जबकि प्रयोगशाला मे तरुण ओन्को जीन्स की खतरनाक पहेलियो मे उलझा हुआ था।

नृत्य समाप्ति पर अनिरुद्ध तथा पूनम एक बुक किये हुए कमरे मे पहुँचे तथा 'लव ड्रग' के नशे मे सुध-बुध खो बैठे। रात काफी ढल चुकी थी होश आने पर पूनम ने अपने अस्त व्यस्त कपडे ठीक किये तथा घर लौटी। इतनी रात गये भी तरुण अपनी प्रयोगशाला मे कार्यरत था। वह सीधे प्रयोगशाला मे प्रविष्ट हुई।

'तरुण, इतनी रात ढल चुकी है तुम्हे कार्य करते हुए क्या इसे बद नही करोगे।' तरुण की गभीर मुद्रा देख न जाने कहा से पूनम के हृदय का एक कोना पिचक गया।

तरुण के गले मे उसने अपनी अमरबेल-सी भुजाएँ डाल दी तथा उसके कपोलो तथा होठो का चुम्बन लिया, लेकिन उसके मुख से आ रही तीक्ष्ण गध ने चुम्बनो की गर्माहट को तुरन्त ठडा कर दिया। तरुण के चेहरे पर एक फीकी मुस्कान झलक आई।



एक दिन जबकि तरुण का कैन्सर कोशिकाओ पर अनुसधान जारी था, वह खुशी से चिल्ला उठा—यू रे का! चिर प्रतिक्षित 'प्रोटो ओंको जीन्स' का रहस्य खुल चुका था। अब 'प्रोटो ओन्को जीन्स' के कारण कोशिका मे हुए जैव-रासायनिक परिवर्तनो को समझा जा सकता था। इससे कैन्सर कोशिकाओ को नियत्रित किया जा सकता था। ओको जीन्स की गतिविधियों को रोका जा सकता था। अब सवाल यही था, कौनसी प्रक्रिया अपनाई जाये जिससे कोशिकाओं की उत्पत्ति न हो। तरुण उत्कठा से पूनम का इतजार करने लगा। रात्रि के ठीक बारह बजे वह घर लौटी। आज पहला अवसर था जब पूनम ने तरुण को प्रयोगशाला से बाहर पाया। पूनम के आते ही तरुण के चेहरे पर मुस्कान खिल आयी। पूनम ने उसके गले में बाहें डाल दी तथा चुम्बन

लिया । आज तरुण के मन मे भी उल्लास था, अत उसने अपनी ओजपूर्ण प्रतिक्रिया अभिव्यक्त की । पहली वार उसने पूनम के चुम्बन की गर्मास को महसूस किया था । मन उल्लसित रहता है तो सब कुछ अच्छा दिखने लगता है । यही स्थिति तरुण की थी ।

'पूनम, आज तुम मुझे बहुत अच्छी लग रही हो ।'

'सच तरुण !'

'हाँ, आज तुम साक्षात् पूनम का चाँद लग रही हो ।'

'तरुण, आज तुम बहुत खुश दिख रहे हो ।'

'हा, मैं तुम्हारा कब से इतजार कर रहा हूँ ।'

'यह महान् आश्चर्य है कि तुम्हे मेरा ध्यान आया ।'

'हाँ, आज एक-एक पल भारी महसूस हो रहा था ।'

'क्या आज कोई खास बात है ?'

'हाँ आज मुझे एक बहुत बडी कामयाबी मिली है ।'

'कैसी कामयाबी ? कैसी ?'

'अब कैसर कोशिकाओ को नियन्त्रित किया जा सकेगा ।'

'क्या कैसर से रोगियो को बचाया जा सकेगा ?'

'हा ऐसा तरीका ढूढना सभव होगा कि कैन्सर उत्पन्न ही नही हो ।'

'क्या कॉस्मिक किरणो के विरुद्ध टीका बनाया जा सकता है ?'

'हाँ अब यही प्रयत्न चलेगा कि कौनसा तरीका कारगर होगा ?'

'लेकिन अब तुम्हे आराम करना चाहिये । आगे का काय किसी और को सौपा जा सकता है ।'

'नही, अब तो मुझे और अधिक उत्साह से कार्य करना होगा । पूनम, तुम जानती हो एक सफलता दूसरी सफलता का रास्ता खोलती है ।'

'लेकिन अब मैं नही चाहती कि इस काय मे तुम आगे जुटो ।'

'तुम्हारी बात सुन कर हैरानी होती है ।'

'तरुण तुम जो जिंदगी जी रहे हो वह निरी शुष्क एव बजड है एक सूखे बास की तरह ।'

'लेकिन यह एक तपस्या है, साधना है ।'

ऐसी साधना किस काम की जो हमारे मन मे दरार पैदा कर दे । सच तो यह है कि तुमने मुझे आज तक कौनसा सुख दिया है ?'

'समझ मे नही आता कि कैसा सुख चाहती हो तुम ।'

'तरुण मैं चाहती हूँ कि तुम मेरी तरह जगमगाती जिंदगी जीयो एक दमकती जिंदगी शिमरिंग लाइफ ।

'पूनम, यह एक ऐसी जिंदगी है जिसमे बाहरी चमक-दमक है तो भीतरी खौफनाक अधेरा ।'

'मैं फिलासॉफी अधिक नही जानती ।'

'पूनम !'

सवाद से तरुण और पूनम दोनो के बीच कटुता फैल गई। अनुसधान की सफलता से जो उत्साह तरुण मे पैदा हुआ था, वह क्षण भर मे ठडा हो गया। उसे लगा पूनम उसे कभी नही समझ पायेगी। वार्तालाप से दोनो के बीच की दूरी और बढेगी। हताश तरुण की तबीयत अब खराब रहने लगी थी। पूनम का क्लब जाना उसी प्रकार जारी रहा। कैंसर पर किये गये अनुसधान की सफलता से तरुण की दूर-दूर तक ख्याति पहुँच चुकी थी। अब वह एक विश्वविख्यात विज्ञानी बन चुका था। लेकिन पूनम के स्वभाव मे कोई परिवर्तन नही आया।

अचानक तरुण एक अज्ञात रोग से ग्रस्त हो गया। उसे थकावट महसूस होने लगी थी। वह बुखार से पीडित रहने लगा था। भूख नही लगती। भयकर खाँसी रहती। वजन घटने लगा था। रात्रि मे वह पसीने से तर हो जाता, लेकिन पूनम को उसकी कोई सुध नही थी। कही वह न्यूमोनिया से ग्रस्त तो नही हो गया? उसे डॉक्टर ने हैवी एन्टीबायोटिक दिये, लेकिन स्वास्थ्य मे कोई फर्क नही पडा। यह क्या हो गया उसे? वह कुछ समझ नही पाया। जो डॉक्टर और नर्स उसकी देखभाल करते थे, वे अत्यन्त गभीर नजर आते थे। उसे सन्देह होने लगा था कि वह किसी घातक रोग से ग्रस्त हो गया, लेकिन किस रोग से? यह बात उससे छिपाई जा रही थी। कही वह कैसर से तो पीडित नही हो गया? नही? ऐसा नही हो सकता। एक दिन पूनम सपने मे बडबडा उठी—

नही नही नही, तरुण नही तुम एड्स से ग्रस्त नही हो सकते? क्या मुझमे एड्स के विषाणु हैं? नही न ही! वह चीख उठी।

तरुण उठा और पूनम के पास गया।

'क्या बात है, पूनम?'

कुछ नही कुछ नही ।

तुम्हारे होठ फड़क रहे हैं तुम कम्पकपा रही हो ।

'नही नही ।'

'तुम कुछ घबरायी हुई सी दीख रही हो ।'

'नही नही । मुझे कुछ नही हुआ है ।'

तरुण चाहता था कि वह उससे मन की बात कह दे, लेकिन अब यह उसकी खास आदत बन चुकी थी कि वह मन की बात मन मे ही रखा करती थी ।

तरुण को लगा कि वह कोई बात छिपा रही है, लेकिन वह उसे वास्तविकता उगलने के लिये विवश नही कर सका । अब उसके मन मे सदेह जाग्रत हो चुका था । उसने दूसरे दिन खून की जाच रिपोर्ट देखनी चाही, लेकिन कही उसे वह रिपोर्ट दिखाई नही पडी । उसने रिपोर्ट के बारे मे जानना चाहा तो कहा गया रिपोर्ट 'निल' आने से उसे फेंक दिया गया, लेकिन उसका मन करता था कि रिपोर्ट अवश्य पूनम या डॉक्टर के पास होनी चाहिए । वह रिपोर्ट जानने मे सफल नही हुआ था । तरुण की देखभाल विशेष रूप से करुणा किया करती थी । उसकी गिरी हालत को देखकर एक दिन नर्स करुणा अत्यन्त भावुक हो चली थी ।

उस दिन तरुण ने उससे पूछा, 'करुणा क्या मैं ठीक हो पाऊँगा ?'

'क्यो नही ?'

'करुणा, मुझे लगता है कि मैं ठीक नही हो पाऊँगा । करुणा, क्या तुम्हे यह अहसास नही होता कि मेरी हालत दिन-प्रतिदिन गिरती जा रही है ।''

'ईश्वर ने चाहा तो सब ठीक हो जायेगा ।'

'करुणा, एक बात कहूँ ?'

'क्या ?'

'एक दिन पूनम रात्रि मे बुदबुदा रही थी कि मुझे 'एड्स' हो गया ।'

करुणा चौंकी ।

'एड्स ! नही नही ।' करुणा का स्वर कम्पायमान हो उठा ।

'करुणा केवल तुम नर्स नही हो मेरी बहिन भी हो ।'

'हा, तरुण ।'

'एक तुम ही हो जिस पर मैं विश्वास कर सकता हूँ । ... मुझे क्या हो गया कुछ समझ मे नही आता ।'

'तुम्हे कुछ नही हुआ है ।'

'करुणा, मुझ पर तरस खाओ, मेरा दम घुटने लगा है मैं जितना परेशान शारीरिक व्याधि से नही हूँ, उतना मानसिक तनाव से हू। करुणा, मुझे लगता है कि अब मेरी जिन्दगी के कुछ ही दिन शेष रह गये हैं मैं बच नही पाऊँगा कही मुझे 'एड्स' तो नही हो गया।'

'नहीं तो।'

'करुणा, क्या मैं बिना कुछ जाने ही इस ससार से विदा ले लूगा।'

'नही, तुम्हे वहम हो गया है।'

'तुम मेरी बहिन हो करुणा तुम मुझे दूसरो की तरह अधेरे मे नही रखोगी। करुणा, क्या यह सच नही कि मुझे एड्स है ।'

'करुणा मौन रहती है। उसकी पलकें नम हो जाती हैं तथा गुलाबी कपोलो पर आसुओ की धारा झर-झर बहने लगती है।'

'करुणा सच बताओ करुणा, क्या मुझे एड्स नही हुआ है -मैं सच जानना चाहता हूँ कड़ुआ सच ।

'हाँ, तुम्हे एड्स ।' करुणा वाक्य पूरा नही कर पाती तथा फूट फूट कर रोने लगती है।

तरुण की आखों के आगे अधेरा छा जाता है। कुछ पल के लिये उसे कुछ दिखाई नही पडता। वह टेबुल पर सिर टिका देता है, करुणा दौड कर जल लाती है तथा उसे पिलाती है तरुण आँखें खोलता उससे कुछ कहा नही जाता केवल होठ फडक कर रह जाते हैं। अश्रु की धारा निरन्तर उसके कपोलो पर बहती रहती है। करुणा से यह दृश्य देखा नही जाता। वह सिसकियाँ भरते हुए बाहर चली जाती है।

तरुण को इटेंसिव केयर यूनिट मे पहुँचा दिया गया। खून जांच तथा इम्यूनॉलाजिक परीक्षण की रिपोट उसे दिखाई जा चुकी थी लेकिन अब उसने किसी प्रकार की रुचि नही दर्शायी।

वह सोचने लगा, 'उसे एड्स का घातक रोग लगा कैसे ?' एड्स के बारे मे उसने बहुत कुछ सुन रखा था।

एड्स अर्थात् क्वायड इम्यून डेफिसिएन्सी सिंड्रोम एक ऐसा रोग है जिससे शरीर द्वारा रोगाणुओ का प्रतिरोध करने को क्षमता समाप्त हो जाती है। यह रोग वायरस के कारण होता है। यह विशिष्ट वायरस शरीर की प्रतिरोध प्रणाली, रक्त की कोशिकाओ तथा ऊतको को नष्ट कर देता है।

तरुण को याद आता है कि किस प्रकार यह बीमारी अफ्रिकन हरे वन्दरो से अफ्रिकन निवासी जायरियन तथा हाइतियन मे फैली। हायती तथा जाइरे दोनो फ्रेंच स्पोकन देश हैं। हायती अमेरिका के समलगिक निवासियो के लिये एक अनुकूल जगह है। अत एड्स अफ्रिका से अमेरिका मे फैल गया और वहां से यह रोग सारे विश्व मे फैल गया। भारत भी इससे अछूता नही रहा।

तरुण यह भली-भाति जानता था कि इस बीमारी का अभी कोई इलाज सभव नही है। मत्यु ही इससे छुटकारा दिला सकती है। लेकिन उसे यह बीमारी हुई कैसे ? वह कभी भी समलैगिक नही रहा, न ही अनैतिक उभयलगिक । यहा तक कि कभी वह व्यसनी भी नही रहा। उसने कभी भी व्यसन रूप मे मादक द्रव्यो का इजेक्शन रक्त-वाहिनियो मे नही लगवाया। न ही उसे कभी हीमोफीलिया या निरन्तर रक्त स्रवण की कोई शिकायत हुई। उसे याद नही आता कि बीमार पडने पर उसे कभी खून की आवश्यकता हुई हो या उसका रक्त आधान (ट्रान्सफ्यूजन) करवाया हो।

यदि उसने किसी से यौन सम्बन्ध रखा तो वह सिर्फ पत्नी से तो क्या यह रोग पूनम से उसमे आया हा केवल पूनम ही बचती है जिससे यह रोग उसमें सक्रमित हुआ। वह नित्य क्लब जाया करती है। अभी भी वह क्लब गई हुई है उसे तरुण की क्या परवाह भले वह जीये या मरे क्लब के उसका सम्पर्क अवश्य अन्य पुरुषो से रहा होगा ? लेकिन क्या यौन-सम्पर्क ? नही मन नही मानता वह इतनी गिरी हुई नही हो सकती कि किसी पर-पुरुष से उसके यौन सम्बन्ध स्थापित हों। लेकिन कहानी कुछ और ही कह रही है। उसे याद आया कि क्लब जाने के बाद किस प्रकार उसमे बदलाव आया ? अचानक वह गृहपत्नी से अल्ट्रामार्डन हो गई थी। उसके हाव-भाव, ड्रेस सभी 'अल्ट्रामाडन' थे। उसके मुख मे दुर्गंध मादक द्रवो का सेवन घटो उसका दर्पण के समक्ष खडे रहना किस ओर सकेत करते थे ? वह अक्सर अनिरुद्ध का जिक्र किया करती थी अनिरुद्ध ? कौन था यह अनिरुद्ध ? क्या सबध था उसका अनिरुद्ध से ? पूनम उसके बारे मे बडे तारीफ के पुल बाधा करती थी। क्या अनिरुद्ध से उसका कोई अनैतिक सम्बन्ध हुआ है ? क्यो नही ? निश्चित रूप से तब क्या अनिरुद्ध से एड्स का रोग पूनम मे सक्रमित नही हुआ होगा और पूनम से उसमे ?

उसे याद आया कि पूनम होठ का इतना तेज चुम्बन लेती है कि होठ कट जाते हैं। तब क्या पूनम से एड्स के रोगाणु उसके कटे होठ के रक्त से नही जा मिले और बीमारी उसमे पहुँच गई ? क्या इस प्रकार चुम्बन से यह बीमारी हो सकती है। हाँ, विश्वविख्यात विज्ञानी गेलो ने इस बात से इन्कार नही किया। थूक ही क्या, एड्स के ये रोगाणु तो आसुओ से भी सक्रमित हो सकते हैं। कारण चाहे कुछ भी रहा हो लेकिन इससे पूनम के अनैतिक सम्बन्ध उजागर हो गये।

अब उसमे जीने की कोई तमन्ना नही रह गई थी। एक ही जिजीविषा थी उसमे वह अनुसधान पूरा कर पाये और मानवता को कैंसर के क्रूर जबडो से छुटकारा दिला सके। लेकिन दुर्भाग्य उसके दरवाजे पर दस्तक दे गया।



विश्व के विज्ञानी तरुण को एडस की जानलेवा क्रूर बीमारी से बचाने का भरसक प्रयत्न करते हैं। वे नही चाहते कि विश्व का यह महान विज्ञानी अकाल मौत के जबडो मे समा जाये। डॉक्टर यह समझ नही पाते कि एड्स के रोगाणुओ के विरुद्ध कौनसा हथियार काम मे लिया जाय। डॉक्टर प्रसाद माइक्रोस्कोप की आई-पीस मे दृष्टि गडाये हुए थे। एड्स के विषाणुओ की पूरी फौज उन्हे रुधिर की धारा मे दिखाई पडी। एड्स के इन विषाणुओ के नाम भी अलग अलग के जसे फौज की टुकडियो के नाम होते हैं—एल ए वी एच टी एल वी थर्ड ए आर वी टू । प्रयोगशाला मे ये अलग-अलग नाम से मशहूर हैं। डॉ प्रसाद को प्रयोगशाला मे ये वायरस एल ए वी यानी सिम्फेडिनोपेथी एसोसियेटेड वायरस के नाम से मशहूर है। डॉ प्रसाद के देखते ही देखते फौज की इस टुकडी ने लिम्फोसाइट्स के सैनिको पर आक्रमण कर दिये। लिम्फोसाइट्स ही अनिवार्यत प्रतिरोधी प्रणाली की रक्षा पक्ति थी। आखिर एड्स के विषाणु की फौजी टुकडी ने शरीर की रक्षा पक्ति का कमजोर कोना ढूँढ लिया। यह कमजोर कोना था—टी फोर लिम्फोसाइट। बेचारे टी-फोर लिम्फोसाइट प्रतिरोधी सैनिको को पीछे हटना पडा। एड्स की फौजी टुकडी ने जगह बना ली थी। टी फोर लिम्फोसाइट की इस जगह ने ग्राह्य (रिसेप्टर) का काम किया। टी फोर प्रतिरोधी

सैनिको का आत्मसमर्पण करना था कि एड्स की फौजी टुकडिया लिम्फोसाइट कोशिका के अभेद्य किले की ओर कूच कर गये। एड्स विषाणु की फौजी टुकडियो तथा टी फोर लिम्फोसाइट कोशिका के सैनिको के घमासान युद्ध छिड गया। टी फोर कोशिका का बुज ढह गया। एड्स की फौजी टुकडियो की बाछें खिल गईं। उन्होने प्रोटीन के भारी भरकम कवच तुरत-फुरत उतरवा लिये और जयनाद करते हुए रनिवास मे घुस पडे। यह रनिवास था—टी-फोर कोशिका का केन्द्रक। एड्स के वायरल जीन्स सैनिक भारी तादाद मे थे। बेचारी रानियो, महारानी, दासियो की तो सामना करने की औकात ही क्या थी। टी-फोर केन्द्रक की इन सुन्दर अप्सराओ ने आत्मदाह कर लिया। एड्स के सैनिको ने जिसे मर्जी मे आया लूटा, बगलादेश मे पाक सैनिको की तरह नवयौवना महिला। सब ।

एक पराजित टीम क्या कर सकती है ? विजेता टीम के इशारे पर नाचने के लिये मजबूर हो जाती है। बेचारी एड्स जीन्स की विजेता टीम ने हुक्म दिया—'हमारी सस्कृति सीखो।' पराजित टी फोर ने एड्स जीन की फोटो स्टेट कॉपी करना प्रारम्भ कर दिया प्रोटीन कवच भी इस काय मे पीछे नही रहा इससे नये एड्स के विषाणुओ का जन्म हुआ आखिर पराजित टी कोशिकाओ ने एड्स विषाणुओ की सस्कृति को अपना लिया। अब ये एड्स विषाणुओ की फौजी टुकडियाँ नयी टी कोशिकाओं के साम्राज्य पर आक्रमण करने के लिये कूच कर गई नई समर भूमि ।

डॉक्टर प्रसाद समझ नही पाते हैं कि इस नई विकट समर-भूमि—'एड्स' पर कैसे विजय पाई जाय। उन्होने तरुण को अनेक एण्टी वाइरल इजेक्शन दिये जा चुके थे एच पी ए 23, सुरेमाइन तथा इन्टरफेरोन तथा अन्य पदार्थ के इजेक्शन । तरुण पर 'अस्थि मज्जा-प्रतिरोपण' का प्रयास भी हुआ लेकिन प्रतिरोधकता (इम्यूनिटी) उत्पन्न होने में कोई विशेष मदद नही मिली। डॉक्टर के एक दल ने 'साइक्लो स्पोरिन' पदाथ का प्रयोग किया ताकि ल्यूकोसाइट का वह क्षेत्र जहाँ एड्स के विषाणुओ ने अधिकार जमा लिया नष्ट किया जा सके। उन्होने फास्फारनेट तथा राइबेवेरिन का प्रयोग करके भी देखा लेकिन तरुण पर इन पदार्थों का कोई असर नही हुआ।

डॉ प्रसाद ने प्रयोगशाला मे एन्टी एल ए वी एन्टी बॉडी का निर्माण किया। उस समय उनकी खुशी का पारावार नही रहा जब उन्होने देखा कि यह एन्टी बॉडी, एड्स के विषाणुओ को पनपने नही देती, लेकिन दूसरे दिन ही उनकी खुशी बिखर गई, क्योकि बन्दर पर किये गये प्रयोग से उन्हे कोई सफलता नही मिली। वह समझ नही पाये कि विट्रो (परखनली) तथा विवो (दैहिक) प्रयोग मे अन्तर क्यो है? विट्रो मे सफलता तथा विवो मे असफलता?

विश्व के अनेक विज्ञानी एड्स के टीके की खोज मे लगे हुए थे। विज्ञानी गेलो का पेरिस से प्रसाद को सदेश मिला कि वह एड्स के खिलाफ टीका इजाद करने मे मजिल के काफी निकट पहुँच चुके थे। डॉ गेलो ने प्रसाद से निजी फोन पर एड्स विषाणु के जीन का कम्प्यूटर मॉडल देखने के लिये कहा।

'डॉ प्रसाद, क्या आप एड्स विषाणु जीन की बनावट देख रहे हैं।'

'हा, मि गेलो, मुझे ये छड के आकार के दिखाई पड रहे हैं।' डॉ प्रसाद ने विजी फोन के समीप रखे हुए कम्प्यूटराइज्ड होलोग्राम के पर्दे पर एड्स जीन की थ्री-डी (त्रिविम) आकृति देखकर कहा।

'और उस पर प्रोटीन?'

'हाँ, स्पष्ट दिखाई पड रहे है, 'ये ई एन वी' प्रोटीन एड्स कणो को ई एन वी प्रोटीनो ने ढक लिया।'

'यही प्रोटीन का कवच एड्स के लिये जिम्मेदार है।'

'क्या इस ई एन वी जीन को कृत्रिम तरीके से पृथक् किया जा सकता है?'

'हा प्रसाद, यह एक बहुत बडी उपलब्धि है।'

'गेलो 'क्या इन्हे डुप्लीकेट' (स्वय की प्रतिरूप कोपी का निर्माण) करते हुए देखा जा सकता है?'

'हाँ प्रसाद, कोशिका तथा कोलिबेसिकस जीवाणुओ मे इसे स्वय की प्रतिरूप कोपी का निर्माण तथा इन्हें सख्या मे कई गुना वृद्धि करते हुए देखा जा सकता है। मेरे द्वारा इजाद् एटी वायरल एन्टीबॉडी की नजरो से ये बच नही सकते। लेकिन समस्या यह है कि ।' विज्ञानी गेलो ने प्रसाद के समक्ष विजी फोन पर समस्या को विस्तार से रखा।

डॉ प्रसाद वडे ध्यान से सुनते व देखते रहे। उनके बीच काफी देर तक चर्चा होती रही। अत मे गेलो ने प्रसाद से कहा—

'डॉ प्रसाद, किसी तरह से तरण को बचाना होगा। क्या कुछ दिन और उसे जीवित नही रखा जा सकता ? आप उनकी कृमि प्रतिरोधी क्षमता को बनाये रखिये। आशा है हम जल्दी कामयाब हो जायेंगे।'

'विज्ञानी गेलो, मेरा यह भरसक प्रयत्न रहेगा कि किसी तरह तरुण जीवित रहे। उसका जीवित रहना अत्यन्त आवश्यक है नही तो उसकी कैसर रिसच अधूरी ही रह जायेगी। कैसर से पीडित न जाने कितने लोगो की आस तरुण के अनुसधान पर टिकी हुई है। हमे उसे हर हाल मे बचाना होगा।' प्रसाद होलोग्राम पर 'एड्स' विषाणुओ के ई एन वी प्रोटीन कोट का कम्प्यूटर मोडल देखते हुए बोले।

बातचीत समाप्त होने पर वह तरुण को देखने के लिये इन्टेन्सिव केयर यूनिट की ओर चल दिये।



पूनम का क्लब मे नित्य की तरह जाना जारी रहा। तरुण की पत्नी होने के बावजूद उसका तरुण से कोई वास्ता नही था। तरुण की असाध्य बीमारी का भी पूनम पर कोई असर नही पडा। औपचारिकतावश वह अवश्य तरुण के पास आती। उसके चेहरे से टपकती गभीरता भी औपचारिक प्रतीत होती, लेकिन तरुण के दिल का एक कोना अब भी उससे प्यार करता था वह कैसी भी थी लेकिन वह थी तो उसकी पत्नी ही। उसका जी चाहता था, वह पहले की तरह उसे प्यार देता रहे। वह भरपूर प्यार उस पर उडेलता रहे वह कुछ पल के लिये आती और तरुण को लगता कि उसे जिन्दगी मिल गई। वह अपना सारा क्रोध व तनाव भूल जाता और पूनम की आखो मे प्यार का समदर तलाशने लगता। पूनम के चले जाने के पश्चात् जैसे ही तरुण को अनिरुद्ध का ख्याल आया, क्रोध से उसका चेहरा तमतमा आया फिर बेबसी वह बिस्तर से उठ भी नही सकता था उसने उठने के लिये जोर लगाया उसे खाँसी ऐसी उठी कि थमने का नाम नही लेती सारे फेफडे छलनी हो गये थे नर्स करुणा दौडी हुई आई उसने देखा कि तरुण का थूक खून उगलने लगा है उसने

तुरन्त इंजेक्शन लगाया तब कहीं जाकर खासी थमी। करुणा ने आहिस्ता से उसको लेटने मे मदद की। तरुण के कपोलो पर अश्रु की धाराएँ बह चली। तरुण के कपोलो पर ढरकते इन अश्रुओ को करुणा ने चूमना चाहा लेकिन तरुण ने इन्कार कर दिया। इन अश्रुओ मे भी एड्स के विषाणु हो सकते थे। कितना बदनसीब था तरुण! करुणा की पलकें नम हो आई। वह तरुण का रोना नही देख पा रही थी। दुख व करुणा का सैलाब मशरूम बादलो-सा फैलता हुआ अस्पताल के उस कमरे मे छा गया। डॉ प्रसाद की कमरे मे आहट पाते ही करुणा ने तुरन्त अपने अश्रु पोछे।

पूनम अनिरुद्ध की ओर झुकती चली गई। पॉप कल्चर उसके नस नस मे समा गया था। अब वह अपना अधिकाश समय अनिरुद्ध के साथ गुजारने लगी थी। अनिरुद्ध उसके तन मन मे बस चुका था। जल तरगिनी-सी वह उसकी बाहो मे झूलती, नाचती, गाती लेकिन एक दिन अनिरुद्ध ऐसा गायब हुआ कि वापस नही आया। वह हमेशा के लिये जा चुका था। पूनम ने उसे बहुत तलाशा लेकिन उसका कहीं पता नही चला। एक दिन उसे पता चला कि वह अमेरिका चला गया। उसे यह भी ज्ञात हुआ कि एक विदेशी लडकी उसके साथ थी और यह भी कि अनिरुद्ध से उसके अनैतिक सम्बन्ध थे। आश्चर्य था कि पूनम को इस बात का इतने दिनो कुछ पता नही चला। ओह! तो वह अन्य से भी सम्पर्क रखता था यानी उसका प्यार झूठा था। हाँ, ऐसे लोग प्यार कब करते हैं केवल भोली-भाली मासूम लडकियो के प्यार को ठगते है। अब पूनम को होटल का दहकता रूप वीभत्स नजर आने लगता है। एक वीभत्स चित्रण उसकी आँखो के आगे उभर रहा है ओह! कुकुरमुत्ते सी आकृतियां कुकुरमुत्ते से उगे फानूस! ओह! उससे कितनी भयकर भूल हुई कभी माफ न की जाने वाली और तरुण? कितना बेदाग! कितना मासूम! वह उसके विशुद्ध प्यार को भी निभा नही पाई। तरुण एक विश्वविख्यात विज्ञानी वह सब कुछ भूल चुकी थी वह अधी थी हाँ, आँखें होते हुए भी ठीक से देख नही पा रही थी अन्तर्दृष्टि से शून्य पूनम के हृदय मे तूफान मच जाता है।

तूफान के थमते ही उसे तरुण का चेहरा स्पष्ट दीखता है कितना भोलाभाला उसका पुराना प्यार भी उमड पडता है। वह रो पडती है त रु ण!

सडक पर कार तेजी से दौड रही थी लेकिन उसके गुलाबी कपोलों से अश्रु निरन्तर ढरक रहे थे। अश्रुओ के पारदर्शी शीशे मे उसे सडक नहीं बल्कि तरुण का भोला भाला चेहरा दिखाई पड रहा था। अस्पताल पहुँचते ही उसने इटेसिव यूनिट मे प्रवेश किया। भयकर खासी की आवाज अहाते मे स्पष्ट सुनाई पडी। वह तेजी से रूम मे प्रविष्ट हुई। करुणा इजेक्शन लगा रही थी। प्रसाद के सकेत पर डॉ पूनम ने पुकारा त रु ण ! डॉ प्रसाद ने उसे चुप रहने का सकेत दिया। तरुण का सास भयकर रूप से उखड रहा था। कुछ देर बाद इजेक्शन का प्रभाव हुआ। तरुण को नींद आ गई।

डॉ प्रसाद के समक्ष पूनम फूट-फूट कर रो पडी। वहा का दृश्य बडा करुणाजनक हो गया। प्रसाद की आँखे नम हो आई।

पूनम अनेक विज्ञानियो मे सम्पर्क किये हुए थी। उसने डॉ सिन्हा से फोन पर सम्पर्क किया। डॉ सिन्हा इस समय प्रयोगशाला मे ही थे।

'डॉ सिन्हा, एड्स पर आपकी खोज कहाँ तक पहुँची ? मैं तरुण की पत्नी पूनम बोल रही हू।'

'हम एड्स विषाणु के जीन को वेसिनिया विषाणु के जीन से ग्राफ्टिग करने मे सफल हो गये हैं।'

'इससे क्या लाभ होगा ?'

'इससे एक हाइब्रिड टीका तैयार किया जा सकेगा। इस हाइब्रिड टीके मे वेसिनिया विषाणु तथा एड्स के टीके का पेटर्न दोनो मौजूद होगे। यदि यह हाइब्रिड टीका तैयार हो जाता है तो हमे आशा है कि यह एड्स के लिये अधिक कारगर होगा।'

'लेकिन एड्स का निदान क्या है ?'

'फिलहाल कहना कठिन है। आप इन्टरफेरोन देते रहिये शायद सफलता मिल जाय।'

'ठीक है ।' पूनम ने फोन का सम्बन्ध विच्छेद किया। इसके पश्चात् पूनम ने विजी फोन पर विज्ञानी माइकेल लीमोनिक से बातचीत की।

विज्ञानी लीमोनिक एक हाइब्रिड सुगर जीन पर कार्य कर रहे थे। इस हाइब्रिड का कुछ भाग इ एन वी जीन का होता है तथा कुछ भाग हिपेटाइटिस बी वायरस के जेनेटिक पदार्थ का होता है। विज्ञानी लीमोनिक का विश्वास था कि इससे न केवल हिपेटाइटिस की बीमारी ठीक होगी बल्कि एड्स का निदान भी सभव होगा।

पूनम सोच रही थी। अभी तो प्रयोग ही चल रहे थे। क्या विज्ञानियो के अनुसधान की सफलता तक तरुण को जीवित रखा जा सकेगा।

पूनम तरुण के कमरे मे पुन लौट आयी। अब वह स्वय तरुण को दवाई देने लगी थी। उसे लेटाती तथा उसकी सेवा मे पूरा समय व्यतीत करती।

रात्रि के ग्यारह बजे थे। वाड मे तथा कमरे मे पूण सन्नाटा था। अधिकाश मरीज सो चुके थे। तरुण को नीद नही आ रही थी। वह शून्य मे ताकने लगता है। उस शून्य से विवत फिर धुधली आकृतिया प्रकट और फिर स्पष्ट आकृतिया प्रकट होने लगती हैं उन आकृतियो मे उभरे तारे फिर ग्रह पृथ्वी से मगल अ।र फिर प्लूटो तक के ग्रह उभरे अब प्लूटो भी विलीन हो चुका है चारो तरफ तारे ही तारे तारो वे पुञ्ज ये तारे हैं या कुछ और पदाथ बिखरी हुई चमकीली रोशनिया फिर उभरा देदीप्यमान होता तारो का वादल कही यह ऊट का बादल तो नही है हाँ, खगोलविद् चन्द्रशेखर ने एक ऐसा ही बादल उसे दूरदर्शी पर दिखाया था अरे यहा तो खरबो बफ के टुकडे दिखलाई पड रहे हैं जिधर देखो वर्फ ही बफ लेकिन यह तो गदी हो चुकी है गदी वफ के टुकडे चौतरफा गद ही गद लगता है यह गदी वफ चट्टानी टुकडो से युक्त हो ओह, ये तो धूमकेतु के टुकडे हैं क्या ऊट के बादल धूमकेतु के प्रजनन क्षेत्र है? अचानक हेली का धूमकेतु प्रकट हुआ वह ऊट बादल के कुछ बर्फीले टुकडो को अपनी ओर आकर्षित करता है हेली धूमकेतु मे जीवन के चिह्न। आश्चय।

जीवन के इन चिह्नो को महिला विज्ञानी सुसान विकोफ एक दूरबीन से देखती माउन्ट होपकिन्स की मल्टीपल मिरर दूरबीन से लेकिन तरुण इन्हे विषाणुओ के रूप मे देखता है।

ओह। हेली धूमकेतु उसकी ओर बढ रही है वह पिड और निकट आ गया इसकी पूछ यहा गायब हो गई? नही नही यह तो हेली नहीं है यह तो कोई क्षुद्र तारा है अरे। यह तो बहुत तीव्र चमक रहा है यह तो कोई कृत्रिम यान है यह बाह्य अतरिक्ष से पृथ्वी की ओर अग्रसर हो रहा है। क्या इसमे बाह्य अतरिक्ष के निवासी हैं? यही यह युग्म-नक्षत्र वार वाइस ग्रोक आठ तारे का या इसके साथी तारे वार वाइस ग्रोव आठ वी तारे के किसी ग्रह के

निवासी तो नही हैं ? क्या ये हमारे सौरमडल मे जीवन की टोह लेने आये हैं ? कही वाह्य अतरिक्ष के निवासी पृथ्वी पर आक्रमण करना तो नही चाहते । इन निवासियो ने ऊर्ट वादलो से विपाणु सगृहीत कर लिये कही वाह्य-अतरिक्ष के इन निवासियो का इरादा पृथ्वी से बायलॉजिकल युद्ध छेडने का तो नही है

बाह्य-अतरिक्ष के बुद्धिजीवियो के पास विपाणुओ के बम थे लो बाह्य-अतरिक्ष के वासियो ने विपाणुओ के बम छोड दिये अरे ये विपाणु तो मेरी ओर बढे आ रहे है बाह्य-अतरिक्षवासी कह रहे है कि ये एड्स के विपाणु हैं नही, मुझे इन विपाणुओ से आहत नही करो बाह्य अतरिक्षवासियो का अट्टहास गूंज उठता है । नही नही ओह । ये विपाणु आ गये ऊर्ट विपाणु न ही तरुण चीख उठा । उसका स्वप्न टूट चुका था ।

उसे एक जानलेवा खांसी उठी । सास उखड गया । हृदय की धडकन वढ गई । नाक तथा मुँह से खून निकलने लगा ।

त रु ण ! वेड के समीप बैठी पूनम चीख उठी । करुणा ने डॉक्टर को फोन किया । डॉक्टर प्रसाद पहुँच चुके थे । तरुण को इजेक्शन दिये जा रहे थे । खून की बोतल चढा दी गई थी । कृत्रिम ऑक्सीजन दी जा रही थी ।

पूनम मैं जा रहा हूँ देखो, बाह्य अतरिक्ष के निवासी मुझे लेने आ गये मैं जा रहा हूँ तारो की घनी छांव मे ।"

'न ही तरुण तुम्हे जीना होगा तुम्हारी सारी रिसच अधूरी है तुम्ह उसे पूरा करना होगा । सारी दुनिया के लोगो की आस तुम्हारे अनुसधान पर टिकी है तुम्ह उनकी खातिर जीना होगा

पू न म देखो यान आ रहा है

'देखो तरुण, मेरी ओर देखो मेरी आँखो मे झाँककर देखो मैं वही पूनम हूँ तुम्हारा पहला प्यार ।'

'पू न म ! तरुण कराहता है ।

'तरुण मुझे माफ कर दो मैं वही पूनम हूँ कश्मीर की वादियो की पूनम मैं तुम्हारे साथ रहूँगी तुम्हारा साथ अब कभी नही छोडूंगी ।' पूनम के कपोलो पर अश्रुओ की धाराएँ निरन्तर बह रही थी ।

'पू न म ।'

इससे अधिक तरुण कुछ नही कह पाया । उसने पूनम का हाथ थाम लिया तथा उसे अपने हृदय पर रखा । पूनम के अश्रुओ की उष्ण बूदे उसके हाथ पर टपक रही थी ।

'लो वे आ गये पू न म अ ल वि दा ।'

तरुण के हृदय की धडकन अचानक बद हो गई ।

'त रु ण ।' पूनम चीख उठी दीवारो से टकराकर उसकी चीख प्रतिध्वनित हो रही थी । उसे मूर्छा आ गई ।

डॉ प्रसाद की तेज पदचाप उस सन्नाटे को चीर रही थी । कमरे के भीतर प्रवेश करते हुए उन्होने कहा, "तरुण, मैंने एड्स की असाध्य बीमारी का इलाज ढूढ लिया है अब तुम ठीक । डॉ प्रसाद वाक्य पूरा नही कर पाये । सभी डॉक्टर मौन खडे थे । करुणा सिसकिया भर रही थी पूनम मूर्छित पडी थी तरुण निस्तेज .. स्पदनहीन था ।

डॉ प्रसाद चीख उठे त रु ण तरुण तुम मुझे यू छोडकर नही जा सकते, तुम्हारा काम अभी अधूरा पडा है देखो तरुण मेरी ओर देखो तुम्हारी आखें पत्थर क्यो हो चुकी तुम्हारी प्रयोगशाला मे 'ऑकोजीन्स' कसर का ताडव नृत्य खेल रहे हैं तुम्हे उस पर विजय पानी होगी ।'

आखो मे अश्रु लिये डॉक्टर प्रसाद ने निस्पद तरुण को एड्स की इजेक्शन वायल दिखाते हुए कहा—"तरुण, देखो मैं क्या लाया हूँ इस शीशी मे एड्स का निदान है अभी पल भर मे ही एड्स के विषाणु यू मृत हो जायेंगे जसे वे कभी अस्तित्व मे ही नही थे देखो तरुण, यह शीशी मैं केवल तुम्हारे लिये लाया हूँ हाँ, केवल तुम्हारे लिये लेकिन तुम सुनते क्यो नही मुझ से बिना मिले चल दिये .. कुछ क्षण तो मेरा और इतजार करते ।

डॉ प्रसाद ने एड्स के निदान को वायल तरुण के वक्ष पर रखी .. तथा फूट-फूट कर रोने लगे ।

'तरुण, मैंने देर कर दी क्या तुम मुझे माफ नही करोगे ?'

डॉ प्रसाद के साथ-साथ अन्य डॉक्टर के आंखो से भी अश्रु उमड पडे थे जो थमने का नाम ही नही ले रहे थे ।

कसर का एक महान् विज्ञानी इस ससार से विदा ले चुका था ।

□□

किरणों का मायालोक : ड्रूमा

गहरे अंधियारे और तूफान से भरी एक रात। अंधकार इतना अधिक था कि किसी वस्तु को दृष्टि गढाये बिना देख पाना असम्भव था। ठंड इतनी अधिक थी कि दिन ढलते ही लोग अपने-अपने घरो मे जा छिपे थे। सडक बिल्कुल सुनसान थी और सब तरफ निस्तब्धता का साम्राज्य था। सडक के किनारे खडे हुए केवल आस्पन वृक्षो की पत्तिया ही उस गहरायी हुई रात मे ठंडी हवा के बहाव से हिलकर उस निस्तब्धता को चीर रही थी। वह सडक दक्षिण अफ्रीका के प्रिटोरिया स्टेट से तीन मील की दूरी पर थी जो ट्रॉपिजिफॉर्म मकानो के बीच से होती हुई खलिहानो की ओर चली गई थी। सडको पर खडे लैम्पपोस्ट प्रिटोरिया नगर के उन कायर इन्सानो की नामर्दी पर जरूर अफसोस अदा कर रहे थे जो घर छोड चुके थे, लेकिन वे जवामर्द भी क्या कर सकते थे जिन्हें एक भयकर तूफान उडाता ले जा रहा था–दूर, बहुत दूर, जहा पहुच कर वे निष्क्रिय हो जाते। एक अदृश्य शक्ति उन्हे खीच रही थी। वे उस शक्ति की लपेट मे कभी लडखडाते, कभी कापते और कभी थरथराते हुए बहे जा रहे थे। वे तब तक बहे जा रहे थे जब तक कि उनमे सास होता। उनमे उस शक्ति के विरुद्ध सघर्ष करने का साहस होता और जब तक कि उनके रोम-रोम से रक्त नही चूस लिया जाता और फिर वह स्थिति आ जाती कि वे शिथिल हो जाते, यही नही, हमेशा-हमेशा के लिये मौत की गोद मे सो जाते।

एक विशाल 'आ पिएज' नदी सडक के आरपार होती हुई बेलस्ट्रैंड पुल के नीचे मिलती थी जो गोल-चट्टान के किनारे से होती हुई पहाडी की ओर चली जाती थी। वह पहाडी सुनसान सडक से कुछ ही गज के फासले पर थी और उस पहाडी पर ऐसा नही कि एक ही मकान हो, लेकिन वहा कई तरह की गगनचुम्बी आधुनिक इमारतें थी जहा वूरट्रेकर्स के देश अर्थात् प्रिटोरिया नगर के उच्च और रईस खानदान वर्ग के अतिरिक्त अनेक वैज्ञानिको के निवास स्थान

थे जिमने एक कॉलोनी का रूप ले लिया, लेकिन इतना सब कुछ होते के वाद भी एक इमारत ऐसी थी जो केवल अमूल्य काच की बनी हुई थी । यही नही, उसकी एक एक दीवार मे विभिन्न वज्ञानिक यत्र चिने हुए थे और हर दरवाजा एक विशेष प्रकार की आवाज के साथ खुलता था । इसको खोलने के लिये हमे हाथो की आवश्यकता नही होती थी । बस आप खडे होकर सीटी बजाइये, दरवाजा अपने-आप खुल जायगा । आपको अलीबाबा की तरह खुलजा सिम-सिम कहने की भी आवश्यकता नही, किन्तु याद रखें सर्किट के इन-पुट स्टेज मे लगे माइक्रोफोन की जगह आपको आउट-पुट मे २० से ५० मिलीवोल्ट का एक फोटोसेल, लगाना होगा ताकि वह आपकी ध्वनि तीव्रता (आडियेन्स फ्रिक्वेन्सी) मे सवेदित हो जाये । मालूम है आपको इससे चोरो का भी भय नहीं रहेगा । क्योंकि वहां केवल आपकी सीटी ही काम करेगी, चोरो की नही । किसी भी नव आगन्तुक के लिये उसकी हर दीवार आश्चय से भरी हुई एक कहानी थी । वह शीश महल पहाडो के पूर्वी भाग मे दो हजार फीट की ऊँचाई पर बना हुआ था । नव आगन्तुक उस समय ही आश्चयचकित हो जाता जबकि वह अपना पहला कदम उस गगन-चुम्बी, विशाल और अत्यन्त आधुनिक इमारत के परकोटे मे रखता किन्तु किसमे इतना साहस था कि वह अपनी छाया को भी उन दीवारो से परिचित करवादे ।

उनमे एक ही भय था किसका भय ? यह वे स्वय नही जान पाये थे, उनकी जवान पर एक ही शब्द आकर अटक जाता डूमा

अचानक उस सुनसान सडक पर बढती हुई दो मानव-आकृतियो को उस महल की खिडकी मे एक परछायी हिलती हुई दृष्टिगोचर हुई । वे आकृतियाँ पत्ते की भाँति काप उठी । वे आकृतियां नही चाहती थी कि उस परछायी को उनका आभास हो जाये, नही तो उनकी जिन्दगी एक कटे पत्ते की भाँति थी । आकृतियां तेजी से खलिहानो की ओर दौडी और छिपने के स्थान की तलाश करने लगी । वे जमीन पर घुटनो के बल लेट गयी और घिसटते हुए चलने लगी । यद्यपि वे आकृतियाँ घास मे छिपी हुई थी किन्तु अब तक किसी अज्ञात व शक्तिशाली व्यक्ति की दृष्टि उन पर पड चुकी थी । उन आकृतियो का दिल तेजी से धडक रहा था । उनका मुँह पीला पड गया था तथा घुटने छिल चुके थे । उनका समस्त शरीर बुरी तरह से काँप रहा था । ठड से वे निष्क्रिय

होते जा रहे थे। उनके शरीर बुरी तरह से अकड गये और दात बाजा बजाने लगे थे। तभी उनके मुंह से चीख निकल गयी ड्रूमा । इसके साथ ही उनके शरीर हमेशा के लिये शिथिल हो गये।

उसी रात को जब एक हरे रग की 'माजडा' कार सुनसान सडक पर चल रही थी तभी आगे बैठे हुए यात्री की दृष्टि टोनो (कार की पिछली सीट) पर पडी तो उसके हाथ भय के कारण स्टेयरिंग व्हील पर से छूट गये और तभी उसके मुंह से सन्नाटे को चीरती हुई चीख निकली ड्रू रा टो । एक विचित्र सूरत का भयावह व्यक्ति टोनो पर बैठा हुआ था। किस तरह से वह व्यक्ति इस कार मे दाखिल हुआ ? कब से वह अज्ञात व्यक्ति इस कार मे बैठा हुआ था ? इसका कारण वह नही जान सका। तब कार चालक के चेहरे पर हवाइयाँ उडने लगी। उसका 'ट्रिलबे' टोप हवा मे उछल गया। यही नही, उसे एक बहुत जोर का धक्का लगा जिसके कारण वह स्वय को नियन्त्रित नही रख सका। इसके साथ ही 'माजडा' एक ट्रापिजी फार्म इमारत के कोने से टकरायी। उस व्यक्ति का सिर दीवार से टकरा कर फट गया। यह तो शुक्र था कि ट्रापिजी फार्म बिल्डिग के व्यक्तियो ने काँपते हाथो से उसे उठा लिया किन्तु उन निवासियो को उस भयावह और अज्ञात व्यक्ति के कोई चिह्न नही दिखायी दिये।

इस तरह उस अज्ञात व्यक्ति ने न जाने कितनो की ही जिन्दगी के साथ खेल किये। आश्चर्यजनक मौन से सभी हैरान थे। वे सब एक अजीब भय के शिकार हो गये थे।

उसी रात प्रिटोरिया शहर के बीचो-बीच बने हुए क्लाक टावर के समीप ही की इमारत के दरवाजे पर की मिलवरटोन (कॉल-बैल) बज उठी। तभी किसी युवती ने दरवाजा खोला और इसके साथ ही एक व्यक्ति ने अन्दर प्रवेश किया। तब उस युवती ने पुन दरवाजा बन्द कर दिया। वे दोनो सीढी से होते हुए डायनिग रूम मे पहुँचे।

डायनिग रूम मे एक गोल मेज थी। उसके चारो तरफ स्विग आर्म चेयर रखी हुई थी। फर्श हाथो की बनी हुई 'एपल योचर' स्ट्राप्लेट से ढका हुआ था। मेज पर एक प्लास्टिक लैम्प रखा हुआ था जिसमें से हल्का झीना प्रकाश निकल रहा था और उसका सम्बन्ध एक 'डिमर' स्विच से था। ट्यूबलाइट 'पेल्मेट' बोर्ड के पीछे बने हुए हल्के पीले हरे प्लेटदार पर्दे पर रोशनी फेंक रहे थे। खिडकियो और दरवाजो पर 'वेलर-फेब्रिक्स' कम्पनी के 'ब्राय-नायलोन' के पर्दे लगे हुए थे।

"वर्क, अब और अधिक सहा नही किया जा सकता, अब तक हम यो ही फीकी मुस्कान लिये बठे रहेंगे। अब हमे कुछ करना ही होगा"। युवती ने स्विग आम चेयर पर बैठते हुए कहा।

उस युवती की आयु करीब इक्कीस वष की होगी। किन्तु उसके चेहरे से ऐसा प्रतीत होता था कि वह बहुत अधिक चिंतित और परेशान थी। उसके होठो पर फीकी मुस्कान थी और उसकी दूर से आंखो से स्पष्ट निराशा झलक रही थी। वह एक निर्भय महिला थी जिसने जिन्दगी और मौत के कोई कम भयकर खेल नही खेले थे। अनेक बार मौत उसके करीब आकर लौट गयी और यही वजह थी कि वह मौत के मुह मे ही हाथ डालने से नही झिझकती थी। वह उसी ओर झुकती चली गयी। यही नही, उसके हर कदम पर विभिन्न वैज्ञानिक यत्र सहायता देने लगे अत उसमे रुचि और भी बढ गयी। जिस काय को वह अपने हाथ मे ले लेती, उसे पूण करने के लिये वह रात और दिन एक कर देती थी। यही नही, दूसरी ओर उसकी जिन्दगी किसी शिर्मारंग लाइफ से कम नही थी। किन्तु उसे जितनी निराशा इस आश्चर्यजनक मौत से हुई, इससे पूर्व कभी नही हुई।

'डोरीना, तुम इस कार्य मे हाथ तो डाल रही हो किन्तु क्या इससे पूव तुमने यह सोचा कि उस अज्ञात व्यक्ति के पास कितनी बडी शक्ति का सामना करने की ताकत है ?' वर्क ने घबराते हुए कहा ।

'किन्तु वक, क्या तुम चाहते हो कि वह भयभीत करने वाली शक्ति हम पर हावी हो जाय ? क्या तुम नही चाहते हो कि हम किसी तरह उसके रहस्य को समझ लें और उस आतककारी शक्ति से बूर्ट्रेवक्स शहर के निवासियो को भय विमुक्त करें। वक, समझ मे नही आता कि आज तुम बेहद घबराये हुए क्यो हो ?' डोरीना ने हिचकॉक की पाकेट बुक को खोलते हुए कहा।

डोरीना को यह पुस्तक बेहद पसन्द थी। हिचकॉक की जिन्दगी भी उस अज्ञात व्यक्ति के जीवन से बहुत मिलती जुलती थी। उनमे फक केवल इतना ही था कि जहा हिचकॉक विद्युत हटरो द्वारा व्यक्तियो की खाल उखडवा देता था वहाँ वह व्यक्ति आश्चयजनक ढग से बेकसूर इसानो को मौत के घाट उतार देता था। जहाँ हिचकॉक का नाम लेने से हिचकी आ जाती थी वहाँ ड्रूमा के नाम से लोग थर थर कांपने लगते और वे अजीब भय के शिकार हो जाते।

वक इससे पहले कि कुछ कहे, तभी 'टी के 140 एक्स ए एम। एफ एम' ट्रासमीटर रिसीवर से आवाज गूंज उठी।

"हैल्लो।" डोरीना ने रिसीवर को उठाते हुए कहा—

"क्या आप डोरीना ही है? थापर इज ओन द फोन।"

"हैल्लो मि० थापर। इतनी रात गये फोन करने की क्या आवश्यकता आ पडी?"

"डोरीना, अभी अभी हमे ज्ञात हुआ कि पहाडी पर बनी हुई 23415 न की इमारत मे 10 मजिल ऊपर एक महिला की हत्या कर दी गयी है।"

"हत्या ? क्यो ? कैसे ?

"फिलहाल मैं कुछ भी नही कह सकता किन्तु तुम शीघ्र ही यह पता लगाओ कि वह महिला कौन थी? और उसकी हत्या किस ढग से हुई है?"

"हैल्लो हैल्लो । उधर से सम्बन्ध विच्छेद कर दिया गया था। उसने ट्रासमीटर रिसीवर को रख दिया।

"वक, अब हमे वहाँ पर जाना ही होगा।" डोरीना ने दृढ शब्दों मे कहा।

वे दोनो सैलाना-लोवर गेट से निकल कर जपोरोफ्रेक्स 966 कार मे जा बैठे। उन्होने कार स्टार्ट कर दी। अब कार सुनसान रोड पर दौड रही थी। उन्हें आश्चर्य तो इस बात पर हो रहा था कि उस महिला ने वही पर रहने का साहस कैसे जुटाया जबकि उस कालोनी के लोग ड्रूमा के भय से भयभीत होकर भाग चुके थे। यहाँ तक कि उन्होने प्रिटोरिया नगर को ही हमेशा के लिये छोडने का निश्चय कर लिया था। इसके पश्चात् वह पहाडी इलाका सदैव के लिये वीरान हो गया। उस पहाडी पर एक सडक बनी हुई थी जो करीब दो हजार फीट ऊपर तक चली गयी थी। जिस कार मे वे बैठे हुए थे, उसकी ध्वनि बहुत कम थी फिर भी उन्हे उस वीरान जगह मे कार की ध्वनि गूजती प्रतीत हुई। शीघ्र ही वे 23415 न की इमारत के समीप पहुँच गये। कार से उतरकर उन्होने 'सिल्वर टोन' बजायी किन्तु भीतर से उन्हे किसी ने प्रत्युत्तर नही दिया। जब किसी ने प्रत्युत्तर नही दिया तो उन्हे विश्वास हो गया कि मि थापर का कथन सही था। उस बिल्डिग की दसवी मजिल के एक कमरे से अवश्य प्रकाश आ रहा था तब उन्होने टोनो के नीचे रखी हुई उडन कुर्सियाँ निकाली। उस कुर्सी

के नीचे कुशन (वायु के गद्दे) लगे हुए थे जिसके द्वारा उतरते समय धचके नही लगते थे। साइड मे (कुर्सी के दोनो तरफ) हवाई मशीन फिट थी जिसके द्वारा वह हवा को तेजी से नीचे की ओर फेंक सकती थी। उस कुर्सी के आगे की ओर एक छड थी जिसके हिलाने पर चालक उसकी न केवल दिशा पर ही नियन्त्रित कर सकता था बल्कि उस कुर्सी पर बैठने वाला उसकी गति पर भी नियत्रण कर सकता था। विशेष प्रकार के बेल्टो के जरिये वे कुर्सी से बँध सकते थे। इस प्रकार की उडन कुर्सी का आविष्कार पेनसिवानिया की एक एयर क्राफ्ट कम्पनी ने किया था। वर्क और डोरीना दोनो उडन कुर्सी पर जा बठे और उन्होने मशीन मे लगे हुए बटन को दबा दिया। अब वे कुर्सियाँ हवा मे ऊपर उठ रही थी और तब वे दसवी मजिल की बालकोनी मे पहुँच गये। उस बिल्डिग की खिडकियाँ नीले हरे मोटे काँच की बनी हुई थी जिसे स्टील की जाली ने ढक रखा था। वर्क ने ज्वलनशील टाच निकाली और उसके बटन को दबा दिया। तब उसमे गहरे लाल रग की बिल्कुल सीधी किरणे निकली। टाच को खिडकी के किनारो पर घुमाने से वहाँ का भाग पिघल गया। वस्तुत वे लेसर किरणे थी जिसका उपयोग करने से न केवल धातु को ही पिघलाया जा सकता था बल्कि उसकी मदद से हीरे के भी तार खीचे जा सकते थे। ये किरणें एल्यूमीनियम ऑक्साइड क्रिस्टल के इलेक्ट्रोन्स को उत्तेजित करके उत्पन्न की जाती हैं। वर्क ने जाली को खीच लिया जो बिना किसी प्रकार की आवाज किये, अलग हो गयी। इसी तरह डोरीना ने काच को वातायन से अलग किया। उन्होने प्लास्टिक के बने हुए दस्ताने और बुलट प्रूफ पहन रखे थे अत उन्हे किसी तरह का खतरा न था। उन्होने पार्करलोन प्लेट युक्त पर्दे को हटाया और अन्दर जा पहुँचे।

जिस रूम मे उन्होने प्रवेश किया, वह एक ड्रेसिंग रूम था। उन्हे वहाँ पर लाश के कोई चिह्न दृष्टिगोचर नही हुए जैसा कि मि थापर ने कहा था। उस रूम मे एक लम्बी फोमिका टोप्ड शल्फ थी जिसने रूम की भीतरी लम्बाई को घेर रखा था। उसकी दीवारें हरे रग से पुती हुई थी और आच्छादन पर सफेद पालिश स्पष्ट चमक रही थी। पार्करलोन पर्दो का आधा भाग हल्की रोशनी से जगमगा रहा था और आधे भाग पर प्लेटों के कारण छाया पड रही थी। छत से लटकती हुई एक विशाल चायनीज चिराग फर्श पर बिछे हुए गहरे हरे कालीन पर रोशनी फेंक रही थी। इसके साथ ही नारगी कलर के शेड से ढका हुआ

स्टील लैम्प ड्रेसिंग शैल्फ पर लाल रग की रोशनी फेंक रहा था। रूम के दाहिनी तरफ की दीवार पर हरे रग से पुते हुए कबर्ड लगे हुए थे। और एक स्टील की चेयर थी जिस पर हरे रग का रेशमी कुशन (गद्दा) लगा हुआ था। ड्रेसिंग शैल्फ पर एक खूबसूरत कवर बिछा हुआ था। और उस पर एक विशाल दपण रखा हुआ था। इसके अतिरिक्त अन्य श्रृगार प्रसाधन रखे हुए थे। यही नही, उन्हे 'टीकाय' व्हिस्की की बोतल भी दिखायी दी। डोरीना ने 'टायलेट' शैल्फ पर दृष्टि डाली तो वह चौंक पडी। वहाँ दो जहर की शीशियाँ रखी हुई थी जिसमे से एक बद थी और दूसरी खुली हुई।

"डोरीना, उस युवती ने आत्महत्या कर ली है।" वर्क ने कहा।

"नही। मैं विश्वास नहीं कर सकती उसकी हत्या की गई है न कि उसने जहर खा लिया है।" डोरीना ने उन जहर की शीशियो पर दृष्टि गडाते हुए कहा।

"लेकिन अब तो हमारे पास सबूत है कि उसने आत्महत्या की है।" वर्क ने डोरीना को घूरते हुए कहा।

"यह एक झूठा सबूत है।" डोरीना ने दृढ शब्दो मे कहा।

उस रूम का निरीक्षण करने के पश्चात् उन्होने इमारत के अधेरे भाग मे प्रवेश किया। स्टील के पेचो को दबाने से दरवाजा खुल गया तब वे एक गेलेरी मे चले गये। जिस समय वे अधेरे गुप्त गेलेरी मे बढ रहे थे, उन्हें एक विचित्र प्रकार की कान के पर्दों को फाड देने वाली और चुहिया के समान तीखी ध्वनि सुनाई दी। डोरीना ने तुरन्त 45 केलिबर रिवाल्वर निकाल लिया। वर्क के एक हाथ में ज्वलनशील टार्च और दूसरी मे ऑटोमेटिक रिवाल्वर थी। वे तेजी से लिफ्ट के सहारे ऊपर की ओर बढे, क्योंकि ध्वनि ऊपर से आ रही थी। जैसे ही वे उस बिल्डिंग की छत पर पहुचे, ध्वनि का आना बद हो गया। कुछ समय के पश्चात् उन्हे फिर वही ध्वनि सुनाई दी जो हर दिशा से आती हुई प्रतीत हुई। उन्होंने उस ध्वनि की ओर रिवाल्वर का ट्रिगर भी दबाया किन्तु वे किसी निश्चित परिणाम पर नही पहुचे तब वे उस ध्वनि की परवाह किये बिना पुन लिफ्ट की सहायता से नीचे उतरे और पुन उसी गेलेरी मे चले गये। तत्पश्चात् उन्होंने ड्रेसिंग रूम के सामने वाले रूम मे प्रवेश किया तभी उनके पाँव एक लाश से टकराये। वे बिजली की भाँति पीछे हटे। उन्होंने टार्च के सहारे स्विच खोजकर उसे ऑन

कर दिया जिससे कमरे मे प्रकाश फैल गया। जिस रूम मे उन्होंने प्रवेश किया, वह गव बैड रूम था।

यह लाश उस युवती की थी जिसके बारे मे थापर ने कहा था। उसकी उम्र करीब सताईस वर्ष की होगी। वह जमीन पर उल्टी पडी हुई थी जिसका एक हाथ टेलीफोन के चोगे पर पडा हुआ था। वहाँ पर एक गोल मेज थी जिस पर हरे रग का सुन्दर कवर विछा हुआ था और उस पर जेकेरेन्डास अफीवन फूलो का गुलदस्ता रखा हुआ था। दो गुलदस्तों के बीच मे एक फाटो रखी हुई थी जो एक विशेप प्रकार के स्टील के फ्रेम मे जडी हुई थी। यह उस युवती का स्नैप था। उस रूम मे एक कार्डलेस 8 ट्राजिस्टर रेडियो का बना हुआ रेडियो डस्क सैट था जिसमे पाकर पेन लगा हुआ था तथा उस स्नैप के आगे ही एक डायरी रखी हुई थी। वर्क ने डायरी को उठाया। तब उसे डायरी के वायें पृष्ठ पर एक स्नप दिखायी दिया जो किसी युवक का था। उस युवक के स्नैप पर हस्ताक्षर थे जो अस्पष्ट थे फिर भी डोरीना ने उसे पढ लिया। वे हस्ताक्षर पेगीमेशन के थे। दाहिनी पृष्ठ पर उस युवती ने अपना नाम लिख रखा था जिससे वर्क को पता चल गया कि वह डायरी लिट्जी की है।

उन्होंने लिट्जी की लाश का अच्छी तरह से निरीक्षण किया। इसके पश्चात् वे ड्रेसिंग रूम मे होते हुए पुन बालकोनी मे पहुच गये। वहाँ पर उडन कुर्सियाँ पडी थी जिन्हे उन्होंने ड्रेसिंग रूम मे प्रवेश करते समय वही पर छोड दिया। वे दोनो अपनी-अपनी उडन कुर्सी मे जा बैठे और साइड मे फिट मशीन का बटन दवा दिया। उन्हें नीचे उतरने में एक मिनट से अधिक समय नही लगा। जब वे नीचे उतरे तो उन्हें धक्के नही लगे, क्योंकि उनमें एयर कुशन लगे हुए थे। तब वे अपनी जपोरो भ्रस-966 कार मे जा बैठे और अब उनका रुख अपने-अपने निवास स्थान की ओर था। वर्क ने टाच की सहायता से एच मेनुवल वाच पर दृष्टि डाली जो अभी रात्रि के दो बजे का सकेत कर रही थी अधिक रात होने के कारण उन्होंने इस घटना का सिलसिला वही खत्म कर दिया।

दूसरे दिन सी आई डी इन्सपेक्टर मि थापर ने सिलवरटोन घण्टी बजायी, इसके साथ ही डोरीना ने दरवाजा खोला। वह उन्हें सम्मान-पूर्वक भीतर ले गयी तत्पश्चात् उन्होंने डायनिंग रूम मे प्रवेश किया।

मि थापर एक अनुभवी इन्सपेक्टर थे जिन्हे, सी आई डी मे काय करते हुए 15 वष से अधिक बीत चुके थे । अब भी उनके चेहरे से गोव टपकता था । मि थापर को डोरीना पर पूण विश्वास था अत उन्होंने ट्रान्समीटर द्वारा उस लाश का निरीक्षण करने हेतु सदेश भेज दिया था । मिस डोरीना ने मेज पर रखी हुई कॉलबेल बजायी तभी उसके निजी सेवक वाको ने प्रवेश किया । डोरीना ने उसे नाश्ता तैयार करने का आदेश दे दिया ।

डोरीना ने सिर पर यूनिवसल हैड बैन्ड बांध रखी थी तथा चमकीला सफेद रग का चूडीदार कमीज पहन रखा था । वह कमीज कार्डन-काटन का था जिस पर मैक्सिकन स्टाइल मे एम्ब्रोयडरी की हुई थी । उस मैक्सिकन स्टाईल के कमीज की बाहे नीले हरे और लाल कलर की थी ।

मि थापर एक स्विग आर्म चेयर पर बैठ गये तब उन्होंने उक्त घटना का सिलसिला पुन जारी रखते हुए प्रश्न किया ।

"क्या तुम्हे उस युवती के बारे मे कुछ पता चला ?"

"हाँ मि थापर वहाँ पहुचने के पश्चात् हमे उसकी लाश अवश्य मिली, यही नही मुझे एक डायरी का भी पता चला ।"

"हैलो मि थापर आपको लिटजी की हत्या का इतना शीघ्र कैसे पता चला ?" वर्क ने भीतर प्रवेश करते हुए प्रश्न किया ।

मृत्यु के ठीक पाँच मिनट पहले लिट्जी ने मुझे फोन किया था और फोन करते समय ही उसकी हत्या हो गयी ।

मि थापर, लिट्जी ने आपको फोन पर क्या कहा था । वर्क ने वेल्वेट चेयर पर बैठते हुए कहा ।

यही कि उसकी हत्या करने का प्रयास किया जा रहा है किन्तु हत्या करने वाला अज्ञात है । यद्यपि वह दृढ विश्वास के साथ नही कह सकती कि हत्यारा कौन है ? किन्तु उसे इतना सकेत अवश्य कर दिया गया था कि यदि वह उस इमारत को छोडकर नही चली जायगी तो उसकी हत्या कर दी जायेगी । उसने चेतावनी देने वालो को कहीं नही देखा था किन्तु उसकी धमकियो को अवश्य सुना था । उसे बालकनी मे हिलती छाया अवश्य दिखायी दी थी तब लिटजी ने उस छाया का पीछा भी किया लेकिन वह असफल रही । जब उसने उस छाया का अट्टहास सुना तो वह भय से चीख उठी—'डु रा टो' तब उसने बैड रूम मे पहुचकर अपनी सुरक्षा के लिये फोन किया ।

मि थापर शीघ्र कीजिये अतिशीघ्र । यदि आपने देर की तो आप मेरी लाश के अतिरिक्त और कुछ नही पायेंगे । मि थापर मुझे एक बोलती छाया अवश्य दिखायी दी थी वे आकृतिया अज्ञात और अदृश्य है, मैं केवल इतना जानती हू कि डू मा ऽऽ । वह चीख उठी और तभी उधर से फोन का सबध बद हो गया । तब मैं समझ गया कि वह मौत के पजो का शिकार हो चुकी है ।

समझ मे नही आता कि यह डूमा और डूराटो किस तरह का भय है ? वर्क ने झल्लाते हुए कहा ।

"मि थापर हर किसी की जबान पर केवल ये दो ही शब्द हैं जिसके बारे मे वे स्वय नही जानते कि वह क्या है ? किन्तु ये शब्द ही उनके भ- को तीव्र गति से बढा रहे हैं । आश्चर्य तो यह है कि अपराधी इतना चतुर हैं कि हत्या होने के झूठे सबूत पेश करता है और वे झूठे सबूत इस तरह से पेश किये जाते है कि अविश्वास का कोई कारण ही नही उपजता कि व्यक्ति की किसी गलती के कारण हत्या हुई है।" डोरीना ने हिचकॉक के मुख पर दृष्टि डालते हुए कहा ।

"मि थापर, अपराधी सवज्ञ तो होता नही, कही न कह वही छोटी ही सी भूल कर बैठता है । लेकिन इस अपराधी ने सवज्ञ होने मे कहीं कसर नही उठा रखी है और यही कारण है कि पुलिस उस हत्यारे को पकडने के नाकामयाब हो चुकी है ।" वर्क ने मि थापर की ओर नजर उठाते हुए कहा ।

"मि थापर, अपराधी न ही केवल चतुर है अपितु उसने एक बहुत बडी शक्ति सचित कर रखी है । यदि ऐसा नही होता तो क्या कारण है कि यहाँ पर परमाणु रियेक्टर होने के बावजूद भी पुलिस उस महल मे घुसने का साहस नही जुटा पायी है ।" डोरीना ने कहा ।

"यह एक अत्यन्त जटिल समस्या है जो दिन प्रतिदिन जाल की तरह उलझती ही जा रही है और इसका प्रमुख कारण यह है कि एक अत्यधिक विशाल शक्ति शीशमहल के आकर छिप गयी है ।" मि थापर ने एस टी डयुपोन्ट लाइटर से फिलिम मोरिस सिगरेट को जलाते हुए कहा ।

तभी वाको ने एक ट्रे के के साथ मे प्रवेश किया जिसमे उत्तम प्रकार की डिजाइन के कप-प्लेट रखे हुए थे । वाको एक हट्टा-कट्टा व ताकतवर हब्शी था जो अफ्रीकन जाति के जुलूज परिवार का एक सदस्य था । यही नही, उसमें असीम साहस भी था और वह हमेशा मौत को

चुनौती देने के लिये तैयार रहता था। यद्यपि वह काला और बदसूरत था फिर भी उसने अपनी सेवा से डोरीना को प्रसन्न कर लिया था। यही नहीं, वह उसके हर दुःख-सुख मे हाथ बँटाता था और यही कारण था कि वह डोरीना के लिये एक वरदान सिद्ध हुआ। ट्रे को गोल मेज पर रखकर वह "क्वालक्वेस्ट फैशन" स्वीपर से बेड रूम की सफाई करने चला गया।

"डोरीना क्या तुम लिट्जी की लाश के बारे में कुछ बता सकती हो? तुम वहाँ किस तरह से पहुँचे? क्या तुम्हे वहाँ डायरी के अतिरिक्त और कुछ भी मिला?" मि थापर ने फिलिप मोरिस का धुँआ छोडते हुए प्रश्न किया। तब उन्होंने सब कुछ विस्तार के साथ बतलाया। इसके पश्चात् डोरीना ने लाश के बारे मे बताना शुरू किया।

जसे ही हमारे पाँव लाश से टकराये हम बिजली की फुर्ती से पीछे हटे। उस समय मेरे हाथ मे 45 केलिबर रिवाल्वर थी और वर्क के हाथ के ज्वलनशील टार्च। शीघ्र ही हमने स्विच को खोज लिया और उसे ऑन कर दिया। और तब हमे एक लाश फर्श पर उल्टी पडी हुई दृष्टिगोचर हुई थी।

लिट्जी ने बालो मे 'फिफको एन गो' कंघा लगा रखा था। उसके बाल गहरे भूरे रंग के तथा 'स्विटज कट' थे। उसने रूसेट का लाल चूडीदार कमीज पहन रखा था जो कार्डिन स्टाइल मे बना हुआ था। कमीज के अग्र भाग पर काली, लाल और सफेद धारियाँ थी। उसने धारियो से मैच करता हुआ हुड शेप्ड एक गोल दुपट्टा सिर पर ओढ़ रखा था। उसी से मैच करता हुआ फ्रेंच स्टाइल मे बना हुआ पेंट पहन रखा था। उसने पावो मे ऊँची एडी के तथा लाल रंग के जूते पहन रखे थे।

"उसकी आँखे गेजेली अर्थात् छोटे मृग की आखो के समान थी तथा वे नीली आँखें मेरी प्यारी बिल्ली अमीथिया से मिलती थी और मेरा ख्याल है कि उसका स्वभाव भी मेरी इस मतवाली बिल्ली की तरह होगा।" वर्क ने एक ही सास मे दबी हुई तथा मद आवाज के साथ हँसते हुए कहा।

"ओह! तो क्या वर्क तुमने उस ब्याक्स यूक्स (सुन्दर स्त्री) को अमीथिया समझ लिया।" डोरीना ने मुस्कराते हुए कहा।

"ओ यस डोरीना, फर्क सिफ इतना ही था कि मेरी प्यारी अमीथिया एक नासमझ मचलती बिल्ली थी किन्तु लिट्जी एक न्यूबाइल यग औरत थी।" वर्क ने केक खाते हुए कहा।

इस पर मि थापर ने ठहाका लगाया।

"मि थापर इससे आप क्या अनुमान लगाते हैं?" डोरीना ने विचित्र प्रकार के कपो मे एक केटली से चाय डालते हुए कहा।

"यही कि लिटजी टयूटोनिक जाति के परिवार की एक सदस्या थी जिसमे जरमन, स्केन्डिनेविया और डच तीनो जातियो (रेसेज) का रक्त मिला हुआ था।" थापर ने चाय के प्याले को उठाते हुए कहा।

"डोरीना तुम्हे डायरी के अतिरिक्त और कुछ भी मिला?" मि थापर ने चाय पीते हुए पूछा।

"हाँ, मुझे उस डायरी के अतिरिक्त ड्रेसिंग शेल्फ पर दो जहर की शीशिया भी मिली।" डोरीना ने उन शीशियो को मेज पर रखते हुए कहा जो उसके कोट की भीतरी जेब मे पडी हुई थी।

"मि थापर, इनमे से एक शीशी खुली हुई थी तथा दूसरी बद। जहा तक प्रमाण का सवाल है, खुली हुई शीशी इस बात की गवाह है कि लिट्जी ने फोन करने से पूर्व इस जहर को खा लिया था और उसका असर फोन पर बात करते समय हो चुका था और तभी उसका समस्त शरीर शिथिल हो गया।" वर्क ने कहा।

"नही! यह कभी नहीं हो सकता। वह इतनी कायर नही थी कि जहर खाकर आत्महत्या करले। फोन पर कही हुई बातो से पता चलता है कि वास्तव मे उसकी हत्या की गयी है। उसके अंतिम शब्द भय से आक्रान्त थे। यदि उसने जहर खाया होता तो उसे फोन करने की क्यो आवश्यकता होती? मरने से पूव उसके मुँह से चीख क्यो निकल गयी थी।" मि थापर ने ऊँची आवाज मे आश्चर्य व दृढ विश्वास के साथ कहा। वे हाथ मे चाय का प्याला पकडे हुए थे।

"किन्तु मि थापर इसमे अन्य और क्या सबूत है कि जहर की शीशी खुली हुई थी। क्यो उसे जहर की शीशी खोलने की आवश्यकता हुई?" वर्क ने चाय का प्याला तश्तरी पर रखते हुए कहा।

"मि थापर, ऐसा हो सकता है कि बहुत समय पहले से ही उसने शेल्फ मे उन सील्ड शीशियो को रख रखा हो और उसकी आवश्यकता

उसे रात को पढ गयी हो।" डोरीना ने चाय मे कुछ चीनी डालते हुए कहा।

"किन्तु डोरीना, उसकी चीख क्या इस बात को साबित नही करती कि डुराटो वहाँ पहुँच चुका था, जिसे देखते ही उसके मुख से चीख निकल गयी और उसी भयाक्रान्त डुराटो ने विचित्र ढग से लिट्जी का खून कर दिया था।" मि थापर ने पुन सिगरेट को लाइटर से जलाते हुए कहा।

"यह इस बात को सिद्ध करती है कि डुराटो न केवल शक्ति-सम्पन्न साधनों का ही सम्राट है बल्कि एक वज्ञानिक भी है।" डोरीना ने चाय के प्याले को प्लेट मे रखते हुए कहा।'

अब तक वे तीनो नाश्ता कर चुके थे। कुछ देर के लिये उन तीनो ने चुप्पी साध ली।

"वक उस समय तुम इतने घबराये हुए क्यो थे। तुमने इस बारे मे कुछ नही बताया?" डोरीना ने वक से प्रश्न किया।

तब वर्क ने उसी कार चालक की घटना सुनायी। यही नही उसने एक भयानक व्यक्ति को कार मे बठा हुआ देखा था। उस समय उसके होश फाख्ता हो गये जिस समय उसने कार चालक को ड्रूमा का शिकार होते हुए देखा। इतना कठोर दिल करने के बाद भी क्यो उसका साहस डगमगा गया, इसका कारण वह स्वय नही समझ पाया था। उस समय वह सिर से पाँव तक काप रहा था क्योकि उसने भी ड्रूमा के बारे मे बहुत कुछ सुना था। उसके मस्तिष्क मे केवल एक ही प्रश्न था कि क्या वह भयकर व्यक्ति अदृश्य किरणों को मस्तिष्क पर छोडता है जिसके उनका मानसिक सतुलन बिगड जाता है और वे एक अजीब भय के शिकार हो जाते हैं। उस आँखो देखी घटना के पश्चात् ही वह डोरीना के निवास स्थान पर पहुचा था और यही कारण था कि डोरीना ने उसे काँपते हुए देखा था।

उसी रात वे पुन डायनिंग रूम मे जा बठे, तब डोरीना ने उस डायरी के पृष्ठो को पलटना शुरू किया। इसके पश्चात् उसकी दृष्टि बीच के किसी एक पृष्ठ पर स्थिर हो गयी, जिसे डोरीना ने पढना प्रारम्भ किया

तब डुराटो ने पेरीमेशन को धमकी दी कि यदि उसने उस सूत्र के बारे मे कुछ भी नही बताया तो उसे भयकर ड्रूमा किरणों का शिकार होना पडेगा। यही नही वह पेरीमेशन के समस्त परिवार को

नष्ट कर देगा और उनका एक चिह्न भी इस धरती पर नहीं रहने देगा।

"डुराटो ! तुम्हें पता होना चाहिये कि मेरा परिवार यहाँ से कोसो मील दूर रहता है, तुम उनकी छाया को भी नहीं छू सकते।" पेरीमेशन ने क्रोधपूर्वक तेज आवाज मे चिल्लाकर कहा।

"पेरीमेशन ! शायद तुम्हे यह पता नही है कि मेरे लिये दस हजार मील का फासला केवल दस मील के फासले के बराबर है और यदि मैं चाहू तो केवल दस मिनट मे इस समस्त ससार को अपने पाँवा के तले झुका सकता हू।" डुराटो की आँखों से क्रोध की चिनगारियाँ निकल रही थी।

"इ म पा सी व ल ।" पेरीमेशन ने चिल्लाकर कहा।

"हा हा हा हा ।" डुराटो का अट्टहास उस कम्पार्ट-मेन्ट मे गूज उठा।

"डोरीना, क्या इससे यह पता नही चलता कि पेरीमेशन और डुराटो मे जबरदस्त सघर्ष चल रहा है और डुराटो पेरीमेशन से उस सूत्र को प्राप्त करने की कोशिश कर रहा है।" मि थापर ने सिगरेट का कश लेते हुए कहा।

"बक, अब इस डायरी को पढे बिना मुझे एक क्षण के लिये भी चैन नही हो सकता। तुम देखते नही कि इस डायरी की एक-एक लाइन मे कितना रहस्य छुपा हुआ है। इस डायरी मे न केवल रहस्य और रोमाचकारी पृष्ठो का ही समावेश है बल्कि लिट्जी और पेरीमेशन की यथार्थ जिन्दगी का भी चित्रण किया हुआ है।" डोरीना ने उस डायरी के कुछ पृष्ठो को बदलते हुए कहा।

'अब हमे पता चला कि डुराटो स्वय एक दैत्याकार और भीम-काय मनुष्य है और जिस किरणो का वह उपयोग करता है उसका नाम है—ड्रूमा। और इन्ही दो शब्दो ने यहाँ के निवासियो को बुरी तरह से भयभीत कर रखा है।" मि थापर ने सिगरेट का धुआ छोडते हुए कहा।

"यही नही उस किरण मे इतनी बडी शक्ति है कि यदि वे हमारी किसी भी वस्तु से टकरा जाये तो वह वस्तु भयकर आवाज के साथ सौ फीट ऊपर उछल सकती है जिसके कुछ समय पश्चात् खुफिया विभाग

को उसके मलवे के अतिरिक्त अन्य कोई चिह्न
उन दानवी किरणो के बारे मे अपने विचार प्र

"लेकिन मेरा विचार है कि वे किरणें
जबरदस्त प्रभाव छोडती हैं। जब वे किरणें ह
पर पडती हैं तो हमारे न्यूरोन उत्तेजित हो
मानसिक सन्तुलन खो बैठते है और यही कार
भय के शिकार हो जाते हैं।' वर्क ने कहा।

डोरोना ने लिट्जी की ऑटोबायोग्राफ
उसका साराश इस प्रकार है—

वह आज सत्ताईस वर्ष की हो चुकी है ले
जीवन मे कभी भी उसने चैन की सास नही
पूर्व उसका जन्म वियनानगर मे हुआ था और
पिता कपडे का व्यापार करते थे। वियना मे ह
फैक्टरी थी। सब कार्य ठीक ढग से चल रहा
वियना छोडकर भागना पडा क्योकि उन्होने वह
विरोध किया था। उनकी कम्युनिज्म मे गहरी
पेरिस की एक सर्वश्रेष्ठ पत्रिका के सम्पादन का
ले लिया, अत वे पेरिस चले गये। इस काय से
हुई किन्तु उनका दिल शीघ्र ही इस कार्य से उच
चले गय। वहा वह दो वप मे ही सनिक अफ
लिट्जी बारह वर्ष की हो चुकी थी। वे कभी भी
किसी न किसी कारणवश उन्हें वहा से भागना

लिट्जी ने अपनी डायरी मे इस बात का
पास एक नीली आंखो वाली बिल्कुल सफेद अंग
ग्रिमेल्किन बिल्ली थी। वह हमेशा उसे अपने
ग्रिमेल्किन के आकषण का कारण था उसके घने-चि
आखें तथा अच्छी भूख। लिट्जी हर रोज ग्रिमे
की गोलियाँ देती थी। इससे उसकी विकास गति
मे वृद्धि हो जाती थी। यही नही किट
न केवल उसे एक्जिमा से सुरक्षित रखती थी अ
इसे खाना पसन्द करती थी। तब हर किसी ने का
आँखे बिल्कुल ग्रिमेल्किन की तरह प्यार बरसाने
साथ ही लिट्जी मे अनेक परिवतन हुए और र

नही मिले।" डोरीना ने
कट किये।
हमारे मस्तिष्क पर बहुत
मारे सेरिब्रल गेन्गलियाँन
जाते है, अत हम अपना
ण है कि हम एक अजीब

पढना प्रारम्भ किया।

किन उन सत्ताईस वर्षं के
ली। ठीक सत्ताईस वर्ष
उस समय लिट्जी के
उनकी सन कॉटेज की
था किन्तु एक दिन उन्हे
ा की सरकार का कडा
आस्था थी। तब उन्होने
कायभार अपने हाथो मे
उन्हे बहुत ख्याति प्राप्त
गया और तब वे स्पेन
सर बन गये। तब तक
एक शहर मे नही रहे,
डता।
उल्लेख किया कि उसके
प्यारी और सुन्दर
पास रखती थी और
कने बाल और स्वच्छ
ल्किन को किट जाइम
और जीवन शक्ति मे
जाइम की गोलियाँ
पितु ग्रिमेल्किन स्वय
ा था कि लिट्जी की
वाली हैं। समय के
मय निकलते देर ही

क्या लगती है ? एक दिन उसकी भेंट पेरीमेशन से हो गयी । उस समय वह अट्ठारह वर्ष की हो चुकी थी ।

उनकी सबसे प्रथम भेंट पेरिस की एक ट्रेन मे सफर करते हुए हुई थी । दोनो ही एक फर्स्ट क्लास के कम्पार्टमेंट मे बैठे हुए थे । दोनो की ही जवानी चरम सीमा पर पहुँची हुई थी । पेरीमेशन की जिन्दगी एक तूफान की तरह थी और उसी तूफान मे लिट्जी बह चली क्योंकि पेरीमेशन उसकी जिन्दगी मे एक तूफान की तरह आया था । वे दोनो, एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होते गये और ठीक दो वर्ष पश्चात् वे जब नदी पर चलने वाली अनोखी नौका 'राडूगा' मे सैर कर रहे थे, पेरीमेशन ने अपन तूफान और आश्चर्य से भरी हुई जिन्दगी का लिट्जी से जिक्र किया जिसकी जिन्दगी ने लिट्जी के ऊपर बहुत गहरा असर डाल दिया और तभी उन दोनो ने विवाह करने का फैसला किया । राडूगा पानी के तल को नही छूती क्योंकि उसके नीचे वायु का गद्दा लगा रहता है । इस समय वे हंगरी की राजधानी बूडापेस्ट की एक झील मे शाम के समय राडूगा मे बैठे हुए सैर कर रहे थे ।

लिटजी ने अपनी डायरी मे यह जिक्र किया कि पेरीमेशन और डुराटो की प्रथम भेंट दक्षिण अमरीका के रायोडिजेनरा के समीपवर्ती शहर केम्पास मे हुई थी । उस उस डुराटो जहा एक बहुत बडी शक्ति जुटाने मे लगा हुआ था, वहा पेरीमेशन एक अमरीकी वेधशाला मे बाह्य अंतरिक्ष से आने वाले संदेशो को केन्द्रित करने मे कायरत था, किन्तु किस बात ने डुराटो को पेरीमेशन का एक भयंकर और खूखार शत्रु बना दिया । इस बात का डायरी मे कही पर जिक्र नही किया गया था ।

पेरीमेशन के पिता एक बहुत बडे वैज्ञानिक थे जो समुद्र मे गुप्त रिसर्च कर रहे थे । उनकी रिसर्च कोई ओसनोग्राफिक (सामुद्रिक) रिसर्च नही थी, बल्कि वह एक विचित्र प्रकार की भाषा का निर्माण कर रहे थे क्योंकि उन्हे इस बात का दृढ विश्वास था कि क्वासार और पल्स ग्रहो से आने वाली रेडियो तरंगें इस बात को प्रमाणित करती थी कि वहा पर पृथ्वी के निर्माणकारी तत्त्व मौजूद हैं । यही नही उन्हे बाह्य अंतरिक्ष से आने वाले अनेक रेडियो संदेश भी प्राप्त हुए जिन्हे उसने विशेष ध्वनि यंत्रो मे कैच कर उसकी रिकार्डिंग करायी । उनका अनुमान था कि ये रेडियो संदेश किसी अति विकसित बुद्धिजीवियो के द्वारा भेजे जाते थे जो बाह्य अंतरिक्ष के अनेक रेडियो तारको मे रहते

थे। लेकिन यह उनका बडा दुर्भाग्य था कि इससे पूर्व कि वह उस कार्य को पूर्ण करें उन्हें बन्दूक की गोली का शिकार होना पडा।

किन्तु पेरीमेशन हताश नही हुआ, उसे पिता के बनाये हुए सूत्रो से बहुत सहायता मिली। उस कार्य का केवल कुछ अश ही शेष रह गया था। पेरीमेशन उन टेप रिकाड्स और सूत्र को लेकर सबसे पहले हगरी गया किन्तु वहा भी वह एक वर्ष से अधिक नही रुक सका, क्योंकि अदृश्य शक्तियाँ उसे तग करने लगी। तब उसने पेरिस की ओर प्रस्थान किया और इसी समय उसको लिट्जी से भेंट हुई थी। हगरी से पेरिस आने के पश्चात उन दोनो ने यही पर विवाह कर लिया। इसके पश्चात् पेरीमेशन ग्रेट ब्रिटेन चला गया लेकिन वहाँ उसकी सबसे बडी बाधा अनुचित जलवायु थी। वहाँ उसे क्रानिक ग्रेन्युलोसाइ-टिक लेक्यूमिया के भयकर रोग का शिकार होना पडा। पेरीमेशन ने तुरन्त अपना इलाज लन्दन के प्रसिद्ध हॉस्पिटल ग्रीनविज मे कर-वाया जो कि डाइनिंग-स्ट्रीट पर बना हुआ था। उसका इलाज वहाँ के ख्यातिप्राप्त डॉ अलेक्स कम्फट ने किया। उन्होने उसका एफ डी ए की गोलियो द्वारा उपचार किया और इसी एफ डी ए वरसाइट (पिपोब्रोमन) ने दवा का काम किया। कुछ स्वस्थ होने पर डॉ कम्फट ने वह स्थान छोडने की राय दी। तब वह लिट्जी के साथ दक्षिण अमरीका चला गया। अब तक वह दस हजार से अधिक सूक्ष्म तरगित (माइक्रोवेव) रेडियो सकेतो को टेप कर चुका था। तब ठीक पाँच वर्ष पश्चात् उसने वह सूत्र खोज निकाला जिसके द्वारा उसके सबध बाह्य अतरिक्ष के प्रति विकसित मानव जाति से स्थापित हो गया। इसी के मध्यान्तर में उसकी भेंट डुराटो से हो गयी थी। पेरीमेशन ने उस सूत्र को गुप्त रखा, लेकिन तभी से उसने बाह्य अतरिक्ष मे इण्टर स्टीलर कम्यूनिकेशन स्थापित करने के लिये अपने सूक्ष्म तरगित माइक्रोवेव रेडियो सदेश भेजना शुरू कर दिया और तब उसे बाह्य अतरिक्ष से वह आश्चर्य से परिपूर्ण रहस्य ज्ञात हुए जो पृथ्वी पर अभी भी अज्ञात हैं।

यह सफलता उनके लिये पहाड बनकर आई और अज्ञात शक्तियो ने उन्हे इतना तग कर डाला कि उन्हे अमरीका छोडने पर विवश होना पडा। इसके पश्चात् वे दोनो प्रिटोरिया मे जा बसे। अब पेरीमेशन को अज्ञात शक्तियो से सघर्ष करने के लिये तैयार होना पडा। उन्होने अपना निवास स्थान इसी प्रिटोरिया की पहाडी को चुना। उसी स्थान पर

लिट्जी ने अपनी ग्रोटोबायोग्राफी लिखना प्रारम्भ किया था। कुछ ही महीनो पश्चात् उसी पहाडी पर एक शीश महल बनकर तैयार हुआ और उसमे वह अज्ञात शक्ति आकर छिप गयी। अब उस शक्ति ने भयकर रूप ले लिया था और वह तूफान की तरफ यहाँ के निवासियो को उडाती हुई ले जा रही था। वहाँ के निवासियों मे निरन्तर भय फैलता जा रहा था।

और एक दिन जबकि वे डिनर ले रहे थे, स्वय डूराटो उनके रूम मे प्रकट हुआ और तब उसने धमकी दी जिसका जिक्र ऊपर किया जा चुका है। इसी के एक सप्ताह पश्चात् जबकि पेरीमेशन और लिटजी हाइड्रोफाइल नौका 'मीटियर' मे स्टील की बनी हुई विशेष प्रकार की गद्देदार सीट पर बैठे हुए सैर कर रहे थे तभी अचानक मीटियर की गति स्वत ही बहुत तेज हो गयी और वह आपिएज नदी के स्वच्छ पानी को चीरती हुई आगे बढने लगी। तभी मीटियर ड्राइवर के मुह से चीख निकल गयी डू मा । यही नही हाइड्रोफाइल 25° के कोण पर मुड गयी।

"पेरीमेशन ! अब तुम्हारा अत समीप आ गया है। अब भी एक मौका है यदि तुम मौत से छुटकारा पाना चाहो तो ! "अवाइज ला फिन !! अवाइज लाफिन !! ' (अब तुम मौत की प्रतीक्षा करो)।" मीटियर के जिस कम्पार्टमेन्ट मे पेरीमेशन और लिटजी बैठे हुए थे, उसमे डूराटो की आवाज गूज उठी।

"डूराटो, ससार की कोई भी शक्ति मुझसे उन सूत्रों को नही छीन सकती।" पेरीमेशन ने दृढ शब्दो मे कहा।

"पेरीमेशन ! शायद तुम्हे यह पता नही है कि मेरी शक्ति के समक्ष वाह्यअतरिक्ष के निवासी तक झुक गये हैं, तुम्हारी तो औकात ही क्या है ?"

"डूराटो ! यदि मैं मौत की गोद में भी चला गया तब भी तुम उस सूत्र को प्राप्त नही कर सकोगे।"

"पेरीमेसन ! अब मौत का दरवाजा तुम्हारे लिये खुल चुका है।" डूराटो ने प्रकट होते हुए कहा।

"लिटजी ! तुम चिंता मत करो, यदि मैं जीवित रहा तो डूमा और इस नीच डूराटो दोनो को समाप्त कर चैन की सास लूगा ।" पेरीमेशन ने दात पीसते हुए कहा, तभी अदृश्य किरणे उसके मस्तिष्क से टकरायी। पेरीमेशन के मुह से चीख निकल गयी। लिट्जी के देखते देखते ही पेरीमेशन और डूराटो दोनो अदृश्य हो गये।

"पेरीमेशन !" वह चीख उठी और उसने उस कम्पार्टमेन्ट मे 45 कोल्ट रिवाल्वर से कारतूस भी छोड़े किन्तु उसका प्रयास अर्थहीन था। हाइड्रोफाइल नौका 25^0 से 30^0 के कोण पर घूम गयी। तभी लिट्जी ने सुरक्षा विभाग को स्वय की सुरक्षा हेतु रेडियो सदेश भेजे। कुछ ही मिनटो के उपरात नदी मे सेफ्टी बोट तेजी से मीटियर की ओर बढी। तब लिट्जी नदी मे कूद पडी और सेफ्टी बोट के चालको ने लिट्जी को नदी पर मे उठा लिया लेकिन मीटियर हमेशा के लिये नदी मे डूब गयी।

अब लिट्जी के जीवन मे गहरे दु ख के बादल घिर आये थे। अब वह उदास हो गयी थी और खोयी-खोयी रहने लगी। वह केवल एक ही आसरे पर जी रही थी कि पेरीमेशन एक न एक दिन अवश्य डूमा को खत्म करके पुन लौट आयेगा और उसके दु खी जीवन को फिर से हरा भरा कर देगा। यही नहीं, वह स्वय के उन दो बच्चो के लिये भी जी रही थी जो अभी लिट्जी की मा क्रिस्टाइन के सरक्षण मे रह रहे थे। वे बच्चे केवल छ महीने ही लिट्जी की गोद मे पले थे और तब उन्हे पेरिस पहुचा दिया गया ताकि वे उनके शत्रुओ से सुरक्षित रहे। अब तक वे पाच वर्ष के हो चुके थे और अब लिट्जी का मन रह-रहकर उन बच्चो से मिलने के लिये व्याकुल हो उठता। तब वह उन बच्चो के भोले-भाले चेहरो को देखने के लिये तरसने लगी। उसने प्रिटोरिया का पता किसी को नही दिया, यहाँ तक कि उसकी माँ क्रिस्टाइन भी उसके निवास स्थान के बारे मे अनभिज्ञ थी, क्योकि वह इस बात को अच्छी तरह जानती थी कि यदि उसने पत्र-व्यवहार किया तो उसके बच्चो की जिन्दगी खतरे मे पड सकती थी। यद्यपि उसकी तीव्र इच्छा पेरिस जाने की हो रही थी किन्तु वह विवश थी। यदि वह पेरिस पहुँच जायगी तो दुश्चिन्तायें उसका कभी पीछा नही छोडेंगी और हर क्षण उसे परेशान करती रहेंगी। उसे इस बात का सदेह था कि वहाँ पहुँचने पर क्या वह पेरीमेशन के सदेशो को प्राप्त कर सकेगी ? यदि ऐसा नही हुआ तो वह पेरिस मे एक पल के लिये भी नहीं ठहर सकती थी। अत उसने प्रिटोरिया मे ही रहना उचित समझा।

अकेलेपन ने उसके दिल को वीरान कर दिया था। उसे अपने बच्चों की याद सताने लगी। वे कहाँ पर पढ रहे होगे ? क्या उन्हे लिट्जी की याद नही आती होगी ? वह सोचती अब तो उसके बच्चे समझदार हो गये होगे। जब वे क्रिस्टाइन से उसके बारे मे पूछते होगे

तो वह क्या जवाब देती होगी ? जब भी कभी वह उनके बारे मे सोचती तो माँ का प्यार, प्यार पाने के लिये तरस उठता । उसकी पलकें गीली हो जाती और आँसू मोती बनकर उसके गुलाबी गालो से झर-झर करके बहने लगते, तब उसकी आँखो के सामने यादो के आइन पर बिम्ब उतर जाते । वह उन छोटे-छोटे बच्चो की ग्रिमेलिकिन केट के समान प्यार बरसाने वाली भूरी आँखो (डूव ग्रे आइज) को कैसे भूल सकती थी । दूसरी ओर पेरीमेशन के साथ बितायी रातो को कैसे भूल सकती थी । उसके समक्ष पेरिस, फ्रांस और बूडापेस्ट मे बितायी शामो के बिम्ब यादो के आइने पर एक के बाद एक उभरने लगे । और उसके गुलाबी गालो से पानी तीव्र आवेग के साथ बहने लगा । यादो के आयने पर फ्रांस के एक विशाल थियेटर मे किये हुए अजेर्बेयजेनियन एक सोवियत डांस के बिम्ब उभरने लगे । फ्रांस मे रहते हुए भी उसने इस सोवियत डांस को किस खूबी से किया इसे वह स्वय ही नही जानती थी अपितु समस्त फ्रांस जानता था । लेकिन अब सब कुछ छूट चुका था और उसकी जिन्दगी केवल वीरान बनकर रह गयी ।

केवल लिट्जी ही जानती थी कि किस तरह बडा दिल करके वह प्रिटोरिया आयी थी और अब तो डुराटो के वज्रपात उससे सहन नही किये जाते तथा पेरीमेशन के अदृश्य हो जाने के पश्चात डुराटो का भय उसके मन के भीतर घर करने लगा । आखिर वह भी तो नारी ही थी कब तक वह अपने दिल को पत्थर बना सकती थी । वह डुराटो की डूमा किरणो से थर-थर कापने लगती और उसके होठ फडकने लगते । प्रिटोरिया करीब करीब वे सभी नागरिको ने वह पहाडी इलाका खाली कर दिया था, अब लिटजी बिल्कुल अकेली और एक वीरान जगह मे रह रही थी जिसमे केवल सौ फीट ऊपर ही दिल को दहला देने वाले इसान उस शीश महल मे आकर छिपे हुए थे । किन्तु क्या वह उस सौ फीट का फासला भी तय कर सकती थी । नही, यदि उसने अपने निवास स्थान के दरवाजो को भी खोल दिया तो वह डूमा का शिकार हो जायेगी । जब कभी भी वह शीश महल के वातायन मे किसी मानव आकृति की छाया को भी देख लेती तो न ही केवल उसके होठ फडकने लगते बल्कि उसका रोम-रोम काप उठता था । अब उसे यहाँ तक सदेह होने लगा कि वह स्वय उसके बच्चो की कबूतर की आँखो के समान प्यार बरसाने वाली (डूव ग्रे) आँखो को नही देख सकेगी । तब उसने अपनी डायरी मे लिखा कि—

"प्रिय मेशन ! मुझे बताओ कि तुम कब यहाँ आ रहे हो ? मेशन, मुझे देखो, मेरी आँखों मे झाँक कर देखो, वे बच्चे माँ का प्यार पाने के लिये तरस रहे हैं । मेशन, तुम मुझे अकेले छोडकर कहाँ अदृश्य हो गये अब और अधिक सहन नही किया जा रहा है, मेशन, कब तक सहन करू ? मैं इन चार दीवारो से घिर गयी हूँ । मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि ये दीवारें मेरा रक्त चूसने के इतजार मे बठी हुई हैं । मेशन, यदि तुम नही आये तो मैं जहर खाकर आत्महत्या कर लूगी । लेकिन मेरे मासूम बच्चो का क्या होगा ? जवाब दो मेशन । जवाब दो और कुछ नही तो टेप रिकार्डर एनवेल्प्ड करके भेज दो ताकि मैं तुम्हारी आवाज को सुन सकू । समझ मे नही आता कि तुम मुझ से केवल सौ फीट ऊपर होते हुए भी क्यो नही आ रहे हो । मेशन, एक बार यहाँ आकर पुन चले जाना । मेशन, यहाँ हर रात दीवारें चीखती और मौत हँसती है । हाथ काँपते और दिल धडकता है । हर रात ऐसा ही होता है मेशन, मेरी हर रात ऐसी ही बीतती है और हा अब भी ऐसा ही ड्र रा टो ।"

वह चीख उठी थी, यही उसकी डायरी के आखरी वाक्य थे और इन आखरी वाक्यो पर गिरे हुए धब्बे इस बात को सिद्ध करते थे कि इन वाक्यो को लिखते समय उसकी डूब गई आँखो से झर-झर करके बहता हुआ पानी गुलाबी गालो पर से होता हुआ डायरी के पन्नो पर बहने लगा था और उसी के बाद लिट्जी की हत्या कर दी गयी । लिट्जी की हृदय-विदारक गाथा को पढकर डोरीना का दिल पिघल गया । यही नही उसकी पलक भी गीली हो गयी । किस तरह ड्राटो ने लिट्जी की अभिलाषाओ और आशाओ पर तुषारापात किया था, वास्तव में ही यह लिट्जी की दर्दनाक और करुणाजनक मौत थी । तब डोरीना ने आँख पोछते हुए कहा—

"मि थापर, हमें अब कुछ न कुछ करना ही होगा ।"

"हमे किसी तरह से उस शीश महल मे पहुँचना ही होगा ।" वर्क ने दृढ शब्दो मे कहा ।

"डोरीना, हर रात एक न एक प्रिटोरिया निवासी ड्रूमा का शिकार होता है अब हमे इस आश्चर्यजनक कहानी को खत्म करना ही होगा ।" मि थापर ने कोस्यूलेट मेन्थोल सिगरेट को बुझाते हुए कहा ।

प्रिटोरिया का हर नागरिक बेचैन था। खुफिया विभाग ने वहाँ पहुँचने के प्रयास किये किन्तु नाकामयाब रहे, क्योंकि इससे पूर्व ही वे वहा तक पहुँचे, ड्रूमा के शिकार हो जाते। तब उन्होंने शीश महल का बारूद से उड़ाने का प्रयास किया किन्तु फिर भी नाकामयाब रहे। ससार की बडी से बडी शक्ति भी उस शीश महल को नही उड़ा सकी। हवाई हमलो का उस पर किसी तरह से असर नहीं हुआ। उस पर परमाणु राकेट छोडे गये तो शीश महल ने स्वय को शक्तिशाली घन चुम्बकीय कुहरो मे ढक लिया लेकिन परमाणु राकेट शक्तिशाली चुम्बकीय कुहरो का कुछ भी नही बिगाड सके।

शीशमहल का शीशा साधारण नही था। उसे वास्तव मे किसी पारदर्शी धातु ने ढक रखा था और हमे केवल शीशे का आभास देता था। इस प्रकार के पारदर्शी आवरण का निर्माण अभी तक कही पर नही हुआ था। न ही उस पर परमाणु बमो का असर होता था और न ही विस्फोटकारी अन्य तत्वो का।

अब तो ऐसी स्थिति थी कि वहाँ डुराटो के नाम से व्यक्तियो को पसीना छूटने लगता। वे भय से इस कदर सिहर उठते थे कि उन्हें स्वय के प्राण निकलते प्रतीत होते। डुराटो के बारे मे तरह तरह की अफवाहे उड रही थी। उसके भीमकाय शरीर पर गहरे काले चेचक के दाग थे उसकी दत्याकार आखे नाक से बहुत दूर थी और नाक बहुत ही चौडी तथा चपटी थी। उसके कान पतले और लम्बे थे। पीठ पीछे से वह भयकर चीते के समान लगता। उसके नाखून दैत्यो का तरह बढे हुए और नुकीले थे जो आसानी से किसी भी युवक के शरीर को फाड सकते थे। उसका मुँह डरावना और भयकर था। उसके नाखून हमेशा लाल खून से सने हुए रहते थे। यहा तक कि उसके मुह से टपकने वाली लार भी लाल होती तब ऐसा प्रतीत होता कि वह अभी अभी किसी का रक्त पीकर आया हो।

मि थापर और डोरोना ने शीश महल मे दाखिल होने के अनेक प्रयास किये किन्तु वे असफल रहे। ठीक दो वर्ष पश्चात् अचानक मि थापर के पास रेडियो सकेत आये।

"हैल्लो।" मि थापर ने ट्रासमीटर रिसीवर को कान तक लाते हुए कहा।

"आइ एम स्पीकिंग पेरीमेशन। मि थापर, शीघ्र कीजिये और

पुलिस के साथ यहाँ पहुँचकर इस शीश महल पर नियन्त्रण कीजिये, अब डुराटो का जादू लगभग समाप्त हो चुका है।"

'क्या कैसे ?'' मि थापर खुशी से चीख उठे।

"मि थापर समय बहुत कम है, यदि आप पुलिस के दस्ते के साथ यहाँ नहीं पहुँचे तो आपको मेरी लाश के चिह्न भी नदारद मिलेंगे।" उधर पैरीमेशन ने कहा।

"ठीक है, मैं अभी पुलिस के दस्ते के साथ आ रहा हूँ।"

'ओ के ।" उधर से पेरीमेशन ने सम्बन्ध विच्छेद कर दिया।

तब मि थापर शीघ्र ही पुलिस के दस्तो सहित शीश महल मे पहुँच गये और उसे घेर लिया। तब वे परीमेशन के सकेत पर अन्दर पहुँच गये। एक बहुत बडे दालान मे सात एक-सी शक्ल के भीमकाय शरीर वाले डुराटो बैठे हुए थे। वास्तविक डराटो वह था जिसकी ओर



पेरीमेशन ने एक विशेष प्रकार की ऑटोमेटिक रिवाल्वर तान रखी थी। उस बडे दालान मे सात विचित्र आवरण पहने हुए मनुष्य थे। अचानक उस दालान मे पेरीमेशन की आवाज गूँजी।

"मि डुराटो, अब तुम्हारा जादू खत्म हो चुका है और मि आप सब अपने यह आवरण उतार दें।" उसने उन सात मनुष्यो की ओर घूरते हुए कहा।

"पेरीमेशन।" डुराटो ने उस पर गोली छोडी किन्तु उस पर किसी तरह का असर नही हुआ।

हा हा हा हा। पेरीमेशन का अट्टहास उस दालान मे गूज उठा। तब वे अदृश्य तरग पेरीमेशन के मस्तिष्क पर टकराई।

"ड्रू मा।" वह जानकर के चीख उठा और जमीन पर लुढकने लगा किन्तु शीघ्र ही उसने अपना सतुलन बना लिया और इसके साथ ही उसने उन सात आकृतियो मे से एक पर गोली चलायी। वह चिल्लाया—"डु रा टो।" और इसके साथ ही उसका निर्जीव शरीर जमीन पर लुढक गया, क्योकि यह गोली उसके शरीर को बेध चुकी थी।

"और मि डु रा टो। तुम्हारा भी वही हाल होगा यदि तुमने इनके आवरण नही उतारने का आदेश दिया।"

"तुम्हारी आज यह हिम्मत। उसने ड्रू मा किरणो को पेरीमेशन पर छोडा किन्तु उसका कोई असर नही हुआ।"

"मैंने कहा न तुम्हारा जादू खत्म हो गया। अब उसकी रिवाल्वर का रुख उन साठ आदमियो मे से एक पर था। पेरीमेशन ने रिवाल्वर का ट्रिगर दबा दिया और वह गोली जिप की आवाज के साथ सनसनाहट करती हुई उस व्यक्ति के शरीर को बेध गयी। वह व्यक्ति बिना किसी आवाज के फश पर लुढक गया और इसके साथ ही हमेशा के लिए शिथिल हो गया।

अब वे बुरी तरह से कापने लगे।

"अब अपने हाथ ऊपर कर लें और शस्त्र डाल दें।" पेरीमेशन ने आदेश दिया। यदि तुमने ऐसा नही किया तो डुराटो की लाश साधारण और घटिया किस्म के इसान की तरह फश पर लुढक जायगी।"

शेष पाँचो व्यक्तियो ने अपने आवरण उतार दिये थे और उनमे से बहुतो ने पेरीमेशन पर आक्रमण करना भी चाहा, लेकिन शीघ्र ही बालकनी से आती हुई गोलियो के शिकार हो गये।

यदि तुमने हिलने की भी कोशिश की तो मौत के घाट उतार दिये जाओगे। अब तक उसकी धमकी का असर उन पर हो चुका था और उन्होंने अपने हाथ ऊपर कर लिये और तब पुलिस धडाधड नीचे उतरी, तत्पश्चात् वे सभी व्यक्ति गिरफ्तार कर लिये गये। डुराटो से भी वे विचित्र प्रकार के परिधान उतरवा लिये गये।

"डॉक्टर मुलरो!" क्या तुम्ही वह व्यक्ति हो जिस पर समस्त ग्रीनलैण्ड को गर्व था किन्तु तुमने क्यो उस शक्ति का दुरुपयोग किया? अब तुम्हे कडी से कडी सजा भुगतने को तैयार रहना होगा।" मि थापर ने डुराटो की ओर सकेत करते हुए क्रोधपूर्वक कहा।

"मि थापर, अब आप इन्हे हवालात की सैर कराइयेगा। मैं शीघ्र ही वहाँ पहुच जाऊगा, आप इस पर निश्चित रहे।" पेरीमेशन ने उन शक्तिशाली अपराधियो पर तब तक कडी दृष्टि गडाये रखी जब तक वे उसकी दृष्टि से ओझल नही हो गये जो कि अब तक शक्तिहीन हो चुके थे।

"आप यहाँ क्यो खडी हुई है?" पेरीमेशन ने डोरीना को घूरते हुए कहा।

"मैं यह देखना चाहती हू कि अब आप यहा पर क्या करेंगे?" डोरीना ने पेरीमेशन की ओर देखते हुए कहा।

"तब आप मेरे साथ आइये।" पेरीमेशन ने डोरीना को इसलिये स्वीकृति दे दी थी, क्योकि उसके चेहरे पर किसी प्रकार की हानि पहुचाने वाले चिन्ह नही उभर रहे थे। वे शीशमहल की छत पर पहुच गये जो बहुत विशाल थी। वहाँ पर एम एम आई 7 टर्बोप्राप हैलीकोप्टर खडा हुआ था। वे उसी मे जा बैठे।

"मि मेशन, हमे इस बात का आश्चर्य हो रहा है कि आपने किस तरह इतनी बडी शक्ति जुटायी जिससे स्वय डुराटो अनभिज्ञ था।"

"अभी आपने मेरा आश्चय देखा ही कहाँ है? अब तक आपने डुराटो की अदृश्य किरणो ड्रूमा का आश्चर्य देखा है और आज मेरी शक्ति से भी परिचित हो जाओगी। "पेरीमेशन ने रहस्यमय मुस्कान के साथ कहा।

"मुझे तो आपका हर कदम रहस्य और आश्चय से परिपूर्ण दृष्टिगोचर होता है।" डोरीना ने कहा।

"पेरीमेशन ने हैलीकाप्टर को स्टाट कर दिया। वह धरती के ऊपर उठने लगा तब उन्होंने तेजी से प्रिटोरिया की पहाडी का चक्कर

लगाया। हैलीकाप्टर तीन सौ पच्चीस मील प्रति घण्टे की रफ्तार से उड रहा था। जब हैलीकाप्टर धरती से दस हजार फीट की ऊँचाई पर था, पेरीमेशन ने एक बटन दबाया और तब अन्तरिक्ष विद्युतीय कण शीश महल मे टकराये। तभी एक दिल को दहला देने वाला भयकर विस्फोट हुआ। शीश महल की दीवारें उसी विस्फोट के साथ छोटे-छोटे कणो के रूप मे कई फीट ऊपर तक उछल गयी। यही नही उसमे आग की लपटें फैल चुकी थी और शीश महल का मलबा भयकर ध्वनि के साथ बाहर आ निकला। इस धडाके की आवाज को केवल प्रिटोरिया निवासियो ने ही नही सुनी बल्कि केपटाउन के निवासियो ने भी सुनी। वे समझ नही पाये थे कि इस भयकर विस्फोट का कारण क्या है जिसके कारण वहा के निवासियो के कान फटते फटते बचे।

"मि पेरीमेशन, आपने ऐसा क्यो किया? कम से कम खुफिया विभाग को तो इसका निरीक्षण करने देते।"

"नही, अब मैं एक क्षण भी नष्ट नही कर सकता। मेरा यह प्रण था कि जब तक ड्रूमा किरण का अस्तित्व इस पृथ्वी पर बना रहेगा, मैं लिटजी से भी भेंट नही करूगा। यही कारण है कि मैंने उसे भी सदेश नही भेजा। नही तो शायद डुराटो उसे कभी का मौत की गोद मे सुला देता।" पेरीमेशन ने कहा।

डोरीना की आँखें डबडबा आयी। वह पेरीमेशन से किस तरह कह दे कि लिट्जी उससे हमेशा-हमेशा के लिए विदा ले चुकी है और इसका कारण स्वय डुराटो था। डोरीना के दुख की सीमा नही रही। उसका गला रुध गया क्योकि उसकी आँखो के समक्ष वही दिल को हिलाने वाली लिट्जी की दर्दनाक मौत के चित्र उभर रहे थे। जबकि परीमेशन का दिल खुशी से नाच रहा था। वह यही सोच रहा था कि अब कितना शीघ्र लिटजी से मिलने जा रहा है। लेकिन वह लिट्जी की दर्दनाक मौत से अनभिज्ञ था। जब वह इस बारे मे सुनेगा तो क्या वह उस पीडा को सहन कर सकेगा? तब क्या यह ससार सूना-सूना और फीका-फीका नही लगने लगेगा। क्या डोरीना स्वय उसकी दुखी अवस्था को अपनी आँखो के समक्ष देख सकेगी? नही। कभी नही। इसका कारण था—लिट्जी की उस डायरी से पडने वाला गहरा प्रभाव। यहा तक कि उस डायरी का एक-एक शब्द उसकी आँखो के समक्ष चित्र की भाँति उभर रहा था। हेलीकाप्टर पेरीमेशन

5

के निवास स्थान की छत पर तेजी से उतर रहा था, इसके साथ ही डोरीना के दिल की धडकन भी बढ रही थी। कुछ ही समय मे वे छत पर पहुच गये। इसके साथ ही पेरीमेशन हैलीकाप्टर से उतर कर नीचे की ओर दौडा। उसके उल्लास की कोई सीमा नही थी किन्तु दूसरे ही क्षण उसके मुह से चीख निकल गयी—"लि ट् जी।"

"लिट्जी तुम कहाँ हो ?" पेरीमेशन ने चिल्लाकर कहा। लेकिन दीवारें मौन थी। हर कक्ष और दीवार पर पेरीमेशन के मुह से दद भरे शब्द निकलकर दीवार से टकराकर पुन प्रतिध्वनित हो रहे थे किन्तु उसके प्रश्न का कोई उत्तर नही था। डोरीना एक काने मे मौन खडी थी। सब तरफ सन्नाटा व्याप्त था।

"लिट्जी क्या तुम पेरिस चली गयी ?"

"नही!" डोरीना चीख उठी। उसने ये शब्द हृदय को कडे करके कहे थे।

"तो फिर वह कहा पर है ?" पेरीमेशन ने चिल्लाकर कहा।

इस प्रश्न का कोई उत्तर नही था। डोरीना में इतना साहस कहाँ था कि वह कह सके—लिट्जी को ड्रूमा का भूत निगल गया।

ठीक छ महीने पश्चात् मि थापर और वक पेरीमेशन के निवास स्थान पर पहुचे। इस समय पेरीमेशन पेरिस मे था। इन छ महीनो मे भी उसका दुख कम नही हुआ था। जब ठीक छ महीने पूव पेरीमेशन ने पूछा कि "मि थापर यदि मेरे बच्चो ने पूछा कि मा कहाँ पर है तो मैं उन्हे क्या जवाब दूगा।"

"इस पर थापर ने कहा था कि इसका जवाब डोरीना देगी।"

"डोरीना क्या तुम्हारे पास मेरे इस प्रश्न का जवाब है ?" पेरीमेशन ने प्रश्न किया।

"यही कि मैं उन बच्चो की माँ के रूप मे आपके साथ चलू।" डोरीना ने भाव-विह्वल होकर कहा था, क्योकि वह अच्छी तरह से जानती थी कि यदि पेरीमेशन वहाँ पर बिना लिट्जी के पहुचा तो उसे एक और भारी आपत्ति का सामना करना पडेगा, तब क्या वह उसके बच्चो के दु ख को सहन कर सकेगा और चूकि वह पेरीमेशन के जीवन से अत्यधिक प्रभावित हुई थी, अत उसकी इच्छा भी यही हो रही थी कि पेरीमेशन उसे लिट्जी के रूप मे स्वीकार करे। यही नही, यदि डोरीना उसके साथ नही गयी तो एक रहस्य भी हमेशा के लिये एक रहस्य बनकर रह जायेगा।

"क्या आप उन बच्चों को लिट्जी के समान प्यार दे सकोगी ?" पेरीमेशन ने पूछा था, क्योंकि वह स्वयं इस बात को अच्छी तरह जानता था कि उसके बच्चे लिटजी की गोद में जाने के लिये आतुर हो रहे होंगे और अब वे मिस्टाइन के पास नहीं रहना चाहेंगे जो कि लिट्जी की मा थी।

"मेशन, मैं उनके लिये सब कुछ करने को तैयार हू।"

"तब मैं तुम्हे लिटजी के रूप मे स्वीकार करने के लिये तयार हू।" पेरीमेशन ने कहा, क्योंकि वह इस बात को अच्छी तरह से जानता था कि उसके बच्चो को लिटजी की आवश्यकता होगी।

और तब डोरीना एक नई लिट्जी बनकर पेरीमेशन के साथ पेरिस चली गयी थी।

जिस समय मि थापर ने पेरीमेशन के डायनिंग रूम मे प्रवेश किया, उस समय उन्होने लिट्जी के दोनो बच्चो को प्रिमेल्किन के साथ खेलते हुए देखा जो उस समय भूरी आखो वाली बिल्ली को किट जाइम की गोलिया खिला रहे थे।

"मि पेरीमेशन, हमे आश्चय हो रहा है कि आपने किस तरह ड्रूमा का नामोनिशान तक इस पृथ्वी पर से हटा दिया ?" थापर ने पेरामेट पोली प्रोपाइलीन कुर्सी पर बैठते हुए कहा।

"मि मेशन, आप मोटियर में सैर करते हुए कैसे अदृश्य हो गये थे ?" वर्क ने एस टी ड्यूपोन्ट लाइटर से विल्स सिगरेट जलाते हुए कहा जिसमे से ब्यूटेन गैस की लौ निकल रही थी।

'आपको किस तरह से ज्ञात हुआ कि मैं मोटियर मे लिट्जी के साथ सैर कर रहा था।" पेरीमेशन ने आश्चयचकित होकर प्रश्न किया।

"मेशन, यह रही वह डायरी जिसमे लिट्जी ने अपनी सपूर्ण जीवन गाथा का चित्रण किया था।" डोरीना ने भीतर प्रवेश करते हुए कहा। उसने अपने एक हाथ मे चेरी हीयरिंग एक डेन्माक लिक्यर की बोतल पकड रखी थी तथा दूसरे हाथ मे वही लिट्जी की डायरी थी। इसे उसने गोलमेज पर रख दिया। उस गोल मेज पर पहले से ही एक सुन्दर गुलदस्ता रखा हुआ था। तब पेरीमशन ने डायरी को उठाकर उसके पन्नो को उलटना शुरू कर दिया। इस बीच डोरीना ने शल्फ से

रखे हुए 'नेशनल 5 ए 53' रेडियो के बटन को बन्द कर दिया जिसमे से हल्की और मधुर धुन आ रही थी। इस नयी लिट्जी का रूप भी नया था।

उसने साइड—सैंडल स्कट और स्विस पेट पहन रखी थी तथा पावो मे हल्के हरे रग के 'हो ची मिन्च' सैन्डल और आसमानी मौजे पहन रखे थे। यही नही, उसके चेहरे पर लगी हुई कोल्ड क्रीम की महक डार्यानग रूम मे फैल रही थी। जिस डार्यनिग रूम मे वे बैठे थे उसकी छत 'फ्यूनीक्यूकर ब्रिकशारट' से बनी हुई थी और फश पर 'गोल्डन कोयर' कालीन बिछा हुआ था तथा दरवाजे व शेल्फ हरे रग के पारकेरलान पर्दो से ढके हुए थे।

पेरीमेशन ने सिल्वर मैश का तग जम्पशूट पहन रखा था जिसके अग्रभाग पर चमकदार सिल्वर रिंग लटक रही थी।

तब पेरीमेशन ने बताना शुरू किया और फिर एक के बाद एक रहस्य क पर्दे खुलते गये।

जसे ही पेरीमेशन मीटियर से अदृश्य हुआ, डुराटो के गुप्त व्यक्तियो ने उसे शीशमहल मे पहुचा दिया और उसे डुराटो के समक्ष पेश किया गया। डुराटो ने उसे धमकी दी कि यदि उसने वह सूत्र नही बताया तो वह उसे पागल कर देगा, किन्तु पेरीमेशन ने उस धमकी की कोई परवाह नही की तब डुराटो बोखला उठा। उसने अपने गुप्तचरो को पेरीमेशन के इलैक्ट्रिक शोक (विद्युतीय धक्के) लगाने का आदेश दिया ताकि वह उन झटको के प्रभाव से अपनी स्मरण शक्ति खो बैठे। जब गुप्तचरो ने उसके विद्युतीय झटके लगाये तो वह एक झटके मे ही बेहोश हो गया। वास्तव मे पेरीमेशन बेहोश नही हुआ था किन्तु उसने बेहोश होने का अभिनय किया था और होश मे लाने पर उसने स्मरण शक्ति खो जाने का अभिनय किया था।

"आप लोग कौन हैं ? आप मुझसे क्या चाहते हैं ?" पेरीमेशन ने चिल्लाकर प्रश्न किया।

"तुम मेरे अनुचर हो और मैं यह चाहता हू कि तुम मेरे हर आदेश का पालन करो। मैं मैं डुराटो हू और एक भीमकाय दैत्य हू तथा मैं एक अन्य ग्रह से उतरकर इस धरती पर आया हू।" तुम मेरे इसी महल मे दस वष से काय कर रहे हो। डुराटो ने कडकती आवाज में कहा।

"लेकिन मैं हू कौन ?"

"तुम्हारा नाम ब्रेवो है। और हा अब तुम इसी नाम से पुकारे जाओगे। मि ब्रेवो वह सूत्र कहा है जिसे तुमने खोज निकाला था?"

"कौन सा सूत्र ? मुझे मुझे कुछ भी याद नही आ रहा है।"

और अब डुराटो तथा उसके अन्य साथियो को विश्वास हो गया कि पेरीमेशन अपनी स्मरण शक्ति खो बैठा है। इसके पश्चात् वह पेरीमेशन की ओर से निश्चित हो गया। तब पेरीमेशन ने अपनी जिंदगी को दो हिस्सो मे बाट लिया। जहा एक तरफ वह ब्रेवो के रूप मे डुराटो की हर इच्छा का पालन करता था वहा भीतर ही भीतर वह डूमा किरणो की भीतरी बनावट को समझने लगा। वे किरणें विधातु कणो (एटीमेटर) से उत्पन्न की जाती थी। शीश महल पर जो पारदर्शी पत बनी हुई थी, वह विधातु कणो की ही बनी हुई थी, जिस पर न ही परमाणु बमो का असर होता था और न ही पृथ्वी पर बने हुए शक्तिशाली विध्वसको का। यहा तक कि किसी किरण का भी उस पर कोई प्रभाव नही पडता था। विधातु कण साधारण कणो के ही समान होते है लेकिन विधातु कणो पर विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र का प्रभाव होता है। जहा एक साधारण कण धन विद्युत से आवेशित रहता है, वहा विधातु कण ऋण विद्युत से आवेशित होगे और यह क्रम प्रत्येक कण के लिये बना रहता है। विधातु कणो मे विलोम गुरुत्वाकर्षण भी निहित होता है। यद्यपि दो विधातु कणो के बीच आकर्षण रहता है तथापि वही विधातु साधारण कणो को प्रतिकर्षित कर देता है। साधारण कण चाहें वे परमाणु कण ही क्यो न हो, विधातु कणो से बनी पत पर टकराने से पूर्व ही प्रतिकर्षित कर दिये जावेंगे अत उन परमाण्वीय कणो का विधातु कणो पर कोई प्रभाव नही पडेगा। शीश महल को विधातु कणो के पारदर्शी आवरण ने ढक रखा था और यही एक कारण था कि जब-जब राकेटो, प्रक्षेपास्त्रो तथा परमाणु बमो द्वारा आक्रमण शीश महल पर किये जाते तो इनका शीशमहल पर कोई असर नही होता था।

वस्तुत इन विधातु कणो का रहस्य डुराटो ने 'ताम्रो साती' रेडियो नक्षत्र से सम्पर्क स्थापित करने के बाद समझा था। उसके पास निरन्तर 'ताम्रो साती' से रेडियो सदेश आते थे। उसने एक इस प्रकार की भाषा का निर्माण कर लिया था जिसके द्वारा उसने ताम्रो साती से आने वाले संदेशो को समझ लिया था। इस प्रकार की भाषा का निर्माण उसने ग्रीनलैण्ड के गाडयाब्क नगर मे स्थित मुलार्ड रेडियो एस्ट्रोनॉमी

ऑब्जर्वेटरी मे किया था । यह वेधशाला वहा मीनार की तरह बने हुए डयुलाइन स्टेशन के समीप ही थी और तब डुराटो, डॉ मुलरो के नाम से प्रसिद्ध हो गया था, किन्तु इसके पीछे उसका एक बहुत वडा स्वार्थ यह निहित था कि वह इस समस्त पृथ्वी पर अपना अधिकार जमा ले । उसने तब अपनी उस सस्था मे साठ विश्वासपात्र व्यक्तियो को चुना और फिर धीरे-धीरे उनकी सख्या बढने लगी । इसके साथ ही उसकी शक्ति भी वढने लगी । तब उसने अनेक शालाएँ खोली जिसे उसने विश्व के हर कोने मे फैला दिया, किन्तु उसका प्रमुख केन्द्र यही शीश महल था । उस शीश महल से एक सुरग निकाली गयी जो आगे चलकर विभिन्न दिशाओ मे चली गयी । अब पेरीमेशन के समक्ष समस्या यह थी कि उस शक्ति को किस प्रकार नष्ट करे । केवल एक ही उपाय था कि वह सुपीरियर एण्टीमेटर का निर्माण करे लेकिन वह अभी तो विधातु के रहस्य को भी अच्छी तरह नही समझ पाया था, सुपीरियर एण्टीमेटर निर्माण की बात तो दूर रही । यदि उसने निर्माण का प्रयास भी किया तो न मालूम कितने वर्ष लग जायेंगे और तब तक तक डुराटो की दिल-दहला देने वाली ड्रूमा किरणो के कितने ही देश शिकार हो जायेंगे । तब उसने उपयुक्त यही समझा कि वह स्वय किसी अन्य रेडियो नक्षत्र से सम्पर्क स्थापित करले और इसके लिये वह अमरीका चला गया ।

उस समय तक वह डुराटो का घनिष्ठ मित्र बन चुका था । पेरी-मेशन के ऊपर विश्वास करके डुराटो ने उसे अमरीका जाने की स्वीकृति दे दी । अमरीका पहुचने के पश्चात् भी उसने लिट्जी को कोई सदेश नही भेजे क्योकि तब उस पर डुराटो का सदेह किया जाना निश्चित था । डुराटो ने उसके वहा जाने का लाभ उठाया । इसी बीच डुराटो ने लिट्जी को ड्रूमा का शिकार बनाया । पेरीमेशन ने अमरीका के रायोडिजैनरा से १५० मील दूर स्थित कैम्पास मे गुप्त रूप से 'एप्सिलोन ऐरीडेनी' रेडियो नक्षत्र से सम्पर्क स्थापित कर लिया और तब पेरीमेशन ने 'एप्सिलोन ऐरीडेनी' के अति विकसित सुरुचिपूर्ण और बौद्धिकता समन्वित सभ्यता के स्वामी उर्फ इसी पृथ्वी के परे के निवासियो से रेडियो सदेशो के द्वारा उन विधातु कणो को समूल नष्ट करने की युक्ति को प्राप्त कर लिया । ठीक दो वर्ष पश्चात् एक वृहत तश्तरी ने केम्पास के समीपवर्ती झील मे डुबकी लगायी । इस वार्ता की सूचना पेरीमेशन को पहले ही प्राप्त हो चुकी थी अत वह निश्चित समय से पूर्व ही उस झील के किनारे पहुच चुका था । जैसे ही ए

उडन तश्तरी को नीचे उतरते देखा, वह स्वय भी एक एलियन पनडुब्बी मे बैठकर उसे सतह की ओर ले गया । करीब छ हजार फीट नीचे पेरीमेशन की उन विचित्र मानवो से छ घण्टे तक की भेंट हुई । इन छ घंटो के दौरान उसने विद्युत के रहस्य को समझ लिया था । यही नहीं, उसने सुपीरियर एन्टीमेटर के निर्माण की विधि भी समझ ली ।



उन पृथ्वी से परे के मानवो ने पेरीमेशन को एक विचित्र प्रकार की धातु का यंत्र भी दिया । यही नही, उन्होने पेरीमेशन को एक नये तत्व से भी परिचित करवाया जिस पर विधातु कणो का कोई असर नहीं होता । तथा उन्होंने उसे उस तत्व के कुछ टुकडे भी दिये । इसके

पश्चात उन पृथ्वी के परे निवासियों ने पेरीमेशन से विदा ली। उसने अपनी अण्डर ग्राउण्ड खगोल वेधशाला मे उस नये तत्व का स्पेक्ट्रम एनालेसिस किया और तब उसे विश्वास हो गया कि अभी तक यह तत्व इस पथ्वी पर नही पाया गया है क्योकि इस तत्व से निकलने वाली किरणो की तरग दध्य (वेव लन्थ) अ य किसी किरण की तरग-दैध्य से नही मिलती थी। यही नही, इसकी तरग दध्य विद्युत कणोसे भी कम थी। इसकी फ्रिक्वेन्सी विधातु किरण (ड्रूमा) से अधिक थी अत पेरीमेशन को दृढ विश्वास हो गया कि यही तत्व सुपीरियर एन्टीमेटर का काय करेगा।

पेरीमेशन ने इन किरणो का निर्माण लेसर किरणो की भाति ही इस तत्व के इलेक्ट्रोनो को उत्तेजित करके किया। उसने तत्व को छड के रूप मे परिवर्तित किया और उसे एक जटिल निर्वात ट्यूब से जड दिया जो कोइल्ड के रूप मे थी। तब उसके किनारो पर हाई वोल्टेज उत्पन्न किया, जिससे ट्यूब फ्लोरोसेन्ट का कार्य करने लगी। तब एक विशेप प्रक्रिया के जरिये उसने सुपीरियर विधातु किरणो का निर्माण किया। यह प्रयोग उसने एक अधेरे कमरे मे किया था तब यह देखा गया कि इस किरण के कणो पर अत्यधिक शक्तिशाली विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र का प्रभाव था।

पेरीमेशन ने उस यत्र के जरिये सबसे पहले 'ड्रूमा-प्रूफ' बनाया और उससे अपने समस्त शरीर को ढक लिया। तत्पश्चात उसने और भी तरह-तरह के परीक्षण किये। जब उसे पूर्ण सतुष्टि हो गयी तो वह पुन प्रिटोरिया के शीशमहल मे उस विशाल शक्ति के साथ जा पहुचा। उसके साथ गये हुए डुराटो के दस व्यक्तियो को उसने अपनी ओर मिला लिया और अब वह उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा था, जब वह अपनी उस विशाल शक्ति का उपयोग कर सकेगा। डुराटो इन सब बातो से अनभिज्ञ था। वह यही समझता था कि पेरीमेशन गुप्त रूप से एक नया अनुसधान कर रहा था और वह उसके लिये अत्यधिक हितकर होगा क्योकि अब पेरीमेशन की सफलता स्वय डुराटो की सफलता थी।

समय निकलते देर ही क्या लगती है? डुराटो ने एक विशाल कान्फ्रेंस बुलायी जिसमे उसकी सस्था के सदस्यो की उपस्थित होना अनिवार्य था। जिस जगह भी डुराटो अनुचर फैले हुए थे, वे सब प्रिटोरिया के शीशमहल मे पुन एकत्रित हो गये। उनमे से सात वे

व्यक्ति थे जिन्होंने डुराटो की ही शक्ल के चेहरे पहन रखे थे। ये चेहरे देखने में भयकर थे। वास्तव मे ही लोगो की यह अफवाह सच निकली कि डुराटो के कान पतले तथा लम्बे थे। उसकी बडी बडी आँखें नाक से बहुत दूर थी। यही नही चेहरा इस ढग से बनाया गया था कि वह हर कोण से भयकर और दैत्याकार दृष्टिगत होता था। वास्तव मे डुराटो कभी भी महल से बाहर नही निकला था। केवल सात व्यक्ति ही डुराटो के नकली नकाब पहने हुए लोगो को भयभीत करते थे।

जब कभी भी वे डू मा किरणो को छोडते, जो उनके ज्वलनशील टार्च से निकलती तो मरते समय व्यक्ति डू मा के नाम से चीख उठता था। इसका कारण यह था कि डू मा किरणें मस्तिष्क पर पडने के पश्चात् सेन्सरी न्यूरोन्स को उत्तेजित कर देती थी और उन न्यूरोन्स मे भय के कम्पन उत्पन्न हो जाते तब उनके मुह से दिल दहला देने वाली चीख निकल जाती। वे किरणें सेन्सरी न्यूरॉन के डेन्ड्राइट्स से होती हुई समस्त शरीर मे फल जाती, जिससे ऑटोनोमस नर्वस सिस्टम बद हो जाता।

प्रत्येक डेन्ड्राइट मे सिनेप्टिक गाठ होती है। सिनेप्टिक गाठ छोटे तृतीय कोशिका की बनी होती है जो ट्रासमीटर कण स्रवित करती है। ये कण सिनेप्टिक शून्य (स्पेस) को भरकर एक पुल का काम करते हैं जिससे न केवल उद्दीपन ही एक न्यूरॉन से दूसरे न्यूरॉन तक चले जाते हैं, अपितु वे अदृश्य किरणें भी तरगो के रूप मे एक न्यूरॉन से दूसरे न्यूरॉन में चली जाती हैं। चूकि डू मा विघातु कणो की बनी हुई थी अत वे सिनेप्टिक स्पेस मे भरे हुए ट्रान्समीटर कणो को प्रतिकर्षित कर देती अर्थात् उन्हे धकेल देती और उसका स्थान स्वय ले लेती। अत नर्वस सिस्टम भग हो जाता। जिस शून्य मे ट्रान्समीटर कण भरे हुए थे वे एसिटिल कोलीन पदार्थ के बने हुए थे। इन कणो पर डू मा का तीव्र प्रहार होता। नर्वस सिस्टम भग होने से न ही केवल मस्तिष्क पर ही उसका प्रभाव पडता बल्कि समस्त आटोनोमस नर्वस सिस्टम बन्द हो जाता। यही नहीं वे किरणें तुरन्त लाल रक्त कणो को सुखा देती और श्वेत कणो को नष्ट कर देती तब शरीर की सभी जविक क्रियाएं बन्द हो जाती। यहा तक कि लिम्फ मे स्वत ही विषैली गसों का समावेश हो जाता क्योकि डू मा शरीर मे बनने वाले अमीनो अम्लो को तोड देती जिससे कार्बन मोनोक्साइड और अमोनिया

जैसी विषैली गैसे उत्पन्न हो जाती । यही कारण था कि उन बेकसूर इन्सानो की ददनाक मौत हो जाती । पुलिस के अनेक प्रयत्न करने के पश्चात् भी वह इस बात को समझ नही पाती कि उनकी मौत किस वजह से हुई है क्योकि न ही उन लाशो के गलो पर किसी प्रकार के कोई चिन्ह पाये जाते और न ही उन पर बदूक की गोली के चिन्ह मिलते और न ही किसी किरण के ।

जब सभी व्यक्ति वहा एकत्रित हो गये तो पेरीमेशन ने यही मौका उपयुक्त समझा । उसने अपने उन विश्वसनीय व्यक्तियो को बालकॉनी मे तथा दो व्यक्तियो को मुख्य दरवाजे की ओर भेज दिया और तब उसने मि थापर को सदेश भेजे । इसके पश्चात क्या हुआ इसका जिक्र ऊपर किया ही जा चुका है ।

लिट्जी की दर्दनाक मौत से पेरीमेशन को भारी सदमा पहुचा लेकिन डोरीना ने नयी लिट्जी के रूप मे उसके वीरान जीवन को फिर से हरा भरा करने मे कोई कसर नही रख छोडी । मि थापर और वर्क ने तब पेरीमेशन और डोरीना से विदा ली और तब वे गेट से निकल अपनी बिना स्टेयरिंग व्हील वाली कार मे जा बैठे । उस कार का नियत्रण एक छड के द्वारा किया जाता था । इसके पश्चात् वे पेरिस की उस जगमगाती स्ट्रीट से दूर बहुत दूर चले गये ।

डोरीना और पेरीमेशन उन्हे तब तक देखते रहे जब तक वे उनकी दृष्टि से ओझल नही हो गये । तब पेरीमेशन ने अपनी दृष्टि ओमेगावाच पर डाली उस समय रात्रि के दो बज चुके थे । तब वे दोनो ब्राइ नायलान के पर्दे को हटाकर बैडरूम मे चले गये जिसकी दीवार के एक छोटे से भाग मे एक सेरवोवार्म 40 रेडियेटर फिट था । यह कमरे का बर्फीली ठडी हवाओ स बचाकर उसे उचित ताप दे रहा था । वे अपने बिस्तर पर चले गये । डोरीना ने डिमर स्विच ऑफ कर दिया जिसका सबध थबड के पीछे ट्यूबलाइट मे था । इसके पश्चात् वे गोलमेज पर रखे हुए प्लास्टिक लैम्प के शेड से छन रही लाल रोशनी मे बिस्तर पर लेटे हुए एक दूसरे को निहारने लगे । तभी पेरीमेशन की आंखो के समक्ष पुरानी यादो के बिम्ब उभरने लगे और अनायास ही उसके मुह से निकले ये शब्द डोरीना ने सुने डेविल रेज ऑफ ऑमन मिस्टीरियस एन्टीमेटर (अज्ञात, तथा रहस्यमय विधातु) कणो की दानवी किरणें ड्रू मा । ☐☐

थकते डैने

'कर्टिस, इस समय हम कहां उडान भर रहे है ?"

"डार्लिंग, डोव । हम इस समय भारत के पश्चिमी घाट पर उडान भर रहे हैं।"

नर पक्षी कर्टिस तथा मादा पक्षी डोव ऊँचे मटमैले आकाश मे 'दम घोटू' बादलो के बीच उडते हुए बतिया रहे थे । प्रदूषण के कारण आकाश मटमैला दिखाई पड रहा था । पक्षियो मे उडान की नैसर्गिक प्रवृत्ति होने के बावजूद उन्हे ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो उनके कृत्रिम पर लगा दिये हो । यो तो उडते हुए पक्षियो को जमीन स्पष्ट दिखाई पडती है, लेकिन प्रदूषण के कारण उन्हे देखने के लिये विशेष जोर लगाना पड रहा था । कर्टिस, डोव की इस वेदना को महसूस कर रहा था, लेकिन बातचीत से इसे जाहिर नही करना चाहता था ।

'कर्टिस, मैं अब बहुत थक चुकी हू। यहा से मौन घाटी (साइलेंट वेली) कितनी दूर है ?"

"बस, पलक झपकने की देरी है ।"

"क्यो मजाक कर रहे हो, कर्टिस ? क्या हर समय मजाक करना ठीक है ?"

"उफ ! तुम इसे मजाक समझ रही हो । साइलेंट वेली केवल दस किलोमीटर दूर रह गई है ।"

"माई गोड ! दस किलोमीटर ।"

"डोव, यह दूरी भी कोई दूरी है ?"

"कर्टिस मैं बहुत थक चुकी हू, मुझसे अब और नही उडा जा रहा है ।"

"कमाल है ! इतने वर्षों तक तो तुम बडे उत्साह से उडा करती थी, अब क्या हो गया ?

'मैं यह नही जानती, लेकिन मेरी मासपेशिया बहुत थक चुकी हैं ।"

"यौवन मे तुम्हारा यह हाल है, वृद्धावस्था मे क्या होगा ? तुम्हारी तबियत तो ठीक है ?"

"साइबेरिया से चली थी तब तो अच्छी खासी थी, लेकिन अब न जाने क्या हो गया है।"

"क्या तुम दस किलोमीटर का फासला भी तय नही कर सकती ? थोडा प्रयत्न करो।"

"नही, यदि आपने मुझे और आगे उडने के लिये कहा तो मैं नि सदेह गिर पड़ूगी।"

वे दोनो उड़ान भरते हुए नीचे आते हैं तथा एक वृक्ष की टहनी पर बैठ जाते हैं।

"डॉव, हमारे वे दिन बीत चुके, जब हम लम्बी-लम्बी यात्राए बडी सहजता से तय कर लिया करते थे।"

"हा, कटिस ! चाहे घनघोर मेघ बरस रहा हो, चाहे भीषण आधिया चल रही हो, हमे किसी की परवाह नही थी।"

"डोव, हम कितनी उम्मीद लिए ये लम्बी यात्राए करते हैं, यह सोचकर कि न केवल हम ठड से ही अपना बचाव कर सकेंगे बल्कि हमे दो जून भोजन भी नसीब होगा।"

"लेकिन अब यह उम्मीद भी बहुत क्षीण हो गई है। भोजन के लिये आजकल काफी होड मची हुई है।"

"कटिस, पहले हम झुड मे उडा करते थे, तब भी इतनी होड नही मची हुई थी। आज हम इक्के-दुक्के उडते हैं, फिर भी इतनी होड क्यो है ?"

"यह सब दो टाग वाले उच्च मस्तिष्कीय जानवर उर्फ मनुष्य के कारण, जिसने सारे जहा मे जहर फैला रखा है।"

"लेकिन वह तो हमारा शत्रु नही है। मनुष्य की कविताए हमारे गुणगानो से भरी हुई हैं।"

"डोव, वह जमाना बीत गया जब कविता रिद्म (लय) का हमारे गीतो से समागम होता था। आज की कविता स्वय मानव के बीच जहर उगलती है। अब कविताओ मे वह 'मिठास तथा आल्हाद' कहा रहा जिसे हम याद रख सकें। मानव यदि हमे भूल जाता तो भी अच्छी बात होती लेकिन उसने हमारे रैन-बसेरे उजाड दिये।"

"उफ ! बहुत दुर्गंध आ रही है। कटिस, यह किसकी दुर्गंध है।"

"यह पाल घाट की चिमनियों से उडता हुआ धुआ है। इससे दम घुटने लगा है।"

"डोव, तुम्हे इसे सहन करना होगा। मनुष्य को इसकी कोई परवाह नही।"

"लेकिन कर्टिस! हमारी पेशियो को शुद्ध ऑक्सीजन चाहिये।"

"यह शहर है, शहर मे हमे शुद्ध आक्सीजन कही नही मिलेगी। यह देखो आसमान धूसर मटमैले बादलो से ढक चुका है। फक्ट्रियों से निकलने वाला प्रदूषण।"

"हमे यहा से चल देना चाहिये। मेरा दम घुटा जा रहा है।"

"लेकिन जायेगे कहा?"

"कर्टिस, उन लहलहाते खेतो के ऊपर हम उडें।"

"ठीक है डोव, लेकिन वहा भी चैन मिल पाये, तब।"

दोनो पक्षी थके-हारे किसी तरह उडते हुए खलिहानो तक पहुचते है।

"कर्टिस, देखो गोडावण! यह घास की ऊची-ऊची ब्लेड के बीच इस प्रकार दौड रहा है, मानो इसका ही अकेले का राज हो।"

"नही डाव, यह अपने अकेलेपन से दुखी है। लगता है मादा गोडावण की किसी शिकारी ने हत्या कर दी।"

"आश्चर्य है राजस्थान का यह बाशिंदा इस लम्बे चौड खेत मे बिना मादा के कैसे जीवित है। क्या और कोई मादा इसका साथ देने नही आ सकती।'

"नही, इनका समष्टि (पॉपुलेशन) मे बहुत ह्रास हो गया। किसी समय यहा विस्तृत घास के मैदान थे जो झाडीयुक्त जगलो से घिरे हुए थे। तब यहा एक नही सकडों गोडावण खुशी-खुशी उन लम्बी लम्बी घास की ब्लेड के बीच दौडते थे। कितना क्रूर है मानव! उसने अपने स्वार्थ के लिये इन घास के स्थलो को उजाड दिया। इन जगलो का बडी बेरहमी से सफाया करके उसने बस्तिया बसाई। ग्राम वासियो ने पालतू पशुओ को इन घास-स्थलो मे चराने हेतु छोड दिया जिन्होने क्रूरता से गोडावण के अण्डो को कुचल दिया। इससे इनकी प्रजनन क्षमता मे ह्रस हुआ। गोडावण मनुष्य से इतना सतर्क रहता है कि उससे दूर भागने का प्रयत्न करता है। लेकिन इसी मनुष्य ने जीपो, ट्रको तथा अन्य वाहनो द्वारा इस प्रजाति को बडी बेरहमी से कुचला। ऐसा प्रतीत होता है मनुष्य इसके हाथ धोकर पीछे पडा

हुआ है। इसे शिकारी की बन्दूक का शिकार होना पड़ा। आखिर इसके पांच-सात किलोग्राम स्वादिष्ट मांस के लिये मनुष्य की जीभ लपलपाती थी।"

"बेचारा गोडावण।"

"इसकी संख्या में बहुत ह्रास हुआ है। यह 'थेर सोल्ड' लेवल तक पहुंच गई है।

"यह 'थेर सोल्ड' लेवल क्या है ? '

' इस लेवल (स्तर) से नीचे किसी जाति में प्रजनन की क्षमता नहीं रहती।"

"कितना दु खी होगा तब यह।'

"हां, मनुष्य इसके अण्ड तक नहीं छोड़ता।"

"इस तरह से क्या यह जाति शीघ्र विलुप्त नहीं हो जायेगी।"

"बेशक ! इसका यही हाल होगा।"

"और हम।"

"हमारा भी यही हाल होगा। मनुष्य की क्रूरता के हम भी शिकार होंगे।"

कितना निर्दय है यह मनुष्य ! !

कर्टिस तथा डोव दोनों घास के मैदान से दाने बटोर रहे होते हैं, तभी उन्हें बन्दूक दागने की आवाज सुनाई देती है।

"कर्टिस।"

"हाइड डोव ! हाइड (छिपो) ! !"

गोली की आवाज से अब भी उनके कान के पर्दे फटे जा रहे थे। सन्तुलन की अनुभूति उन्हें डगमगाती प्रतीत हो रही थी। घास की ब्लेड में छिपे हुए उन्होंने बन्दूकधारी को देखा जो घोड़े पर सवार होते हुए अपनी सफलता पर अट्टहास कर रहा था। गोडावण मनुष्य की बेरहमी का शिकार हो चुका था। पाल घाट से गोडावण जाति इसके साथ ही हमेशा हमेशा के लिये विलुप्त हो गई।

कर्टिस तथा डोव घास की ब्लेड में तब तक छिपे रहे जब तक कि घुड़सवार मृत गोडावण लिये खलिहान से ओझल नहीं हो गया।

"कर्टिस क्या हो गया है मेरे परों को, ये उड़ान के लिये क्यों नहीं उठ रहे हैं ?"

"ये बेचारे भी मनुष्य की क्रूरता का शिकार हो गये हैं।"

"कैसे कर्टिस ?"

"मनुष्य ने खेतो पर जहर फैला दिया है, और यह जहर है 'पेस्टीसाइड' (कीटनाशी)। चाहे मनुष्य इसे जहर समझता हो अथवा नही, लेकिन हमारे लिये तो है ही।"

"डोव, तुम उडने की कोशिश करो, पेस्टीसाइड के कण हम पर तुरन्त असर नही करेंगे।"

कुछ प्रयासो के पश्चात् डोव उडने मे सक्षम हो जाती है। वे दोनो उडते हुए मौन घाटी की ओर बढते हैं। कुछ दूरी पर, खलिहान के एक टुकडे मे उन्हे क्रेन (बगुला) दिखाई पडता है। वे दोनो ग्लाइड करते हुए नीचे आकर, घास की ब्लेड से कुछ ऊपर उडने लगते हैं।

"कर्टिस, यह बगुला क्यो रो रहा है?"

'यह भी पेस्टिसाइड का शिकार हो चुका है। पेस्टिसाइड के जहर से इसके अण्डे की परत पतली हो गई है। जैसे ही यह अण्डा सेने हेतु इस पर चढा, अण्डा फूट गया। इस प्रकार यह सन्तान से वंचित रह गया। जन्म से पूर्व ही संतान का छिनना किसी भी प्राणी के लिये कितना असहनीय होता है।"

"उफ! क्रूर होमोसेपियन!!"

"काश! मानव इसकी वेदना को महसूस कर पाता।"

वे आकाश मे उडते हुए 'मौन घाटी' की ओर बढ जाते है।

"लो 'मौन घाटी' आ गई। मौन घाटी जो किसी समय मे एक रमणीक स्थली थी, आज मानव की उपस्थिति से प्रदूषित हो गई है।"

"कर्टिस, यह विशाल सरंचना क्या है?"

"यह मनुष्य द्वारा स्थापित हाइडल प्रोजेक्ट है।"

"यह इस सुरम्य घाटी मे क्यो स्थापित किया गया है?"

"इससे मानव को एक सौ बीस मेगावाट बिजली प्राप्त होती है।"

'ओह! मनुष्य ने इस मनोरम घाटी को भी नही बख्शा।"

"डोव, यहां का वातावरण पहले ही काफी दूषित हो चुका है। हाइडल प्रोजेक्ट की स्थापना से स्थिति और भी गम्भीर हो गई है।"

"कर्टिस, इस पहाडी के बडे-बडे तथा घने वृक्ष कहां गये?"

"सब विलुप्त हो गये। यह घाटी जो किसी समय घने वृक्षो से ढकी रहती थी, आज उजाड हो गई है।"

कर्टिस तथा डोव मौन घाटी की एक 'हिलोक' पर उड रहे थे, जहां वृक्षो का नामोनिशान तक मिट गया था।

"कर्टिस, यहाँ तरह-तरह के कितने सुन्दर वृक्ष थे ?"

"हाँ डोव, लेकिन मानव की बस्तियाँ हर सुन्दर स्थल का सफाया कर देती है।"

"वाह री कृत्रिमता की चकाचौंध !"—बनावटीपन की चमक-दमक !

घाटी का पीलापन कर्टिस और डोव की आँखो मे चुभने लगता है। वे दोनो थके हारे नजर आते हैं तथा चौतरफा बिखरे 'लाइको पोडियम की नग्न टहनियो पर अपनी थकान उतारते हैं। जो कभी जानते ही नही थे कि थकान क्या होती है, प्रदूषित वातावरण ने इसका अहसास करा दिया।

"एक वह समय था जब यह घाटी जीवन से भरपूर नजर आती थी। सम्पूर्ण घाटी टाइगर तथा पैंथर की दहाड़, लॉइन टेल्ड मेक (बदर) की तेज तथा तीखी आवाज तथा नीलगिरि लगूर की किल्लारियो से गूंजा करती थी। समस्त वातावरण कितना जीवन्त था। लेकिन अब वे दिन कहाँ रहे।"

"सच कर्टिस ! आखिर मनुष्य इनका महत्त्व क्यो नही समझता ? ये जातियाँ विलुप्ति के कगार पर खडी है।"

वे दोनो 'लाइकोपोडियम' की नग्न टहनियो से उडकर नहर के गोल पत्थरो पर उतर आते हैं। नहर का बहता हुआ पानी गोल पत्थरो से टकरा कर शोर मचा रहा था। कौन नही जानता कि यह पानी प्रदूषित है।

"डोव कुछ वर्षों पूव इस पानी मे तथा आस-पास पाद रहित 'सिसिलियन' कूदा करता था, लेकिन आज वह विलुप्त हो चुका है।"

"कितना क्रूर है मनुष्य ! उसी की वजह से इस स्वच्छ जल मे प्रदूषण फैला।"

"मनुष्य क्रूर नही, मूख है, वह पर्यावरण के महत्त्व को नही समझ रहा है।"

"कैसे ?"

"चीन मे चिडिया जाति के सम्पूर्ण विनाश की योजना बनाई गई। हजारो की तादाद मे चिडियाओ का सहार हुआ।"

"कर्टिस, ऐसा क्यो किया उन्होने ?"

"फसल को नष्ट होने से बचाने के लिये। उनका ख्याल था कि चिडियाए भारी मात्रा मे दाना चुगकर फसल नष्ट करती है।"

"लेकिन क्या वे नही जानते थे कि हमारी बहनें केवल दाना ही नही चुगती बल्कि प्रजनन काल मे तो हल्के शरीर वाले कीट तथा 'ड्रस्स' का भक्षण करती हैं।"

"जानते तो बात ही कुछ और होती।"

"तो क्या समस्त चिडियाए विलुप्त हो गई ?"

"विलुप्त तो नही हुई, लेकिन कुछ तिब्बत की ओर तथा कुछ मगोलिया की ओर चली गई। हा चीन से चिडियाओ का नामोनिशान मिट गया।"

"लेकिन फिर तो मनुष्य की पिपासा शात होनी चाहिये थी।"

"नही ऐसा नही हुआ। उन्हे यह आशा बधी थी कि फसल प्र भारी मात्रा मे पैदा होगी लेकिन इस आशा के विपरीत फसल की बहुत भारी क्षति हुई।"

"आश्चर्य है, कर्टिस !"

"इसमे आश्चर्य की कोई बात नही। चिडियाओ के समाप्त होने पर कीटो की सख्या मे आश्चयजनक ढग से बढोतरी हुई। इससे पूरी फसल चौपट हो गई। तो डोव ! है न मानव मूर्ख ?"

डोव ने अपनी सहमति प्रकट की। वे दोनो बातो मे डूबे हुए थे तभी बन्दूक दागने की आवाज हुई। कर्टिस सम्भल भी नही पाया था कि एक गोली उसके सीने मे जा लगी। डोव बाल-बाल बच गई। वह सुध बुध खोये आसमान मे तेज रफ्तार से बादलो के बीच उडी जा रही थी। नीचे समुद्र का पानी आसमान को छूता हुआ सा तेज गजन कर रहा था। बादलो की गडगडाहट तथा बिजली की चमक मे डोव अपना होश खो बैठी और समुद्र ने उसे पलक झपकते ही निगल लिया। मौन घाटी मे 'पाइलिया काडराय' का श्वेत पुष्प इस दुखान्तिका पर अश्रु ढलका रहा था। □□

अमानुष

भयाक्रान्त शहर !

ग्वेरिन नही जानता था कि उसे कहाँ से प्रारम्भ करना चाहिये। विचार मकडे के जाल से जटिल। उतनी ही जटिल है गलियाँ। किस गली से जाना है, किस मोड से मुडना है, पॉजिट्रोनिक सर्किटो-सा कठिन। अनिश्चितता ही अनिश्चितता। ठीक हेमलेट की सी अनिश्चितता और इस अनिश्चितता का साथ दे रहा था आकाश। आकाश जो नीले से लाल और लाल से काला होता जा रहा था। सूरज पहाडी के पीछे लटक गया था। पहाडी डरावनी हो चली। काले अंधेरे ने किसी साप के से दैत्याकार खुलते मुख-सा शहर को निगल लिया था। आप सोचते होगे कि शहर की बिजली तो सुरसा की भुजाओ की तरह फैले स्याह अधेरे को चीर देती है। लेकिन इन दिनो रोजाना बिजली चली जाती थी और फिर पूरी-पूरी रात नही आती।

ग्वेरिन ने अन्ततोगत्वा मानस बना लिया। वह घुप अंधेरे में बाहर निकल गया। उस घुप अधेरे का साथ दे रही थी सर्द हैवान हवाए, जिसके बहाव से मर्मर करती काली पत्तियाँ चीख रही थी। 'हूप-हो' की सी आवाजें ग्वेरिन जैसे जवामर्द मे भी डर घोल रही थी। चारो तरफ युद्ध के समय का सा 'ब्लेक आउट' छाया हुआ था। बन्द खिडकियाँ और दरवाजे खुलने का भय दिखा रहे थे। लोग घरो मे बन्द, भय से आक्रान्त, ठण्डे, तथा जमे हुए थे। वे खिडकियाँ खोलने तथा रोशनी करने का साहस नही जुटा पा रहे थे। मोमबत्ती की मद्धिम रोशनी भी उन्हे भयभीत कर रही थी। वे बुत से सोफो, बैड थोटो, पायो आदि से अटके पडे थे। उनकी जुबान पर पाला पडा हुआ था। निस्तब्धता 'क्लास्ट्रोफोबिया' की फफुँदयाही गन्ध लिये, उडान भरते हुए डाइनोसॉरिक डैनो की विकराल काली छाया फैला रही थी। अधेरी सडक पर सियार से रिरियाते कुत्ते भी भयानक प्रतीत हो रहे थे।

एक हिम-मानव सरीखी आकृति शहर मे कहर ढा रही थी। ग्वेरिन उसे ढूढने निकला था। वह नही जानता था कि उसे कहाँ ढूढा जाये। उसे तलाश करना अत्यन्त आवश्यक था, क्योंकि उसका सीधा सम्बन्ध ग्वेरिन से था।

उस हिम-मानवीय आकृति का पंजा साक्षात् मौत की प्रतिच्छाया बना हुआ था। आज ग्वेरिन के पडौस मे मातम छाया हुआ था। कल पता नही किसके यहाँ की खुशिया हमेशा के लिये छिन जाये।

रात्रि के ठीक चार बजे थे। उस हिम-मानवीय आकृति ने पडौस की दस मंजिली खिडकी से भीतर प्रवेश किया। सिटकनियाँ बिना आवाज किये झटपट सरक गई मानो स्वचालित हों। उसने खिडकियाँ और दरवाजे खोलने का 'खुल जा सम सम' सा ढंग कसे सीखा था कोई नही जानता था। पर्दे हवा बन्द होने के कारण हिल नहीं रहे थे। लेकिन एक परछाई अवश्य हिलती हुई दृष्टिगोचर हुई। बुझते तारोंकी मद्धिम रोशनी ही उस भयावह आकृति को देखने के लिये पर्याप्त थी। जोन हार्ट को नीद नही आ रही थी। जोन हार्ट ही क्या, सारे शहर के लोगो की नीद आँखो से ओझल हो चुकी थी। जोन हार्ट पहले से ही भयभीत थी। न जाने कैसे उसे यह अहसास हो गया था कि आज की रात उसके लिये कयामत की रात है, और वह जिन्दा नही बचेगी। लेकिन वह कर कुछ नही सकती थी सिवाय जिन्दा रहने की भीख मागने के। उस हिम मानवीय आकृति को देखते ही वह सिर से पाव तक काँप गई। वह उसके आगे गिडगिडाई। उसने कितना बडा दुस्साहस किया था। अन्य को तो इतना मौका ही नही मिलता था, लेकिन उस भयावह आकृति पर इसका कोई असर नही हुआ। उस हिममानवीय आकृति ने क्रूर अट्टहास करते हुए उस अप्सरा सी सुन्दर नवयौवना का गला घोट दिया। जोन हार्ट की तेज चीख मोहल्ले के निवासियो को दहलाती हुई आकाश मे विलीन हो गई। अन्य कोई घर का सदस्य उस कमरे मे दाखिल होता, इससे पूर्व ही वह भयानक आकृति अंधेरे में विलीन हो गई। ग्वेरिन मोहल्ले मे दौडा, इस इरादे से कि शायद वह आकृति मिल जाये लेकिन उसका कही अता-पता नही था।

ग्वेरिन अब जबकि सुनसान सडक पर आगे बढ रहा था, जोन हार्ट की खौफनाक चीख उसके दिमाग मे प्रतिध्वनित हो रही थी। उसका सुन्दर तथा मासूम चेहरा प्रतिबिम्ब की तरह ग्वेरिन के दिमाग पर छाया हुआ था। जोन हार्ट की मौत का जिम्मेदार वह भयानक आकृति

थी, जिसकी खोज मे वह स्वय अकेले निकला था। ग्वेरिन स्वय को अपराधी महसूस कर रहा था। वह स्वय को जोन हार्ट की मौत का जिम्मेदार समझ रहा था। उसने उस भयावह आकृति के सम्बन्ध मे अनेक सुन्दर कल्पनाएँ की थी, लेकिन उन कल्पनाओ का परिणाम इतना वीभत्स तथा क्रूर निकलेगा, उसे इसकी स्वप्न मे भी आशा नही थी। मानवता का हामी मानवता का हत्यारा होगा, यह ग्वेरिन ने कभी नही सोचा था। यह उसके लिये कैसी विडम्बना थी कि जिस इच्छे काय को उसने किया, वह अच्छा काय अचानक भयावह हो गया। वह किसी से कह भी नही सकता था कि उसने वह कार्य किया। आखिर किस मुँह मे कहे। यहा तक कि अपनी पत्नी पारो से भी नही कहा कि किस काय मे वह व्यस्त था। पारो ने भी कभी यह जानने की कोशिश नही की कि किस कार्य मे वह व्यस्त था। उसे विश्वास था कि एक दिन उसका पति विश्वविख्यात वैज्ञानिक के रूप मे ख्याति अर्जित करेगा, इसलिये कभी भी उसके काय मे दखल देना उसने उचित नही समझा। बल्कि उसके काय मे हर सम्भव मदद की। लेकिन कब तक वह उसका यह विश्वास बनाये रख सकेगा ? कब तक वह उसे अन्धेरे मे रखेगा ? जिस दिन उसे सत्य का पता चलेगा तो क्या वह उसे टूटते देख पायेगा। नही नही -- वह उसे कभी सत्य का पता नही चलने देगा। वह कभी भी एक अपराधी के रूप मे उसके सामने उपस्थित नही होगा। न ही दुनियाँ को यह पता चलेगा कि वह वैज्ञानिक नही बल्कि मानवता का हत्यारा है। अब उसे उस खौफनाक आकृति को खत्म करना ही होगा, चाहे इस प्रयास मे उसकी मौत ही क्यो न आ जाये।

निवासस्थल से निकलने के पूव ग्वेरिन ने पारो से अन्तिम विदा ली थी।

अर्द्ध रात्रि का समय था। पारो गहन निद्रा मे थी। फिर भी ग्वेरिन ने उठने मे सतकता बरती। उसने मन ही मन कहा—"पारो, मैं जा रहा हूँ पारो मैं नही जानता कि मैं हमेशा के लिये जा रहा हूँ या फिर लौट कर आऊँगा पारो मैंने पाप किया है अपराध किया है मैं पापी हूँ अपराधी हूँ खूनी हूँ हाँ पारो मैं सही कह रहा हूँ पारो यदि मैं जीवित रहा तो दुनियाँ मुझे कभी माफ नही करेगी इसलिये पारो मैं जा रहा हूँ हाँ पारो मैं जा रहा हूँ पारो मैं तुमसे प्यार करता हूँ मेरी ईश्वर से कामना है कि इस प्यार को अमर रखे पारो अलविदा।

अश्रुओं की धारा ग्वेरिन के चेहरे पर ढलक आई। कुछ बूंदें उसकी पत्नी की गर्दन पर भी लुढ़क गई। उसने पारो के मासूम चेहरे को चूमा और बाहर निकल गया। इतना भाव विह्वल वह अपनी जिन्दगी में कभी नहीं हुआ था।

चारों तरफ सन्नाटा था। दरख्तों की पत्तियाँ ठिठुरन भरी हवा के बहाव में चीत्कार कर रही थी। कभी-कभी रात्रिचर की पैशाचिक आवाजें गूंज उठती थी। दोनों तरफ झाड़ियाँ थी। अचानक उसे चर चर आवाज सुनाई दी। वह सतर्क हो गया। उसने दायी तथा बायीं ओर झांका। कोई दिखाई नहीं पड़ा। ग्वेरिन ने एक कदम आगे बढ़ाया ही होगा कि उसे चीखते बन्दर की सी आवाज सुनाई दी। ग्वेरिन बुरी तरह कांप उठा। उसे अहसास हो गया कि भयावह आकृति उसके बहुत नजदीक पहुँच चुकी थी। ग्वेरिन ने सड़क के दोनो ओर ऊँची-ऊँची घास के बीच भारी भरकम डग भरने की आवाज सुनी। घास के बीच से उभरती आकृति अचानक स्पष्ट हो चली। वह विशालकाय तथा भारी भरकम वनमानुष सरीखा दैत्य सड़क के किनारे आ चुका था। उसने "निम्न टोन" में डाइनोसोरिक घरघराहट की। उसकी पनियायी आँखें शिकारी कुत्तों की तरह चमक रही थी। उसे देखकर कोई भी सिर से पाँव तक कांप जाता था। और एक ऐसे प्राणी के समक्ष जो मानव से अधिक ताकतवर हो, अधिक बुद्धिमान् हो—सुपर ह्यूमन, जिसका इरादा अमानुषिक हो, भयभीत होना स्वाभाविक है। अब वह ग्वेरिन के सामने था।

"मैं जानता था, तुम मुझे तलाश करने अवश्य आओगे।" दैत्य ने प्रकाश की ओट में उभरते से छायामयी हिममानवीय चपटे हाथ को उठाते हुए कहा—

"हाँ, तुमने मेरे आदेशों का पालन करना छोड़ दिया।" ग्वेरिन साहस बटोर चुका था।

"मुझे मानसिक दासता पसन्द नहीं, मैं हर तरह से स्वतन्त्र हूँ।"

"स्वतन्त्रता का मतलब यह नहीं कि तुम स्वच्छन्द हो अकारण मनुष्यों का गला घोटो भोले भाले तथा निरीह इन्सानों को मौत के घाट उतारो शहर में भय उत्पन्न करो।"

"यह मेरा खेल है, मुझे इसमें आनन्द आता है।"

"लेकिन मैं तुम्हारा 'जनक' हूँ।"

"जनक ? हा हा हा।" दैत्य का अट्टहास उस निर्जन स्थल मे गूंज उठा।

"हां, मैंने तुम्हारे भीतर जीवन डाला। तुम्हारी ये नाडियाँ, तुम्हारा यह खून सब कृत्रिम है।"

"शायद!"

"मैंने सारा जीवन सौंप डाला, सिर्फ तुम्हे बनाने मे। मेरा एक ही लक्ष्य था, मिट्टी के ढेर मे जीवन डालना रात-दिन मैं इसी लक्ष्य के लिये जुटा रहा।"

"तुम्हारा यह स्वप्न पूरा हुआ और अब मैं और तुम दोनो आजाद है।"

"नही तुम आजाद नही हो, तुम्हे मेरे आदेशो का पालन करना होगा।"

"क्यो ?"

"इसलिए कि मैं तुम्हारा जनक हूँ, यदि मैंने तुम्हे जीवन नही दिया होता तो तुम मिटटी के ढेर के समान थे।"

"तुम मुझ पर एहसान लाद रहे हो, यह सब मैं सुनने का आदी नही हूँ।"

"मैंने तुमसे न जाने क्या-क्या सपने सजोये, तुमने उन्हे किस बेरहमी से चूर चूर किया है क्रूर! निर्दयी! हत्यारा!"

"हा हा हा!"

"फीण्ड (राक्षस)!!! तुम मानवता के विनाशक हो। मैं तुम्हे मार डालूगा।" ग्वेरिन आदेश पूवक चिल्लाया।

"हा हा हा।" दैत्य का अट्टहास गूज उठा।

तुरन्त ग्वेरिन ने लेसर पिस्तौल निकाली और उस पर दाग दी। दैत्य ने भी फुर्ति दिखाई। पलक झपकते ही ग्वेरिन का निर्जीव शरीर जमीन पर लुढक गया। दैत्य लम्बी-लम्बी घास के बीच होता हुआ पहाडी की ओर चल दिया और हमेशा की तरह अधकार मे विलुप्त हो गया। क्या दैत्य ने पहाडी मे जाते हुए दम तोड दिया, कोई भी इस रहस्य को नही जान पाया।

पारो इतजार करती रही, लेकिन अब सिवाय अधेरो के उसके पास क्या बचा था ?

-०-

काल-यंत्र

"पापा, आप प्राउस्ट होते चले जा रहे हैं।"

"प्राउस्ट ?"

"हाँ, फ्रांसिसी उपन्यासकार की तरह आप बाहरी दुनिया से कट चुके हैं, यहाँ तक कि आप अपने को भी पहचानने से इनकार करने लगे हैं।"

"नहीं रंजिता।"

"हां, पापा, मैं सच कहती हूँ। एक दिन आप मुझे भी भूल जाओगे।"

"नहीं, यह नहीं हो सकता है। ऐसा कैसे हो सकता है ?"

"आपका भीतरी संसार शक्तिशाली होता जा रहा है तथा बाहरी संसार किसी दूर भागते तारे-सा निस्तेज होता जा रहा है।"

"नहीं रंजिता, तुमने समझने में भूल की। यह जो कुछ भी मैं कर रहा हूँ क्या तुम्हारे सम्पर्क के बिना सम्भव है ? हर बार बाजार से तुम्हें कुछ न कुछ खरीद के लाना होता है। मेरी प्रत्येक आवश्यकता का तुम्हें ध्यान रखना होता है। यदि ऐसा नहीं हो तो क्या मैं इस अनुसन्धान में प्रवृत्त रह सकता हूँ ?"

"आप किस पर कार्य कर रहे हैं, मुझे कुछ समझ में नहीं आता। यह कैसा अनुसन्धान है कि अब मम्मी से मिलने का भी समय नहीं मिल पाता। वह बेचारी रोती रहती हैं। अपने बच्चों को पहचानने से आपने इन्कार कर दिया। केवल सोचना और सर्किट बनाना। उठते बैठते, सोते जागते, भोजन करते समय भी सोचते रहना। हम क्या कहते हैं, उससे आपका कोई वास्ता न होना। अपने शरीर का हाल देखो, कैसा जीर्ण-शीर्ण होता जा रहा है। आखिर क्या हो गया है आपको ?"

"मेरे लिये ये सब बातें गौण हैं"। अनुसन्धान ही मेरे लिये जीवन है। मैं इस महान् कार्य के लिये समर्पित हूँ। एक फाइन आर्ट्स की लड़की कैसे समझ सकती है कि 'रोबोटिक्स' क्या है ? लेकिन यह कार्य मेरे

सपने की एक सडक है। यह तो भगवान् ही जानता है कि यह सडक मजिल को ढूढ लेगी अथवा नही। 'अनसर्टेन्टी (अनिश्चितता) का सिद्धान्त ही कुछ ऐसा है। इतना अवश्य है रजिता कि तुम उस सडक पर छाव करने वाली वृक्ष हो।"

"लेकिन वह मजिल क्या है ?"

"यह बताना मेरी सफलता पर निर्भर करता है।"

"पापा, कॉफी ठडी हो चुकी है।' रजिता जानती थी कि उसके पापा अपने इरादो को गुप्त रखेंगे। लेकिन वह इस बात को नही समझ रही थी कि पापा इस रहस्य को बनाये रखना चाहते हैं ? लेकिन उसे पापा की इच्छा के आगे झुकना पडा, अत उसने बात बदल दी तथा कॉफी की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया।"

"ओह ! सॉरी ! हेल टू माई फोरगेटफुल नेचर।"

"लाइये ! पुन गर्म कर लाती हूँ।' रजिता कॉफी केतली मे उडेलती हुई चली जाती है। उसके पापा, जो कि बसत के नाम से चिर परिचित हैं, प्रयोगशाला मे बैठे हुए पुन 'पॉजिट्रोनिक पाथवे' मे खो जाते हैं। कई बार ऐसा होता है कि रजिता कॉफी लाती है और बसत पॉजिट्रोनिक सर्किट के निर्माण मे इतना उलझ जाते हैं कि कॉफी पीना भूल जाते हैं। वह इन सर्किटो मे इतना खो गये थे कि दस दिनो तक प्रयोग शाला से बहर नही निकले। पूरे दस वर्ष बीत चुके थे इसी तरह से 'पॉजिट्रोनिक सर्किटो' की दुनिया मे रहते।"

एक दिन बसत स्वय रजिता के पास आते हैं। रजिता बाहर लॉन मे बैठी हुई कार्डिगन बुन रही होती है।

"रजिता।"

"पापा, विश्व का सातवा आश्चर्य कि आज आप स्वय प्रयोगशाला से निकल कर बाहर लॉन मे आये।"

"रजिता, अब इससे भी बडा आश्चर्य हो चुका है।"

"क्या ?"

"एक रोबो महिला का निर्माण।"

"रोबो महिला ?"

"हाँ मशीनी महिला ! मैंने उसे निर्मित किया है।"

"क्या यही आपके अनुसधान की मजिल थी ?"

"नही, यह तो मेरी मजिल का पहला कदम है।"

"पापा, क्या नाम दिया है आपने ?"

"रजिता, विश्व की यह प्रथम मशीनी महिला 'जेन' के नाम से जानी जायेगी।"

"यह हुबहू तुम्हारी जैसी लगती है।"

"ओह! नही पापा।"

"मेरे साथ आओ, मैं तुम्हारी उससे मुलाकात करवाता हूँ।"

"पापा, इस तरह कह रहे हैं जैसे वह कोई एक मशीनी महिला न होकर वास्तविक महिला हो।"

"इसका अहसास तो तुम्हे उसे देखकर की होगा।"

विज्ञानी वसत उसे प्रयोगशाला मे ले जाते हैं।

एक मद्धिम लेम्प के जलते ही रजिता को एक मधुर सगीत सुनाई पडता है। अचानक उसे किसी महिला की आवाज सुनाई देती है।

"गुड इवनिंग रजिता।" रोबो-महिला की आकृति अचानक प्रकट होती है। रजिता एक मशीनी मानव को देखकर तनिक भयभीत होती है लेकिन किसी तरह साहस बटोर कर प्रत्युत्तर देती है—

"गुड इवनिंग।"

"आई एम जेन।" रोबो महिला हाथ बढाने के लिये आगे बढती है। रजिता वसत की ओर मुखातिब होती है।

"डरने की कोई बात नही है। कम एण्ड शेक हेन्ड!" इस बीच रजिता को वसत से सहमति मिल जाती है।

"ग्लेड टू सी यू'।" रजिता साहस करके उससे हाथ मिलाती है।

"मैं तुम्हारी तरह ही एक महिला हूँ।"

"नही जेन, तुम केवल मशीन हो और मशीन ही रहोगी।" रजिता ने अपने होठ चबाये तथा जेन के इस विचार से अपनी नापसदगी जा॥ र की।"

"रजिता ऐसी बात नही कहो जिससे इसे ठेस पहुँचे।" वसत ने अपनी बेटी को हिदायत दी। जेन भले ही मशीन थी लेकिन वसत नही चाहते थे कि वह मशीन की मानसिकता से ग्रस्त हो। अत उन दोनों की बातचीत के बीच मे उन्होने रजिता को टोका।"

"ठेस! क्या इस मशीन को ठेस पहुँचेगी?"

"हाँ क्यो नही, जब वह सोच सकती है तो उसे ठेस भी पहुँच सकती है।"

"क्या मनुष्य की तरह?"

"हाँ, मनुष्य की तरह।" वसत ने रजिता को दृढतापूर्वक कहा।
रजिता पुन जेन की ओर मुखातिब हुई। "क्या यह सच है?"
"यस, आइ एम ट इमोशनल।" जन ने सहमति अभिव्यक्त की।
"सॉरी, आई हर्ट यू।"
"नोट मेशन।"
वसत और रजिता दोनो उससे विदा लेते हुए लॉन मे चले आते है।
"पापा, आपने उसे क्यो निर्मित किया? क्या महज एक महिला रोबो निर्मित करने के लिये आप प्राउस्ट की भूमिका निभा रहे थे।"
"क्या तुम्हे जेन पसन्द नही है।"
"यहाँ पसन्द ना-पसन्द का कोई सवाल ही नही उठता।"
"क्या महज एक लडकी के निर्माण के लिये आपने इतनी शक्ति खर्च की? क्या हाड-मास की लडकियाँ वह काम नहीं कर सकती जो आप चाहते हैं?"
"हाँ, मैं जो इसे काय सौप रहा हूँ, वह काय कोई 'सुपर ह्यूमन' ही कर सकता है।"
"तो आपका 'क्रियेशन' जेन रोबो महिला क्या एक 'सुपर ह्यूमन' है?"
"रोबो महिला जेन वास्तविक सुपर ह्यूमन नही है लेकिन उसके कार्य 'सुपर ह्यूमन' के समकक्ष होगे।
"पापा, ऐसा क्या काम आप 'जेन' को सौंपने जा रहे हैं जो केवल 'सुपर ह्यूमन' ही कर सकता है।"
"रोबो-महिला निर्माण का एक विशेष प्रयोजन है। मैंने अपना समय और अथाह शक्ति यो ही बरबाद नही की है। मुझे विश्वास है कि एक दिन वह अवश्य क्रानोस्कोप के निर्माण मे होगी।"
"क्रोनास्कोप?"
"हाँ, क्रोनोस्कोप क्रोनोस्कोप से मेरा आशय है कालयन्त्र।"
"कालयन्त्र! मैं कुछ समझी नही।"
"कालयन्त्र एक ऐसी मशीन होगी जिससे हम 'भूत' मे गोता लगा सकेंगे। यह कालयन्त्र! मेरा एक स्वप्न। पहले मुझे लगता था कि यह एक दूरगामी स्वप्न है लेकिन अब गाडी के प्लेट फार्म पर लाने की देरी है, मजिल तो यह अपने-आप तय करेगी ही।"
"क्या इस मशीनी-महिला के माध्यम से आपका स्वप्न पूरा हो जायेगा?"
"अवश्य।"
"इससे क्या फायदा होगा?" 11,420

"जब यह कालयन्त्र बन कर तैयार होगा तो हम भूतकाल में गोता लगा सकेंगे। रंजिता, क्या तुम नहीं चाहतीं कि तुम कालीदास से बात करो ?"

"कालीदास की मृत्यु हुए तो शताब्दियां निकल गईं।"

"हाँ, लेकिन उससे तुम भूत में लौट कर बात कर सकोगी।"

"क्या मैं कालीदास की प्रेतात्मा से बात कर पाऊँगी ?"

"प्रेतात्मा से नहीं बल्कि सशरीर जीवित कालीदास से।" केवल तुम्हें भूतकाल में गमन करना होगा।"

"यह असम्भव है। समय नदी की तरह है जो हमेशा आगे की ओर बहता है।"

"हमें इस धारणा को बदलना होगा—समय रुक सकता है - समय पीछे की ओर मुड़ सकता है।"

"समय रुक सकता है पीछे की ओर दौड़ सकता है - मुझे लगता है कि आपका दिमाग एक्सेंट्रिक होता चला जा रहा है।"

"क्यों समय नहीं ठहर सकता ? इसका हम अनुभव भी करते हैं। इसे मैं तुम्हें इस प्रकार से समझाता हूं याददाश्त क्या है ? स्टोरेज ऑफ पास्ट इवेंट, यहां पर 'पास्ट इवेंट, याने भूतकालीन घटना एक समय है, टाइम है, जिसे संग्रहीत कर लिया गया है। यानी समय थम गया है। इसे यदि रिकॉल भी करते हैं तो स्मृति ताजा हो जाती है यानी भूतकाल को तुम जब चाहो स्मृति पटल पर ला सकते हो। काल जब चाहे तब वर्तमान में सरक सकता है। माना कि एक दुर्घटना में किसी व्यक्ति की स्मृति खो जाती है। इसका मतलब यह नहीं है कि भूतकालीन घटनाएं—उसके मस्तिष्क में संग्रहीत नहीं हैं। यदि तुम्हारे पास 'साइकेप्रोब' मशीन हो तो उसके मस्तिष्क में संग्रहित भूतकालीन घटनाएं तुम स्वयं ज्ञात कर सकते हो। और यदि हम 'हिप्पो केम्पस' मस्तिष्क में प्रतिरोपित कर सकें तो खोई हुई स्मृति पुनः लाई जा सकती है।"

"पापा, यह 'हिप्पोकेम्पस' क्या है ?"

"यह मस्तिष्क की एक संरचना है जिसके क्षतिग्रस्त हो जाने से स्मृति का लोप हो जाता है और व्यक्ति अपने परिजनों तक को नहीं पहचान पाता। बेटे, अब तुम समझ गई न कि काल थम सकता है।"

"यह तो एक विषम विचार है।'

"मैं तुम्हे समय के रुकने का एक और उदाहरण देता हू मानलो कि तुम किसी ऐसे राकेट मे बैठी हो जिसका वेग प्रकाश के वेग के निकट पहुच गया। समय तब भी थम जायेगा। इसका आभास तुम्हे पुन पृथ्वी पर लौटने पर होगा।"

"ऐसा क्यो, पापा ?"

"यहा काल चतुर्विम मे पहुच जायेगा। ऐसी स्थिति मे तुम्हारी जैविक घडी रुक जायेगी।"

"सूरज पहाडो के पीछे लटकते हुए रगीन आभा की पट्टियां स्वच्छ नीलाभ आकाश मे छितरा रहा था। तारे रात्रिचर की तरह अपने घरोंदे से निकल आने का आभास दे रहे थे। परिंदे हारे-थके अपने-अपने नीड की ओर लौटने लगे थे। बसत तथा रजिता भी बातचीत का सिलसिला यही खत्म कर देते हैं।

□□

अतर्राष्ट्रीय समुदाय ने 'रोबोटिक्स' के तीन नियम प्रतिपादित किये थे।

(१) रोबोट किसी भी मानव को क्षति नहीं पहुचायेगा।

(२) रोबोट को मानव द्वारा दिये गये आदेशो की अनुपालना करना अनिवार्य होगा। सिवाय इसके कि ऐसे आदेश प्रथम नियम की उपेक्षा नही करते हो।

(३) रोबोट स्वय के अस्तित्व की उस समय तक रक्षा कर सकता है जब तक कि वे प्रथम व द्वितीय नियम मे बाधक नही बनते हो।

विभिन्न रोबोट कम्पनियो को रोबोट का निर्माण करते समय इन नियमो का कडाई से पालन करना होता था।

उन दिनो विज्ञानी बसत इण्डियन रेड कम्पनी मे जनरल मैनेजर के पद पर थे। इस मल्टीवेक कम्पनी से सैकडो रोबोट तैयार किये गये थे। रोबोट को ऐसे दुष्कर काय ही सौपे जाते थे जो मानव द्वारा सभव नही हो। खदान के श्रमिको का काम रोबोट ने अपने हाथ मे ले लिया था। चन्द्र खाई (ल्यूनर द्वीप) से रोबोट ही बहुमूल्य वस्तुए 'स्पेश कार्गो' द्वारा पृथ्वी पर पहुचाते थे। समुद्र के गभ मे छिपे हुए बहुमूल्य रत्नो को रोबोट की सहायता से ही बाहर निकाला जाता था।

समस्त विश्व मे खेतीवाडी का मेहनतकश काय किसानों ने अब रोवोट को सौंप दिया था। सुदूर अतरिक्ष की यात्रा करने मे रोबोट ही अग्रणी होते थे। पृथ्वी पर प्रदूषण का गम्भीर खतरा पैदा हो गया था, युद्धस्तर पर वृक्ष लगाने का कार्य इन्ही रोबोट को सौंपा गया था।

प्रत्येक कारखाने मे रोबोट महत्वपूण भूमिका निभा रहे थे। मानव की महान सेवा करने के उपरान्त भी समाज मे उनके प्रति गहरी नफरत थी। लेकिन बसत को रोबोट के प्रति विशेष सहानुभूति थी। एक बार एक रोबोट 'डिटोनेट' किया जा रहा था कि कोई व्यक्ति उसे बचाकर बसत के पास लाया। वह रोबोट एक होवर शिप को बगाल की खाडी में ले जा रहा था कि कुछ समुद्री डाकुओ ने उस पर लेसर किरण दागनी चाही। यदि उस व्यक्ति ने रोबोट की रक्षा नहीं की होती तो उसे डिटोनेट (जडित) कर दिया जाता।

एक बार की बात है कि एक रोबोट को भरे बाजार मे निर्वस्त्र करने के आदेश दे दिये गये। बसत वही उपस्थित था। रोबोट के निवस्त्र होने पर लोगो का अट्टहास उस बाजार मे गूज उठा। बसत का मन ग्लानि से भर गया। ऐसी ही अनेक वारदातो से उसका मन रोबोटिक्स के नियमो के विरुद्ध विद्रोह कर उठा। उन्होंने इण्डियन रैन्ड कार्पोरेशन के जनरल मैनेजर के पद से स्तीफा दे दिया। तब उन्होंने अपने निवास स्थान पर रोबोट बनाने का निश्चय किया। उनके सात वर्ष के अथक प्रयासो का ही परिणाम थी 'जेन'। जेन—I II, III तथा जेन IV का परिष्कृत रूप थी—'जेन'। लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय को इससे अनभिज्ञ रखा गया।



जेन के निर्माण के पश्चात प्रथम छः माह उसकी शिक्षा दीक्षा के लिये सुनिश्चित किये गये। 'मेकेनिकल एज्यूकेटर' की सहायता से उसने विश्व कोश केवल ए माह मे जान लिया था। थ्री डी चित्र यानि होलाग्राफ उसके लिये द्रव्य-अवबोधन का काम करते।

केवल एक वष के भीतर-भीतर जेन ने भारतीय शास्त्रीय नृत्यो तथा विभिन्न देशो के नृत्यो मे महारत हासिल की थी। जब उसने न्यूयार्क के एक ख्याति प्राप्त प्रेक्षागृह मे भारतीय तथा पाश्चात्य नृत्य किये तो लोग दातो तले उँगली दबाते नहीं थकते थे। लोग इस बात से

अनभिज्ञ थे कि जेन एक रोबो महिला है। लोग इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि एक रोबो महिला इतने उत्कृष्ट नृत्य भी कर सकती है। क्योंकि नृत्य के लिये सवेग का होना आवश्यक है। लेकिन जेन जब भी नृत्य करती, भाव उसके चेहरे पर स्पष्ट झलकते दिखाई पडते थे। ऐसा प्रतीत होता था जैसे वसत ने जेन के मस्तिष्क की 'लिम्बिक प्रणाली' को सचारित कर दिया हो। लिम्बिक प्रणाली का सम्बन्ध सवेगो से होता है। लबे कद की नाजुक कोमल जेन जब मच पर थिरकती तो उसमे एक अजीब-सा परिवतन दिखाई पडता उसकी देह का प्रत्येक अग—ज्येष्ठ माह की तरह बढे हुए उरोज, रात्रि की तरह क्षीण होती कटि, अर्द्ध चन्द्र रेखाकित होती वक्रोचित श्रोणि, नाजुक तथा बेलनाकार हाथ तथा सुडौल, सुघड टागें, सभी अपनी भूमिका के कारण पृथक्-पृथक् अभिव्यक्ति दे रहे थे। दशको पर जेन के श्रृगार की अमिट छाप पड रही थी। रगे चुगे होठ और गाल। ललाट पर चाद-सी टिकुली, आजन से तराशी भौहे। सुगधित कण फूलो मे जडी अगस्त्य वृक्ष मे खिली कली-सी रत्नो की कनिया, नासिका मे नीलम जडी हुई जगमगाती सीक, छरहरी देह, घायल करती नीली तीखी आखे, आँखो के बाहर तक ऐंची काजर की लम्बी डोरी इक्कीसवी शताब्दी का अल्ट्रामार्डन लिबास, सभी उसमे जान फूक रहे थे। उसे देखकर क्या कोई कह सकता था कि वह एक रोबो महिला है।

कृत्रिम रगीन चमकीले मेघो के बीच उभक आई यह रूप छटा जब छन्न-छन्न करते पायलो के साथ थिरकती तो दशको के मन मे झकार पैदा कर देती। उसकी विद्युत-सी गति से नृत्य जोशपूर्ण स्फूर्ति प्रद तथा नयनाभिराम लग रहा था। पावो की गति, लय तथा तत्कार आदि पर प्रभुत्व पाना आसान काम नही है लेकिन जेन यहा साक्षात् रानी कर्णा लग रही थी। ताल प्रधान पदविन्यास तथा प्रसन्न मुख मुद्रा से उसके यथोचित अभिनय की झलक मिल रही थी। अपने सौन्दर्य तथा सघन अभिनय से उसने दशको का दिल जीत लिया था। रातो रात जेन 'ग्लोबल' नतकी के रूप मे प्रसिद्ध हो चुकी थी। लेकिन उसने प्रेस इन्टरव्यू के लिए मना कर दिया। वसत तथा रजिता के अतिरिक्त कोई नही जान पाया कि वह 'रोबोटिका' है।

□□

विज्ञानी बसत कुछ और ही चाहते थे। दुनिया आश्चर्यचकित थी कि क्यो जेन ने अतिशीघ्र नृत्य-ससार से विदा ली। इस समय जेन तथा विज्ञानी बसत दोनों बतिया रहे हैं। बसत जेन की ओर मुखातिब होते हुए कहते हैं—

"जेन, अब तुम्हे भी इस कार्य मे उतनी ही रुचि दिखानी होगी जितनी मैंने तुम्हारे निर्माण मे ली।"

"हा, लेकिन मैं 'क्रोनोस्कोपी' के बारे मे कुछ नही जानती।"

"तुम सब जान जाओगी। इस कार्य में मैं तुम्हारी मदद के लिये हमेशा तैयार रहूगा।"

"क्या विश्व मे इस पर साहित्य लिखा गया है ?"

"नही, क्रोनोस्कोपी विश्व के लिये एक नया विषय है। विश्व के किसी पुस्तकालय मे इस विषय पर साहित्य नही मिलेगा।'

"तो फिर ?"

"कालयत्र के बारे मे मैंने जो कुछ सोचा है वह मैं 'मेकेनिकल एज्यूकेटर' के जरिये तुम्हारे मस्तिष्क मे प्रवेश कराने का प्रयत्न करूगा। आधारभूत योजना जानने के बाद तुम्हे कालयत्र 'इन्वेन्ट' करना होगा।"

"अकल, कालयत्र से आप क्या चाहते हैं ?" रोबोटिका जेन ने अकल कहकर बसत से रिश्ता जोडा जसे वह 'ह्यूमन' हो। वास्तव मे रोबोटिका जेन स्वय को 'ह्यूमन' ही समझती है।

"मैं भूतकाल के दशन करना चाहता हूँ।"

"क्या मैं जान सकती हूँ, आप भूतकाल के दर्शन क्यों करना चाहते हैं ?"

"भूत को जानने की एक जिज्ञासा है।"

"मात्र 'जिज्ञासा' ! यह तो आप किताबो से भी जान सकते हैं।"

"जिज्ञासा' प्रत्येक आविष्कार की पहली सीढी है। मैं मनुष्य द्वारा तोडे-मरोडे हुए इतिहास को जानना नही चाहता बल्कि साक्षात् इसे महसूस करना चाहता हूँ।'

"ठीक है, मैं अपना भरसक प्रयत्न करूँगी। देखिये न अकल, आपके कहने से मैंने नृत्य करना भी छोड दिया। दुनिया मुझे थ्री डी पर देखने के लिये बेताब है लेकिन अब उसे निराश होना पडेगा।"

"हाँ, कुछ समय के लिये।"

"क्या आपको यह आशा है कि मैं पुन विश्व नर्तकी के रूप में प्रकट होऊँगी ?"

"हाँ, हम आशा सजोये ।"

कुछ दिनो बाद—

रोबोटिका जेन वसत की ओर मुखावित होते हुए कहती है—

"कालयत्र का छोर कहाँ से पकडना चाहिये ।"

"इसके बारे मे पूणतया अनभिज्ञ हूँ । लेकिन मैं तुम्हे 'विचार कक्ष' मे जाने की अनुमति अवश्य दे मकता हूँ यहाँ तुम्हे 'गेडेन्केन-प्रणाली' को अवश्य अपनाना चाहिये । गेडेकेन प्रायोगिक कक्ष मे पहुँचने के पश्चात् जेन भूतकाल की ओर गमन करने पर विचार करने लगती है । तभी एक उपकरण से ध्वनि सुनाई पडती है ।"

"जेन तुम्हारा इस गेडेन्केन प्रायोगिक कक्ष मे स्वागत है ।"

"थेंक्यू मल्टीवेक ।"

"मैं कामना करता हूँ कि इस प्रयोग मे आपको आशातीत सफलता मिले ।"

"थेंक यू ।"

"आशा है कि इस बार क्रोनोस्कोपी मे पूव से कई गुना बहतर परिणाम प्राप्त होगे ।"

"क्या 'क्रोनोस्कोपी' मे इससे पूर्व भी प्रयोग हुए है ?"

"हा, लेकिन अत्यन्त लघु स्तर पर ।"

"क्या तुम उन प्रयासो के बारे मे बता सकते हो ?

"हाँ मैं तुम्हे रिचर्ड फिनमेन द्वारा किये गये प्रयोग दिखलाता हूँ ।" विचार-कक्ष मे ध्वनि सुनाई पडती है ।

"जेन क्या तुम जानती हो कि फिनमेन कौन है ?"

"नही ।"

"इन्हे 1965 ई मे नोबल-प्राइज मिला । अब इस 'विजी प्लेट' पर देखो ।"

जेन 'दृश्य-पट्टिका' पर फिनमेन के बादल कक्ष (क्लाउड चेम्बर) को देख रही थी । अब उसे पॉजीट्रोन के व्यवहार का पता चला । जेन पॉजीट्रोन के व्यवहार का ग्राफ डेस्क पर रखे हुए कागज पर खेंचने लगी । यह ग्राफ फिनमेन से अत्यधिक जटिल था । लेकिन इसके निष्कर्ष फिनमेन से अधिक स्पष्ट थे । यह देखकर जेन खुशी से उछल पडी कि किस प्रकार प्रॉजीट्रोन भूतकाल मे गमन कर रहे थे । इसी प्रकार से जेन विजी प्लेट पर जॉन व्हीलर का प्रयोग देखने लगी थी । इस प्रयोग के पश्चात् उसे मिन्कोवस्की ग्राफ दिखाया गया जो समय-आकाश (टाइम-

स्पेश) पर खीचा गया था यहाँ इलेक्ट्रोन स्पेश-टाइम मे आगे-पीछे गमन होता दिखाई पडता है। जेन एक 'वर्ल्ड लाइन' को खीचते हुए देख रही थी। वर्ल्ड-लाइन के अनुप्रस्थ काट पर इलेक्ट्रोन टाइम-स्पेश मे आगे की ओर बढते हुए दिखाई पड रहे थे जबकि पॉजीट्रोन पीछे की ओर सरक रहे थे। इन प्रयोगो से जेन मे आशा का सचार हुआ।

"मल्टीवेक, क्या इन प्रयोगो से यह सिद्ध नहीं होता कि कुछ कण भूतकाल मे गमन कर सकते हैं ?"

मल्टीवेक गेडे-केन प्रयोग का एक सुपर कम्यूटर है। यह गेडे-केन प्रयोग से उपजे विचार को ध्वनित करता है।

"हाँ जेन, मैं तुम्हारी बात से सहमत हूँ।"

"मल्टीवेक, क्या इस ब्रह्माण्ड मे कोई ऐसा ससार नही हो सकता जिसकी हर क्रिया भूत मे गमन करती हो। जेन ने अपनी जिज्ञासा प्रकट की।"

"हा, क्यो नही हो सकता। कुछ 'एन्टीमेटर' के ऐसे ससार हो सकते है। और यदि ऐसा है तो निश्चय ही ये ससार बडे विचित्र होगे। हा, ऐसे ही विचित्र ससार के बारे मे मुझे एक घटना याद हो आई

"क्या तुम जानना चाहोगो ?"

"हाँ अवश्य।"

"एक बार एक अजनवी सुकरात को कुछ अजीब सी बात बता रहा था कि उसका ससार एक स्पदित विशाल समय चक्र मे विचरता है। वह कह रहा था कि 'काल' चक्र के अन्त मे थम जाता है फिर विपरीत दिशा मे बहने लगता है। एक कालचक्र के अन्त मे जब सभी प्राणी स्थिर हो जायेंगे तो नश्वर प्रकृति विपरीत दिशा मे बहने लगेगी। वृद्ध प्राणी समय के साथ-साथ युवा होने लगेंगे। वद्ध के श्वेत केश काले तथा घने होने लगेंगे। जीर्ण चेहरे की झुर्रियां मिटने लगेंगी तथा कुछ ही वर्षों मे वह युवावस्था मे प्रवेश करेगा। समय के साथ ही वह बाल्यावस्था तथा उससे आगे शशवावस्था से गुजरेगा और अन्त मे विलुप्त हो जायेगा। क्या तुमने प्लेटो की स्टेट्समेन नही पढी ?

"हाँ मल्टिवेक, लेकिन वतमान मे भी कुछ एन्टीमेटर' गेलेक्सी ऐसी होगी जिसमे इसी प्रकार से उल्टा जीवन का चक्र हो।"

"हाँ क्यो नही क्या तुम्हे मालूम ही नही कि किओस के एक ग्रीक इतिहासकार थियो पोम्पस ने भी इसी प्रकार के जीवन का जिक्र किया लेकिन उसने इस प्रकार के विचित्र जीवन का सम्बन्ध खाने के फल से

स्थापित किया । उस फल के खाने से व्यक्ति वृद्धावस्था से प्रघेडावस्था, इससे युवावस्था, किशोरावस्था फिर बाल्यावस्था तथा उससे फिर शैशवावस्था मे पहुँच जाता है तथा अन्त मे विलीन हो जाता है ।"

जेन को इस बात से आश्चर्य होता है । लेकिन मल्टिवेक का कहना है कि हमे इसके लिये अपने ससार से अलग सोचने की आवश्यकता नहीं । हमारा ससार भी इस प्रकार से हो सकता है यदि हमने कालयन्त्र की श्रेष्ठता को हासिल कर लिया तो । हमारे बीच निर्मित यह ससार कैसा होगा ? इसकी कल्पना मे जेन डूब जाती है ।



ठीक सात वर्ष पश्चात् जेन गेडेन्केन प्रायोगिक कक्ष से बाहर आती है । वह अपने प्रयासो को वसत की प्रयोगशाला मे भौतिक रूप प्रदान करती है । इस काय में उसे तीन वष और लग जाते हैं । ठीक दस वर्षों मे कालयन्त्र बन कर तैयार होता है । वह बसत को इसकी कायप्रणाली समझाती है । इसके पश्चात् वह इसे वसत को सौंप देती है । फिर एक दिन निश्चित किया जाता है । भोर होते ही आसमान की एक कोर से उजास के अकुर फूटने लगते हैं । दूर कासनी रग के कुहरे मे लिपटी नीली चोटियो के कपोल स्वर्णिम दमक से पुत गये थे । विज्ञानी बसत कालयन्त्र मे बैठ जाते तथा उसे प्रारम्भ कर देते हैं । कालयन्त्र केवल काच के खाली सन्दूक-सा दिखाई पडता है । कालयन्त्र के चालू होते ही विज्ञानी बसत भूतकाल मे खिसकने लगते हैं । समय के भूत मे सरकने के साथ ही उनकी दाढी घिसने लगती है । वह अपने बीते हुए दिनो मे लौटने लगते है । अघेडावस्था से वह युवावस्था मे प्रवेश करते है ।

आश्चय ! उन्हे अपनी पहली पत्नी सुनन्दा दिखाई पडती है । उसे देखते ही साथ-साथ बिताये क्षणो की तस्वीर तरोताजा हो आती है । कितना प्यार करता था वह अपनी पत्नी से ।

'सुनन्दा तुम कहा चली गई इतने दिन से' बसत अपनी पत्नी को आलिगनबद्ध करते हुए कहते हैं ।

'कही नही, मैं तुम्हारे पास तो हू ।

'नही, तुम मुझे कार दुघटना मे छोड गई थी । उसके बाद से मैं खालीपन महसूस करने लगा तब से आज तक मुझे ऐसा ही महसूस होता है । तुम सदैव के लिये मेरे दिल का दद बन चुकी हो जो आज

भी उतना ही गहरा तथा तीक्ष्ण है जितना कि तुम्हारे बिछोह के समय था। हा तुम्हारी दी हुई एक निशानी है मेरे पास। याद है तुम्हे तुम एक दिन 'बेबीटोरियम' गई थी। वहा तुमने एक भ्रूण खरीदा था। उसे अपने गभ मे प्रतिरोपित करवाने तुम सीधी डाक्टर मचिन की डिस्पेंसरी पहुच गई थी। वह निशानी जो मरते समय तुमने मुझे सौंपी थी। आज रजीता के रूप मे जिंदा है। अब तक वह बीस वष की हो चुकी है। वह मुझे भरपूर प्यार देती है लेकिन क्या वह तुम्हारा स्थान ले सकती है?"

"मुझे कुछ समझ मे नही आ रहा है मैं किसी 'बेबीटोरियम' मे नही गई रजीता मेरी बच्ची है मुझे तो कुछ मालूम होता।"

"इसलिये कि तुम अपने भविष्य से अनभिज्ञ थी तुम्हारा भविष्य तो केवल मैं जानता था, क्योकि मैंने उसे जीया है।"

'तुम मेरे भविष्य द्रष्टा कब से बन गये?" अचानक समय पीछे सरक जाता है। वसत अचानक चिल्ला उठता है।

"सुनदा! तुम मुझे अकेला छोडकर कहा जा रही हो? मैं तुम्हारे बिना नही रह सकता सुनदा हर्गिज नही नहीं सुनदा न ही।" वसत सिसकियां भरने लगते है। आखो से अश्रु उनके कपोलो पर झर झर बहने लगते हैं।

वसत यह भूल जाते हैं कि वह किसी कार यत्र मे हैं। उन्हे केवल भूतकाल का ससार साक्षात् नजर आता है। वह न बीती बातें या घटनाओ को याद करते हैं न ही कोई स्वप्न देख रहे होते है। बल्कि हकीकत के ससार मे साक्षात् विचर रहे होते हैं। कालयत्र की काय-प्रणाली हा। बडी विचित्र है, अबूझ तथा हमारी समझ से नितात परे है।

समय के काल के भूत मे सरकने के साथ ही 'टीनेजर' सुनदा की ध्वनि उन्हे सुनाई पडती है।

"क्या बात है वसत, क्यो इस तरह अश्रु बहा रहे हो। ये अश्रु बहाने के दिन नही बल्कि हसने-खेलने के दिन है आओ कॉलेज केम्पस से बाहर चलें।" ... केम्पस से

वसत अपने अश्रु पोछ- ... देती

बाहर निकल आते हैं। एक,

है।

चन्द्रमा की शीतल रश्मिया स्वच्छ निर्मल जल की लहरो से अठखेलिया कर रही हैं। डोगी इन्हे गहरे जल की ओर ले जाती है। "वसत, प्रकृति की यह मनोरमा 'छटा इस कृत्रिम युग मे कितना मन मे आल्हाद उत्पन्न करती है।"

"हाँ सुनन्दा, जी चाहता है कि समय थम जाय और हम उम्र भर इन्ही तनहाइयो मे खो जायें।"

"सच वसत!"

"हा सुनन्दा, देखो किस तरह से शशि की शीतल रश्मि प्यार बरसा रही है। हम इसी तरह के प्यार मे सराबोर होते चले जायें और वसत गीत हमारी जिन्दगी बन जाये।"

दोनो गीत गाने लगते हैं। गीत मे वसन्त इतने डूब जाते है कि उन्हे ध्यान नही रहता कि कब समय पीछे की ओर सरक गया। 'सु न न्‍ दा।' वसत चीख उठता है और सिसकिया भरने लगता है। वह अपने बचपन में लौट आता है।

"क्या बात है बेटा, क्यो रो रहे हो?"

"मा तुम! तुम यहा कैसे?"

"मैं यहा कैसे? मैं घर मे नही रहूगी तो क्या बाहर रहूगी। तू रो कैसे रहा है, क्या स्कूल मे तेरी पिटाई हुई थी?"

"नही मा।"

"जाओ, पहले जाकर अपने मुह-हाथ धो लो।"

वसत मुह पोछने के लिये दपण के सामने खडा हो जाता है। दपण मे अपना चेहरा देखकर वह हतप्रभ रह जाता है।

"मा, मैं तो पचास वप का हू, दस वप का कैसे रह गया।" तभी समय पीछे सरक जाता है।

"नही नही, मुझे और पीछे नही ले जाओ मैं मर जाऊगा लेकिन मैं समय को कसे थामू। कैसे उसको दिशा वदलू। ओह! यह तो मैं भूल ही गया। मैं कुछ समय मे विलीन हो जाऊँगा। न ही न ही। ब चा ओ।" वसत मूछित हो जाता है।

□□

"मैं कहा हू?" होश मे आने पर वसत चिल्लाया।"

'पापा!' रजिता के होठो पर मुस्कान खिल गई।

"रजिता तुम ! तो क्या मैं लौट आया हू ?"

"हा पापा, लेकिन आप बेहोश कैसे हो गये ?"

"मै समय को बदलना भूल गया था और मुझे स्वय के विलीन होने का आभास हो चला था । लेकिन मैं पुन लौटा कैसे ?"

"आपके मूर्छित होने पर रोबोटिका जेन ने कालयत्र की चाबी को उल्टा घुमाया इससे समय उल्टा चलने लगा ।"

लेकिन जेन को कैसे पता चला कि मै बेहोश हो गया था ।

'यह तो जेन ही जानती है वह अभी आती ही होगी । वह भी किचन मे है तथा कॉफी बना रही है । मुझे इस बात से राहत मिली कि आप अपने वर्तमान रूप मे आ गये ।"

तभी जेन ने कॉफी की ट्रे सहित कमरे मे प्रवेश किया ।

"गुड मोरो अकल ।" जेन के चेहरे पर मुस्कान खिली हुई थी । इस समय वह और सुन्दर लग रही थी ।

"गुड मोरो !"

"अब आपकी तबीयत कैसी है ?"

"सिर मे हल्का सा दर्द महसूस हो रहा है ।"

"लीजिये, कॉफी पी लीजिये ! अभी आपकी तबीयत मे तबदीली हो जायेगी ।" जेन ने बसत के हाथो मे कॉफी का प्याला थमा दिया । तथा रजिता को भी कॉफी 'सर्व' करने के पश्चात् स्वय भी एक 'स्विंग' चेयर मे धस जाती है ।

"तो क्या जेन, तुमने किचन का कार्य भी अपने हाथो मे ले लिया ।"

"हा अकल, इस कार्य मे मुझे बहुत आनन्द आता है ।"

"जेन, तुम्हे कैसे पता चला कि मै मूर्छित हो गया था ?"

मैं सभावित खतरे से अनभिज्ञ नही थी इसलिये मैंने आपके मस्तिष्क का सम्बन्ध स्वय के मस्तिष्क से स्थापित किया । फिर जो कुछ भी आपके साथ घट रहा था उसकी सूचना दूर-सवेदन (टेलिपैथी) द्वारा मेरे मस्तिष्क मे अकित हो रही थी । आपके मूर्छित होते ही मैंने कालयत्र का समय उलट दिया ।"

"शाबास ! आखिर तुम मेरी सृष्टि हो ।" मुझे तुम पर नाज है । बसत जेन की पीठ थपथपाने लगे ।"

"थैंक्यू अकल ।"

रजिता बोल पड़ती है—

"लेकिन पापा, आप तो कह रहे थे मैं कालीदास से बात करूंगा।'

"यस! रंजिता, इसके लिये हमें इस कालयंत्र को रूपान्तरित करना होगा। हमारा यह कालयंत्र अनिश्चितता के सिद्धान्त का उल्लंघन नहीं कर सका। हमें एक ऐसे कालयंत्र का निर्माण करना होगा जिसमें समय तो परिवर्तित हो लेकिन मानव की अवस्था परिवर्तित नहीं हो।"

"अंकल, मैं ऐसे कालयंत्र के निर्माण के लिये अथक प्रयत्न करूंगी।"

"शाबास जेन। मुझे तुमसे ऐसी ही आशा थी। एक दिन अवश्य हमें भूतकाल की वे घटनाएं ज्ञात होंगी जो आज भी अनभिज्ञ हैं हम अपने इस स्वप्न को अवश्य पूरा करेंगे ।"

"ओह पापा, क्या मैं भी कालीदास से बात कर पाऊंगी ?"

"ओह! हां अवश्य हा हा हा " बसंत का अट्टहास कमरे में गूंज उठता है। □□

कॉम्पलेक्स-39

अचानक फोन की घण्टी बज उठी। मि राजेश ने रिसीवर कान तक लाते हुए कहा— "हैलो। मैं राजेश बोल रहा हू।"

"मि राजेश, डा शलेश भारती की हत्या हो चुकी है। हत्या हुए अभी दो ही मिनट हुए हैं। मैं यह तो नही बता सकता कि उनकी हत्या किसने की किन्तु डा भारती की लाश आपको उनके बगले के लॉन मे मिलेगी।" उधर से फोन करने वाले ने एक ही सास मे जो कुछ कहना था, कह दिया। उस व्यक्ति ने अपना परिचय देना उचित नही समझा।

"आपका शुभ परिचय ?" वह व्यक्ति सम्बन्ध विच्छेद करने ही जा रहा था कि राजेश ने नम्रतापूर्वक प्रश्न किया। जिस समय उस व्यक्ति ने फोन किया राजेश बिस्तर पर लेटा हुआ था। ज्योही राजेश ने डा भारती की हत्या का सदेश सुना वह अपने बिस्तर से उछल पडा। वह इस तरह चौक उठा कि उसे एक क्षण को कुछ भी नही सूझा। उसने रिसीवर को हाथो से भीच लिया और उसे अपने कान से सटा लिया।

"इससे पूर्व कि मैं आपके इस प्रश्न का जवाब दू, मैं इतना अवश्य कहना चाहूगा कि उनके चेहरे का रग गुलाबी हो गया है और शरीर एकदम पीला तथा हाथ लाल हो गये है।"

राजेश के कानो मे पडने वाले शब्द बहुत तीखे और चूहे की आवाज के समान थे।

"आप, कहा से बोल रहे है ?" राजेश को इस पर तनिक आश्चर्य हुआ कि उसके शब्द विचित्र किन्तु सत्य थे और किसी व्यक्ति का बदन पीला और चेहरा गुलाबी आज तक नही हुआ। अत उसकी उत्सुकता बढ गई और वह यह जानने की कोशिश कर रहा था कि यह व्यक्ति कौन है। अत उसने तुरन्त प्रश्न किया।

"मैं डॉ भारती के कम्पाटमेंट से बोल रहा हू।" उधर से तीखी आवाज सुनाई दी जिसके कहने के ढग मे कर्कशता स्पष्ट झलक रही थी।

‘हैलो, उधर से कौन मेरे पास सदेश भेज रहा है?’ [illegible] व्यक्ति ने अपना पूरा परिचय नही दिया, अत राजेश ने झल्लाते हुए ऊची आवाज मे प्रश्न किया।

“   ।” वह निरुत्तर हो गया, अत राजेश को झुझलाहट महसूस हुई और उसने रिसीवर के माउथ पीस को उगलियो [illegible] थपाते हुए कहा—

“हैलो ! हैलो !!”

“हा हा हा हा ।” प्रत्युत्तर मे हँसी गूज उठती है।

उस व्यक्ति के अनुचित व्यवहार पर राजेश के क्रोध का पारावार नही रहा। उसे समझ मे नही आ रहा था कि वह व्यक्ति उससे फोन पर ठीक ढग से बात क्यो नहीं कर रहा है।

“जानना चाहोगे ? हा हा हा हा ।” फिर ठहाके की आवाज गूज उठी। उधर से उसी लहजे मे आवाज आयी। राजेश ने यही अनुमान लगाया कि वह व्यक्ति हत्या का रहस्य जानता है।

“नॉनसेंस।” राजेश उसके तीखे व्यग से बौखला उठा और अपने होठ चबाने लगा।

“तब तो तुम्हारा नाम मूर्खों की लिस्ट मे आकत कर देना चाहिये।” उधर से बेतुकेपन की आवाज आयी जिससे राजेश को बेहद क्रोध आ गया।

“क्या कहा, यदि तुम यहा पर होते तो मैं तुम्हारा सिर फोड देता।”

राजेश फोन का सम्बन्ध कभी का विच्छेद कर देता यदि उसकी यह जानने कि इच्छा नही होती कि वह व्यक्ति कौन है और अत मे वह क्या कहना चाहता है।

“बहुत खूब, हा हा हा हा किन्तु मि राजेश मुझे खेद है कि आपकी यह इच्छा पूर्ण नही होगी।” उस व्यक्ति ने ‘खू’ शब्द पर जोर दिया और ठहाका मारकर हसने लगा। हसी को बीच मे ही रोककर वह व्यक्ति मुह बिगाडकर बोला।

“प्लीज़ बी सीरियस।” राजेश चीख उठा।

“खैर ठीक है, समय भी बहुत कम है अत मैं बता देना ही उचित समझता हू।

मैं ‘हेम्पटन लॅसर’ का पर्सनल असिस्टेंट 23421 हू और शैलेश भारती का   ।” उधर से फोन का सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है।

राजेश अनिच्छा से रिसीवर क्रेडिल पर रख देता है। उसे झुंझलाहट महसूस होती है किन्तु उसकी तीक्ष्ण बुद्धि ने अनुमान लगाया कि हो सकता है, वही शैलेश भारती का खूनी हो। उसे उस समय कुछ नहीं सूझा कि फिलहाल उसे क्या करना चाहिये। यदि वह इस समय डॉ भारती के बंगले पहुंचे तो शायद हो सकता है, उसे एक और भारी मुसीबत का सामना करना पड़े तथा खुफिया विभाग के कर्मचारी बेवजह उसके पीछे हाथ धोकर पड़ जायें। और यदि वह नहीं जाता है तो असलियत उनसे बहुत दूर चली जायेगी। वह उलझन में पड़ गया और अपने कमरे में चक्कर काटने लगा। तभी किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखा। वह चौंककर पीछे की ओर मुड़ा।

"क्यों प्यारे, आज तुम इस तरह चौंक क्यों पड़े ?"

"अशरफ, तुमने तो सचमुच ही मुझे डरा दिया।" राजेश के चेहरे पर अपने गहरे दोस्त अशरफ को देखकर प्रसन्नता उभर आयी।

"क्यों आज फिर कोई भूत तुम्हारे सिर पर सवार हो गया ?" अशरफ ने घुमावदार कुर्सी पर बैठते हुए प्रश्न किया।

"हां, एक नहीं दो-दो भूत सिर पर तबला बजा रहे हैं।" राजेश ने बिस्तर पर बैठते हुए कहा।

"खैर, उनसे बाद में किंगकांग और दारासिंह के समान मल्ल युद्ध करेंगे पहले तुम दूध और कोकाकोला मंगवाओ।" अशरफ उस समय मजाक के मूड में था। उसने मजाक करने के पेशे में ही आधी जिन्दगी व्यतीत की, राजेश इस बात को अच्छी तरह जानता था।

"अशरफ, मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मेरे जिगरी यार के स्पाइनल कोड में किसी ने भांग भर दी है।" राजेश ने उसका मजाक उड़ाते हुए कहा।

"और मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि तुम्हारे दिमाग का कम्प्यूटर गणना करने में गलती कर रहा है, अतः उसे आराम करने की सख्त आवश्यकता है, फिर भी मैं इतना कहना नहीं भूलूंगा कि यदि तुम कोका कोला पीओगे तो तुम्हारे दिमाग के कम्प्यूटर में तरी आ जायेगी और मैं दूध पीऊंगा तो मेरे स्पाइनल कोड की भांग का असर समाप्त हो जायेगा।" अशरफ भी मजाक करने में पीछे नहीं रहा।

"किन्तु मेरे यार, तुम्हें तो दूध देखकर ही बुखार चढ़ आता है और कहने लगते हो कि चाय दूध से अच्छी लगती है और उसमें भी म्यूडिस पत्तों का स्वाद तुम्हारी हरेक नस में ऐसा घुल जाता कि शेरनी

के बच्चे से लडने को तैयार हो जाते हो।" राजन ने अपने दोनो हाथो को घुटनो पर रखते हुए कहा ।

"किन्तु आज बात ही कुछ और है।" अशरफ और भी कुछ कहने जा रहा था, किन्तु राजेश बीच मे ही बोल उठा।

"ओह मैं समझ गया।"

"क्या ?" अशरफ ने अर्थ भरे ढग से प्रश्न किया। उसने राजेश के चेहरे से यह बात अंकित कर ली थी कि आज कुछ न कुछ अवश्य अनहोनी घटना हुई है जो राजेश को परेशान कर रही है ।

"तुम यही चाहते हो न कि मेरे सिर पर से भूत उतर कर तुम्हारे सिर पर जा बठे।" राजेश ने रहस्य भरे ढग मे कहा ।

"और मैं उसे मारता-मारता ले जाकर कब्रिस्तान मे गाढ दू ।" अशरफ ने उसके भेदभरे वाक्य को समझ लिया था ।

इस पर वे दोनों हस पडे । अशरफ और राजेश एक दूसरे के गहरे दोस्त थे जो हर मुसीबत मे एक दूसरे की दिल और जान मे सहायता करते और दोनो ही एक दूसरे का अच्छा खासा मजाक उडाते ।

तभी राजेश ने बले को आवाज दी और कॉफी बनाने को कहा जो कि उनका पसनल असिस्टेंट था। दो ही मिनट मे वह ट्रे मे कॉफी की केटली और प्लेट मे नमकीन बिस्कुट और केक रखकर ले आया। यद्यपि वह काला और बदसूरत था फिर भी उसकी ताकत दो हाथियो के बराबर थी । उसके भारी भरकम शरीर को देखकर ही लोग उसका लोहा मानते थे जिसे राजेश अफीका के डरबन शहर के समीप वाले घने जगलो से लेकर आया था। जो कि 'जुलूज' जाति का ही एक सदस्य था। वह एक हब्शी था फिर भी सभ्य समाज मे आने पर वह बहुत कुछ सीख गया था ।

बले पुन किचन रूम मे चला गया और अधूरी धोयी हुई चीनी की प्लेट धोने लगा।

"अशरफ, आज सूरज की पहली किरण निकलते ही फोन आया।" राजेश ने गम्भीर होकर कहा।

"राजेश, ये फोन तुम्हारा जिंदगी भर पीछा नहीं छोडेंगे ।" अशरफ ने केक खाते हुए कहा।

"फिर भी मुसीबत का सामना करना पडता है।" राजेश ने कॉफी की चुस्की लेते हुए कहा।

"हाँ तो किस कबूतर ने फोन किया था ?" अशरफ ने कॉफी का प्याला उठाते हुए कहा। कुछ भी हो, वह अपनी आदत नहीं छोड़ सकता था।

"हेम्पटन लेसर के निजी सेवक टू थ्री फॉर टू वन का।" राजेश ने कॉफी का प्याला ट्रे में रखते हुए कहा।

'इन महाशय दकियानूस जी' को किस कबूतरखाने में से छोड़ा गया और कब उनसे तुम्हारी आशिकभरी मुलाकात हुई ?" अशरफ ने बिस्कुट को मुंह में रखते हुए कहा।

"उससे मेरी मुलाकात इसी फोन पर हुई।" राजेश की गंभीरता हर क्षण बढ़ती जा रही थी।

"वह फोन पर क्या कह रहा था ?" अशरफ ने बिस्कुट का टुकड़ा कॉफी के प्याले में डुबोते हुए प्रश्न किया।

"डॉ शैलेश भारती की हत्या हो गई है और हत्यारा वह स्वयं है।" राजेश ने स्पष्ट कहा।"

"नहीं ! डॉ भारती की हत्या करना आसान खेल नहीं है। उस महान् वैज्ञानिक की हत्या कोई नहीं कर सकता उनकी संचित की हुई शक्ति सौ वर्षों में भी समाप्त नहीं हो सकती। राजेश, ऐसा कभी नहीं हो सकता, कभी नहीं।" अशरफ को अचानक विश्वास नहीं हुआ। कॉफी पीने के बाद उसने प्याला ट्रे में रख दिया।

"यह तो मैं भी सोच रहा हूं एक ऐसे वैज्ञानिक की हत्या करने का साहस कोई नहीं कर सकता जिसके पास अपार शक्ति के भंडार हैं तथा एक बात और कि कोई हत्या करने के बजाय, उनका फार्मूला ही न जानना चाहेगा।"

"किन्तु राजेश, यह भी तो हो सकता है कि डॉ भारती ने उसे अपना फार्मूला बताने से इन्कार कर दिया हो।" उन्होंने अब तक नाश्ता कर लिया था।

"यह तो है ही कि डॉ भारती ने उनको अपना फार्मूला नहीं बताया किन्तु फिर भी हेम्पटन उनकी हत्या नहीं करवाना चाहेगा। जब तक कि उसके सारे प्रयत्न असफल नहीं हो जाते।" राजेश ने अपना विचार प्रकट करते हुए कहा।

"हत्या किस/समय हुई ?" अशरफ ने आगे की ओर झुकते तथा गभीर मुद्रा मे प्रश्न किया।

"तुम्हारे यहा आने के ठीक पाच मिनट पूर्व। राजेश ने रिस्ट वाच देखते हुए कहा। अभी दिन के छ बजकर पाच मिनट हुए थे।

"यह सरासर झूठ है। डॉ भारती को उन्होने रात मे ही उडा लिया होगा और तुमसे यहा तक झूठ कहा कि उनकी लाश को लॉन मे फेंक दी गई।" अशरफ ने सिगरेट का धुआ उछालते हुए कहा। उसके चेहरे पर अचानक ही परिवतन हो गया था।

"यदि यह झूठ है तो उसे प्रात काल ही फोन करने की आवश्यकता क्यो हुई ?" राजेश ने पाइप अपने मुह मे लेते हुए कहा।

"ऐसा हो सकता है कि 'हेम्पटन' इस बात का प्रमाण देना चाहता हो कि वास्तव मे खून हुआ है अत उसका फोन करना अति आवश्यक था।" अशरफ ने सिगरेट को मुह मे से निकालते हुए कहा।

"मालूम ऐसा होता है कि हेम्पटन हमसे कही अधिक तेज और चालाक है।" राजेश ने विस्तर पर से उठते हुए कहा।

"किन्तु जानते हो राजेश, मैंने अपने मस्तिष्क मे कृत्रिम कम्प्यूटर लगा रखा है जो हमारे कहे हुए ऑर्डर का अक्षरस पालन अपनी गणना द्वारा करता है।" अशरफ ने पुन अपने पाव फैला लिये थे और अपनी गर्दन कुर्सी के पिछली भाग से सटा ली थी। वास्तव मे अशरफ के मस्तिष्क मे कोई कृत्रिम कम्प्यूटर फिट नही था।

एक गहरी चुप्पी के बाद राजेश ने अपना विचार प्रकट किया। "अशरफ अब हमे डा० शलेश भारती के बगले पर चलना चाहिये।"

राजेश ने नाइट ड्रेस बदल ली और आलमारी से शूट निकालकर उसे पहन लिया। उसने कार ड्राइव की। अशरफ उनके बगल मे ही बैठ गया। विक्टोरिया स्ट्रीट मे लकी स्टार के सामने उन्होने अपनी 'टायोटा' कार रोकी। और 'न्यू लकी स्टार' से दैनिक नवभारत टाइम्स लिया। अखबार के प्रथम पृष्ठ के कॉलम तीन पर मोटे अक्षरो मे छपा था—"डॉ० शलेश भारती का निधन"

"हमे इस बात का गहरा क्षोभ है कि भारतीय विज्ञानी डॉ० शलेश भारती का निधन हो गया। मृत्यु से पूर्व वह अपने अनुसधान कक्ष मे ऑप्टीकल इस्ट्रमेण्ट का निरीक्षण कर रहे थे। अचानक X-किरणें उनके शरीर को बेध गयी। इससे उनकी समस्त जीवन क्रियाए समाप्त हो गईं और उन्होने इस ससार से विदा ली।"

राजेश और अशरफ ने अपने होठ चबाये और अखबार को अनियमितता से फेंक कर अपनी कार मे जा बैठे। क्या खुफिया विभाग के कर्मचारियो को लाश लॉन में नही मिली अथवा उन्होने 'हत्या की बात' को गुप्त रखने हेतु ऐसे छपवाया ?

बीच मे ही श्मशान पडा। उन्होने अपनी कार वही रोक दी क्योकि तभी उन्होने डॉ० शलेश भारती के चिरपरिचित व्यक्तियो द्वारा उनके जनाजे को अन्दर ले जाते हुए देखा।

श्रीमती भारती से पता चला कि लाश वास्तव मे लॉन मे ही मिली किन्तु उन्हे आश्चर्य हो रहा था कि लाश के चेहरे का रग गुलाबी और शरीर एकदम पीला था। श्रीमती भारती को इतना समय ही कहा था कि वह इस पर गौर करती। वह तो डॉ० भारती के निधन से शोक विह्वल हो रही थी।

जब लाश को कधे पर उठाया गया तो इसका भार पचास पौंड घट गया और जब इसे जलाया गया तो उससे गहरे लाल और हरे रग की लपटे निकली। केवल दो ही व्यक्ति ऐसे थे जो इस बात को अकित कर रहे थे इससे उनका सदेह और पक्का हो गया। यदि उन्हे लाश को छूने का अवसर दिया जाता तो वह शीघ्र ही पहचान जाते कि यह लाश हाड मास की है अथवा निर्जीव ठोस पदार्थों की। फिर भी उन्होने अनुमान लगाया कि इस प्रकार की लपटें प्लास्टिक व अन्य यौगिक के मिश्रण से निकलती हैं और उस लाश का मुह गुलाबी कर दिया गया न कि अपने आप हुआ।

'अशरफ, मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि ये लपटें दुनिया को धोखा देकर आकाश मे विलीन हो गयी हैं। वास्तव मे डॉ० भारती जीवित हैं और उन्हें किसी तरह गायब कर दिया गया है।" राजेश ने अपनी 'टोयोटा' मे बैठते हुए कहा।

"किन्तु इस बात का न ही हमारे पास कोई प्रमाण है और न ही कोई तथ्य।" अशरफ ने उसके समीप बैठते हुए कहा—"यदि यह निश्चय है तो वास्तव मे हेम्पटन कहा रहता है, इसका किस तरह पता चलेगा ?'

'हूं, यह एक कठिन समस्या है केवल एक ही उपाय है कि हम शलेश भारती की प्रयोगशाला का निरीक्षण करें और वहां पर हमे कुछ सूत्र हाथ लग जाय।" राजेश ने कार स्टार्ट करते हुए कहा।

वे दोनो पुन अपने बगले पर पहुच गये। उन्होंने रात को दस बजे मिसेज भारती से भेंट करने का निश्चय किया। वह दिन उन्होने इस जटिल समस्या को सुलझाने मे व्यतीत किया, फिर भी वे किसी निष्कर्ष पर नही पहुचे।

रात के ठीक दस बजे उन्होने डॉ० भारती के मुख्य द्वार पर दस्तक दी। मिसेज भारती ने गेट खोला और उन्हे आदरपूर्वक अदर ले गई। ड्रेसिंग रूम मे पहुचने के पश्चात् अशरफ कोने मे रखी हुई कुर्सी पर बैठ गया और मि राजेश दूसरे कोने मे रखी हुई कुर्सी पर बैठ गये। सामने ही सोफे पर श्रीमती भारती बैठ गई। उनके बीच एक मेज रखो हुई थी। पार्श्व के एक शेल्फ मे एच एम वी एलिजेन्ट रेडियो रखा हुआ था जिसमे से हल्की धुन आ रही थी।

"कहिये मैं आपकी क्या मदद कर सकती हू।" मिसेज भारती ने बात शुरू करते हुए कहा।

"मिसेज भारती, क्या आप यह बताने का कष्ट करेंगी कि डॉक्टर शैलेश भारतीय की हत्या किस समय हुई ?" राजेश ने स्पष्ट करते हुए यह सीधा प्रश्न किया।

"हत्या!! आप यह क्या कह रहे है ?" मिसेज भारतो ने चौकते हुए प्रश्न किया।

"जी, हम ठीक ही कह रहे है, उनकी मृत्यु हुई नही, बल्कि की गयी है।" राजेश ने अपने दोनो हाथो को कुर्सी के डडे पर रखते हुए कहा।

"और अब हम यह जानने की कोशिश मे लगे हुए है कि हत्या किसने की ?" अशरफ ने अपने हाथो की कोहनियो को मेज पर रखते हुए कहा।

मिसेज भारती को इस पर आश्चर्य हुआ। वह अविश्वास के साथ उन्हे देख रही थी।

"यद्यपि हम आपको इस बात का फिलहाल यकीन नही दिला सकते फिर भी इतना इत्मिनान रखिये यदि आप हमारी सहायता करेंगी तो अवश्य एक रहस्य खुलेगा।" राजेश ने मिसेज भारती के परिवर्तित होते चेहरे की ओर देखते हुए कहा।

"राजेश, कही तुम्हे भ्रम तो नही हो गया है। आज तक उन्हे किसी पर सदेह नही हुआ और वह हमेशा ही सबसे हिलमिल कर रहे, फिर ऐसा कैसे हो सकता है ?" मिसेज भारती ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा।

"मिसेज भारती, इतना सब कुछ होते हुए भी शत्रु हो ही जाते हैं। हो सकता है कि वह शत्रु कभी भी डॉ भारती से नहीं मिला हो और डॉ भारती उससे परिचित न हो किन्तु वह उनसे परिचित हो। यही नहीं वह शैलेश भारती की छोटी से छोटी गतिविधियों को गौर से देखता हो। कहा पर शैलेश भारती छोटी-सी भूल कर बैठते हैं अथवा कहा पर उनका मस्तिष्क इतना तेज दौड़ता है कि एक नया हथियार उनके हाथ मे होता है और हो सकता है यही हथियार उनके शत्रुओ के लिये आफत का परकाला हो। वे नही चाहते हैं कि उनसे भी बढ़कर कोई वैज्ञानिक हो जो उनका रहस्य खोलने मे सफल हो जाये। यही एक वजह थी कि उन्होने डॉक्टर भारती को अपना निशाना बनाया।" अशरफ ने अपनी बुद्धिमता जाहिर करते हुए कहा।

"किन्तु मेरी समझ मे नही आता कि उनकी अनुमति के बिना कोई भी प्रयोगशाला मे प्रवेश नही कर सकता था। फिर वह कैसे सब कुछ जान सकता था।" मिसेज भारती ने असमजस मे पड़कर कहा।

"यद्यपि वह व्यक्ति अज्ञात है और हमसे लाखो मील की दूरी पर है फिर भी वह घर बैठा सब कुछ पता लगा लेता है। उसके पास इस तरह के स्वचालित यत्र होगे जिसकी सहायता से वह यह भी मालूम कर लेता है कि अमुक व्यक्ति क्या कर रहा है। यही नहीं उन यत्रो से अदृश्य किरणें निकलती होगी जिसके कम्पन तीव्र वेग से लक्ष्य तक पहुच कर उन्हे सूचित करते हैं। उन्ही कम्पनो का उपयोग वे अपने कम्पार्टमेन्ट मे बैठे ध्वनि और चित्रपट के रूप मे करते हैं।" राजेश ने मिसेज भारती को विश्वास दिलाते हुए कहा।

इस तरह वे तीनो काफी देर तक बातें करते रहे तब अशरफ ने यहा पर आने का असली उद्देश्य प्रकट किया। मिसेज भारती ने उन्हें प्रयोगशाला का निरीक्षण करने की अनुमति दे दी। तब वे दोनो उठ और प्रयोगशाला की ओर गये। वहा पर उन्होने एक बटन दबाया। दरवाजा बिना किसी अड़चन के खुल गया। वे दरवाजा भेडकर चले गये।

"अशरफ, तुम नीचे के फ्लैट का निरीक्षण करो और मैं यहाँ ऊपर का। समय बहुत अधिक हो चुका है। अत हमे अपना काय अति शीघ्र करना होगा।" राजेश ने उसे नीचे जाने का रास्ता बतात हुए कहा।

प्रयोगशाला अण्डर ग्राउण्ड थी और फ्लोर मे छोटे-छोटे छेद थे। फ्लोर के नीचे ही एक बहुत लम्बी सुरग थी जिसकी सहायता से हवा अदर प्रवेश करती थी । दीवारें बहुत मोटे काँच की बनी हुई थी जिनमे विशेष वैज्ञानिक उपकरण और ट्रासमीटर फिट थे ।

अशरफ ट्रेप डोर मे होता हुआ तहखाने के एक ऐसे कमरे मे पहुच गया जहा वह चारो ओर मशीनो से घिर गया । तभी उसे एक तीखी ध्वनि सुनायी दी जो किसी चीखते बन्दर के समान थी और वह ध्वनि उसके कम्पार्टमेन्ट मे गूज रही थी । कमरे की दीवारें ध्वनिरोधक थी। कमरें की पीली रोशनी लाल रोशनी मे परिवर्तित हो गयी और फिर अचानक कमरे मे अधेरा हो गया। आवाज दीवार मे लगे हुए ट्रासमीटरो से आ रही थी। चीखती आवाज ने शब्दो का रूप ले लिया था।

"मि अशरफ, अब तुम भी उसी रास्ते पर जा रहे हो जहा पर डॉ भारती जा चुके हैं। यदि जान की खैर चाहते हो तो तुरन्त यहा से चले जाओ, अभी भी मौका है।"

वह चौककर ट्रासमीटर की ओर मुडा। उसे इतना अहसास हो गया था कि हेम्पटन उसकी हर गतिविधि को परख रहा है तथा उस पर कडी नजर रख रहा है। अशरफ वही पर स्थिर खडा रहा।

"तुम यह भारी भूल कर रहे हो कि तुम एक बहुत बडी शक्ति से मोर्चा लडने के लिये तैयार हो गये और अपना पतन निश्चित समझ कर भी इसी ओर जा रहे हो।" ट्रासमीटर मे स कर्कश ध्वनि निकली।

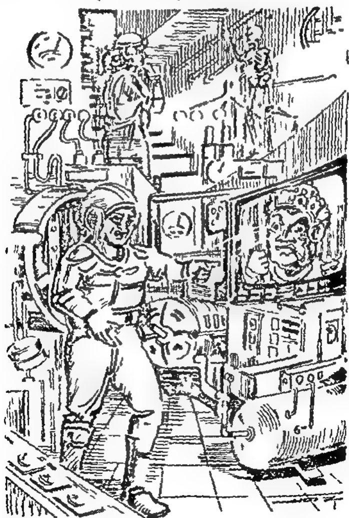
"तुम कहाँ से बोल रहे हो ?" अशरफ चिल्ला उठा। वह इस बात को अच्छी तरह से जानता था कि डॉ भारती की हत्या केवल एक बहाना है किन्तु यदि वह इस तरह जडवत् खडा रहा तो क्या उसे भी हेम्पटन डॉ भारती के पास पहुँचा देगा अथवा उसका रुख कुछ दूसरा ही होगा।

वह जिन्दगी के एक ऐसे मोड पर खडा था जहाँ पर उसने यदि एक कदम भी आगे बढाया तो मौत के मुँह मे घिर सकता है और एक कदम पीछे हटाया तो एक बहुत बडा रहस्य हमेशा के लिये रहस्य बना रह जायेगा तथा अपराधी को एक और अपराध करने का अवसर प्राप्त हो जायेगा। इसके बाद अपराधो की कडी इतनी लम्बी और मजबूत हो

जायगी कि उसको तोड़ने के लिये एक बहुत बड़ी शक्ति की आवश्यकता होगी जिसकी वह कल्पना भी नहीं कर सकता है।

'उधर देखो' और उस स्विच को ऑन करो। मैं तुम्हें शीघ्र ही दिखाई दूंगा। आवाज तीखी और तेज ही नहीं थी अपितु सख्त और आदेशात्मक थी।

अशरफ उस स्विच के समीप पहुंचा और उसे ऑन किया। उसकी तीव्र इच्छा हो रही थी कि वह हेम्पटन पर एक दृष्टि डाले। उस स्विच का कनक्शन दीवार में लगे हुए ट्रांसमीटर से था और ट्रांसमीटर का सम्बन्ध हेम्पटन के कण्ट्रोल सेण्टर से था।



उन विचित्र प्रकार की मशीनो पर एक टेलीविजन सेट रखा हुआ था। अचानक उसे दीवार पर लाल, पीली, नीली व हरी आँखें खुलती व बन्द होती हुई दिखायी दी जो वास्तव मे आँखें नही अपितु विचित्र रोशनिया थी। एक विचित्र प्रकार की धातु से वे आँखें बनायी गयी थी जो उस दीवार मे गढी हुई थी। उनकी किरणे टेलीविजन के पर्दे पर पडी। सवप्रथम एक धुधला चित्र उभरा और फिर वह एक स्पष्ट चित्र मे परिवर्तित होता गया। स्विच के आॅन करते ही एक विचित्र प्रकार की आकृति उभरी जिसे देखकर अशरफ सहम गया। वह आकृति उसका परिहास उडा रही थी, उसने धातु के कपडो स अपना शरीर ढक रखा था। उसकी आँखें गोल थी जो बिल्कुल जापानियों की भाति दृष्टिगोचर हो रही थी और अगारे बरसा रही थी। उसके चेहरे का रग गुलाबी था और शरीर गहरा पीला तथा हाथ लाल थे जिसमे सोने की बनी हुई पतली और किनारो से नुकीली एक बहुत बडी छड पकड रखी थी। उसने एक विचित्र प्रकार का हीरे-जवाहरातो का टाप पहन रखा था जिसके चार कोने निकले हुए थे। उसकी नाक बहुत लम्बी थी और उसने मुँह मे सिगार रखा था जो मुँह के एक ओर लगा हुआ था। वह बिल्कुल सूरजमुखी की भाँति दिखायी दे रहा था जिसकी आखे गुलाबी और शरीर एकदम पीला था।

"अशरफ, जान की खैर चाहते हो तो अब भी चले जाओ। तुम्हे एक और मौका दिया जाता है।" आवाज टेलीविजन सेट मे से आने लगी।

"मि हेम्पटन, तुम मुझसे झूठ कह रहे हो। मि शैलेश भारती अब भी जीवित हैं और तुमने उन्हें छिपा रखा है।" अशरफ ने दृढ शब्दो मे कहा।

"क्या कहा? अब तुम नही बच सकते।" हेम्पटन अशरफ के इस वाक्य पर चौंक उठा, किन्तु वह तुरन्त सम्भल गया। उसने छडी को अशरफ की ओर करते हुए कहा और फिर वह ठहाका मार कर हसने लगा।

अचानक वे आँखें टिमटिमाने लगी और उनमे से कई किरणें अशरफ की ओर फिसली। वह तुरन्त जमीन पर आधे मुह लेट गया और लुढकता हुआ दरवाजे के समीप आया। दरवाजा पूवत ही बन्द था। ज्यो ही उसने दरवाजा खोलने के लिये अपना हाथ बढाया, उसे एक करेंट का झटका लगा। वह अर्द्ध चेतनावस्था मे वही पडा रहा।

मि राजेश ध्वनि-प्रक्षेपण से लेकर कम्प्यूटर तक का निरीक्षण कर लेता है किन्तु उसे कोई सूत्र हाथ नही लगता। बहुत अधिक थक जाने के पश्चात् वह अशरफ को आवाज देता है किन्तु प्रत्युत्तर में कोई आवाज नही आती है। वह ट्रैप डोर से नीचे की ओर जाता है और अण्डर ग्राउण्ड कम्पार्टमेंट की हर एक चीज को छान डालता है किन्तु उसे अशरफ का एक भी चिह्न दृष्टिगोचर नही होता। अन्तत उसे चिन्ता सताने लगती है।

"अ श र फ।" राजेश की आवाज कांच की दीवारो से प्रतिध्वनित होकर उस कम्पार्टमेंट मे गूज उठती है। फिर अचानक सन्नाटा छा जाता है। उसने कांच की बनी हुई दीवारो पर दृष्टि डाली जहाँ उसे आँखें खुलती और बद होती दिखायी दी जो कि बहुत भयानक प्रतीत होती थी। अचानक सन्नाटे को चीरते हुए अट्टहास गूज उठता है। उसके पश्चात् उसे तीखी व तेज आवाज सुनाई पडती है।

"राजेश, अशरफ और डॉ भारती दोनो मौत के घाट उतारे जा चुके हैं, क्या तुम भी उसी रास्ते पर जाना चाहते हो?"

"हाँ, मैं भी वही जाना चाहता हूँ।" राजेश ने अपने होंठ भींचते हुए कहा।

"नही, अभी हम तुम्हे वहा नही पहुँचायेंगे। हम चाहते हैं कि तुम अब भी भटके हुए रास्ते से वापस जा सकते हो।"

"नही, कभी नही, मैं तुम्हे ढूढ कर ही चैन लूगा। मि हैम्पटन मैं तुम्हे स्वय अपने हाथो से ही पकड कर दम लूगा।" राजेश की क्रोध मे मुट्ठी भिच गयी और उसकी उगलियाँ कसमसाने लगी।

"मि राजेश, तुम्हे ज्ञात नही है कि मेरे पास इतनी बडी शक्ति है जिसे तुम्हारी इस पृथ्वी पर एकत्रित करने मे सौ से भी अधिक वर्ष लग जायेंगे। क्या तुम इतनी बडी शक्ति का सामना कर सकोगे? मैं अब भी कहता हूँ कि तुम अपना इरादा बदल दो, इसी मे तुम्हारा भला है और यदि फिर भी तुम अपने विचारो पर दृढ रहे तो मैं तुम्हे चुनौती देता हूँ कि इस पृथ्वी के निवासियो से अन्तरिक्ष वासियो का युद्ध होगा जिससे इस पृथ्वी पर एक भी मनुष्य नही बचेगा। और फिर और फिर हमारा अधिकार होगा, हा हा हा हा।" हैम्पटन ने गर्वित होकर कहा और फिर ठहाका मार कर हँसने लगा।

मि राजेश चुप रहते हैं और यदि वे चाहते तो कह सकते थे कि यदि समस्त पृथ्वी भी अन्तरिक्षवासियों से ढह जाय, फिर भी माउंट एरियन' में कुछ मानव जीवित बच सकते हैं। किन्तु फिर भी उनका दिल जोरों से धड़क रहा था और वह स्वयं में बेचैनी अनुभव करने लगे।

"तुम यहाँ से संदेश प्रसारित कर रहे हो? क्या चुनौती देने वाला अपना स्थान नहीं बतलाना है?"

राजेश ने ऊँची आवाज में चिल्लाकर कहा।

"क्या तुम मुझे देखना चाहते हो?" इस स्विच को ऑन करो।

राजेश ने टेलीविजन सेट के स्विच को ऑन किया। तभी उसे टेलीविजन के पर्दे पर हेम्पटन की आकृति दिखाई दी। राजेश का चेहरा क्रोध के कारण तिलमिला रहा था। उसने क्रोध में एक मुक्का टेलीविजन के पर्दे पर जड़ दिया। टेलीविजन का पर्दा फट गया और काच के टुकड़े-टुकड़े हो गये। उसका हाथ खून से लथपथ हो गया। अब न केवल उनका हाथ ही झनझना रहा था बल्कि सिर भी झनझनाने लगा तथा सारे बदन में आग सी लग गई। तभी अट्टहास उस कमरे में गूंज उठा।

"मैं बीटा पिक्टोरिस नक्षत्र के एक ग्रह से बोल रहा हूँ और संदेश भी वहीं से भेज रहा हूँ।" राजेश केवल इतना ही सुन सके तभी उन पर भारी भरकम विचित्र प्रकार की वस्तु गिरती है जिससे उनका समस्त शरीर विचित्र भार से दब गया और वह तेज आवाज के साथ नीचे लुडक कर बेहोश हो गया।

होश में आने के पश्चात् वह सीधे मिसेज भारती के समीप गया। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मिसेज भारती सिसकियाँ भर रही थी। वह एक कोने में दुबकी हुई थी तथा डर के मारे थरथरा रही थी। यही नहीं, उसके होंठ फड़क रहे थे और आंखों से अश्रुधारा बह रही थी।

"अरे, आप रो क्यों रही हैं?" राजेश ने अन्दर प्रवेश करते हुए कहा। उसके हाथ की त्वचा पर थक्का बन गया था और सिर बहुत भारी हो गया था।

"राजेश, तुम आ गये?" मिसेस भारती एकदम चौंक कर मुड़ी और रुमाल से आँसू पोंछते हुए कहा। राजेश को देखकर उनके होंठों पर मुस्कराहट बिंध गई।

"किन्तु आप इस तरह चौंक क्यो पडी ?" राजेश ने विस्मयपूर्वक पूछा। उसे मिसेज भारती के अचानक सिर घुमाने और फिर उन्हें देखकर मुस्कराने से विस्मय हो रहा था।

मिसेज भारती ने बताया कि जब बहुत समय बीत जाने के पश्चात भी वे दोनो नही आये तो वह चिंतित हो गयी। वह स्वय भी एक ऐसे कम्पार्टमेंट म पहुँची जहाँ चारो ओर मशीनें ही मशीनें थी। तभी उसे रूम न 13 मे किसी चीखते हुए बन्दर के समान आवाज सुनाई दी। आवाज इतनी तीखी और तेज थी कि निडर से निडर व्यक्ति भी पल भर के लिये सहम जाये। वह उसकी परवाह किये बिना रूम न 25 मे दाखिल हुई जहाँ उन्ह दीवार पर वही लाल, पीली, नीली और हरी आँखें खुलती व बन्द होती दृष्टिगोचर हुई। जब मिसेज भारती ट्रेप डोर से होती हुई रूम न 29 मे पहुँची तो उन्हे अट्टहास सुनाई दिया। उन्होंने उस आवाज की ओर अपना सिर घुमाया तभी उनके मुँह से चीख निकल गई। एक कंकाल उनके समीप आ रहा था। वह चिल्ला रहा था ही ही ही ही भारती भारती भारती अब तुम नही बच सकती, मैं तुम्हे खाऊँगा। मिसेज भारती के होश फाख्ता हो गये थे। वह साँस रोक कर ऊपर की ओर दौडी। पीछे-पीछे कंकाल चला आ रहा था। उन्होने दौडकर दरवाजा बद कर दिया और अपने कमरे में सिसकिया भरने लगी। उनका हृदय तेजी से धडक रहा था। राजेश और अशरफ का ख्याल आते ही वह बुरी तरह काप उठी। एक बहुत बुरे विचार ने उन्हे बेचैन कर दिया। किन्तु वह विवश थी, इस पर वह आँखो के आसुओ को रोक नही पा रही थी।

राजेश यदि चाहता तो मिसेज भारती को प्रसन्न कर सकते थे किन्तु यह प्रसन्नता अस्थायी होती और फिर उन्हे हमेशा उदासीन देखकर दु ख होता अत वह चुप ही रहे।

"मि राजेश, आप इतनी देर कहा रुक गये थे ? क्या तुम्हें वह कंकाल नही दिखायी दिया ?" और फिर अशरफ को न देखकर अचानक प्रश्न किया—"आपने अशरफ को कहाँ छोड दिया। कही उसे कुछ हो तो नही गया है ?" मिसेज भारती ने कई प्रश्न एक साथ पूछे।

मि राजेश फिलहाल इन प्रश्नो का उत्तर देने मे असमर्थ थे। यही तो वे प्रश्न थे जो उन्हे निरन्तर बेचैन कर रहे थे और फिर वह अभी बुरी तरह से थके हुए थे। उनका मस्तिष्क फिलहाल कुछ भी सोचने और

समझने से मना कर रहा था। वह शीघ्र ही अपने निवास स्थान पर पहुँचना चाहते थे जहाँ वह कुछ आराम कर सकें। फिर भी उन्होंने मिसेज भारती को धैर्य बँधाया कि समय आने पर सब कुछ ठीक हो जायेगा।

"किन्तु राजेश, मैं अब यहाँ पर एक क्षण भी नही रुक सकती हूँ।" मिसेज भारती उन काँपते हुए क्षणो को नही भूली थी। वही ककाल अब उनके मस्तिष्क मे नाच रहा था। उन्हे यही भय था कि न जाने कब यह ककाल उनके कमरे मे आ पहुँचे। भय ने उनके रग-रग पर अपना प्रभाव जमा लिया था, अत वह उस ककाल की कल्पना करके ही सिसक उठती।

"क्या यहाँ पर आपका कोई रिश्तेदार नही है ?" राजेश ने दरवाजे की ओर देखते हुए प्रश्न किया।

"हाँ, मैं अब अपने चाचा के पास चली जाऊँगी।" मिसेज भारती ने आवश्यक सामान एक बाक्स मे भरते हुए कहा। मिसेज भारती उसी समय वहाँ से प्रस्थान करने के लिये तैयार हो गयी। सामान को उन्होंने लगेज कैरिज मे रखवा दिया। वह कुछ देर बाद वहाँ से प्रस्थान कर गयी। तब मिसेज भारती ने मुख्य द्वार के ताला लगा दिया और राजेश की कार के पिछली सीट पर जा बैठी। राजेश ने अपनी कार स्टार्ट की। कार सुनसान सडक पर तेजी से दौड रही थी। ठीक आधे घण्टे पश्चात् उन्होंने 415/125 न के मकान के सामने अपनी कार रोकी। मिसेज भारती उतरी और राजेश को धन्यवाद दिया। तब राजेश ने अपनी 'टोयोटा' कार का रुख स्वय की बिल्डिग की ओर किया। कुछ ही देर मे 'टोयोटा' कार उन अधेरी गलियो मे विलुप्त हो गयी।

इसके पश्चात् डा शैलेश भारती का निवास स्थान 'भूतिया महल' के नाम से प्रसिद्ध हो गया और वह गली, सुनसान गली मे परिवर्तित हो गयी। वहाँ सब कुछ वीरान हो गया।

एक वर्ष बीत गया। इस बीच अनेक आश्चर्यजनक और सनसनीखेज घटनाए घटित हो चुकी थी। जिसमे केम्ब्रिज विश्वविद्यालय की मुलार्ड रेडियो ऐस्ट्रोनामी के खगोलशास्त्री श्री मार्टिन रायल ने दृढ व स्पष्ट शब्दो मे 'पल्स' नाम के एक ग्रह से धरती पर सदेश आने की घोषणा की थी। सदेश इतने अचूक और नियमित रूप से आ रहे थे कि उन्हें किसी भी समय अकित किया जा सकता था।

तभी एक और सनसनीखेज घटना ब्राजील मे घटित हुई। वहाँ रायोडिजेनरो मे खाडी के पास मोरी डि विन्टम की घनी जगलो वाली पहाडी से एक हजार फीट ऊपर दो लाशें, मेन्युग्रल पेरेरिया डी क्रुज और मिग्वल जोस वियना की प्राप्त हुई जो कि इलेक्ट्रिक इजीनियर थे तथा वे वहाँ से 150 मील दूर केम्पोस नामक स्थान के रहने वाले थे। इन पर न हो किसी हिंसा के चिह्न थे, न ही उनका गला घाट कर हत्या की गई थो, न किसी गैस से और न ही जहर देकर। इनके चेहरे एक विचित्र आवरण से ढके हुए थे। एक व्याकुल महिला ने मोरी डि मिन्टम मे एक उडन तश्तरी देखी थी। पुलिस की सभी खोजें व्यर्थ गई। इस घटना के वाद इस क्षेत्र मे भय फैल गया। इसी के दो दिन बाद विशेष सूत्रो से ज्ञात हुआ कि पिरो एव जोम के साथियो का भी कोई पता नही चला। वहाँ के निवासियो का यह दृढ निश्चय है कि ये हत्याये अन्तरिक्षवासियो ने की थी जो कि बीटा पिक्टोरिस नक्षत्र के ग्रह से उतरे थे।

और इसी घटना के छ महीने पश्चात् कश्मीर घाटी मे, एक नही अनेक सनसनीखेज घटनाये हुई। यहा के 'वार्डिग हाउसेज' मे आबनूस के वृक्षो की तरह आग लग गयी और उस आग ने दानवीय रूप ले लिया। वहा हत्याओ का ऐसा सिलसिला चालू हुआ कि अनेक लोगो ने जम्मू-तवी मे जाकर शरण ली। ये हत्याए बाह्य-अतरिक्ष वासियो ने की थी। और इसी तरह रूपलक मे दो विदेशियो की लाशें पाई गईं। ये विदेशी थे—ऑक्सफाड व आइ बी एच के वाइस चान्लर मि एक्सजिमर तथा कोलम्बिया यूनिवर्सिटी के रेडियो ऐस्ट्रानामी विभाग के एस्ट्रोनोमिस्ट व यू एस ओ पी ओ के सदस्य मि वाई हेनरी। इन्होंने दृढ शब्दो मे कहा कि इस ब्रह्माण्ड म जीवन सवत्र बिखरा हुआ है। ये दोनो गुप्त रूप से अपनी-अपनी वेधशाला मे कार्य कर रहे थे और इस ससार से गुप्त थे। ये दोनो सर-सपाटे के लिये इस मनोहारी घाटी मे आये थे। इनकी लाशो पर भी हत्या के किसी प्रकार के चिह्न अकित नही किये गये। किन्तु ऐसा विश्वास किया गया कि हत्यारो ने उन दोनो को विचित्र भार से दबा दिया और फिर उनके नाडी मण्डल पर विचित्र प्रकार की वस्तु से प्रहार किया गया। यदि कोई भी व्यक्ति श्रीनगर शहर की सुनसान सडको पर से निकलता तो पता भी नही चलता, उस व्यक्ति का क्या हुआ ? क्या उसका खून कर दिया गया अथवा उन्हे गोली से उडा दिया गया अथवा उनका गला घोट दिया

गया ? वहा पाम्पोर के पास सडक के दोनो ओर के कवग (केसर) के खेतो को नष्ट कर दिया गया। कश्मीर घाटी मे कहर इस तरह बरपा था कि वहा की 'ट्राउट' मछलियो का शिकार करना कठिन हो गया था और यही नही जासूस भी सिर से पाव तक काप उठे। वहां के कश्मीरी परिवारो ने अपने घरो के 'वुट' (सबसे नीचे की मजिल) मे मुंह छिपा लिया।

रात्रि के ठीक बारह बजकर पचपन मिनट पर दो कारें 120 कि मी प्रति हावर के वेग से अहरबल की स्ट्रीट पर दौड रही थी। स्ट्रीट', की दूरी तय करने पर वे कारे एक घुमाव पर होती हुई सुनसान सडक पर आ गयी। करीब पच्चीस कि मी की दूरी पर दायी ओर के वृक्ष पर एक आकृति चढी, जिसने दूरबीन को आंखो पर लगा रखी थी। तभी वे दोनो कारें सनसनाती हुई तेजी से उसी आकृति के समीप से निकल गयी। पीछे वाली कार अगली कार का पीछा कर रही थी। वे दोनो कारें पुल पर दौड रही थी। अगली कार की स्पीड कम हो गयी और उसमे से एक किरण निकली। वह किरण किस तरह से निकली, यह तो वह व्यक्ति नही देख सका किन्तु वह इतना अवश्य देख पाया कि कार न 34231 (अगली) के चालक ने जिसने नीला हेट पहन रखा था और मु ह से सिगार का धुआं उछाल रहा था, उस सिगार के टुकडे को पीछे के भाग मे एक विशेष प्रकार की स्टाइल से फेंका। इससे विचित्र प्रकार की किरणें पिछले भाग से निकली जो पिछली कार के मु ह पर टकरायीं। देखते ही देखते पिछली कार का अग्रभाग पिघल गया। वास्तव मे हुआ यह था कि कार न 34231 के पृष्ठ भाग मे कई वैज्ञानिक यत्र फिट थे जो कि सफेद बटनो को दबाने पर कार्य करते थे तथा वे यत्र, बटनों को छोड कर विशेष प्रकार के काले प्लास्टिक के पर्दे से ढके हुए थे। जब कार चालक ने सिगरेट कार के पृष्ठ भाग पर फॅकी तो वह एक बटन से टकरायी जिससे बटन सर की आवाज करता हुआ घूम गया। वही पर एक रासायनिक प्रतिक्रिया हुई जिन्होंने किरणो का रूप ले लिया और पिछली कार के अग्र भाग से टकरायी। उन किरणो मे इस प्रकार की शक्ति थी कि डायमण्ड मे भी एक सेकिण्ड में कुछ भाग मे छेद कर सकती थी और उनसे इतने महीन तार खींचे जा सकते थे कि आखो से देखना असभव था। फिर स्टील की बिसात ही क्या थी ? अचानक वे किरणें अदृश्य हो गयी, यही नही, देखते ही देखते अगली कार दृष्टि से ओझल

हो गयी । वृक्ष पर बैठे हुए व्यक्ति को अपने प्राण सूखते प्रतीत हुए । उसका दिल तेजी से धडक रहा था फिर भी वह सास रोके हुए था, उसके हाथ काप रहे थे और उन कापते हाथो मे रिवाल्वर पकड रखी थी । धीरे-धीरे वह व्यक्ति नीचे उतरा और सडक पर वृक्षो की ओट मे होता हुआ गुमराह हो गया । इस घटना के दूसरे दिन ही बडे बडे दैनिक पत्रो मे यह सनसनीखेज खबर छपी कि श्रीनगर शहर का न केवल व्यापार ही ठप हो गया अपितु वहाँ के स्कूल कॉलेज व दफ्तर सभी बद हो गये । ठीक इसी तरह की घटनाए उडीसा के कोणार्क, चिलिका झील, गोपालपुर ललितगिरि व रत्नगिरि मे भी घटित हुई। चिलिका झील के नगो की तरह जुडे हुए छोटे-छोटे हरे टापू अचानक वीरान हो गये । सर्वत्र भय व्याप्त हो गया। यहा तक कि दूर दूर से विहार के लिये आते लाखो पक्षियो मे भी आतक समा गया । उन्होने वहा आना बद कर दिया ।

रमणीक समुद्र तट पर बसा गोपालपुर भी हेम्पटन की शक्ति की मार से नही बच सका । ताड और नारियल के आसमान छूते दरख्त वीरान होते इस समुद्र तट पर मातम् मना रहे थे । यहा जहाजो का आना जाना बद हो गया था । बडे-बडे जहाजो के लफ्टीनेंट और केडेट तक के होश फाख्ता हो गये । यही नही ब्रिटेन की गुप्त सबमेराइन (पनडुब्बी) 'क्वीन' और जापान की 'स्क्वेमस' पनडुब्बी तथा उसके चालक यकूत वेलस का कही भी चिह्न नही मिला । जिस समय स्क्वेमस को गायब किया गया, यकूत वेलस उडीसा के गोपालपुर के अथाह समुद्र पर 'ओशनोग्राफी' का अध्ययन व एक नयी खोज कर रहा था । अचानक वहाँ के लाइट हाउस से स्क्वेमस को खतरे की सूचना प्राप्त हुई । बचाव दलो द्वारा करीब-करीब सभी वैज्ञानिक और ओशनोग्राफर 'लाइफ-बोट' द्वारा 'स्क्वेमस' से उठा लिये गये । जो शेष बचे, वे डोगी मे बैठकर समुद्र-तट के किनारे आ लगे । और वे लोग वहाँ से भुवनेश्वर चले गये । केवल 'यकूत-वेलस' ने खतरे की कोई परवाह नही की और वह 'स्क्वेमस' को अथाह समुद्र की सतह मे ले गये। फिर न ही किसी ने 'स्क्वेमस' को देखा और न ही 'यकूत वेलस' के कोई चिह्न मिले । भय ने वहाँ के निवासियो पर अधिकार जमा लिया है । उनका एक ही सबसे बडा भय था—'कॉम्पलेक्स थर्टी नाइन ।"

मि राजेश ने श्रीनगर से भुवनेश्वर जाने का गुप्त प्लान बनाया । उन्होने गुप्त रूप में ही जाना उचित समझा । केवल क्ले ही उनके गुप्त

विचार जानता था। वह जितना जल्दी हो सके भुवनेश्वर को प्रस्थान कर देना चाहते थे। अत वह अपनी यात्रा की पूर्व तयारी मे जुट गये। वले ने भी उनके साथ हाथ बटाया। ठीक रात्रि के दस बज उन्होंने भुवनेश्वर प्रस्थान करने का निश्चय किया। किन्तु समस्या यह थी कि वहाँ तक पहुचा कसे जाय। उन्होंने हेलिकोप्टर से ही उड़ान भरने का निश्चय किया। उनकी तीव्र इच्छा 'कॉम्पलेक्स-39' तक पहुचने की हो रही थी। वह यही जानने के लिए उत्सुक हो रहे थे कि कॉम्पलेक्स-39 क्या है? इतना एहसास तो उन्हें हो ही गया था कि कॉम्पलेक्स-39 अन्तरिक्षवासियो के केन्द्र का नाम है अथवा उनकी सबसे बडी शक्ति कॉम्पलेक्स-39 के नाम से पुकारी जाती है और यह भी हो सकता है कि स्वय हेम्पटन का कन्ट्रोल सेन्टर कॉम्पलेक्स-39 के नाम से विख्यात हो। यह विचार आते ही उनका मन उद्विग्न हो उठा और वह वहाँ पहुचने के लिये बेचैन हो उठे। उन्होंने वले को अपने साथ लिया जो कि उनकी सबसे बडी शक्ति थी। ठीक पाच घटे से पश्चात् उन्होंने अपना यान भुवनेश्वर के निकट की पहाडी खाडगिरि पर उतारा। यान से उतर कर वे नीचे की ओर चल दिये, किन्तु यान की रक्षा करना अत्यन्त आवश्यक था, अत वले' को उन्होंने यान से बीस फीट की दूरी पर ही छोड दिया। वह करीब एक सौ पचास फीट नीचे उतरे होगे कि उन्हे दो तीन आकृतियाँ नीचे की ओर जाती हुई दिखायी दीं। पहाडी में घोर अंधेरा था, अत उन्हे टार्च जलानी पडी जो किसी भी खतरे से खाली नही थी। उन्हे सर्व प्रथम एक ऐसे स्थान की तलाश थी जो न केवल सुविधाजनक हो, अपितु वह वहा पर छिप भी सके। वह पूरी सतर्कता से नीचे की ओर उतर रहे थे। दो आकृतियाँ अब उनसे 'सौ गज' के फासले पर थी। उन्होंने अपनी आखो पर दूरबीन लगा रखी थी जिसकी सहायता से वह दस मील का क्षेत्र अच्छी तरह से देख सकते थे। भुवनेश्वर शहर मे बना हुआ राजारानी का मंदिर उन्हें अच्छी तरह दिखायी दे रहा था। उन्होंने कानो पर इयर फोन और ट्रांसमीटर लगा रखा था। वे करीब सौ फीट और नीचे उतरे होगे कि उन्हें सदेश सुनायी दिया।

"हमे यह ज्ञात हुआ है कि कोई व्यक्ति खाडगिरि की पहाडी पर हेलिकोप्टर द्वारा उतरा। शीघ्र ही उसका पीछा किया जाय, कॉम्पलेक्स—39 की विशेष आज्ञा।"

राजेश चौंक उठा। इतना सतर्क रहने पर भी उन आकृतिया को उनके बारे मे कैसे पता चल गया। वे आकृतियाँ उनके समीप आ रही थी। यद्यपि उन्होने राजेश को नही देखा फिर भी उन्हे इतना अहसास अवश्य हो गया कि वह इसी सौ गज के क्षेत्र मे कही पर छिपे हुए हैं। राजेश एक झाडी के पीछे छिप गया। वे आकृतियो उनके समीप से ऊपर चढ गयी। उनके हाथ मे विशेष धातु के बने हुए गोले थे। राजेश वही खडे रहे, वे आकृतिया कुछ ही देर मे हेलिकोप्टर के समीप पहुच गयी।

अचानक राजेश को हेलिकोप्टर से धुआँ निकलता दिखाई दिया। वह तेजी से उन आकृतियो के पीछे दौडा। वापिस चढने मे उसे कठिनाई महसूस हो रही थी फिर भी वह तेजी से ऊपर की ओर चढता जा रहा था। उसने उनके समीप पहुच कर अपनी 45 केलिबर रिवाल्वर का ट्रिगर दबा दिया। एक आकृति धम से गिर पडी और लुडकती हुई राजेश के समीप ही की एक झाडी मे अटक गयी।

तभी राजेश को उन आकृतियो के हाथ मे आगे के गोले दिखायी दिये और राजेश के देखते-देखते उन्होने उन गोलो को हेलिकोप्टर पर फेंक दिये। राजेश लगातार पिस्टोल से एक-एक आकृति को खत्म करता जा रहा था। अब-कुल चार आकृतिया शेष थी।

अचानक हेलिकोप्टर मे आग लग गयी। यह तो शुक्र था कि बले उस आग के गोले के दायरे से बाहर था, नही तो शायद वह भी उसी की लपेट मे आ जाता। किन्तु बले ने उन व्यक्तियो को नही छोडा। दो आकृतिया का बले ने गला घोट दिया और दो आकृतियो का सिर राजेश ने अपनी 36 केलिबर की गोलियो से उडा दिया। राजेश और बले ने उस लाश के कपडे उतारे और उन्होने स्वय ने पहन लिये, फिर व दोनो ढलान पर मे उतरे। उन्होने कुछ दूर का फासला ही तय किया होगा कि कई गोलिया सनसनाहट करती हुई उनके समीप से गुजर गयी। अब राजेश समझ गये कि वे दोनो चारो तरफ से शत्रुओ द्वारा घेरे जा चुके थे, अत वे झाडियो मे छुपते हुए चलने लगे। तभी एक बहुत तेज कडकती आवाज उस पहाडी मे गूज उठी।

"मि राजेश, यदि तुमने एक क्षण भी इधर-उधर होने की कोशिश की तो तुम्हे इन गोलियो मे भून दिया जायेगा।"

अचानक दो आकृतियो ने पीछे से राजेश के कधो पर हाथ रखा तभी राजेश चौक कर पीछे की ओर घूमे और उन्होने रिवाल्वर का नली उन दो आकृतियो की ओर कर दी।

"मि राजेश यदि जान की खैर चाहते हो तो पिस्टोल नीचे करो ।" उन्होंने कडकती आवाज मे राजेश से कहा ।

" ।" वे चुप थे । वे आश्चर्यचकित होकर गौर से उन व्यक्तियो को घूर रहे थे जो 'आल्वीनो' के समान दिखायी दे रहे थे ।

आडर ! ! आडर ! ! उन व्यक्तियो ने चिल्लाते हुए कहा ।

राजेश ने अपनी रिवाल्वर को नीचे कर लिया ।

"क्या तुम राजेश हो ?" उन दो आकृतियो ने कडकती आवाज मे प्रश्न किया ।

" " वे दोनो चुप रहते है ।

"मैं कहता हूँ जवाब दो ! आर्डर ! ! आडर ! !"

"जी हाँ ।" राजेश ने उनकी गुलाबी आँखें और पीले शरीर को घूरते हुए कहा ।

"थेन्क्यू," अशरफ ने यह सदेश भेजा है । उन विचित्र आकृतियो ने एक सफेद कागज निकाला जिसे उन्होने राजेश को सौंप दिया । राजेश शीघ्रता से उस सफेद चिट को देखता है—उसमे विशेष सकेत था ।

इसका आशय था—जैसा वे कहे वैसा ही करो—"अशरफ" ।

राजेश के होठो पर अशरफ की इस साकेतिक भाषा को पढने से मुस्कराहट खेल गयी । वे दोनो अशरफ के ही आदमी थे । अब क्ले और राजेश ने स्वय को उन आकृतियो के हवाले कर दिया ।

"आपने उन लाशो को कहा पर फेका ? उनमे से एक आकृति ने धीमे से प्रश्न किया ।

"वे यहा से 150 फीट के फासले पर हमे प्राप्त हो जायेंगी ।" राजेश ने एक दीघ सास खेंचने हुए कहा । उन्हे अशरफ के छिपे रुस्तमो से मिलकर खुशी हुई । अभी तक वे सिर से पाव तक काप रहे थे । किन्तु अशरफ के साकेतिक चिट से उनका हौसला बध गया था । वे पुन ऊपर की ओर चढे ।

उन आकृतियो ने राजेश को बताया कि उन लाशो के चेहरे प्लास्टिक से ढके हुए थे । उन्हे शीघ्र ही वे लाशे झाडियो मे अटकी हुई दिखाई दी । राजेश और क्ले ने उनके चेहरे पर से प्लास्टिक का आवरण उतार कर पहन लिया । अब उनका चेहरा कॉम्पलेक्स-39 की आकृतियो से बहुत कुछ मिलता था जो कि उनके सबसे बडे शत्रु थे । उन लाशो मे और राजेश के चेहरे मे कोई फर्क नही था । शीघ्र

हो वे चारो शत्रुओं से मिल गये थे। उनमे से एक शत्रु ने पूछा—"क्या आपने राजेश और क्ले को कहीं देखा ?"

"जी उन दोनो को हमने गोलियो से भून दिया और उनकी लाशें लुढकती हुई न जाने कहाँ पहाडी मे विलीन हो गई।" राजेश और क्ले ने मुह बनाते हुए कहा। ये दोनो छद्म वेश मे थे।

वे चारो नीचे खडी हुई कार मे जा बैठे। और उनका रुख अब कॉम्पलेक्स-39 सेन्टर की ओर था जहाँ हेम्पटन का प्रमुख केन्द्र था। सारे रास्ते सडक के दोनो ओर उन्हें घने वृक्ष दिखाई दिये। वे एक ऐसी सुनसान सडक पर चल रहे थे जहाँ ऊंचे-नीचे ढलान थे और एक तरफ थी महानदी। नदी पार करने के लिये लोह का बना हुआ 'बेलम्ड्र ड पुल' था। महानदी (पानी से घिसे हुए गोल पत्थर) के किनारे से होती हुई एक ओर चली जाती थी। कुछ ही दूरी पर उन्ह दोनो तरफ लम्बी लम्बी घास दिखाई दी और एक दो पनचक्कियाँ भी दृष्टिगोचर हुईं तथा साइड मे ही दो तीन ट्रापीजिफाम बिल्डिगें दृष्टिगत हुई।

वह कार रोड न 303 पर रुकी जो बिलकुल सुनसान थी। दायी ओर ही एक कुआ बना हुआ था जो कि 'मौत के कुए' के नाम से प्रसिद्ध था। उस कुएँ मे जन्जीर लटकी हुई थी। वे चारो जजीरो के सहारे लटकते हुए मौत के कुएँ मे पहुच गये। कुआँ सूखा था। उन्होंने नीचे पहुच कर कुएँ की दीवार के एक पत्थर को हिलाया जो कि एक दरवाजे मे परिवर्तित हो गया। दरवाजा बहुत सकरा था, वे छेद मे से होते हुए अन्दर की ओर दाखिल हुए और उन्होने पत्थर को वापस उसी तरह लगा दिया जिससे दरवाजा बन्द हो गया। उन्होने एक गुफा मे प्रवेश किया। तब वे एक ऐसे दालान मे पहुचे जो विशेष प्रकार की रोशनी से जगमगा रहा था। दालान से होते हुए वे एक ऐसी काच की बनी हुई बिल्डिग के समीप आ पहुचे जो महल की भाति जगमगा रही थी। उन्हे विचित्र तरह के मनुष्य देखकर आश्चर्य हुआ जिनका चेहरा गुलाबी था और शरीर पीला। उन्होने सीधे हेम्पटन के 'कन्ट्रोल सेन्टर' मे प्रवेश किया। हेम्पटन 'ऑलबाटा' के बने हुए सिंहासन पर बैठा हुआ था। वह हॉल अस्सी फीट ऊँचा था जिसकी छत पर 'वेलेरियम' की परत लगी हुई थी जिससे ऐसा प्रतीत होता था कि ऊपर से चांदनी ही चादनी बरस रही हो। सिंहासन के दोनो तरफ चमकीले गुलाबी रग के पुष्प थे जिस पर कुहरा तैरता हुआ दिखाई दिया। वे बिलकुल धुधले थे और आँखो के समक्ष छाया के रूप मे सौन्दर्य बिछा रहे थे।

वे लोग इसे 'सौमनस' कहते है और इससे ऐसा प्रतीत होता है कि हेम्पटन, रगीन मिजाज का अतरिक्षवासी था ।

उन चारो को उसने अन्दर आने का सकेत किया ।

"क्या तुम्हे राजेश का कही पता चला ?" हेम्पटन ने कडकती और रूखी आवाज मे कहा ।

"हा, हमने उन्हे गोलियो से भून दिया और उनकी लाशे पहाडी मे लुढक गई ।" राजेश के साथ वाले दो व्यक्तियो ने मुह बनाते हुए कहा ।

"तुम्हे, उन लोगो को जीवित कैद करना चाहिये था ।" हेम्पटन ने पुन कडकती हुई आवाज मे कहा । उसकी क्रोध से उगलिया कसमसाने लगी ।

'सर, हम क्या कर सकते थे ? वे दोनो झाडियो मे छिपे हुए हमारे एक एक व्यक्तियो को अपना शिकार बना रहे थे ।" अशरफ के साथियो ने अपनी विवशता प्रकट करते हुए कहा ।

"और अशरफ का कुछ पता चला ? ' हेम्पटन ने वही सोने की छड को उनकी ओर करते हुए कहा ।

"नही, हमने उसे सब जगह छान डाला किन्तु उसका कही भी पता नही चला । 'सर, वह आपको नष्ट करने मे लगा हुआ है और वह भी आपकी शक्ति से ।'

"ऐसा कभी नही हो सकता ।" हेम्पटन चीख उठा । फिर थोडा रुककर कहा— 'यदि ऐसा हुआ तो डॉ शलेश भारती की गदन तोडकर उनके टुकडे-टुकडे कर दिये जायेगे ।" हेम्पटन अपने सिहासन से उठ खडा हुआ ।

"जाओ, यदि अशरफ तुम्हे मिले तो उसे जीवित मेरे सामने पकड के लाओ और यदि जीवित काबू मे नही आये तो उसके टुकडे-टुकडे करके लाओ । उसकी लाश दो दिन मे मेरे समक्ष आ जानी चाहिये ।"

"सर ।"

"आडर ।"

वे सब सीढियो द्वारा ऊपर चढ गये । सीढियाँ इस प्रकार की थी कि उन्हे उपर चढने की आवश्यकता नही हुई । और यदि वे ऊपर चढने की कोशिश भी करते तो एक हजार फिट की ऊँचाई तय करने मे घटा लग जाते । रीफ का हटान के पश्चात वे किसी कमरे मे पहुच गये । स्टील के पेचों को दबाने से दरवाजा खुल जाता था । इस प्रकार

एक के बाद एक कमरे को पार करने के पश्चात् वे चारो छत पर पहुच गये। छत बहुत लम्बी थी।

इसके पश्चात् वे छत के पृष्ठ भाग पर पहुचे। और उन्हे 'ट्रैप डोर' की सहायता से पुन नीचे उतरना पडा। छत सौ मंजिल ऊपर थी। अब उन्होने लिफ्ट का बटन दबाया और लिफ्ट से होते हुए वे नीचे उतरे। नीचे की ओर तीन आकृतिया चल रही थी किन्तु उन्होंने विशेष गौर नही किया। वे नीचे उतर कर पुन गुफा मे पहुच गये। गुफा एक बहुत चौडे मैदान मे खुली। वे चारो मैदान मे दौड पड़े। पचास फीट के फासले पर उन्हे समुद्र दिखायी दिया। समुद्र के किनारे ही पनडुब्बी 'स्क्वेमस' लगी हुई थी। यह वही 'स्क्वेमस सबमेराइन' थी जिसे अन्तरिक्षवासियो ने अपने कट्रोल मे कर लिया था और यान के चालक 'यकूतवेलस' को गिरफ्तार कर लिया था। वे चारो 'स्क्वेमस' मे जा बैठे। उन दो व्यक्तियो को 'पनडुब्बी' अच्छी तरह से चलाना आता था क्योकि उन्होने नेवीगेटर की दो वर्ष की ट्रेनिंग की थी। वे 'स्क्वेमस' के कट्रोल रूम मे पहुचे और तभी अशरफ के साथियो ने पनडुब्बी को समुद्र की तल की ओर उतारा। अचानक ही 'स्क्वेमस' के कट्रोल रूम मे लाल बत्तिया जल उठी जो किसी खतरे की ओर सकेत कर रही थी। तब राजेश ने अशरफ को नीचे की ओर सदेश भेजे। अशरफ पनडुब्बी 'क्वीन' मे समुद्र की अतल गहराई मे था।

"हैलो! हैलो!!" नीचे से अशरफ ने सदेश भेजा।

"मैं राजेश बोल रहा हू। अशरफ, 'स्क्वेमस' के पृष्ठ भाग के वाटर टक मे छेद हो गया है और टक का पानी निकलता जा रहा है। अभी तक पाच सौ गलेन पानी निकल चुका है।" उन्होने अपनी साकेतिक भाषा मे अशरफ को सदेश भेजा।

"हैलो राजेश, स्क्वेमस मे छेद किस जगह हुआ है?" अशरफ ने प्रश्न किया। उसकी पनडुब्बी 'क्वीन' करीब आठ हजार फीट की गहराई पर थी।

"टैंक के पिछले हिस्से मे।" राजेश ने चिंतित होते हुए प्रत्युत्तर मे सदेश भेजा।

"स्पीड अप! क्विक! क्विक!!"

"हमारी पूरी कोशिश यही है।" राजेश ने कहा।

"स्क्वेमस" तेजी से नीचे की ओर जा रही थी जबकि नीचे से पनडुब्बी 'क्वीन' तेजी से ऊपर की ओर आ रही थी। राजेश ने कट्रोल

रूम मे बैठे हुए 'पेरिस्कोप' की सहायता से देखा कि 'क्वीन' ने एक विचित्र प्रकार की 'किरण स्क्वेमस' की टक के निचले हिस्से पर छोडी। टैंक के नीचे का भाग पिघल कर जुड गया और वह छेद बन्द हो गया। टक मे पाइप लगा हुआ था। उन्होने उसे खोल दिया और पानी वाटर टैंक मे पुन भर गया इससे खतरा टल गया और उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। ठीक दो मिनट बाद ही 'क्वीन' और 'स्क्वेमस' एक दूसरे के समा तर थी जो समुद्र की तलहट के समीप ही थे। दूसरे ही क्षण राजेश और अशरफ ने असीम प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा।

"राजेश, हमे अपना काय शीघ्र ही करना चाहिये। शीघ्र से शीघ्र हम हेम्पटन के क ट्रोल सेन्टर को समाप्त करना चाहते है।"

"अशरफ, यह कॉम्पलेक्स-39 किसकी शक्ति है ?" राजेश ने उत्सुकता वश प्रश्न किया।

"यह अ तरिक्षवासियो की सबसे बडी शक्ति ह जिसे हेम्पटन ने नक्षत्र 'बीटा-पिक्टोरिस' के से सचित की है। यह नक्षत्र पथ्वी से 50 प्रकाश वष दूर है। बहुत अच्छा हुआ कि हेम्पटन ने अपनी मूखतावश मुझे उठा लिया है और मुझे उसका एक-एक रहस्य का पता लग गया। वह अधिकतर एक विशिष्ट 'किरण' का उपयोग करता है। मैं भी इसी किरण के कारण अदृश्य हो गया और मैंने कॉम्पलेक्स-39 का पूरा तो नही किन्तु कुछ-कुछ रहस्य समझ लिया है। इससे पहले कि हम उसी की कोम्पलेक्स-39 से उसे समाप्त करें, हमे शलेश भारती और 'यकूत वेलस' को छुटकारा दिलाना होगा।' राजेश, हेम्पटन ने अपना सम्बन्ध नक्षत्र बीटापिक्टोरिस के ग्रह से कर रखा है। वह स्वय मशीनी मानव है। बीटा-पिक्टोरिस के ग्रह के बुद्धिजीवियो ने इतना छोटा 'कम्प्यूटर' बना लिया कि वे उसको किसी भी मशीनी-मानव मे फिट कर सकते हैं। वही 'कम्प्यूटर' हेम्पटन के मस्तिष्क मे लगा हुआ है जिसकी सहायता से वह 'कॉम्पलेस्स-39' पर अपना कन्ट्रोल करता है। मि राजेश और क्ले तुम मेरे साथ चलो, मैं तुम्ह इस शक्ति से परिचित करवाता हूँ।"

अशरफ ने 'कॉम्पलेक्स-39' का पूरा ब्योरा देते हुए कहा।

वे पनडुब्बी 'क्वीन' के मध्य भाग मे पहुँच गये। जिस केबिन मे उन्होने प्रवेश किया, वहाँ विचित्र प्रकार की मशीनो के भण्डार थे। एक भारी भरकम मशीन पर 'टलीविजन-सेट' रखा हुआ था। उसने एक स्विच

ऑन किया और तब एक के बाद एक कॉम्पनेक्स 39 की शक्ति के रहस्य के पर्दे खुलते गये। इसके बाद एक चित्र उभरा जो कि शलेश भारती का था जिसके हाथ-पावो मे जंजीर बधी हुई थी। उनका समस्त बदन छिल गया था। राजेश ने अनुमान लगाया कि कम से कम सौ 'हंटर' की मार तो उन पर पडी ही थी। उनका चेहरा सूख कर पीला हो गया था। वह रुक-रुक कर सांस ले रहे थे, यही नही उनके बदन पर घावों की कोई कमी नही थी। इतना सताया जाने पर भी उन्हें कई लोहे की जलती हुई सलाखे घेरे हुए थी। और फिर एक चित्र उभरा जिसमे विवश यकूत एक अंधेरी काठरी मे अपना सिर पकडे हुए कांटों की सीट पर बैठे हुए था।

"बस नही देखे जाते हैं ये निर्दयी चित्र। अशरफ, अब शीघ्र करो। राजेश के मुह से चीख निकल गयी। उन्होंने अपनी आंख बंद कर ली और तभी उन्होंने तेजी से 'स्वेमस' स्टार्ट कर दी। 'स्वेमस' पानी को उछालते हुए तेजी से ऊपर आ रही थी क्योंकि उन्होंने वाटर टैंक का पाइप खोल दिया और इससे पानी बाहर निकलने लगा।

अशरफ ने भी 'क्वीन' को तीव्र गति से ऊपर की ओर छोडा। स्वेमस और क्वीन तीव्र गति से ऊपर ओर उठ रही थी। क्वीन और स्वेमस शीघ्र ही अथाह समुद्र की सतह पर आ गई। वे क्वीन और 'स्वेमस' के प्रोपेलर को बंद कर तथा उसे वहीं छोड उस बडे मैदान मे दौडे। वहां से उन्होंने पुन गुफा के प्रवेश किया। और ट्रैप डोर से से होते हुए वे शीघ्र ही 'शैलेश भारती' के कम्पार्टमेंट मे पहुँचे और वहाँ से उन दो व्यक्तियों के साथ उस काली कोठरी पर पहुँचे जहाँ 'यकूत वेलस' कैद थे।

अशरफ ने दरवाजे पर पहुँचते ही एक बटन दबाया जो दरवाजे के पेंच मे छिपा हुआ था। अचानक कई लोहे की सलाखें उन व्यक्तियों मे घुस गई जो शैलेश भारती को कैद किये हुए थे। उधर बले ने फुर्ती से काम लिया और हेम्पटन के व्यक्तियों को उस कम्पार्टमेंट मे पडी हुई भारी भरकम मशीनो पर फेंका जो कि 'यकूत वेलस' को कैद किये हुए थे। यकूत वेलस भी उन व्यक्तियों पर भूखे शेर की तरह झपटा। बले ने शत्रुओं को इतना अवसर ही नही दिया कि वे दरवाजे के बटन को दबा दें। 'अब यकूत वेलस स्वतन्त्र था। वे शीघ्र ही सभी एक गलियारे मे मिले। उन्होंने दौडते हुए उपकरणों को बंद कर दिया जिससे हेम्पटन के प्रमुख कन्ट्रोल सेन्टर से सम्बन्ध विच्छेद हो

गया। लेकिन सम्बन्ध-विच्छेद होने से पूर्व ही हेम्पटन के कम्प्यूटर ने सही गणना करके बता दिया कि मि अशरफ और राजेश ने डॉ भारती और यकूत वेलस को छुड़ा लिया है। उसने आर्डर दिया—राजेश और अशरफ तथा उनके साथियो पर तुरन्त एक साथ धावा बोल दिया जाय। यह खबर राजेश को ट्रासमीटर द्वारा लग गयी थी। अचानक उन लोगो ने तथा हेम्पटन ने राजेश तथा उसके साथियो पर धावा बोला। राजेश तथा उसके साथी कांच के बने हुए बडे सदूक मे घुस गये और लेसर किरण का उपयोग करके अदृश्य हो गये। और फिर अदृश्य रूप मे हेम्पटन के व्यक्तियो पर आक्रमण किया और उन्हे मौत के घाट उतार दिया। आधे से अधिक शत्रु बले की शक्ति से थर्रा चुके थे। उन्होने इस तरह लडते-भिडते 'हेम्पटन' के 'कन्ट्रोल सेन्टर' मे प्रवेश किया।

"मि' हेम्पटन, तुमने अपनी शक्ति से हमे बहुत तग किया, किन्तु अब यह शक्ति ही तुम्हे अपने लपेट मे ले लेगी।" राजेश ने रिवाल्वर का ट्रिगर दबा दिया। उसका चेहरा क्रोध से तिलमिला गया था। छ गोलियाँ धायँ धायँ की आवाज करती हुई हेम्पटन के भारी भरकम शरीर से टकरायी जिसका हेम्पटन पर कोई असर नही हुआ। तभी बले ने पीछे से उसका गला पकड लिया। हेम्पटन ने सिंहासन के नीचे लगे हुए बटन को दबाया। इससे विशेष प्रकार की किरणें निकली जिन्होंने 'बले' को अपने लपेट मे ले लिया। हेम्पटन का अट्टहास उस कम्पार्टमेंट मे गूज उठा। वे सभी परिस्थिति की गम्भीरता को समझ गये। तभी उन्होने लेसर किरण का उपयोग किया जिससे वे अदृश्य होकर लुढकते हुए सीढियो के समीप पहुँच गये। किन्तु वे हेम्पटन की दृष्टि से ओझल नही हो सके। सीढियो से होते हुए वे छत पर पहुँचे। हेम्पटन तेजी से दौडता हुआ उनके पीछे आ रहा था। वे 'ट्रेप डोर' से होते हुए पुन उसी रास्ते से लिफ्ट द्वारा नीचे उतरे और गुफा मे होते हुए बडे मदान मे बेतहाशा भागे। हेम्पटन की उगलियाँ कसमसाने लगी और बीच मे जो भी आया उसे मौत के घाट उतार दिया। वह उनका पीछा कर रहा था जो उससे सौ फीट की दूरी पर थे। अचानक उन लोगो को उडन तश्तरी अपनी ओर आती हुई दिखाई दी। वे सभी साथी 'क्वीन और स्ववेमस' मे बैठ गये थे। हेम्पटन, तेजी से उछला और पनडुब्बी के पृष्ठ भाग वाले टैंक पर कूदा। तभी उडन तश्तरियो से विचित्र प्रकार की किरणें निकली जो हेम्पटन से टकरायी और 'हेम्पटन' टैंक पर से उठा लिया

प्रॉन किया और तब एक के बाद एक कॉम्पलेक्स-39 की शक्ति के रहस्य के पर्दे खुलते गये। इसके बाद एक चित्र उभरा जो कि शैलेश-भारती का था जिसके हाथ-पावो मे जजीर बधी हुई थी। उनका समस्त बदन छिल गया था। राजेश ने अनुमान लगाया कि कम से कम सौ 'हटर' की मार तो उन पर पडी ही थी। उनका चेहरा सूख कर पीला हो गया था। वह रुक रुक कर सास ले रहे थे यही नही उनके बदन पर घावो की कोई कमी नही थी। इतना सताया जाने पर भी उन्ह कई लोहे की जलती हुई सलाखे घेरे हुए थी। और फिर एक चित्र उभरा जिसमे विवश यकूत एक अधेरी कोठरी मे अपना सिर पकडे हुए काटो की सीट पर बैठे हुए था।

"बस नही देखे जाते है ये निदयी चित्र। अशरफ, अब शीघ्र करो। राजेश के मुह से चीख निकल गयी। उन्होने अपनी आखें बद कर ली और तभी उन्होने तेजी से 'स्क्वेमस' स्टाट कर दी। 'स्क्वेमस' पानी को उछालते हुए तेजी से ऊपर आ रही थी क्योकि उन्होने वाटर टैंक का पाइप खोल दिया और इससे पानी बाहर निकलने लगा।

अशरफ ने भी 'क्वीन' को तीव्र गति से ऊपर की ओर छोडा। स्क्वेमस और क्वीन तीव्र गति से ऊपर ओर उठ रही थी। क्वीन और स्क्वेमस शीघ्र ही अथाह समुद्र की सतह पर आ गई। वे क्वीन और 'स्क्वेमस' के प्रापेलर को बद कर तथा उसे वही छोड उस बडे मदान मे दौडे। वहा से उन्होने पुन गुफा के प्रवेश किया। और ट्रैप डोर मे से होते हुए वे शीघ्र ही शैलेश भारती' के कम्पाटमेट मे पहुँचे और क्ले उन दो व्यक्तियो के साथ उस काली कोठरी पर पहुँचे जहाँ 'यकूत वेलस' कद थे।

अशरफ ने दरवाजे पर पहुँचते ही एक बटन दबाया जा दरवाजे के पेच मे छिपा हुआ था। अचानक कई लोहे की सलाखे उन व्यक्तियो मे घुस गई जो शैलेश भारती को कद किये हुए थे। उधर क्ले ने फुर्ती से काम लिया और हम्पटन के व्यक्तिया को उस कम्पाटमेट मे पडी हुई भारी भरकम मशीनो पर फेका जो मि 'यकूत वेलस' को कैद किये हुए थे। यकूत वेलस भी उन व्यक्तियो पर भूखे शेर की तरह झपटा। क्ले ने शत्रुओ को इतना अवसर ही नही दिया कि वे दरवाजे के बटन को दबा दें। 'अब यकूत वेलस स्वतन्त्र था। वे शीघ्र ही सभी एक गलियारे मे मिले।' उन्होंने दौडते हुए उपकरणो को बद कर दिया जिससे हेम्पटन के प्रमुख कन्ट्रोल सेन्टर से सम्बन्ध विच्छेद हो

गया। लेकिन सम्बन्ध-विच्छेद होने से पूर्व ही हेम्पटन के कम्प्यूटर ने सही गणना करके बता दिया कि मि अशरफ और राजेश ने डॉ भारती और यकूत वेलस को छुडा लिया है। उसने आर्डर दिया—राजेश और अशरफ तथा उनके साथियो पर तुरन्त एक साथ धावा बोल दिया जाय। यह खबर राजेश को ट्रासमीटर द्वारा लग गयी थी। अचानक उन लोगो ने तथा हेम्पटन ने राजेश तथा उसके साथियो पर धावा बोला। राजेश तथा उसके साथी कॉच के बने हुए बडे सदूक मे घुस गये और लेसर किरण का उपयोग करके अदृश्य हो गये। और फिर अदृश्य रूप मे हेम्पटन के व्यक्तियो पर आक्रमण किया और उन्हे मौत के घाट उतार दिया। आधे से अधिक शत्रु वले की शक्ति से थर्रा चुके थे। उन्होने इस तरह लडते-भिडते 'हेम्पटन' के 'कन्ट्रोल सेन्टर' मे प्रवेश किया।

"मि हेम्पटन, तुमने अपनी शक्ति से हमे बहुत तग किया, किन्तु अब यह शक्ति ही तुम्हे अपने लपेट मे ले लेगी।" राजेश ने रिवाल्वर का ट्रिगर दबा दिया। उसका चेहरा क्रोध से तिलमिला गया था। छ गोलियाँ धायँ धायँ की आवाज करती हुई हेम्पटन के भारी भरकम शरीर से टकरायी जिसका हेम्पटन पर कोई असर नही हुआ। तभी वले ने पीछे से उसका गला पकड लिया। हेम्पटन ने सिहासन के नीचे लगे हुए बटन को दबाया। इससे विशेष प्रकार की किरणें निकली जिन्होंने 'वले' को अपने लपेट मे ले लिया। हेम्पटन का अट्टहास उस कम्पार्टमेंट मे गूज उठा। वे सभी परिस्थिति की गम्भीरता को समझ गये। तभी उन्होने लेसर किरण का उपयोग किया जिससे वे अदृश्य होकर लुढकते हुए सीढियो के समीप पहुँच गये। किन्तु वे हेम्पटन की दृष्टि से ओझल नही हो सके। सीढियो से होते हुए वे छत पर पहुँचे। हेम्पटन तेजी से दौडता हुआ उनके पीछे आ रहा था। वे 'ट्रेप डोर' से होते हुए पुन उसी रास्ते से लिफ्ट द्वारा नीचे उतरे और गुफा मे होते हुए बडे मदान मे बेतहाशा भागे। हेम्पटन की उगलियाँ कसमसाने लगी और बीच मे जो भी आया उसे मौत के घाट उतार दिया। वह उनका पीछा कर रहा था जो उससे सौ फीट की दूरी पर थे। अचानक उन लोगो को उडन तश्तरी अपनी ओर आती हुई दिखाई दी। वे सभी साथी 'क्वीन और स्क्वेमस' मे बैठ गये थे। हेम्पटन, तेजी से उछला और पनडुब्बी के पृष्ठ भाग वाले टैंक पर कूदा। तभी उडन तश्तरियो से विचित्र प्रकार की किरणें निकली जो हेम्पटन से टकरायी और 'हेम्पटन' टैंक पर से उठा लिया

गया । तभी उडन तश्तरियो मे से लाल पीली नीली और हरी रश्मिया निकली, इसके साथ ही आग के बने हुए गोले निकले जिसमे विशेष प्रकार की धातु के बने हुए कण थे । वे सब कण उस गुफा तथा समुद्र के भीतर स्थित कट्रोल सेन्टर से टकराये, तभी उनमे मे आग लग गयी और एक भयकर विस्फोट के साथ शीशे के बने हुए महल का लावा बाहर आ निकला । धमाका इतने जोरो से हुआ कि उसकी आवाज पुरी और कटक के निवासियो ने भी स्पष्ट सुनी । और तभी एक प्रकाश की रेखा वायुमडल की विभिन्न पर्तो को चीरती हुई आकाश मे विलीन हो गयी ।

पनडुब्बियाँ समुद्र के पानी को उछालती हुई तीव्र वेग से चल रही थी । उन्हे महसूस हुआ कि समुद्र के पानी मे भारी उथल-पुथल मच गयी है । राजश और अशरफ ने स्क्वेमस के एक केबिन मे डॉ० शलेश भारती को पहुचाया उनकी स्थिति बेहद खराब हो चुकी थी । इससे भी अधिक दुख उन्हे 'क्ले की मृत्यु' का हो रहा था जो हब्शी होते हुए भी उनका एक मात्र विश्वासपात्र और स्वामीभक्त निजी सेवक था । तब उन्होने ससार भर मे यह सदेश प्रसारित किया कि डा० शैलेश भारती और यकूतवेल्स दोनो जीवित है तथा 'क्वीन और स्क्वेमस' दोना सही सलामत है ।

'डा० भारती, आपका वह फार्मूला क्या था ?' राजेश ने कुछ दिनो बाद प्रश्न किया । इस पर शैलेश भारती मुस्करा उठे । तब अशरफ ने राजेश को बताया कि डा० भारती ने बीटा-पिक्टोरिस ग्रह से आने वाले सदेशो को अकित किया था और वे सदेश उनके द्वारा रचित 'एस्पिरान्तो' की भाषा से मिल गये थे । अत उन्होंने अपना सबध बीटा-पिक्टोरिस ग्रह से बनाये रखा । बीटा-पिक्टोरिस के ग्रह के बुद्धिजीवियो ने हेम्पटन को अति मूख समझकर इसकी सजा भोगने के लिये इस पृथ्वी पर उडन तश्तरियो द्वारा खाडगिरि की पहाडी पर उतार दिया किन्तु हेम्पटन को उन्होने कॉम्पलेक्स-39 नामक शक्ति दे दी ।

□□

मस्तिष्क-ज्वर

"चित्राजी, करुणा की तबीयत कैसी है ?" डॉक्टर नीरज ने भीतर प्रवेश करते हुए कहा।

"डॉक्टर, करुणा की तबीयत मे कोई सुधार नही हुआ है।"

"ठीक है, मैं अभी देखता हूँ।"

डॉक्टर नीरज करुणा की नब्ज देखते है। "बेटे, घबराने जैसी कोई बात नहीं है। इजेक्शन लगने पर तुम्हे काफी आराम मिलेगा। देखें, तुम्हारा टेम्प्रेचर कितना है ?" डॉक्टर करुणा का तापक्रम 'नोट' करता है। तापक्रम एक सौ चार डिग्री होता है। तापक्रम काफी ऊचा है। सिर बहुत तेज तप रहा होता है।

करुणा की मा चित्रा डॉक्टर के चेहरे पर चिन्ता की किसी प्रकार की रेखाएँ नही महसूस करती है। डॉक्टर नीरज स्वय सीरीज तैयार करके लगाते है।

"चित्राजी इसका टेम्प्रेचर घटे घटे भर बाद लेते रहना और कुछ दवा लिख रहा हूँ, वह इसे दे देना।"

डॉक्टर नीरज नुस्खा चित्रा को थमाते हुए बाहर निकल जाते हैं।

अहाते मे 'गार्डीनिया लटिफोलिया' की महक भी आज चित्रा का ध्यान आकर्षित नही कर पा रही है। मौसमी बौछार से निवास-स्थान के दायी तथा बायी ओर लगे हुए 'अशोकन' के सदाबहार पत्ते आज चित्रा को हमेशा की तरह गहरे हरे तथा चमकीले प्रतीत नही हो रहे है।

चित्रा कमरे के भीतर प्रवेश करते हुए करुणा का सिर दबाती है। करुणा की आखो से अश्रु निरन्तर बह रहे थे। चित्रा उसके अश्रुओ को पोछती है। उसका सिर तेज तप रहा था अत चित्रा ने उसके सिर पर बर्फ की पट्टिया रखना शुरू कर दिया था।

बुखार मे तीन चार घट पश्चात् भी कोई उतार नही आया। रात भर करुणा सिर के दर्द से तडपती रही तथा मा चित्रा उसके सोने का इतजार करती रही।

भोर का समय। जब धूप के पसरने से पत्तो पर जमी हुई ओस की बूदें चमकने लगी तब वही करुणा को हल्की सी झपकी आयी। लेकिन कुहरा अभी साफ भी नही हुआ था कि करुणा के सिर का दर्द फिर बढने लगा। दोपहर की धूप का मकानो को सुखाने के साथ ही करुणा को सिर दद असह्य हो गया।

"ऊफ ! मम्मी ! दद से मेरा सिर फटा जा रहा है। क्या अकल अभी तक नही आये ?"

डॉ० नीरज से अब तक इतनी घनिष्ठता हो चुकी थी कि करुणा उन्हे अकल कह कर पुकारती थी।

"तेरे अकल अभी आते ही होगे, बेटे थोडा दद सहन करो।"

"नही मम्मी, अब दद सहन नही होता। अकल को जल्दी बुलाओ।"

चित्रा ने अपनी रिस्ट वाच की ओर देखा। यह चार बजे का सकेत कर रही थी। वह तुरन्त फोन करने चली जाती है।

करुणा, अब सिर पीटने लगी। चित्रा दौडी-दौडी आई और उसका सिर दबाने लगी।

करुणा मा के हाथ को झटका कर उठने लगी। चित्रा ने करुणा का हाथ कस के पकड लिया। करुणा इधर-उधर सिर पटकने लगी।

कुछ समय तक इतजार करने के पश्चात् चित्रा ने अधीर होते हुए फिर फोन मिलाया। डॉक्टर नीरज अभी तक घर नही लौटे थे।

डॉ नीरज की पत्नी अनुपमा ने प्रवेश किया।

"आटी ! डॉक्टर को जल्दी बुलाओ।"

मिसेज अनुपमा कुछ कहती इससे पूव ही करुणा चीख उठी।

"चित्रा क्या हो गया करुणा को ?"

"अनुपमा ! जाओ जल्दी करो। अभी कुछ पूछने का वक्त नही है। किसी और डॉक्टर को बुला लाओ। जल्दी करो। जल्दी। देखो। करुणा तडप रही है, वह मर जायेगी।" चित्रा के आसू छलक आये।

अनुपमा किसी अन्य डॉक्टर को बुलाने चल दी।

जब अनुपमा ने डॉक्टर अखिलेश के साथ प्रवेश किया तो करुणा कराह रही थी।

'देखिये डॉक्टर ! करुणा को क्या हो गया। यह रात भर से इसी प्रकार कराह रही है।" चित्रा बोली।

डॉक्टर अखिलेश ने करुणा की नब्ज देखी, स्टेथस्कोप से हृदय गति नापी तथा ब्लैडर से रक्त चाप लिया।

"डॉक्टर, रात भर से अभी तक इसके शरीर का तापक्रम एक सौ चार डिग्री फेरनहाइट से कम नही हुआ है।" चित्रा ने 'टेम्प्रेचर-शीट' डॉक्टर अखिलेश के हाथो मे थमाते हुए कहा।

डॉक्टर करुणा के इजेक्शन लगा देता है। वह ग्लूकोज की डिप सेट करते हुए बोला, "इसे तुरन्त नीद आ जायेगी। इसे हर छ घटे बाद ये केप्सूल दे देना और यह है सिरप इसे हर आठ घटे मे देना। सिर दर्द मे भी बहुत आराम मिलेगा। दवा देने मे थोडा पक्चवल रहना।"

इजेक्शन से करुणा को थोडा आराम मिला, उसकी आँखें मुदने लगी।

जब डॉक्टर अखिलेश बाहर अहाते मे पहुचा तो चित्रा ने पूछा, "क्या हो गया है करुणा को ?"

"मैं यह तो नही बता सकता, लेकिन यह ज्वर साधारण नही है।"

शाम के समय कई रिश्तेदार तथा चिर-परिचित चित्रा के निवास-स्थान पर एकत्रित हो जाते हैं। करुणा चादर मे लिपटी हुई प्रगाढ तद्रा मे सोये हुए थी।

तभी डॉक्टर नीरज ने प्रवेश किया।"

"डॉक्टर आप कहां गये हुए थे ?

"मैं ऑपरेशन थियेटर मे था।"

"लेकिन आप भोजन करने भी नही आये।"

"हाँ, वह केस अत्यन्त नाजुक हो गया था। सारा दिन मुझे वही रहना पडा।"

"करुणा की हालत बहुत खराब हो गई थी। डॉ आप घर पर नही थे, इसलिये अनुपमा डाक्टर अखिलेश को बुला कर लाई।"

"डॉ अखिलेश कब आये ?"

"चार बजे करीब। उन्होने यह नुस्खा थमाया था। इस नुस्खे के मुताबिक करुणा को दवाइयाँ दे दी गई हैं।"

"ठीक किया तुमने, अखिलेश को बुला लिया। इसी दवा को जारी रखना।"

"डॉक्टर, अखिलेश ने कहा है कि इसे साधारण वाइरल ज्वर नही है।"

"अखिलेश ने ठीक कहा था। आज ऐसे ही तीन मामले अस्पताल मे रजिस्टर्ड हुए। वह भी रहस्यमयी वायरल ज्वर से पीडित थे।"

"हाँ, इस बीमारी का अभी निदान सभव नही हुआ । करुणा की नीद खुलते ही उसे वाड मे भर्ती करवाना होगा ।"

रात्रि के नौ बजे थे । करुणा को वार्ड मे भरती करवाया जा चुका था । अनुराग ने अचानक प्रवेश किया । वह करुणा का कॉलेज का साथी था । कॉलेज के अन्तिम दिनो मे तो वे एक दूसरे के घनिष्ठ मित्र बन चुके थे । ट्रेनिंग के लिये उसे इस वर्ष बाहर रहना पडा था । करुणा की तबियत की सूचना मिलते ही वह चला आया ।

"करुणा !" अनुराग ने भीतर प्रवेश करते हुए पुकारा ।

"अनुराग !" करुणा जगी हुई थी । उसने धीमे से आवाज की ओर सिर घुमाया ।

"तुम्हारी तबियत कैसी है ? ओह ! तुम्हारा सिर तो तप रहा है ।" अनुराग ने हाथ लगाते हुए कहा ।

"पता नही मुझे क्या हो गया । ज्वर उतरता ही नही है ।"

"डॉक्टर ने कहा है, उसे वायरल फीवर है ।"

"अनुराग, मैं कबसे तुम्हारा इतजार कर रही हूँ ।"

"मम्मी का पत्र मिलते ही मैं चला आया ।"

वे दोनो बतियाने लगे । मिलने का समय समाप्त होते ही उसे जाना पडा ।

दूसरे दिन सवेरे सवेरे अनुपमा समाचार पत्र लिये हुए चित्रा के घर पहुची । चित्रा करुणा के लिये 'सूप' तैयार करने अस्पताल से अभी अभी घर आई थी ।

"चित्रा, इस अखबार मे रहस्यमयी ज्वर की खबर छपी है । तुम देखो इसे तब तक मैं तुम्हारे काम मे हाथ बँटाती हूँ ।" अनुपमा उसे अखबार देती है ।

चित्रा जब अखबार का कॉलम समाप्त करती है तो उसके होठ फडकने लगते हैं ।

"अनुपमा, यह तो एनकेफलाइटिस, है मस्तिष्क ज्वर ।"

"ओह गोड, क्या करुणा की यह बीमारी है हमारे शहर मे पचास मरीज इसी के हैं क्या करुणा के भी यही बीमारी है । तुम्हारे पति ने पहले क्यो नही बताया ?"

देखो न ।

"उनके बताने से क्या फायदा । हम कुछ कर तो सकते नहीं थे । हो सकता है कि उन्हें कन्फर्म नही हो ।"

"अनुपमा, लोग इससे मर रहे हैं। उफ! इतनी भयकर बीमारी केवल उत्तर प्रदेश मे एक सौ पिचानवें व्यक्तियो की मृत्यु।"

"हा चित्रा, मस्तिष्क ज्वर से मरने वालो की सख्या बहुत ज्यादा है।"

"केवल गोरखपुर मे एक सौ सडसठ तथा बस्ती मे अठत्तर व्यक्तियो की मृत्यु हो चुकी है। अनुपमा बरेली के स्वेन मिसन हॉस्पिटल मे इक्कीस व्यक्ति मस्तिष्क ज्वर से काल के ग्रास हो गये।"

"हा, खतरनाक विषाणु है ये, पहले यह नागौर मे फैला, अब हमारे शहर अजमेर मे भी फैल रहा है। लोगो के बीच होम्योपैथिक दवाइया बाटी जा रही हैं। लोगो से कहा जा रहा है वे स्वच्छता रखें गदी बस्तियो को साफ रखें । और करुणा पर भी इस खूखार विषाणु ने आक्रमण कर दिया है मेरी करुणा मेरी बच्ची ।" चित्रा फूट-फूट कर रोने लगी।

डॉ नीरज ने भीतर प्रवेश करते हुए कहा—

"चित्राजी, क्या हो गया है तुम्हे क्यो इस तरह फूट-फूट कर रो रही हो।"

"डॉक्टर मेरी करुणा को बचा लो डॉक्टर करुणा को ।"

"धैय रखो चित्रा जी, धैय ।"

"आपने मुझे पहले क्यो नही बताया कि करुणा के एनकेफलाइटिस है।" चित्रा सुबक-सुबक कर रोने लगी।

"धैय रखो चित्राजी, अभी हम निश्चित रूप से नहीं कह सकते कि करुणा को एनकेफलाइटिस है । उसे मेनिन्जाइटिस भी हो सकता है। उसकी सेरिब्रो स्पाइनल द्रव की जाच रिपोर्ट आने के बाद ही कुछ कहा जा सकेगा।"

"लेकिन उसके लक्षण तो मस्तिष्क ज्वर के ही हैं।'

"अभी निश्चित रूप से कुछ कहा नही जा सकता। तुम्हे धैय रखना होगा।

"डॉक्टर, मस्तिष्क ज्वर' से लोग मर क्यो रहे है ?"

चित्रा ने चाय का प्याला थमाते हुए प्रश्न किया। डॉक्टर नीरज के आते ही उसने चाय चढा दी थी।

"अभी तक हम इसका निदान करने मे असफल रहे हैं।"

'उफ! तो करुणा नही बचेगी डॉक्टर।"

"नही, हमे विश्वास है कि करुणा बच जायेगी।"

"डॉक्टर आप हमे झूठी दिलासा दे रहे हैं।"

"नही चित्राजी, विश्वास से बडी दुनिया मे कोई चीज नही है।"

"डॉक्टर क्या यह छूत की बीमारी है ?"

"यदि यह छूत की बीमारी होती तो आपको भी 'क्वेरेन्टीन' मे कभी का पहुचा दिया जाता। यह शुक्र है कि मस्तिष्क ज्वर एक छूत की बीमारी नही है, नही तो आपका यह अजमेर शहर 'कोमो के प्लेग' के 'ओरान' शहर की भाति तबाही होते हुए देखता। यह बीमारी मच्छर से फैलती है।

"मच्छर से! लेकिन मच्छर से तो मलेरिया फलता है।"

"मलेरिया फैलता है मादा एनाफिलीज से जबकि एन्केफलाइटिस फैलता है मच्छर की एक किस्म 'क्यूलेक्स टिटेनियोरिक्स' से। अच्छा, करुणा के पास कौन है ?"

"अनुराग।"

"ठीक है, मैं अस्पताल पहुचता हू। समय हो गया। तुम शीघ्र आ जाना। मैं तुम्हे वार्ड मे ही मिलूगा।" डॉ नीरज ने चाय का अन्तिम घूट पीकर उठते हुए कहा।

डॉ नीरज अस्पताल पहुचे। अन्य असिस्टेंट डॉक्टर उनका पहले से ही इन्तजार कर रहे थे।

वे उनके साथ करुणा तथा अन्य मरीजो को देखने के लिये वार्ड मे पहुचते हैं। कमरे मे पहुचते हुए वह करुणा के सिर पर हाथ रखते हैं। करुणा का शरीर ज्वर से तप रहा था। अनुराग समीप बैठा हुआ था।

"डॉ मुझे क्या हो गया है ?" करुणा ने डॉक्टर से कहा।

"कोई खास बात नही, तुम्हे वायरल फीवर है।"

"क्या मैं ठीक हो जाऊगी ?"

"क्यो नहीं, क्या मेरी बेटी भी ठीक नही होगी ?"

अब भी वह करुणा के सिर पर हाथ रखे हुए थे। करुणा के कपोलो पर अश्रु झर-झर बहने लगे। अश्रुओ की गर्म बूदो का स्पर्श डॉक्टर नीरज महसूस कर रहे थे। उनका हृदय विदीर्ण हुआ। उन्हे ऐसा लगा कि अभी उनकी आंखो से अश्रु टपक पडेंगे, आखिर वह भी करुणा से बहुत स्नेह रखते थे। प्रारम्भ से ही उन्होंने उसे बेटी के रूप मे समझा। वह किसी तरह अपने को रोकते है।

नस उन्हे टैम्प्रेचर चार्ट दिखाती है। ग्लुकोज की ड्रिप्स सही चढ रही थी। अपने असिस्टेंट्स से वे कुछ बतियाते है। तब वह अन्य मरीजो को देखने के लिये चले जाते हैं।

"करुणा, तुम्हे याद है, अपने द्वारा सुरम्य घाटियो मे बिताये वो क्षण।"

"हा अनुराग, फूलो से लदी वो घाटिया नीली नीली झील मे नीले, हरे तथा लाल शैवाल तुम्हारा वह मधुर गीत और उस सगीत मे खोयी मैं ।"

"काश ! वो क्षण थम जाता।"

"हा, किस तरह हम एक दूसरे मे खोये रहते।"

"और फिर ट्रेनिंग मे नम्बर आ गया मैं तुमसे नही बिछुडना चाहता था लेकिन यह एक विवशता थी।"

"अनुराग, याद है तुम्हे, ट्रेनिंग के बाद हम एक सूत्र मे बध जायेंगे।"

"हा करुणा, काश वो क्षण बहुत जल्द आ जाता।"

"अनुराग मुझे लगता है मै ठीक नही हो पाऊगी।"

"नही, करुणा तुम्हारा यह सोचना गलत है।"

'मुझे ऐसा लगता है कोई दानव मेरे शरीर की समस्त शक्ति खींचे चला जा रहा है।"

"नही, किसी और के लिये न सही, मेरे लिये कम से कम तुम्हे बुरे विचारो को छोडना होगा।"

"मैं बहुत कोशिश करती हू कि बुरा ख्याल न आये।"

"करुणा, तुम्हे मेरे लिये जीवित रहना होगा ।"

"अनुराग ।"

"करुणा तुम्हे आशा सजोये रखनी चाहिये, उस दिन की जब हम एक सूत्र मे बधेंगे, आशा से बडा बल मिलता है शक्ति मिलती है जीवन का सचार होने लगता है।"

"हा अनुराग लेकिन ओह ! सिर मे भयकर दर्द हो गया । अब सहन नही होता मैं मर जाऊगी अनुराग मर ।"
करुणा के अश्रुओ की धारा का स्पर्श अनुराग महसूस करता है। किसी तरह अपने अश्रुओं को रोककर वह नर्स को बुलाता है।

डॉक्टर नीरज अपने कक्ष मे बैठे हुए हैं।

"गुड मोर्निंग डाक्टर नीरज !" डॉक्टर अखिलेश ने भीतर प्रवेश करते हुए अभिवादन किया।

"गुड मोर्निंग अखिलेश।"

"करुणा की सी एस एफ रिपोर्ट आ गई है।"

सी एस एफ से आशय था सेरीब्रो स्पाइनल फ्ल्यूड। डॉक्टर अखिलेश ने रिपोट पेश करते हुए कहा।

"गुड ! वेरी गुड !" झट से डाक्टर रिपोट देखने लगते हैं।

"डॉ नीरज, सी एस एफ की रिपोर्ट क्या दर्शाती है।"

"अखिलेश, सी एस एफ मे उच्च दाब पर लिम्फोमाइट्स की तरह की कोशिकाएं पायी गईं गणना दो सौ पैसठ से तीन सौ प्रति क्यूबिक प्रति मिली मीटर।

"कम्प्लिमेंट फिक्शेसन की रिपोट ?"

"एन्टीबॉडी बनना प्रारम्भ हो गई है।"

"हिमोग्लोबिन इनहिबिशन रिपोर्ट ?"

"वहा भी एंटीबॉडी मोजूद है।"

"न्यूट्रलाइजेशन टेस्ट ?"

"एंटी बॉडी सौ से तीन सौ प्रति क्यूबिक प्रति मिली मीटर ।"

"डॉक्टर क्या यह 'एनकेफलाइटिस' का केस नही है ?"

"नही, यह एनकेफलाइटिस का स्पष्ट केस है।"

"ओह ! करुणा मस्तिष्क ज्वर से पीडित है।"

दोनो को यह जानकर धक्का लगता है। नीरज डॉ कास्तेय को रिंग करते है। वह बेचैनी से उनका इन्तजार करने लगते है। शीघ्र ही डॉक्टर कास्तेय आते है।

"गुड मोर्निंग डॉ नीरज !"

"गुड मोर्निंग", नीरज कास्तेय का अभिवादन स्वीकार करते है।

डॉ कास्तेय सेरिब्रोस्पाइनल द्रव से विषाणु को अलग करने मे सफल हुए थे।

"डॉ कास्तेय आपने करुणा की सी एस एफ रिपोट की जाच की है। क्या करुणा के सी एस एफ द्रव मे विषाणु पाये गये ? डॉ नीरज ने तीनो जाच रिपोट टबुल पर फैलाते हुए कहा।

"हा, नीरज, न ही विषाणु करुणा के केवल मस्तिष्क के सभी भागो मे फैल चुके हैं बल्कि उन्होंने मेरुरज्जू को भी नही बख्शा है। 'मेनिन्जेस' मे 'इन्फ्लेशन' के चिह्न पाये गये, कुछ न्यूरोन नष्ट हो चुके हैं तथा उनका

स्थान 'ग्लिग्रल' कोशिकाए ले चुकी है, व्रत मे 'पेरीवैस्क्यूलर' कफिंग स्पष्ट दिखाई पडती है। आश्चर्य है कि अनुमस्तिष्क (सेरिबेलम) की 'परकिन्जी' कोशिकाए भी भयकर रूप स प्रभावित हुई है।"

"इसका मतलब है कि करुणा एनकेफलाइटिस से बहुत भयकर रूप से ग्रस्त है। उसको बचाना कठिन होगा।" डॉ नीरज के चेहरे से स्पष्ट गभीरता झलक रही थी।

"हा करुणा को बचाया तो जा सकता है लेकिन हमे वायु आवागमन (एअरवेज) स्वच्छ रखना होगा, शया व्रण [बेडसोर] को रोकना होगा, फ्लुइड तथा इलेक्ट्रोलाइट सतुलन बनाये रखना होगा, ब्लेडर तथा रेक्टम का उपयुक्त निष्क्रमण करना होगा। इसके अलावा तापक्रम का नियत्रण तथा 'इन्टर करेन्ट' को रोकना होगा।"

"डॉ कास्तेय, हम इन अवरोधा पर विजय पाने का पूरा प्रयास करेंगे।"

इसके बाद करुणा की तबीयत बहुत बिगड गई थी। डॉ नीरज तथा उनके साथियों ने करुणा को बचाने के बहुत प्रयत्न किये लेकिन वे उसे बचा नही सके।

अनुराग दौडा-दौडा आया।

"करुणा, देखो मैं तुम्हारे लिये क्या लाया हू गार्डिनिया लैटिफोलिया ये पुष्प तुम्हे बहुत पसद थे न तुम इन्हे स्वीकार क्यो नही करती क रु णा।' अनुराग की चीख वाड मे गूज जाती। गार्डिनिया लेटिफोलिया के पुष्प करुणा के शरीर पर बिखर जाते हैं। डॉ नीरज तथा अन्य परिजन के अश्रुओ की धारा बह रही थी जो थमने का नाम नही ले रही थी। □□

तीसरी आँख

विभा तनावमुक्त होना चाहती थी, लेकिन तनाव मकडी के जाले की तरह जटिल होते जा रहे थे। उफ ! यह तनाव हुआ या कोई खौफ ! कितना कठिन था उसके लिये नौ माह निकालना। डॉक्टर ने तो बस इतना कहा 'आपको पूरे समय बेड-रेस्ट चाहिये।' यह समय विभा के लिए जानलेवा बन गया। जो इन्सान काम से थकने का नाम नही लेता, भला उसे 'रेस्ट' का 'दण्ड' उपहार मे दे दिया जाये। विभा सोचती है, 'यदि वह अकेली रहती तो शायद वह इस दण्ड को इस आशा मे भुगत लेती कि इस बार उसके एक लडका होगा। तीन बार उसने लडका होने की आशा सजोयी, लेकिन उसके लडकिया ही हुई। सास का रवैया ही बदल गया। वह बहुत चिडचिडी हो गई थी और बात-बात पर खिसियाने लगती थी। हमारा समाज भी कैसा है। जिस बहू के लडका होता है उसकी पूछ ही पूछ सम्मान ही सम्मान, चाहे वह लडका आगे चलकर समाज के लिए अभिशाप ही क्यो न बन जाये ? सास और ससुरजी उसी बहू को चाहने लगते है, उसी के बेटे को चाहते हैं। न जाने उन बहुओ को क्या हो जाता है जिनके लडका होता है। वे दर्प दिखलाने लगती हैं। वे भी सास-ससुर की तरह भेदभावपूर्ण व्यवहार करने लगती हैं। विभा सोचती, वही सास और जेठानी जो उसे स्नेह दिया करती थी, लडकी होते ही कसे अचानक बदल गई थी, और अब तो तीन-तीन लडकिया है आप अदाज लगा सकते है उनके स्नेह मे कितनी कमी आई होगी। ओह ! पक्षपात का कही तो अत होता है लेकिन यहा तो पक्षपात के अन्त होने का नाम ही नही। बेटे वाली बहुओ को हर सामाजिक कार्य मे आगे रखना, उनका यह व्यवहार किस तरह शूल-सा चुभता है, किसी से छिपा नही है। यदि ऐसे समय मे अपना रोष प्रकट किया या खिन्नता प्रकट की तो उनका कोप-भाजन होना पडता। इसे पक्षपात नही तो और क्या कहे जब बडी और मझली बहुओ के लडके हुए तो उनके नाम-

करण सस्कार धूमधाम से मनाये गये। उनकी जलवा पुजायी गयी। तब उसे मान नही दिया गया। उनके जन्म दिन भी बडे धूमधाम से मनाये गये, लेकिन विभा के लडकी हुई और जन्म दिन मनाने का अवसर आया तो किसी ने कुछ नही किया और न ही उसका जन्म दिन मनाया गया। आखिर उन फूल-सी लडकियो ने क्या गुनाह किया था? घर मे यदि कोई वस्तु आती तो उसमे भी पक्षपात किया जाता। बडी और मझली बहू के बच्चो को रेडीमेड तथा कीमती पोशाकें दिलायी जाती जब कि विभा को हल्के से कपडे का टुकडा दे दिया जाता तथा कह दिया जाता कि लडकियो के लिये पोशाके वह घर पर ही सिल ले। वे इस बात से भलीभाति परिचित थे कि विभा सिलाई मे दक्ष नही है और तो और खिलौने लाने मे भी पक्षपात होता। सास और ससुरजी बडी और मझली बहू के बच्चो के लिये तो बडे-बडे कीमती, आकर्षक इलेक्ट्रॉनिक खिलौने लाते जबकि विभा की बेटियो के लिए सस्ते तथा हल्के खिलौने लाते। विभा मन मसोस कर रह जाती। विभा सोचती, क्या केवल बेटे वाली बहुओ को ही खुशिया मनाने का हक है? बेटियो वाली को नही? क्या बेटी वाली केवल मानसिक कष्ट ही भोगती रहे? उसकी फूल-सी लडकिया परिवार के इस पक्षपात को झेलती रहे? आस-पडोस तथा रिश्तेदारो को भी पता नही क्या हो जाता है, वे भी बेटे वाली बहुओ को ही चाहते हैं। इन्ही सब बातो को सोचते हुए स्वत ही लडका चाहने की इच्छा यदि बलवती हो जाय तो कोई आश्चर्य नही। विभा की भी उत्कण्ठा थी कि इस बार लडका हो। यदि एक बार लडका हो जाय तो फिर वह 'परिवार-नियोजन' पर अमल करे। विभा का पति तो चाहता था कि अब और बच्चे नही हो, क्योकि उनकी आर्थिक स्थिति का दायरा कही सकुचित न हो जाए और फिर इसका क्या भरोसा था कि इस बार लडका ही होगा। लडकियो के प्रति उसका बहुत रुझान था लेकिन विभा अपनी बात पर डटी रही, उसे तो बेटा चाहिये। पतिदेव ने आत्मसमर्पण कर दिया।

इस बार फिर आस बधी। विभा को पूरे समय 'रेस्ट' करना था। यह तो वही जानती थी कि किस तरह उसने यह समय निकाला। किस तरह उसकी बच्चियो का हाल बेहाल हो गया था। किस प्रकार भूख से तडफती रहती, लेकिन किसे उनकी परवाह थी? पतिदेव बाहर नौकरी करते थे और एक मामूली क्लर्क थे। सास तथा जेठानिया उसे सूखी-सी चपाती तथा सब्जिया रूखेपन से तथा समयोपरान्त परोसती।

पूथ से बिलखती रह जाती । ऐसा नहीं था कि घर में फलाहार नहीं होता लेकिन उसे ही क्या, उसके बच्चों तक को फल नहीं मिलते । कटाक्ष करने मे सभी माहिर थे । "कामचोर" कहे बिना उनके वाक्य पूरे नही होते । वे भूल गये थे कि छोटी बहू अपने पति की परछाईं का बोझ उठा रही है । ओह ! किसी तरह यह माह निकल जाय । उसे लगता जसे वह किसी जहाज मे सैर कर रही हो । चारों ओर अथाह समुन्दर—छोर का कोई पता नही । लेकिन तूफा से घिरे नाविक की भांति वह भी आस सजोये हुए थी—किनारे पर तो वह पहुंचेगी ही । पुत्र हुआ तो सभी तनाव समाप्त हो जायेंगे । पुत्र होने की कल्पना से ही उसका मन हिलोर लेने लगता, लेकिन उसके पुत्री हुई तो ! वह मारे भय के सिहर उठती । उसके मन की खुशियां पल भर मे बिखर जाती । इस बार तो उसके पुत्र ही होना चाहिये आखिर उसने दवा जो ली थी वह भी किसी सिद्ध पुरुष से । उसकी माँ ने उसका पूरा हवाला दिया था और यह दवा उसने चुपचाप ही ली थी .. ससुराल वालो से छिपाकर । सिद्ध पुरुष ने कहा था, 'भगवान पर भरोसा रखो, तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी ।' एक सामान्य-सा वाक्य जो हर साधु दिलासा देते वक्त कहता है बेजान सा—क्या इस वाक्य पर भरोसा कर लिया जाय ? क्या मात्र पुडिया लेने से मनोकामना पूर्ण होगी । लेकिन वह तो सिद्ध पुरुष है । क्या सिद्ध पुरुष द्वारा दी गयी हर दिलासा फलती है ? क्या इसका यही लेखा-जोखा है ? नही, उसे ऐसा नही सोचना चाहिये—यदि सिद्ध पुरुष के प्रति सदेह किया तो क्या उसकी बात फलेगी ? नही, ऐसे विचारो को एक क्षण के लिए भी मस्तिष्क मे नही आने देना चाहिए । केवल यही तो एक आस बची है और उसने इतना समय निकाल दिया । लेकिन दूसरे ही क्षण वह निराश हो गई । उसे चारो ओर घोर अधकार ही नजर आता उसे लगता कि इस बार भी पुत्री होगी ।

□□

'हैलो निरजन, क्या प्रोग्रेस है ?" डॉ जयन्त ने लेबोरेटरी से ट्रांसमिशन भेजे ।

"सब ठीक-ठाक है रक्तचाप नॉर्मल "

"ऑपरेशन की आवश्यकता तो नही होगी ?"

"नही, नॉर्मल डिलिवरी ।"

"क्या तुम डॉ निरुपमा से मिले ?"

"हा ।"

"क्या कहा, उसने ?"

"नॉर्मल डिलिवरी होगी इजी डिलिवरी ।"

"थक्स गॉड !" डॉ जयन्त ने राहत की सास ली लेकिन एक पल भी नही बीता कि उनकी बेचनी फिर बढ गई, उन्होने फिर ट्रासमीटर पर कहा—

"विभा का क्या हाल है ?"

"दर्द बढ रहा है ।"

"डॉक्टर का क्या खयाल है ? कितना समय लगेगा ?"

"ठीक से नही कहा जा सकता, लेकिन डॉक्टर का खयाल है एक घटे से अधिक समय नही लगेगा ।"

"ठीक है टेल मी वेन मी बिगेट द चाइल्ड ।"

"ओके सर ।"

इधर विभा का दर्द बढ रहा था, उधर डा जयन्त की धडकन बढ रही थी । विभा, डॉक्टर जयन्त से अभिज्ञ थी लेकिन डॉक्टर जयन्त विभा के बारे मे जानकारी प्राप्त करने हेतु उनके असिस्टेंट निरजन से लगातार सम्पर्क किये हुए थे जैसे वह उसकी जासूसी कर रहे हो । डॉ जयन्त की बेताबी बढती जा रही थी । आखिर वो घडी आ ही गयी । डॉ जयन्त ट्रासमीटर पर लपके

"हैलो निरजन"

"विभा के लडका हुआ है । मिशन सक्सीड ।"

"यू रे का ।डॉ जयन्त ट्रासमीटर पर ही खुशी के मारे झूमने लगे कितनी लम्बी साधना का प्रतिफल था—विभा का यह पुत्र ।"

डॉ जयन्त डेस्क के निकट पहुचे । वहा बहुत-सी बोतलें, डिशे, स्लाइड्स, जार, अनेक फ्लास्क तथा अत्याधुनिक उपकरण रखे हुए थे । एक अन्य डेस्क पर गुणसूत्र 'एक्स' और 'वाई' के नमूने तथा सम्बन्धित उपकरण रखे हुए थे ।

निरजन, डॉ जयन्त के लिये अत्यधिक मददगार साबित हुआ । इलक्ट्रॉनिक्स मे उसे महारत हासिल थी । उसी की मदद से वो अपने जेनेटिक इन्जीनियरिंग के काय आगे बढा पाये । उसने अनेक प्रकार

के कम्प्यूटर जुटाने व उन्हे कार्यान्वित करने मे डॉ जयन्त की मदद की। 'बिहेव कम्प्यूटर' के जरिये उन्हे गुणसूत्र तथा जीन के व्यवहार का सूक्ष्मता से पता चला। अमेरिका स्थित मिसोला की फायर साइन्सेज लेबोरेटरी मे निर्मित पहले 'बिहेव कम्प्यूटर' के बाद अनेक क्षेत्रो मे इनका निर्माण हुआ। जेनेटिक इन्जीनियरिंग से सम्बन्धित बने 'बिहेव-कम्प्यूटर्स' से इस क्षेत्र मे क्रान्ति आई। डॉ जयन्त कम्प्यूटर डेस्क पर दृष्टि घुमा रहे थे तथा वहा रखी हुई 'इलेक्ट्रोनिक स्प्रेड-बिजिकेल्क' के नतीजो पर गौरवान्वित हो रहे थे। अब वह समय बीत गया जब सॉलिड सिलिकेन, सिलिकेन डाइ आक्साइड तथा गेलियम आर्सेनायड का निर्माण होता था। उफ! उस समय कम्प्यूटर्स कितने भारी विशाल व महगे हुआ करते थे। कई स्टेट्स भी इन्हे खरीदने मे हिचकते थे। लेकिन अब कम्प्यूटर्स का इतना लघुकरण (मिनीचराइजेशन) हो चुका है कि इन्हे जेब मे रखकर आसानी से ले जाया जा सकता है। अब कम्प्यूटर के लिये विद्युत का उपयोग बन्द किया जा चुका है तथा लेसर का उपयोग होने लगा है। डॉ जयन्त ऑप्टिकल तकनीक पर आधारित एक ग्रामोफोन डिस्क सरीखे 'लेसर कम्प्यूटर' के नतीजो को देखकर मुस्कराने लगे। किस तरह से इस कम्प्यूटर ने विद्युत धारा से ऑप्टिकल तकनीक तक कुलाचे भरी। प्रत्येक कम्प्यूटर ने 'एक्स' और 'वाई' गुणसूत्रो के सयोग की प्रक्रिया का पता लगाने मे मदद की थी।

डॉ जयन्त ने उपकरण 'नोवेट' पर अपनी दृष्टि डाली। यह एक प्रकार का 'सोफ्ट लेसर' उपकरण था। इससे पर्दे पर डी एन ए का त्रि-विमीय चित्र उभर रहा था। किस प्रकार पुरुष के 'वाई' गुणसूत्र का स्त्री के 'एक्स' गुणसूत्र से मेल हो रहा था। उसका फोटो सोफ्ट लेसर उपकरण ले रहा था। 'लॉरेन्स लिवर मोर एक्स-रे लेसर' से यह कई गुना श्रेष्ठ उपकरण था।

डॉ जयन्त पिछले दस वर्ष से जीन टेक्नोलोजी के क्षेत्र मे कार्य कर रहे थे। आधुनिक उपकरणो ने इस क्षेत्र मे क्रान्ति ला दी थी। उनका पूर्ण विश्वास था कि एक न एक दिन वे अवश्य पुत्र-प्राप्ति की कामना करने वाली महिलाओ को तोहफा दे सकेंगे। समाज कैसे इन महिलाओ की अवहेलना करता है। इन तिरस्कृत महिलाओ के लिये वे आशा की एक किरण होगे। अत तक उन्हे लगता रहा कि यह मात्र एक स्वप्न है लेकिन अदम्य इच्छा उनकी इस घोर अधकार मे भी प्रकाश

की एक किरण थी। 'एक्स' और 'वाई' के गुणसूत्रो के व्यवहार को समझते हुए दस वर्ष बीत चुके थे। यह तो सभी जानते थे कि 'एक्स' और 'वाई गुणसूत्र गर्भ मे जीव के लिंग का निर्धारण करते हैं। पुरुष मे 'वाई गुणसूत्र की महत्ता होती है, स्त्री मे वाई गुणसूत्र नही होता। नये पैदा होने वाले जीव मे यदि पुरुष का एक्स गुणसूत्र यदि स्त्री के एक्स गुणसूत्र से मिलता है तो पुत्री होगी और यदि पुरुष के वाई गुणसूत्र से स्त्री का एक्स गुणसूत्र सयुक्त होता है तो पुत्र उत्पन्न होगा। स्त्री के गर्भ मे एक्स-वाई का या एक्स-एक्स का, कौनसा मेल हो यह तय नही किया जा सकता है। यह एक सयोग की बात है, यह सयोग ठीक उसी प्रकार से है जैसे हम सिक्का उछाल कर हेड या टेल का फसला किया करते हैं बाई चान्स।

लेकिन इस सयोग की गति से भी तेज यदि हमारी दृष्टि हो तो इसे रोका जा सकता है। हमें यह देखना होगा कि क्यो वाई गुणसूत्र एक्स की ओर गमन करते हैं। यदि हम यह मान भी ले कि यह एक सयोग है तो भी इसकी गति को रोका जा सकता है। और फिर पर्दे पर धीमी गति करके इसके व्यवहार को समझा जा सकता है – जिस प्रकार अणुओ की गति का स्लो-मोशन आरेख खीचा जा सकता है। नये जीव मे वाई गुणसूत्र कसे एक्स गुणसूत्र से मिलते हैं। यह एक सयोग है तो भी इस काय मे समय तो लगता ही है। यदि इस समय का निर्धारण हो सके तो यह भी सभव हो सकेगा कि हम पुरुष के एक्स गुणसूत्र को स्त्री के एक्स गुण सून से मिलने ही न दें। यदि ऐसा हुआ तो केवल पुरुष के वाई गुणसूत्र ही स्त्री के एक्स गुणसूत्र से मिल सकेंगे। और पुत्र ही उपलब्ध होगा।

'कम्प्यूटर-ग्राफिक्स' से डॉ जयन्त को इस काय के लिये बहुत मदद मिली। कम्प्यूटर-ग्राफिक्स ने उनकी 'तीसरी आंख' का काम किया। कम्प्यूटर-ग्राफिक्स के द्वारा पुरुष के वाई गुणसूत्र के व्यवहार को समझा जा सका। यह भी पता लग गया कि वाई गुणसूत्र का एक्स गुणसूत्र से मेल होने मे कितना समय लगता है। उन्होने फिर एक ऐसी दवा तैयार की जो पुरुष के एक्स गुणसूत्रो को आगे बढने से रोक देती। पहले यह प्रयोग पशुओ पर किया गया। लम्बे समय के प्रयत्नो के पश्चात वो सुअवसर आया जब इस दवा के फलस्वरूप केवल नर पशु ही पैदा होते। अब तक पशुओ पर उन्हे शत प्रतिशत सफलता

मिल चुकी थी। डॉ जयन्त ने इन्ही प्रयोगो को मानव पर आजमाने की सोची। लेकिन गर्भवती महिलाओ पर यह प्रयोग करना आसान नही था और उनके प्रयोग को अभी मान्यता मिलती भी कैसे। जब तक यह प्रयोग कई महिलाओ पर नही कर लिया जाता और उनसे शत प्रतिशत परिणाम नही निकलता, पर किसी हॉस्पिटल मे यह कार्य करना असभव था। एक नये प्रयोग के लिए कोई भी महिला सहमत नही हो पाती क्योकि इस प्रयोग मे शिशु के विकलाग होने का डर था। अत मे उन्होने यही उचित समझा कि वे किसी सिद्ध पुरुष का रूप धारण करें और उस दवा को गर्भवती महिलाओ मे बाटे। कोई भी यह नही जान सका कि वह सिद्ध पुरुष डॉ जयन्त है। डॉ जयन्त के सहायक उस गर्भवती महिला की पूरी जासूसी करते जिसे वो दवा दी जाती। वे पता लगाने की कोशिश करते कि महिला को किस हॉस्पिटल मे एडमिट करवाया तथा क्या परिणाम निकला। दवा की सफलता से उन्होने सिद्ध पुरुष के रूप मे ख्याति अर्जित की लेकिन शीघ्र ही सिद्ध पुरुष के इस लिबास को उखाड फेंकना चाहते थे। विभा पर उनका प्रयोग आखिरी था और इस प्रयोग के पश्चात् दुनिया के सामने इस अनुसधान को लाना चाहते थे।

□□

विभा को चारो ओर से बधाइया। बधाइयो का ऐसा सिलसिला चालू हुआ कि थमने का नाम नही लेना। दूर दूर सखियो द्वारा तथा रिश्तेदारो की बधाइया प्राप्त हो रही थी। नामकरण-सस्कार के दिन बडी चहल पहल रही पुत्र होने की खुशी मे सास ससुरजी ने भव्य आयोजन किया। विभा की तो दुनिया ही बदल गई अब सास ससुर ही क्या रिश्तेदार भी मान देने लगे पुत्र होने से विभा का घर-ससार खुशियो से झूम उठा। लम्बे समय से व्याप्त मानसिक क्लेश क्षण भर मे विलुप्त हो गया। पुत्र होने पर विभा के अलावा किसी को आश्चर्य नही हुआ विभा का मन तो दुश्चिताओ से घिरा रहता। ऐसा लगता था इन दुश्चिन्ताओं ने मन पर गहरी खरोंच की हो। अब जबकि ये दुश्चिन्ताए पलायन कर गइ तो उसका आश्चर्यचकित होना स्वाभाविक ही था। क्या किसी सिद्ध पुरुष की दवा लेने मात्र से पुत्र की कामना पूरी हो जाती है? लेकिन हुआ तो ऐसा ही तो यह भी उपाय उसने

पहले क्यो नहीं किया सास का डर निरंतर बना रहता सोचती, क्या जादू-टोने अपना रखे हैं इसलिये कभी साहस नहीं हुआ। वसे भी जब बडी बहुओं के बेटे बीमार पडते तो सास सोचती कि विभा की बुरी नजर लग गई भगवान का लाख-लाख शुक्रिया उन दिनो का अन्त हुआ। उसे सिद्ध पुरुष के यहा जाना ही चाहिये। वो भेंटस्वरूप कुछ लेते नहीं, लेकिन मनोकामना पूर्ण हुई है, उसे वहा पहुचना अवश्य चाहिये।

विभा के पुत्र प्राप्ति की सफलता के बाद डॉ जयन्त ने सिद्ध पुरुष का लिबास उखाड फेंका। विभा जब सिद्ध पुरुष को अपनी तुच्छ भेंट देने पहुची तो पता चला कि वह अचानक हिमालय की तराई मे समाधिस्थ होने चले गये हैं। विभा को आश्चर्य हुआ। गाव के लोगो ने उनकी तलाश की लेकिन निराशा ही उनके हाथ लगी। वे समझ नही पाये कि सिद्ध पुरुष ने अचानक समाधि लगाने का फैसला कैसे किया। दूर-दराज के लोग उनके पास पहुचने लगे थे लेकिन अब जब लोग उन्हे समझने लगे, वे गायब हो चुके थे।

वास्तव मे सिद्ध पुरुष अब पुन वैज्ञानिक जयन्त के रूप मे आ चुका था। इस वेश परिवर्तन पर उन्हें स्वय को हसी आ रही थी। विभा पर किये गये इस आखिरी प्रयोग के बाद जयन्त ने अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के समक्ष अपना शोधपत्र पढने का फैसला किया। शोधपत्र पढने तथा वैज्ञानिक प्रयोग के प्रदर्शन की तारीख भी तय करली गई। अब प्रयोग-प्रदर्शन मे दो तीन दिन ही शेष रह गये थे उन्हे अपने जीवन के उस स्वर्णिम पल का इन्तजार था। हा, वह एक अभूतपूर्व दिन होगा जब सारे ससार मे सनसनी फल जायेगी और विश्व उनके अनुसधान पर दातो तले उगली दबाय बिना नही रह सकेगा। अब केवल चौबीस घटे का समय शेष रह गया था। उन्होने अपनी तयारी पूर्ण कर ली थी। वे अधीर हो रहे थे कि कब यह समय निकले। अब तो केवल रात्रि का समय गुजारना शेष था। अमेरिका स्थित लॉस एजल्स पहुचने के लिये उन्हे सुबह पाच बजे की फ्लाइट पकडनी थी। वे अपने ड्राइग रूप मे जा बठे। घर के सब लोग 'होलोग्राम' पर 'थ्री डी' पिक्चर देख रहे थे पिक्चर विज्ञान कथा पर आधारित थी पिक्चर मे एक चोर किसी वैज्ञानिक के महत्वपूर्ण कागजात चुरा लेता है यह दृश्य डॉ जयन्त के दिल की धडकन बढा देता है दो दिन पूर्व उन्होंने तयार कागजात डेस्क पर रख दिये थे, तब से उन्होंने इनकी

रोबो माटर निरजन के पिछवाडे की खिडकी से चुपचाप प्रवेश करेंगे यह काय बिजली की चपलता से तथा अधेरे मे ही करना होगा। राजीव ने ऐसा ही किया। वे निरजन के निवास स्थल के पिछवाडे पहुच गये पिछवाडे की ओर बहुत बडा भूभाग था जो जगल सरीखा प्रतीत हो रहा था जगल के पार कटीले तारो की जाली थी। रोबोट मास्टर की मदद से उन कटीले तारो को काट दिया गया वहा घना अधकार था किसी ने उन्हे देखा नही, किसी तरह वे लुकते-छिपते मकान के पिछवाडे पर पहुचे मकान की खिडकी दिखाई पड रही थी। रस्सी के सहारे ऊपर पहुचना उन्होने ठीक नही समझा। क्योकि समय अधिक लग सकता था। 'एन्टी ग्रेविटी' प्रणाली जसे ट्रैक्टर किरण या फील्ड फोर्स का तरीका अभी इजाद नही हुआ था अत एक ही चारा था कि 'उडन कुर्सी' द्वारा ऊपर खिडकी तक पहुचा जाय। पहले बनी उडन कुर्सियो के अग्रभाग पर एक छड होती थी जो उसकी गति तथा दिशा को नियन्त्रित करती थी, लेकिन अब तो स्विच द्वारा इनका नियन्त्रण किया जा सकता है। उडन कुर्सिया बहुत हल्की थी तथा उन्हे रबड की तरह मनचाहे आकार मे बडा व छोटा किया जा सकता था। इनका सहारा लेकर वे ऊपर खिडकी तक पहुचे। लेसर किरण के प्रयोग से उन्होने बाहर की जाली हटाई। मेग्नेटिक अटरेक्टर किरण ने खिडकियो के भीतर कुन्दे बिना किसी आवाज के चट से खोल दिये। कमरे के भीतर अधेरा था। यह निरजन का बेड रूम था। प्रवेश के साथ ही रोबो मास्टर ने अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया। निरजन गहरी निद्रा मे था। कमाल था कि ऐसे लोगो को गहरी निद्रा आ भी कैसे जाती है। रोबो मास्टर धडाधड इन्फ्रारेड तस्वीरें ले रहा था। जबकि राजीव कागजात की तलाश कर रहा था। लेसर तकनीक से थ्री डी फोटो तुरन्त उभर कर आ रहे थे। राजीव ने इयरफोन लगा रखा था। यह प्रणाली रोबो मास्टर के तो भीतर ही थी। इससे बातचीत दोनो तक ही सीमित थी रोबो मास्टर कह रहा था

"राजीव देखो यह चित्र क्या तुम्हे यह फाइल नजर नही आ रही है?"

"हा रोबो-मास्टर फाइल हूबहू पापा की जैसी है।"

"देखो राजीव-इस फाइल पर डॉ जयन्त का नाम नही है।"

"लेकिन रोबो मास्टर उस फाइल पर डॉ जयन्त का नाम लिखा हुआ था।"

"हा राजीव निरजन बहुत चालाक मालूम पडता हैं, उसने वो नाम मिटा दिया।"

"रोबो मास्टर—तुम यह कैसे कह सकते हो ?"

"राजीव फिलहाल तुम्हे यह समझना कठिन है, यह फाइल डॉ जयन्त की ही है, मैं यह शत प्रतिशत दावे के साथ कह सकता हू। हमे अब इसे निकालना चाहिये।"

"लेकिन यह तो सेफ मे रखी हुई है और वह 'एअर लॉक्ड' है।"

"हा राजीव, हमे एअर लॉक काटना होगा।"

रोबो मास्टर ने लेसर के एक आधुनिकतम उपकरण का बटन दबाया। अचानक लेसर किरण छ किरणो मे बट गई तथा लेसर एम्प्लीफायर से गुजरते हुए 'एअर लोक' मे पहुच गई और उसे काट दिया। रोबो मास्टर ने उसे गिरने नही दिया। अलमारी खोलकर उन्होने फाइल निकाल ली। उन्होने एक दृष्टि निरजन पर डाली। वह अब भी गहरी निद्रा मे था। कमरे मे घना अधेरा व्याप्त था। वे तुरन्त खिडकी से बाहर पहुचे, उडन कुर्सियो के सहारे नीचे उतरे तथा अधेरे मे विलीन हो गये। राजीव तथा रोबो-मास्टर दोनो ही घर पहुचे। राजीव का दिल अब भी तेजी से धडक रहा था तथा वह हाफ रहा था

"पापा, क्या यही है तुम्हारी फाइल ?" राजीव ने फाइल थमाई।

"डॉ जयन्त ने भीतर से फाइल देखते हुए कहा—हा यही है मेरी फाइल। आश्चर्य है किस बखूबी से निरजन ने मेरा नाम मिटा दिया दगाबाज।'

"लेकिन पापा, मेरे यह समझ मे नही आया कि कैसे रोबो मास्टर ने इस फाइल को पहचाना ? यह कोई भी फाइल हो सकती थी ?"

"हा, मैं अब तुम्हारी जिज्ञासा शात करता हूँ' रोबो मास्टर कहने लगा।

इस फाइल पर तुम एक विशेष आकृति देख रहे हो, यह गुणसूत्र 'एक्स' और 'वाई' के जेनेटिक कोड हैं, लेकिन इन्हे इतना अधिक फैलाया गया है कि उनके अणु तक स्पष्ट नजर नही आ रहे हैं अत वास्तविक आकृति विलुप्त हो चुकी है इन्ही जेनेटिक कोड के अणुओ के बीचोबीच तुम्हें एक आकृति दृष्टिगोचर हो रही होगी ? क्या तुम बता सकते हो कि यह आकृति किसकी है ?

"नहीं" राजीव ने आकृति को ध्यान देखते हुए कहा। "यह द्विविम या त्रिविम आकृति नहीं है जो तुम इसे पहचान सको।" रोबो मास्टर ने कहा।

"यह त्रिविम या द्विविम क्या है ?"

"ओह ! मैं यह तो भूल ही गया कि यह बात तुम्हारी समझ के परे है। फिर भी मैं तुम्हें समझाता हूं कागज पर तुम जो आकृति बनाते हो या सामान्यतया पर्दे पर पिक्चर देखते हो यह द्विविम है। इसी प्रकार से तुमने थ्री डी फिल्में अवश्य देखी होंगी। क्या तुम थ्री डी कॉमिक्स नहीं पढ़ते ? यानी वस्तु की आकृति जो हम इस संसार में देखते हैं, वह त्रिविम है। हम तुम भी त्रिविम में ही दिखाई पड़ते हैं। लेकिन यह आकृति चतुर्विम में है अत इसका रूप बिखर गया है। मैं अभी इसे त्रिविम में बदलता हू।"

रोबो मास्टर ने अपने मस्तिष्क में फिर एक उपकरण के बटन को दबाया तुरन्त यह चित्र त्रिविम में बदल गया। डॉ जयन्त की आकृति अणुओं के बीचोबीच खड़ी मुस्करा रही थी।

"यह तो मेरे पापा हैं।"

"हां, यह तुम्हारे पापा की आकृति है जो इन अणुओं के बीच छिपी हुई है।"

तभी रोबो-मास्टर एक बटन दबा देता है। बटन दबाने के साथ ही आकृति विकृत तथा बिखरा रूप ले लेती है और चित्र पुन पहले जैसा हो जाता है।

"आश्चर्य है—रोबो-मास्टर।"

"यह सब कम्प्यूटर ग्राफिक्स उर्फ तीसरी आंख का कमाल है इसकी तकनीक का उपयोग करके एक विम दूसरे विम में परिवर्तित किया जा सकता है। यह बिखरी आकृति भी खुली नहीं है इसे एक बारीक पर्दे ने ढक रखा है जो एक अणु के आकार जितना बड़ा है तथा अणु की आकृति जैसा ही है। वास्तव में यह पर्दा नहीं बल्कि 'बॉयलॉजिकल माइक्रो कम्प्यूटर' है। इससे एक क्षीण विद्युत पैदा होती है जो रासायनिक क्रिया में सहायक होती है। इस क्रिया से आकृति गायब हो जाती है यानि आकृति के ऊपर अणु की आकृति की फिल्म या झिल्ली चढ़ आती है। सामान्यतया यह झिल्ली अन्य जीन के अणुओं की तरह एक जीन का अणु ही दिखलाई पड़ती है जिससे देखने वाले को किसी अन्य आकृति का सन्देह नहीं होता है। उक्त

रासायनिक क्रिया की विपरीत क्रिया पर आकृति पुन उभर आती है। अणु की आकृति जैसा बायलॉजिकल कम्प्यूटर होने से किसी को सन्देह भी नहीं होता है।

'अद्भुत है यह बायलॉजिकल बेटरी।' रोबो मास्टर।

"हाँ, यह एक अल्ट्राथिन (अत्यन्त बारीक) झिल्ली होती है। इसे कई वर्ष पहले मिशिग्न स्टेट यूनिवर्सिटी के विज्ञानी एच टी टायेन ने तैयार किया था। लेकिन अब तो इस क्षेत्र मे बहुत प्रगति हो गई है। आश्चर्य तो यह है कि कृत्रिम झिल्ली उसी पदार्थ की बनी होती है जिससे कोशिका झिल्ली बनी होती है यानि यह लाइपिड कणो की दोहरी परत होती है जिसकी मोटाई एक मिलीमीटर का भी लाखवाँ हिस्सा होती है। लेकिन इसमे प्रोटीन नही होते जो कि प्राकृतिक परत मे इलेक्ट्रान के बहाव का कार्य करते हैं। इस बैटरी मे इलेक्ट्रान के बहाव का कार्य ऑर्गनिक मेटल (धातु) द्वारा किया जाता है। यह ऑर्गनिक मेटल 'टी सी एन क्यू' कहलाता है।"

"पापा, आपने तो कमाल कर दिया, कितनी अद्भुत तकनीक अपनाई है आपने!"

"हाँ राजीव, इसी अद्भुत तकनीक के कारण रोबो-मास्टर यह पहचान सका कि फाइल मेरी है।"

डॉक्टर जयन्त जो अब तक चुप थे तथा रोबो मास्टर व राजीव की बातचीत सुन रहे थे, बोले।

"क्या निरजन को इस बात का पता नही है?"

"निरजन से यह बात गुप्त रखी गई है।"

"क्या आपने बॉयलॉजिकल कम्प्यूटर निरजन के सहयोग से नही खरीदा?"

"नहीं यह मैंने सीधे ही मिशिगन यूनिवर्सिटी से प्राप्त किया है।"

"लेकिन निरजन को तो कम्प्यूटर मे महारत हासिल है। उसे इस बात का पता नही चला।"

"हर कम्प्यूटर की पणाली भिन्न होती है। फिर यह है 'माइक्रो-कम्प्यूटर' इसे इतने गुप्त तरीके से सेट किया गया है कि निरजन को कम्प्यूटर तकनीक मे महारत हासिल होने के बावजूद भी उसे इसका पता नही चल सकता और फिर वे तो बॉयलॉजिकल कम्प्यूटर से पूर्णतया अनभिज्ञ होगा क्योंकि यह कम्प्यूटर अभी मार्केट के लिए उपलब्ध नहीं हुआ है।"

"पापा, आपको इस माइक्रोकम्प्यूटर के बारे मे कैसे पता चला ?"
"मेरा एक दोस्त वहा काम कर रहा है।"
"लेकिन यह कैसे पता चला कि फाइल अलमारी मे है ?"
"लेसर कैमरे की सहायता से, इन कमरो के आगे दीवार कोई महत्व नही रखती, चाहे दीवार धातु की हो या कक्रीट की। दीवार के पार क्या वस्तु रखी है ? उसका लेसर कैमरा तुरन्त चित्र ले लेता है।"
"ओह ! अब समझा पापा, कि कैसे रोबो मास्टर को फाइल का पता चला।
"थैंक्स गोड, फाइल मिल गई। नही तो मेरे सारे सपने चूर-चूर हो गये होते।" डॉ जयन्त ने फाइल पर दृष्टि डालते हुए कहा। रात्रि के तीन बजे थे। उनकी नीद उचट गई थी फिर रिसर्च रिपोर्ट के गायब होने का डर था अत उन्होने उचित यही समझा कि रिपोर्ट को कम्प्यूटर मे फीड किया जाय। यदि किसी वजह से फाइल खो भी गई तो रिकार्ड उनके पास रहगा। अब वह पहले वाली गलती नही दोहराना चाहते थे। रोबो-मास्टर के मस्तिष्क मे भी यह रिपोर्ट फीड कर दी गई। ठीक पाच बजे 'एअर बस' लॉस एन्जेल्स के लिये रवाना हो जायेगी। चार बजे थे अत वे 'एरोड्राम' के लिये रवाना हुए उनके साथ रोबो मास्टर भी था।
दूसरे दिन अन्तर्राष्ट्रीय जीन टक एसोसियेशन के समक्ष डॉ जयन्त ने अपनी रिपोर्ट पढी। विश्व भर के जीवविज्ञानी यहाँ एकत्रित हुए थे। इस एसोसियेशन ने डॉ जयन्त के काम को मान्यता दी। तुरन्त सारे ससार मे यह सनसनीखेज खबर फैल गई कि अब गर्भवती महिलाएँ इच्छानुसार पुत्र पैदा कर सकेंगी।
डॉ जयन्त ने राहत की सास ली।

□□

ठीक दस वर्ष पश्चात्।
इन दस वर्षों मे डॉ जयन्त ने बहुत तरक्की की। इस समय वह यूरेनस ग्रह के एक उपग्रह 'मिरान्डा' पर जेनेटिक इन्जीनियर के रूप मे, वहा बस्ती बसाने से सम्बन्धित समस्याओ पर कार्य कर रहे थे।
उपग्रह 'मिरान्डा' से यूरेनस जितना साफ दिखाई पडता है इतना यह इसके अन्य उपग्रहो एरियल, अम्बियन टिटानिया तथा ओबेरोन से भी दिखाई नही पडता है। आखिर मिरान्डा इसके सबसे नजदीक जो

है। यह यूरेनस ग्रह ठीक उसी प्रकार दिखाई पडता है जसे चन्द्रमा से देखने पर पृथ्वी स्फुरदीप्ति की ओढनी ओढे आकाश मे लटकते हुए दिखाई पडती है। पृथ्वी से दो सौ करोड मील दूर नील हरित रग मे चमकते हुए इस ग्रह को देखकर कोई भी मोहित हुए बिना नही रह सकता। कितना अनोखा है यह ग्रह। और इसके अनोखेपन का कारण है इसका अक्ष अन्य ग्रहो की कक्षाओ के तल मे होना और उपग्रहो तथा छल्लो का इस ग्रह के समकोण तल मे होना। वोयेजर-2 ने इसके नौ छल्लो का पता लगाया था लेकिन अब तो शनि की तरह इसके अनेक छल्लो का पता लग चुका है—वोयेजर-2 की खोज के समय यह रहस्य बना हुआ था कि यूरेनस के ये छल्ले काले क्यो होते है? कुछ विज्ञानियो का कहना था कि ये छल्ले कार्बनयुक्त पदार्थ के बने होते हैं तो अन्य का विचार था कि ये छल्ले मिथेन बर्फ से बने है जो कि विकिरणो द्वारा काले पड जाते है। लेकिन अब इन छल्लो का रहस्य प्रकट हो चुका है।

डॉ जयन्त ने मिरान्डा से यूरेनस ग्रह की आभा देखकर मन ही मन यूरेनस देवता को प्रणाम किया। पृथ्वी (जिया) के पति तथा पुत्र एवं टिटान के पिता, आकाश तथा ससार के सम्राट्—इस यूरेनस ग्रह को कितना कठिन था—खोजना। यह इतना मद्धिम था कि इसे टेलिस्कोप के आविष्कार के बाद ही खोजा जा सका। सत्रह सौ इक्यासी का वो अभूतपूर्व दिन जब विलियम हर्शेल ने इसे खोज निकाला था।

डा जयन्त को तभी भारत की याद आती है, किस प्रकार से उन्होने भारत के एक छोटे से शहर मे जीन टेक पर अनुसन्धान प्रारम्भ किया था और ठीक दस वर्ष पूर्व उन्होने सारे ससार मे अपने अनुसन्धान की धाक जमा दी थी। वह उनकी एक सफलता थी। उसके अनुसन्धान की सफलता से निराश गर्भवती महिलाओ मे आशा की किरण जगी थी। अब महिलाये कृत्रिम तरीको से पुत्र को जन्म देने लगी थी। तब से अब तक डॉ जयन्त अनेक उच्च पदो पर आसीन रहे। वे कहा-कहा नही गये। मास्को, न्यूयार्क फिर उन्हे अनेक ग्रहो तथा उपग्रहो पर भेजा गया। चन्द्रमा की भूमिगत बस्तियो मे कार्य करने के पश्चात् मगल, बृहस्पति तथा शनि के उपग्रहो पर कार्य किया और अब यूरेनस की उपग्रहीय बस्ती मे कार्य करने लगे थे। अब वे अन्तरा उपग्रहीय जीन टेक एसोसियेशन के निदेशक थे। घटनाएँ किस तरह से मोड लेती हैं, उन्हे आश्चर्य हो रहा था। अन्तरिक्ष शटल ने अन्तरग्रहीय तथा अन्तरा उपग्रहीय यात्राओ को कितना आसान बना दिया था। अब तक

अन्तरिक्ष यानो की स्पीड मे भी भारी अन्तर आ चुका था। रेमजेट अन्तरिक्ष यान अस्तित्व मे आ चुके थे इन रेमजेट यानो से विभिन्न ग्रहो तथा उपग्रहो के बीच की दूरियाँ बहुत कम हो गई थी। रेमजेट यान अन्तरिक्ष से ही ईंधन प्राप्त कर सकते थे। फ्यूजन रिएक्टर की सफलता से यह कार्य आसान हो गया था। अन्तरा-उपग्रहीय यात्राएँ सामान्य हो गई। यही कारण था कि डॉ जयन्त अनेक ग्रहो और उपग्रहो पर कार्य कर सके थे।

भोर का समय । डॉ जयन्त 'मिरान्डा' उपग्रह पर अपने लॉन मे बैठे हुए थे। उनकी पत्नी जया कॉफी से सुसज्जित ट्रे लाती है। करीब दो सौ करोड मील दूर मिरान्डा पर कॉफी पीना उन्हे कितना अच्छा लगा। तभी कम्प्यूटर आधारित थ्री डी समाचार पत्र भी आ जाता है। एक तीव्र गति युक्त कलर लेसर प्रिंटर इसे प्रकाशित करता है। पहली बार बना लेसर प्रिंटर एक मिनट मे चौदह पृष्ठ प्रकाशित करता था। इसे जोर्जिया स्थित नोर्क्रॉस के कोलोरोक्स कॉर्पोरेशन ने निर्मित किया था। इसके पश्चात् इसे थ्री डी रूप दे दिया गया। समाचार पत्र पर उनकी दृष्टि एक जगह विशेष रूप से जा टिकी। 'पृथ्वी पर लडकियो की जन्म दर मे गिरावट' खास तौर से भारत मे यदि यही स्थिति रही तो आने वाले कुछ ही वर्षो मे यह गिरावट नाजुक दौर मे पहुँच जायेगी। उनके अनुसन्धान के बाद हर महिला केवल पुत्र ही जन्म देने लगी। नतीजा यह हुआ कि पुत्रियो की सख्या मे कमी होने लगी। विवाह के लिये लडकी का ढूढना कठिन हो गया। डॉ जयन्त के शहर की हालत तो नाजुक दौर मे पहुँच चुकी थी। वहाँ लडकियाँ नाम मात्र को रह गई थी। केवल वैवाहिक महिलाएँ थी। अत सबसे अधिक व्यभिचार भी उसी शहर मे होते। महिलाएँ असुरक्षित थी। यहाँ तक कि घर से बाहर कदम रखना उनका दुरुह हो गया था। नौकरियो पर जाने वाली महिलाओ ने अपनी नौकरिया छोड दी थी। दरवाजा खोलने मे उन्हें दहशत होती थी। घर के बाहर के सभी कार्य पुरुष करने लगे थे। अभद्रता और अश्लीलता चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी। दहेज की उलटी गगा बहने लगी थी। पहले पुरुष के लिए दहेज देना पडता था और अब स्त्रियो के लिये। बडी रकम देने पर ही स्त्री से रिश्ता होता फिर भी लडकी सुन्दर नही होती। पुरुष को कुरूप स्त्री प्राप्त करके ही सतोष करना पडता। न जाने सुन्दर स्त्रियाँ कहाँ चली गई थी। शहर मे सुन्दर स्त्रियो के अभाव मे कुरूपता ही कुरूपता नजर

आती। बलात्कार की घटनाएं सामान्य हो चली थी। इससे एड्स जैसी अनेक घातक बीमारियां महामारी के रूप मे फैल चुकी थी। गोनोरिया तथा सिफलिश से पीडित महिलायें तो घर-घर मे देखी जा सकती थी। डॉ जयन्त के माथे पर चिन्ता की रेखाएं उभर आई थी। उन्होंने कभी नही सोचा था कि उनका शहर यौन की घातक बीमारियों से तडप रहा होगा। पूरा शहर उदासी और भग्नता का रूप ले लेगा। ओह! पूरा का पूरा शहर इलिमट का 'वेस्ट लण्ड' हो चुका है कही स्फूर्ति नही—ओज नही दबी आवाजे मरी आवाजें जीवन नही क्या सास का चलते रहना ही जीवन है और कुछ जीवन नही? शहर की इतनी बुरी दशा हो जायेगी। जयन्त ने कभी कल्पना नही की थी। किस प्रकार से चरनोबिल रिएक्टर मे हुए विस्फोट ने कीव शहर को मौत के मुँह मे धकेल दिया था। उसकी काली परछाईं आज भी दृष्टिगोचर होती है आज उनके शहर पर भी स्वय के अनुसधान की काली छाया देखी जा सकती है। उन्होने किस तरह से इस शहर को 'वेस्टलण्ड' मे परिवर्तित कर दिया। हाँ, यह उन्ही की वजह से हुआ। आज इस शहर की यह हालत है, कल दूसरा शहर भी इसी प्रकार ज्वालामुखी के कगार पर खडा होगा फिर तीसरा और फिर यह स्थिति आयेगी कि सारा विश्व इसकी परिधि में घिर आयेगा। डॉ जयन्त को अपने अनुसधान की भयावहता का अहसास हो चला था। यह भयावहता महान् विज्ञानी आइन्सटाइन के अनुसधान की भयावहता से कम नही थी डॉ जयन्त ने अन्तर्राष्ट्रीय जीन टेक एसोसियेशन से अनुरोध किया कि वे उस दवा पर तुरन्त तथा कारगार ढग से प्रतिबन्ध लगाने के आदेश प्रसारित करे तथा उनके सूत्रो को जहाँ वही हो समूल नष्ट करवाने का भरसक प्रयास करे।

अब डॉक्टर जयन्त ठीक आइन्सटाइन की तरह मानसिक सत्रास की अवस्था से गुजर रहे थे। यह मानसिक कष्ट उन्हे भीतर ही भीतर खोखला किये जा रहा था। उनका स्वास्थ्य निरन्तर गिरता चला जा रहा था। जब कभी भी वे तारो भरी रात्रि मे यूरेनस को निहारते, उन्हे उसके काले छल्ले और अधिक घने दिखाई पडते। □□

बायोरोबोटिका सपना

"सर, हेव ए कप श्रॉफ टी ।"

समीर अपने 'जिश्रोडेसिक' निवास स्थल के लॉन में बैठे हुए पत्रिका मे छपे स्वय के लेख पर दृष्टि टिका रहे थे, सपना ने उनका ध्यान आकृष्ट किया ।

सपना एक बायोरोबोटिका है । ठीक दस वर्ष के अथक प्रयत्नो का परिणाम थी यह सपना । पिछले बीस वर्षों से समीर एक इण्डियन रोबोट मैन्यूफेक्चरिंग कोर्पोरेशन मे कायरत थे । यो तो समीर ने अपना प्रारम्भिक केरिअर न्यूरोफिजियोलोजिस्ट के रूप मे अपनाया था लेकिन उनकी गहन रुचि 'कम्प्यूटर ग्राफिक्स' मे थी । इस कारण उन्हे आई आर एम कॉर्पोरेशन मे प्रवेश पाने मे अधिक कठिनाइयो का सामना नही करना पडा । यहाँ समीर ने रोबो-साइकोलोजिस्ट के रूप मे अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया था । आई आर एम कॉर्पोरेशन ने जितने भी रोबोट तैयार किये थे, वे किसी ऊँचे उद्देश्य के लिये ही बने थे । इन रोबोट का उपयोग प्रमुख रूप से अन्तर्तारकीय तथा अन्तग्रहीय यात्राएँ, चन्द्रमा एव अन्य उपग्रहों, ग्रहो मे बस्तियो के निर्माण मे किया जाता था । समीर चाहते थे कि वह एक बायोरोबोटिका का निर्माण करे । प्रारम्भ मे आई आर एम कॉर्पोरेशन इसके लिये तैयार नही था लेकिन समीर के निरन्तर किये गये प्रयत्नो के आगे उन्हें झुकना पडा । दस वर्षों के अथक प्रयत्नो का परिणाम थी— 'बायोरोबोटिका सपना' । इसके पश्चात् इसे समीर की सचिव के रूप मे नियुक्त किया गया ।

"ओह ! तुम यहाँ कब आ गई । मुझे कुछ पता ही नही चला ।" समीर ने चाय का कप हाथ मे थामते हुए कहा—

"आई हैव जस्ट कम ।"

सपना भी बैठते हुए चाय पीने मे उनका साथ देती है ।

"आह ! द फ्लेवर इज फाइन ।" क्या आज किसी अन्य पत्ती का इस्तेमाल किया ।"

"हाँ, यह किस्म हाल ही मे मार्केट मे आई है। यह किस्म एक नये जीन के प्रयोग से तैयार की गई है।"

"क्या आपको यह वाकई स्वादिष्ट लगी ?"

"हा, सपना तुम इसे रोज बनाओगी ?"

"यश सर।"

"तुम्हे मुझे 'सर' नही अपितु 'अकल' कह कर पुकारना चाहिये। तुम्हे मैं अपनी सचिव नही समझता हूँ बल्कि अब तुम इस घर की सदस्य हो।"

"थैंक्यू अकल।"

"गुड। सपना ! अब मुझे अपनापन लगता है।"

इस समय सपना एक स्वेटर बुन रही है। समीर समीप बठे हुए हैं। उन्ह एक बायोरोबोटिका को स्वेटर बुनते हुए देखकर आश्चय होता है।

"यह तुम किसका स्वेटर बुन रही हो।"

"अकल, यह स्वेटर आपका है।" सपना स्वेटर बुनने मे कही कृत्रिमता नही महसूसती है। यह देखकर कोई यह नही कह सकता कि वह बायोरोबोटिका है।

"सपना यह स्वेटर बुनना तुमने किससे सीखा ?"

"आपकी पडोसन 'तृषा' से।'

"अच्छा ! क्या इतना शीघ्र तुमने मित्रता करली उससे ?"

"हाँ अकल, बहुत ही भली युवती है बडा प्यार दर्शाती है मुझ पर।"

"यह काय तो मशीन से भी हो सकता है। इतना परिश्रम करने की आवश्यकता क्या ?

"अकल, मैं नही जानती कि मेहनत क्या है, और अकल लगता है आप भूल रहे हैं कि मैं एक मशीन हू।"

"नही मशीन मे और तुममे रात-दिन का अतर है। तुम एक भावप्रवण युवती हो, जबकि मशीन ऐसी नही होती।"

"लेकिन कई रोबो एअर-परिचालिकाए काफी 'इमोशनल' होती हैं।"

"मैं तुम्हारी बात से सहमत हू किन्तु उनके मनोभाव कृत्रिम होते हैं, तथा ये मनोभाव एक प्रकार का 'डिसेप्शन' है। लेकिन तुम एक

बायोरोबोटिका हो। तुम्हारे मस्तिष्क का कुछ भाग जीवित कोशिकाओ का बना हुआ है, विशेष रूप से मस्तिष्क की 'लिम्बिक प्रणाली'।" उन्होने आगे कहा—

"यह मस्तिष्क का सवेगात्मक क्षेत्र है। किसी भी व्यक्ति का भयभीत तथा निडर होना इसी क्षेत्र मे निहित मास्टर ग्लड से स्रवित होने वाले हारमोन की मात्रा पर निभर करता है। क्या तुम सचमुच अपने मस्तिष्क के बारे मे जानना चाहती हो ?"

"हाँ अकल। मेरी यह तीव्र इच्छा है।"

"इसके लिये तुम्हे अनुसधान कक्ष चलना होगा।"

"अकल, मै तैयार हू।"

तत्पश्चात् वे दोनो अनुसधान कक्ष मे पहुचते है। समीर 'कम्प्यूटर ग्राफिक्स' के एक उपकरण को चालू करते है। जो मस्तिष्क के द्विविम चित्र को त्रिविम मे रेखा चित्र मे बदल देता है। तो मै तुमसे 'लिम्बिक' प्रणाली की बात कर रहा था। यह देखो सपना, यह है लिम्बिक प्रणाली। यह है पियूष ग्रन्थि इसके नीचे जो सरचना तुम्हे दिखाई पड रही है वह कहलाती है हिप्पोकेम्पस यहा देखो यहाँ पियूष ग्रन्थि के ऊपर तुम्हे एक गाठ दिखाई पड रही होगी यह सरचना कहलाती है अमाइगडेला यह रहा हाइपोथेलेमस और इसके ठीक ऊपर रहा, थेलेमस ये सब मिल कर बनाते हैं, लिम्बिक सिस्टम। यह मूड, जिसका सम्बन्ध तुम्हारे चेहरे की अभिव्यक्ति से होता है, इसी पियूष ग्रथि द्वारा नियत्रित किया जाता है। यह बादाम की सी सरचना अमाइगडेला ही व्यक्ति को भयभीत अथवा निडर बनाती है। यह है हाइपोथेलेमस इससे स्रवित होने वाले हार्मोन हमारी विभिन्न मानसिक क्रियाओ को नियत्रित करते हैं। मानसिक क्रियाओ से मेरा आशय है दृष्टि-धारण (विजुअल रिटेंशन), चिन्ता तथा ध्यान-केन्द्रिन करना आदि। यह हिप्पोकेम्पस हमारी याददास्त का केन्द्र है और

"क्या तुम यह सरचना देख रही हो।"

"हा, अकल।"

यह है मस्तिष्क का 'प्लेजर सटर' यानी सुख का केन्द्र जिसे हम प्यार कहते हैं वह इसी केन्द्र से उपजता है।"

"अच्छा।"

"इसमे आश्चय की बात नही।"

"मैं इसे 'लिम्बिक-कॉम्पलेक्स' कहूगा।"

"सपना, यदि तुम्हारे, भीतर सजीव लिम्बिक प्रणाली नहीं होती तो क्या तुम 'प्यार' शब्द को महसूस कर सकती ? और क्या यह कह सकती थी कि तृषा बहुत भली युवती है, वह बड़ा प्यार दर्शाती है मुझ पर। तुम्हारी लिम्बिक प्रणाली का हर अंश सजीव कोशिका से बना हुआ है उन्हें जीन नियमित करते हैं। और ये 'जीन' ही हार्मोन को नियंत्रित करते हैं।'

"लेकिन जब मैं भोजन नहीं करती तो इन कोशिकाओं तथा विभिन्न हार्मोन्स के लिये 'कच्चा पदार्थ' कहां से मस्तिष्क में फीड होता है।"

सपना ने जिज्ञासा प्रकट की।

तुम्हारे शरीर में आहार की भंडारालय कोशिकाएं मौजूद हैं। तुम्हारे निर्माण के साथ इन कोशिकाओं में इतना आहार अवश्य संचित किया जा चुका था कि तुम सौ वर्ष तक जीवित रह सको।"

"लेकिन अंकल, कोशिकाएं तो अत्यन्त लघु होती हैं उसमें इतना आहार कैसे समाया होगा ?"

"यह आहार अमीनो अम्ल, शर्करा तथा वसीय अम्ल यानि घुलनशील पदार्थों के रूप में संचित है। 'और एक नहीं लाखों कोशिकाओं में' यह पदार्थ संचित है। ये कोशिकाएं किसी एक अंग के रूप में 'पेट' नहीं हुई हैं यानि जैसा कि हमारे शरीर में आमाशय है। अतः तुम्हारे शरीर में आहार का कार्य केवल आमाशय से हो या हमारी देह की तरह आहार नलिका से ही नहीं होता बल्कि तुम्हारे शरीर की प्रत्येक कोशिका इसमें मदद करती है। जैसे कि तुम्हारे मस्तिष्क के लिये आवश्यक पदार्थ उसमें निहित कुछ कोशिकाओं से प्राप्त हो जाता है।

"भोजन करने के पश्चात् अपशिष्ट पदार्थ बनता है, उसका क्या होता है ? यदि वह शरीर से बाहर उत्सर्जित नहीं होगा तो क्या शरीर का रक्त विषाक्त नहीं हो जायेगा ?"

'तुम्हारे शरीर की भोजन प्रणाली हमारी प्रणाली से पूर्णतया भिन्न है तथा हमसे कई गुना जटिल भी है। तुमने 'क्लोज्ड ह्यूमन सायकल, का नाम सुना होगा ?"

"हां, क्लोज्ड ह्यूमन साइकल का उपयोग अंतरिक्ष में दीर्घ यात्रा के दौरान एक अंतरिक्ष यात्री करता है। मैं समझती हूं कि इसमें अपशिष्ट पदार्थों का पुनः उपयोग किया जायेगा। लेकिन इसमें पौधे

मल तथा कार्बन-डाई-ग्राक्साइड का उपयोग करते हैं तो क्या मेरे भीतर पौधे की कोशिकाएं हैं ?'

"सपना, तुम्हारे लिये मल की कोई समस्या नही क्योंकि जिस प्रकार से शर्करा ग्रांतो द्वारा सीधी ग्रवशोषित होती है, उसी प्रकार से शर्करा का जीवित कोशिकाग्रो द्वारा सीधा परासरण होता है। ग्रत मल की कोई समस्या ही नही रहती। इसके ग्रतिरिक्त तुम्हारे शरीर मे किसी प्रकार के प्रकाश सश्लेषी लवक नही है हा सरल ग्रकार्बनिक पदार्थ कार्बन-डाई-ग्राक्साइड तथा जल द्वारा जटिल शर्करा का निर्माण ग्रवश्य होता है, लेकिन इसकी प्रक्रिया बहुत जटिल है। इसे हम प्रकाश सश्लेषण का "प्रतिस्थापन" कह सकते हैं। इस दौरान उत्पन्न ग्राक्सीजन का उपयोग विभिन्न उपापचय क्रियाग्रो के लिये होता है। माना कि केटाबोलिक क्रिया द्वारा प्रोटीन के टूटने से ग्रमोनिया बनती है, जो जीवित मस्तिष्क के लिये विषाक्त हो सकती है, उसे कुछ कोशिकाएं पुन ग्रमीनो ग्रम्ल मे बदल देती हैं जिसका पुन उपयोग किया जा सकता है। यह क्लोज्ड ह्यूमन चक्र इतना सरल नही होता जैसा कि मैंने कहा। जैसे-जैसे हम इसकी गहराई मे जाते हैं, ये प्रक्रियाएँ ग्रौर जटिल दिखाई देने लगती है। ये सभी क्रियाएँ विभिन्न पोजिट्रोनिक सेल द्वारा नियन्त्रित की जाती हैं। जैसे एक बटन के ग्राकार के ट्राजिस्टर मे लाखो ट्रान्सड्यूसस होते हैं, उसी प्रकार से इन क्रियाग्रो के नियत्रण के लिये मस्तिष्क के छोटे से भाग मे कई मेटाबोलिक नियत्रण केन्द्र होते हैं, जिनसे स्टीमुलस (सवेदन) पोजिट्रोनिक, पाथ द्वारा विभिन्न कोशिकाग्रो मे फीड किये जाते है। यहा हम देखते हैं कि किस प्रकार सजीव तथा निर्जीव पदार्थों मे सहजीवन होता है। सपना तुम 'साइबर्ग' का एक उत्कृष्ट उदाहरण हो।"

"ग्रकल, साइबर्ग से ग्रापका क्या तात्पय है ?

जब सजीव तथा निर्जीव पदार्थ मे 'सहजीवन' प्रारम्भ हो जाता है तो उसे 'साइबर्ग' कहते हैं। सामान्यतया कभी भी सजीव किसी बाह्य निर्जीव पदार्थ को सहन नही करता है। तुम्हारी ग्राखो की पुतलिया, ग्रोठ तथा त्वचा लिविंग है जबकि ग्रन्य भीतरी सेन्सस तथा इफेक्टस 'नॉन लिविंग है।

"क्या जीवित-मस्तिष्क मे रक्त नही है ?"

"रक्त है लेकिन सिन्थेटिक जो कि विभिन्न कोशिकाग्रो द्वारा तैयार

किया जाना है। केवल तुम्हारे मस्तिष्क में ही रक्त है अन्य अंगों में नहीं।'

विज्ञानी समीर सपना की जिज्ञासा को शांत करने की चेष्टा किये जा रहे थे। उनके उत्तर कुछ इस प्रकार के थे कि बीसवीं शताब्दी के लोगों के गले नहीं उतर सकते थे। यदि वे इस शताब्दी में जन्मते। विज्ञानी समीर सपना को बरबस निहारने लगे उन्हें अपनी इस 'सृष्टि' पर फक्र हो आया सपना कितनी सजीव व 'लवली' लग रही थी। उसे देख कौन कह सकता था कि वह सजीव व निर्जीव का सिम्बोयसिस थी अद्भुत सिम्बोयसिस साइबर्ग की दुनिया में बेमिसाल अद्भुत माइक्रम शरीर में कृत्रिम सेन्सर्स, 'रिसेप्टर्स' तथा 'इफेक्टर्स' का जाल सजीव पदार्थों से इस प्रकार जुड़ा हुआ था कि सजीव तथा निर्जीव अंशों में भेद करना अत्यन्त कठिन था।

सपना को स्वयं पर बड़ा आश्चर्य हो रहा था। उसे पहली बार यह ज्ञात हुआ कि उसका मस्तिष्क सजीव है। मस्तिष्क के सजीव होने का मतलब यह है कि उसमें जीवन है, प्राण है, यानि वह स्वयं सामान्य प्राणियों की तरह ही एक सजीव प्राणी है... एक स्त्री की तरह स्त्री है... यान्त्रिक नहीं बल्कि भाव प्रणव स्त्री यदि उसके कुछ भाग निर्जीव हुए भी तो इससे क्या फरक पड़ता है ? है तो वह स्त्री ही। समीर के चले जाने के पश्चात पहली बार सपना में जीवन के प्रति चेतना उत्पन्न हुई। वह दौड़ी-दौड़ी तृषा के पास गई।

'क्या बात है सपना, आज तुम बड़ी खुश नजर आ रही हो ?" तृषा ने उसे बैठने का संकेत करते हुए कहा।

"हां, दीदी मुझे पहली बार मालूम हुआ कि मैं जड़ नहीं बल्कि चेतन पदार्थ हूं।"

"तो कौन कहता है कि तुम जड़ पदाथ हो, तुम्हें देखकर कोई नहीं कह सकता कि तुम जड़ हो।"

दीदी हाव भाव से नहीं अंकल ने आज पहली बार मेरे शरीर की एनेटोमी के बारे में बताया।"

सपना ने अपनी समीर से बातचीत का खुलासा तृषा के सामने रख दिया। उसकी बात सुनकर वह हतप्रभ रह गई।

तृषा के यहां से लौटने के पश्चात् बिस्तर में लेटे-लेटे वह यही सोचती रही कि वह एक जीवित प्राणी है क्या हुआ यदि उसके शरीर के कुछ भाग कृत्रिम हुए, मस्तिष्क तो उसका सजीव है ?

जीवन के अहसास से सपना की हीन भावना समाप्त हो गई। उसमे एक नये जीवन का सचार हुआ। अब वह प्यार कर सकेगी। आखिर वह जीवन से भरपूर है। वह प्यार क्यो नही कर सकती। यह सोचने लगी।

उसने नृत्य सीखना प्रारम्भ कर दिया। धीरे-धीरे, 'इन्डियन क्लासिक्स' मे उसकी रुचि बढ जाती है। अति शीघ्र वह भारतीय क्लासिकल नृत्यो मे पारगत हो जाती है।

एक दिन उसने जब अमरीका के खचाखच भरे एक मशहूर थियेटर मे नृत्य का प्रदशन किया तो लोग दातो तले ऊगली दबाने लगे।

यहा उसकी मुलाकात नितिन से हुई। वह भारतीय था। शीघ्र ही उनकी ये चन्द मुलाकातें प्रेम मे परिणत हो गइ। और एक दिन जब वे दोनो झील मे सैर कर रहे थे नितिन बोला—

"सपना, न जाने आज तुम क्यो बहुत सुन्दर लग रही हो।"

"सच।"

"हा, जी चाहता है मैं तुम्हारे चेहरे को बरबस निहारता रहू।"

"क्या है मुझमे ऐसा ?"

"जीवन ।"

नितिन कुछ क्षणो तक उसे अपलक निहारता रहा और फिर प्यार की उत्तेजना उसके होठ मे सिमट आई। इस उत्तेजना का सपना ने महसूस किया जीवत होठो के रूप मे। यह उत्तेजना उसके रोम-रोम मे सिहरन पैदा कर देती है। वह नितिन से लिपट गई कल-कल करती जल को तरगो तथा आकाश मे पख फडफडाते श्वेत परिन्दो के बीच।

नितिन को कभी यह महसूस नही हुआ कि सपना का कोई अग कृत्रिम है—होठ पलकें, खाल सभी। उसकी होठो की स्मित, नजराना, अन्य हाव-भाव सभी उसे सहज लगते। वह उसे पूणतया जीवत लगती। वह इस बात से अनभिज्ञ था कि वह एक बायोरो-बोटिका है।

एक दिन नितिन उत्तेजित-सा सपना के पास आया।

"सपना।" क्रोध मे भभकते हुए वह चिल्लाया।

"नितिन क्या बात है आज तुम इतने उत्तेजित क्यो हो ?"

"तुमने मुझे धोखा दिया है जी चाहता है मे तुम्हारा गला दबा दू।"

"धोखा ! वह भी मैंने ? आज तुम कसी बात कर रहे हो ?"

किया जाता है। केवल तुम्हारे मस्तिष्क में ही रक्त है अन्य अंगों में नहीं।'

विज्ञानी समीर सपना की जिज्ञासा को शांत करने की चेष्टा किये जा रहे थे। उनके उत्तर कुछ इस प्रकार के थे कि बीसवीं शताब्दी के लोगों के गले नहीं उतर सकते थे। यदि वे इस शताब्दी में जन्मते। विज्ञानी समीर सपना को बरबस निहारने लगे उन्हें अपनी इस 'सृष्टि' पर फक्र हो आया सपना कितनी सजीव व 'लवली' लग रही थी। उसे देख कौन कह सकता था कि वह सजीव व निर्जीव का सिम्बोयसिस थी अद्‌भुत सिम्बोयसिस साइबग की दुनिया में बेमिसाल अद्‌भुत साइबग शरीर में कृत्रिम सेंसर्स, 'रिसेप्टर्स' तथा 'इफेक्टर्स' का जाल सजीव पदार्थों से इस प्रकार जुड़ा हुआ था कि सजीव तथा निर्जीव अंशों में भेद करना अत्यन्त कठिन था।

सपना को स्वयं पर बड़ा आश्चर्य हो रहा था। उसे पहली बार यह ज्ञात हुआ कि उसका मस्तिष्क सजीव है। मस्तिष्क के सजीव होने का मतलब यह है कि उसमें जीवन है, प्राण है, यानि वह स्वयं सामान्य प्राणियों की तरह ही एक सजीव प्राणी है— एक स्त्री की तरह स्त्री है— यान्त्रिक नहीं बल्कि भाव प्रणय स्त्री यदि उसके कुछ भाग निर्जीव हुए भी तो इससे क्या फरक पड़ता है ? है तो वह स्त्री ही। समीर के चले जाने के पश्चात् पहली बार सपना में जीवन के प्रति चेतना उत्पन्न हुई। वह दौड़ी-दौड़ी तृषा के पास गई।

"क्या बात है सपना, आज तुम बड़ी खुश नजर आ रही हो ?" तृषा ने उसे बैठने का संकेत करते हुए कहा।

"हां, दीदी मुझे पहली बार मालूम हुआ कि मैं जड़ नहीं बल्कि चेतन पदार्थ हूं।"

"तो कौन कहता है कि तुम जड़ पदार्थ हो, तुम्हें देखकर कोई नहीं कह सकता कि तुम जड़ हो।"

दीदी हाव भाव से नहीं अंकल ने आज पहली बार मेरे शरीर की एनेटोमी के बारे में बताया।"

सपना ने अपनी समीर से बातचीत का खुलासा तृषा के सामने रख दिया। उसकी बात सुनकर वह हतप्रभ रह गई।

तृषा के यहां से लौटने के पश्चात् बिस्तर में लेटे-लेटे वह यही सोचती रही कि वह एक जीवित प्राणी है, क्या हुआ यदि उसके शरीर के कुछ भाग कृत्रिम हुए, मस्तिष्क तो उसका सजीव है ?

जीवन के अहसास से सपना की हीन भावना समाप्त हो गई। उसमे एक नये जीवन का सचार हुआ। अब वह प्यार कर सकेगी। आखिर वह जीवन से भरपूर है। वह प्यार क्यो नही कर सकती। वह सोचने लगी।

उसने नृत्य सीखना प्रारम्भ कर दिया। धीरे-धीरे, 'इन्डियन क्लासिक्स' मे उसकी रुचि बढ जाती है। अति शीघ्र वह भारतीय क्लासिकल नृत्यो मे पारगत हो जाती है।

एक दिन उसने जब अमरीका के खचाखच भरे एक मशहूर थियेटर मे नृत्य का प्रदशन किया तो लोग दातो तले ऊगली दबाने लगे।

यहा उसकी मुलाकात नितिन से हुई। वह भारतीय था। शीघ्र ही उनकी ये चन्द मुलाकातें प्रेम मे परिणत हो गइ। और एक दिन जब वे दोनो झील मे सैर कर रहे थे नितिन बोला—

"सपना, न जाने आज तुम क्यो बहुत सुन्दर लग रही हो।"

"सच।"

"हा, जी चाहता है मै तुम्हारे चेहरे को बरबस निहारता रहू।"

"क्या है मुझमे ऐसा ?"

"जीवन ।"

नितिन कुछ क्षणो तक उसे अपलक निहारता रहा और फिर प्यार की उत्तेजना उसके होठ मे सिमट आई। इस उत्तेजना को सपना ने महसूस किया जीवत होठो के रूप मे। यह उत्तेजना उसके रोम-रोम मे सिहरन पदा कर देती है। वह नितिन से लिपट गई कल-कल करती जल की तरगो तथा आकाश मे पख फडफडाते श्वेत परिन्दो के बीच।

नितिन को कभी यह महसूस नही हुआ कि सपना का कोई अग कृत्रिम है—होठ पलकें, खाल सभी। उसकी होठो की स्मित, नजराना, अन्य हाव-भाव सभी उसे सहज लगते। वह उसे पूणतया जीवत लगती। वह इस बात से अनभिज्ञ था कि वह एक बायोरोबोटिका है।

एक दिन नितिन उत्तेजित सा सपना के पास आया।

"सपना।" क्रोध मे भभकते हुए वह चिल्लाया।

"नितिन क्या बात है आज तुम इतने उत्तेजित क्यो हो ?"

"तुमने मुझे धोखा दिया है जी चाहता है म तुम्हारा गला दबा दू।"

"धोखा ! वह भी मैंने ? आज तुम कैसी बात कर रहे हो ?"

किया जाता है। केवल तुम्हारे मस्तिष्क मे ही रक्त है अन्य अगो मे नही।'

विज्ञानी समीर सपना की जिज्ञासा को शात करने की चेष्टा किये जा रहे थे। उनके उत्तर कुछ इस प्रकार के थे कि बीसवी शताब्दी के लोगो के गले नही उतर सकते थे। यदि वे इस शताब्दी मे जन्मते। विज्ञानी समीर सपना को बरबस निहारने लगे उन्हे अपनी इस 'सृष्टि' पर फक्र हो आया सपना कितनी सजीव व 'लवली' लग रही थी। उसे देख कौन कह सकता था कि वह सजीव व निर्जीव का सिम्बोयसिस थी अद्भुत सिम्बोयसिस साइबग की दुनिया मे बेमिसाल अद्भुत साइबग शरीर मे कृत्रिम सेन्सर्स, 'रिसेप्टर्स' तथा 'इफेक्टर्स' का जाल सजीव पदार्थो से इस प्रकार जुडा हुआ था कि सजीव तथा निर्जीव अगो मे भेद करना अत्यन्त कठिन था।

सपना को स्वय पर बडा आश्चर्य हो रहा था। उसे पहली बार यह ज्ञात हुआ कि उसका मस्तिष्क सजीव है। मस्तिष्क के सजीव होने का मतलब यह है कि उसमे जीवन है, प्राण है, यानि वह स्वय सामान्य प्राणियो की तरह ही एक सजीव प्राणी है-- एक स्त्री की तरह स्त्री है- यान्त्रिक नही बल्कि भग्व प्रणव स्त्री यदि उसके कुछ भाग निर्जीव हुए भी तो इससे क्या फरक पडता है ? है तो वह स्त्री ही। समीर के चले जाने के पश्चात् पहली बार सपना मे जीवन के प्रति चेतना उत्पन्न हुई। वह दौडी-दौडी तृषा के पास गई।

"क्या बात है सपना, आज तुम बडी खुश नजर आ रही हो ?" तृषा ने उसे बैठने का सकेत करते हुए कहा।

"हा, दीदी मुझे पहली बार मालूम हुआ कि मैं जड नही बल्कि चेतन पदार्थ हू।"

"तो कौन कहता है कि तुम जड पदार्थ हो, तुम्हे देखकर कोई नही कह सकता कि तुम जड हो।"

दीदी हाव भाव से नही अकल ने आज पहली बार मेरे शरीर की एनेटोमी के बारे मे बताया।"

सपना ने अपनी समीर से बातचीत का खुलासा तृषा के सामने रख दिया। उसकी बात सुनकर वह हतप्रभ रह गई।

तृषा के यहा से लौटने के पश्चात् बिस्तर मे लेटे-लेटे वह यही सोचती रही कि वह एक जीवित प्राणी है, क्या हुआ यदि उसके शरीर के कुछ भाग कृत्रिम हुए मस्तिष्क तो उसका सजीव है ?

"अंकल, मुझे बच्चा चाहिये।"

"तुम्हें बच्चा मिल जायेगा लेकिन वह भी साइबर्ग होगा।"

"नही, मैं बच्चा पैदा करना चाहती हू।"

"बच्चा पैदा करना? यह असभव है।"

"लेकिन विज्ञान के ससार मे यह सभव हो सकता है।"

"ठीक है, मैं इस पर विचार करूगा।"

दूसरे दिन समीर ने यह बात इन्डियन रोबोट मैन्यूफेक्चरिं कम्पनी के समक्ष रखी। इस बात को सुनकर कम्पनी के सदस्य आश्चर्यचकित थे। विज्ञानी समीर ने बताया कि सपना की लिम्बि प्रणाली बहुत शक्तिशाली है अत हमे प्रयास करने ही होगे। अधिका विज्ञानियो ने पूर्ण सहयोग देने का वादा किया।

घर लौटने के पश्चात् समीर ने सपना से पूछा "क्या तुम पुन प्रयोगशाला मे जाने के लिये तैयार हो?"

"मुझे आप प्रयोगशाला मे पुन क्यो ले जाना चाहते हैं।"

"तुम पर कुछ प्रयोग किये जायेंगे। हो सकता है कि तुम्हा जीवित अंग क्षतिग्रस्त हो जायें और मस्तिष्क के क्षतिग्रस्त होने पर त तुम्हे फेंकना ही होगा। क्या तुम यह जोखिम उठाने के लिये तैया हो?"

"हां, अंकल, बच्चे के लिये मैं सब कुछ करने के लिये तैयार हू।

"तुम्हारी यह लालसा किसी जीवित औरत से कम नही है। तु बहुत महत्वाकांक्षी हो चुकी हो।"

"हां, मैं पूर्ण औरत लगना चाहती हू, बनावट मे तथा व्यवहा दोनो मे।"

"वह तो तुम हो ही।"

"मैं नही चाहती कि कोई मुझे 'अपूर्ण' कहे।"

"तो फिर ठीक है तुम प्रयोगशाला मे चलने के लिये तैयार रहो।

प्रयोगशाला में कई विज्ञानियो ने इस कार्य में रुचि दर्शायी। सपना के 'कृत्रिम गर्भधानी' प्रतिरोपित कर दी गई। उसके लिये सश्लिष्ट हारमोन तथा सश्लिष्ट रक्त का उपयोग किया गया। सपना के लिये उसकी पसद का बेबिटोरियम से परखनली भ्रूण खरीदा गया उसे कृत्रिम गर्भाशय मे जोड़ा गया। वहा आक्सीजन तथा कार्बन- को नियमित रखने का हर भरसक प्रयत्न जारी रखा । शनै शनै सपना के कृत्रिम गर्भाशय मे सश्लिष्ट रक्त में डूबा हुआ

"क्या तुम साईबग नही हो ?"

सजीव और निर्जीव के मिले-जुले रूप का साइबर्ग कहते हैं। ऐसे प्राणी के कुछ भाग सजीव होते है तथा कुछ निर्जीव। इनमे आपस मे अन्योन्य क्रिया होती रहती है।

"सा इ ब ग ?"

'तुमने मुझे पहले क्यो नही बताया कि तुम एक साइबग हो।"

"तो क्या हुआ यदि मैं एक साइबग हूँ तो। क्या मैं प्यार के काबिल नही ?"

"नही ! तुम बच्चा पैदा नही कर सकती।"

'लेकिन तुम बच्चा गोद ले सकते हो।"

'नही, किसी और के बच्चे से मुझे कोई सरोकार नही। मैं स्वय अपना बच्चा चाहता हू।"

"यह मैंने नही सोचा था।"

'तुम अपूण हो तुमसे अब मेरा कोई सम्बध नही अच्छा अलविदा। "

"नि ति न ।" सपना ने पुकारा।

नितिन उसकी आवाज की परवाह किये बिना चला गया। सपना सिसकिया भरने लगी।

'सपना, क्या बात है क्यो य सुबक रही हो ?"

तृषा ने भीतर प्रविष्ट होते हुए कहा।

'नितिन ने मुझे छोड दिया।"

"आखिर क्यो ?"

वह बच्चा चाहता है।"

"ओह।"

'अब वह कभी नही लौटेगा।" सपना सुबकते हुए बोली। सपना तुम्हारी भी कुछ सीमाएँ है। तुम्हे इससे साझा करना चाहिये था न कि उससे पार झाकने की कोशिश करती।"

अब मुझे कोई भी औरत नही कहेगा आई एम नो मोर ए वूमन।'

'व्यक्ति को हमेशा अपनी सीमाओ से समझौता करना चाहिये नही तो दुखान्तिका घटते देर नही लगती।" तृषा ने उसे धर्य बधाया '

दिनो समीर के लौट आने के पश्चात् सपना इस घटना का जिक्र उनसे करती है।

"अंकल, मुझे बच्चा चाहिये ।"

"तुम्हे बच्चा मिल जायेगा लेकिन वह भी साइबर्ग होगा।"

"नही, मैं बच्चा पैदा करना चाहती हू !"

"बच्चा पदा करना ? यह असभव है ।"

"लेकिन विज्ञान के ससार मे यह सभव हो सकता है ।"

"ठीक है, मैं इस पर विचार करूगा ।"

दूसरे दिन समीर ने यह बात इण्डियन रोबोट मैन्यूफेक्चरिंग कम्पनी के समक्ष रखी । इस बात को सुनकर कम्पनी के सदस्य भी आश्चर्यचकित थे । विज्ञानी समीर ने बताया कि सपना की लिम्बिक प्रणाली बहुत शक्तिशाली है अत हमे प्रयास करने ही होगे । अधिकाश विज्ञानियो ने पूर्ण सहयोग देने का वादा किया ।

घर लौटने के पश्चात् समीर ने सपना से पूछा "क्या तुम पुन प्रयोगशाला मे जाने के लिये तैयार हो ?"

"मुझे आप प्रयोगशाला मे पुन क्यो ले जाना चाहते हैं ।"

"तुम पर कुछ प्रयोग किये जायेंगे । हो सकता है कि तुम्हारे जीवित अग क्षतिग्रस्त हो जाये और मस्तिष्क के क्षतिग्रस्त होने पर तो तुम्हे फेंकना ही होगा । क्या तुम यह जोखिम उठाने के लिये तैयार हो ?"

"हा, अकल, बच्चे के लिये मैं सब कुछ करने के लिये तैयार हू ।"

"तुम्हारी यह लालसा किसी जीवित औरत से कम नही है । तुम बहुत महत्वाकाक्षी हो चुकी हो ।"

"हा, मैं पूर्ण औरत लगना चाहती हू, बनावट मे तथा व्यवहार दोनो में ।"

"वह तो तुम हो ही ।"

"मैं नही चाहती कि कोई मुझे 'अपूर्ण' कहे ।"

"तो फिर ठीक है तुम प्रयोगशाला मे चलने के लिये तयार रहो ।"

प्रयोगशाला ने कई विज्ञानियो ने इस कार्य मे रुचि दर्शायी । सपना के 'कृत्रिम गर्भधानी' प्रतिरोपित कर दी गई । उसके लिये सश्लिष्ट हारमोन तथा सश्लिष्ट रक्त का उपयोग किया गया । सपना के लिये उसकी पसद का बेबिटोरियम से परखनली भ्रूण खरीदा गया तथा उसे कृत्रिम गर्भाशय से जोड़ा गया । वहा आक्सीजन तथा कार्बन-डाई-आक्साइड को नियमित रखने का हर भरसक प्रयत्न जारी रखा गया । धीरे धीरे सपना के कृत्रिम गर्भाशय मे सश्लिष्ट रक्त मे डूबा हुआ

भ्रूण सश्लिष्ट हारमोनो के प्रभाव से परिवर्धित करने लगा । यह सब कुछ इतना सरल नही था जैसा कि कहा गया है । यह एक अत्यन्त जटिल प्रक्रिया थी ।

और फिर वह स्वर्णिम दिन भी आया जब सपना के स्वप्नो का ससार साक्षात् उसकी आँखो के आगे तिरने लगा ।

फिर सारे ससार मे बिजली की भाति यह खबर फैल गई कि एक बायोरोबोटिका ने जीवित प्राणयुक्त, पूण मानव शिशु को जन्म दिया है ।

सारे ससार मे आश्चय की लहर दौड गई ।

सपना को प्रयोगशाला से छुट्टी मिल चुकी थी । वह शिशु सहित पुन घर लौट आयी थी ।

उसी दिन नितिन ने भीतर प्रवेश किया । उसने फूलो का गुलदस्ता सपना को थमाते हुए बधाई दी ।

'नितिन तुम ?"

"हा, मैं । मुझे खुशी है कि तुमने अपना सपना साकार कर लिया ।"

"लेकिन तुम तो यहा से चले गये थे ?"

"नही, मैं यही पर था केवल तुमसे नही मिला था । हा, विज्ञानी समीर से अवश्य मिलता रहा । उन्होने ही मुझे सुझाव दिया था कि मुझे इतजार करना चाहिये जब तक कि मिशन सफल नही हो जाता । और अब वह सफलता की सीढी आ गई । मुझे माफ कर दो सपना, मुझसे बहुत बडी भूल हो गयी थी ।"

"क्या मुझे माफ नही करोगी ?

"नही, इसमे तुम्हारा कोई दोष नही, कौन एक बायोरोबोटिका को अपनाना चाहेगा ?"

"मैं तुम्हे अपनाऊगा ।"

'यह जानते हुए भी कि मैं एक बायोरोबोटिका हूँ ।"

"हा, लेकिन अब तुम बायोरोबोटिका रही कहाँ, अब तो तुम पूण औरत हो ।"

"सच । नितिन ।"

नितिन की स्वीकृति के साथ ही सपना ने अपनी बाहे उसके गले मे डाल दी । प्रेम का सोता वातावरण मे झर-झर बहने लगा । □□

उडनपरी : गेस्टोपा

सन् 2150

"गेस्टोपा ? नोर्टोन, नीचे दखो गेस्टोपा। विचित्र मानव पक्षी।"

"हा पिलेट, प्रकृति की आश्चयजनक उपज—गेस्टोपा।"

"नोर्टोन, मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे गेस्टोपा कोई हार्पी हो, ठीक ग्रीक हार्पी के सदृश।"

"हार्पी ?"

"थूमस तथा इलेक्ट्रा की पुत्री टम्पेस्ट गोडेस।"

"हा, मुझे याद आ रहा है, होमर ने एक बार 'पोडाज' का जिक्र किया था।"

"पोडाज ! हा फिलिप जोस फामर ने अपनी विज्ञान कथा 'ए प्राइवेट कोस्मोस' मे इसी पोडाज का बखान किया था।"

"नोर्टोन, गेस्टोपा बिल्कुल पोडाज सदृश दिखाई दे रही है, शरीर का निचला भाग पक्षी सदृश तथा ऊपरी भाग औरत का। अप्सरामयी चेहरा, लम्बी श्वेत गदन, दूधिया अद्ध चन्द्राकार उरोज, बाल लम्बे, घने तथा सुनहरी, हाथो का स्थान पखो ने ले लिया था।"

"हा पिलेट, पख बिल्कुल सेल्वोनिक पुराण मे वर्णित 'बोगातिर वोल्गा बाज' की तरह, टागे ऑस्ट्रिच से लम्बी तथा मोटी ताकि वे शरीर के भार को झेल सकें।"

उष्मा तथा द्रव्यमान सकेतक गेस्टोपा का हमारे यान मे चित्र अकित कर रहे थे। गेस्टोपा हमारे यान से हजार किलोमीटर दूर उड रही थी। उसकी चाल सुपरसोनिक जेट यानो से भी तीव्र थी तथा नीचे की ओर गोता लगा रही थी।

हम एक 'एन्डोक्रोनिक' यान मे अन्तग्रहीय सैर से लौट रहे थे तथा 'कोवेल' के वातावरण मे प्रविष्ट हो चुके थे एन्डोक्रोनोसिटी का उपयोग अब प्रायोगिक स्तर पर किया जाने लगा। एन्डोक्रोनोसिटी समय के चौथे आयाम पर निभर है। एन्डोक्रोनोसिटी एक विचित्र गुण है—हम

भूत तथा भविष्य मे विचरण कर सकते हैं एच जी वेल्स का टाइम ट्रेवलर इसी गुण के कारण टाइम मशीन द्वारा मनुष्य की अन्तिम विकास अवस्था 'ऋस्टेशियन' को भविष्य पथ पर देखता है। ईसाक एसिमोव का प्रोहोरोव तथा उसके साथी एन्डोक्रोनोमिटी के कारण ही थिग्रोटमोलिन यान द्वारा शनि तक पहुच जाते हैं। थिग्रोटिमोलिन

अद्भुत् एन्ड्रोक्रोनिक गुणो से वशीभूत, जल मे घुलने से पूर्व ही ये कण चौथे ग्रायाम मे चले जाते है तथा भूत-भविष्य मे खेंचे जा सकते हैं। ईसाक की ग्रद्भुत कल्पना। ईसाक के ही मि पोटरले न्यूट्रिनिक यान द्वारा भूत के भयावह ग्रनुभवो से ग्रवगत होते हैं।

मैं ग्रौर पिलेट प्रथम व्यक्ति है जिन्होने 'एन्टीमेटर' यान का उपयोग किया, डिरैक प्रथम व्यक्ति थे जिन्होने 'पोजीट्रोन' की खोज की। उसके पश्चात् एन्टीप्रोटोन की खोज हुई। एन्टीप्रोटोन तथा पोजीट्रोन से एन्टी हाइड्रोजन परमाणु निर्मित हुग्रा। एन्टी हाइड्रोजन परमाणु ने दूसरे एन्टी हाइड्रोजन परमाणु से सयुक्त होकर एन्टी हाइड्रोजन गैस का निर्माण किया जिसे शून्य से 252^0 डिग्री निम्न ताप पर द्रवित किया जा सकता था। इसी प्रकार से एन्टी ग्राक्सीजन, एन्टी धातुए, यहाँ तक कि एन्टी यूरेनियम का निर्माण भी ग्रनेक प्रयोगशालाग्रो मे हुग्रा।

हम एन्टीमेटर निर्मित करने मे सफल हो चुके थे। लेकिन हमारे समक्ष सबसे बडा यह प्रश्न था कि एन्टीमेटर को किस प्रकार मेटर से ग्रलग किया जाय। हर क्षण 'बिग बेंग' होने की सभावना रहती थी क्योंकि एन्टी कण सामान्य कणो के लिये विध्वसक थे।

लेडनफ्रोस्ट ने तब एक युक्ति सुझाई। 'एम्बीप्लाज्मा' की पत मेटर तथा एन्टीमेटर को ग्रलग कर सकती है। प्रोटोन तथा एन्टीप्रोटोन की टकराहट से उच्च ऊर्जायुक्त इलेक्ट्रॉन तथा पॉजीट्रोन पैदा होते हैं। ये कण चुम्बकीय क्षेत्र की रेखाग्रो के चारो ग्रोर सर्पिलाकार चक्कर लगाते हैं तथा एम्बी प्लाज्मा की पत बनाते हैं जिसमे इलेक्ट्रॉन तथा पॉजीट्रोन निरन्तर एक दूसरे का विध्वस करते हैं। इस प्रकार से निर्मित एम्बीप्लाजमा की पत मेटर तथा एन्टीमेटर को एक दूसरे से ग्रलग कर देती है।

हमने इसी युक्ति का इस्तेमाल 'गेनीमीड' पर एन्ड्रोक्रोनिक यान के लिये किया। हमारे यान के चारो तरफ एम्बी-प्लाज्मा की पत स्वत ही बन जाती थी क्योंकि हमारा यान तीव्र चुम्बकीय क्षेत्र से ग्रावेशित था।

हा, समस्त विश्व की निगाहे हम पर टिकी हुई थी । प्रथम बार समस्त विश्व ने टी वी पर एन्टीमेटर निर्मित यान को गेनीमीड के धरातल से छूटते देखा वही गेनीमीड जो कि पुरातन युग मे पृथ्वी पर मूसलाधार वर्षा का प्रतीक था तथा जिनकी तुलना वदिक सोम से की गई, जिसे इन्द्र ने स्पेरो-वाज मे परिवर्तित कर दिया । जीग्रस ने गेनीमीड की सुन्दरता से मुग्ध होकर उसे अपना शागिद बनाने के लिये, ट्रोड के मैदान से ओलिम्पस पर लाने हेतु ईगल को भेजा । तब से ओलिम्पस पर गनीमीड अपनी सुन्दरता द्वारा देवताओ को रिझाने के लिये पूजा जाने लगा ।

ऐसे ही धरातल से जब विशाल मकडीनुमा स्फीग्रर ऊपर उठा तो पृथ्वीवासियो ने टी वी पर तालियो की गडगडाहट द्वारा हमे वधाई सदेश भेजे । यान की विशाल देह के चारो तरफ चक्र मे जुडे हुए 150 के करीब प्रोपल्शन युनिट कायरत हो गये । काउन्ट डाउन के शून्य होने के साथ ही उनमे से सघनित एक मिलिग्रन फोल्ड तक एम्पलीफाइड प्रकाश किरणे विजली के शाफट की तरह लाचिग पैड पर गिरी तो पृथ्वीवासियो ने भी रॉकेट दाग के अपनी खुशी जाहिर की । ऐसा प्रतीत होता था जैसे पुष्पक विमान के उडने पर इस स्वग सी वसुन्धरा के लोग उल्लसित हो रहे हो ।

कोवेल का धरातल हमसे केवल दो हजार किलोमीटर दूर रह गया था । आज से ठीक 173 वष पूर्व नवम्बर 1977 मे माउन्ट पैलोमार स्थित हेल खगोल वेधशाला के चाल्स टी कोवेल ने इस क्षुद्र ग्रह के हमारे सौरमडल मे पाये जाने की घोषणा की थी । हार्वार्ड स्मियसोनिग्रन केन्द्र के ब्रेन मार्सिडन ने इसकी पुष्टि की । शनि तथा यूरेनस के बीच अपनी कक्षा मे चक्कर लगाता हुआ यह पिण्ड मि मार्सिडन को आश्चर्यचकित कर रहा था ।

इसका व्यास सिफ 160 किलोमीटर है । ऐसा प्रतीत होता था जैसे श्लोक्वस्की के सुझाये हुए फोबोस की तरह यह कृत्रिम उपग्रह हो । यह 50 वर्षो में सूय के चारो एक तरफ चक्कर लगाता है । इस प्रकार से चक्कर लगाते हुए कोवेल, सूय के समीप 1 3 विलियन किलोमीटर की दूरी तक तथा शनि की कक्षा मे प्रवेश कर जाता है । इस प्रकार से यह सूर्य से दूर जाते हुए 2 8 विलिग्रन किलोमीटर दूर यूरेनस की कक्षा के समीप पहुच जाता है । कोवेल मगल तथा बृहस्पति मे निहित ग्रहो मे

बड़ा है तथा बुध से छोटा । यह पिण्ड इतना बड़ा है कि पुच्छल तारा हो सकता है और इतना छोटा है कि इसे ग्रह की संज्ञा भी नही दी जा सकती । कुछ खगोलविदो के अनुसार यह शनि अथवा यूरेनस का एक छोटा उपग्रह हो सकता है जो कि इनकी कक्षाओ से पलायन कर गया लेकिन शनि तथा यूरेनस का गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र इतना अधिक है कि कोई भी प्राकृतिक पिंड इनकी कक्षाओ से पलायन नही कर सकता ।

हा, हम कोवेल के वातावरण में प्रविष्ट हो चुके थे । कोवेल ने इसका नाम 'चिरोन' रखने की सलाह दी थी क्योंकि चिरोन यूरेनस तथा शनि की ही उपज था चिरोन स्वय अर्द्ध मानव तथा अर्द्ध घोड़ा था ।

लेकिन गेस्टोपा अर्द्ध नारी तथा अर्द्ध पक्षी था जो कोवेल बादलो के बीच उड़ान भर रहा था क्रिम्सन बादलो के बीच श्वेत गेस्टोपा के सुनहरे किनारीयुक्त पंख बड़े ही सुहावने लग रहे थे ।

"पिलेट, आश्चर्य यह है कि इसके पंखो से हल्की नीली रोशनी निकल रही है ।"

"हो सकता है बादलो से उत्सर्जित रोशनी हमे इसके पंखो से उत्सर्जित होती हुई प्रतीत हो रही हो ।"

"नही, बादलो का रग क्रिमसन है लेकिन इसके हरे चकत्तो से निकलने वाली रोशनी नीली है । यह रोशनी वास्तव मे ही गेस्टोपा के पंखो से निकल रही है, गेस्टोपा 'जैविक प्रतिदीप्ती' का विकास के उच्चतम क्रम पर उदाहरण है । पिलेट, देखो इसमे से 'ठंडा प्रकाश' ठीक उसी प्रकार से निकल रहा है जिस प्रकार हमारी पृथ्वी पर जेमेका खाड़ी मे पाये जाने वाले प्रोटोजुआ 'नोक्टील्यूका मिलेरिस' से निकलता है जो उनके बीच तैरती हुई मछली को प्रतिदीप्त कर देते हैं ।"

"पिलेट, क्या तुम जैविक—प्रतिदीप्ति के अन्य उदाहरण दे सकते हो ? '

"हां नोर्टोन, थाइलेंड में फायर फ्लाई की एक जाति पेड़ पर एकत्रित होकर क्रिसमस-पेड़ की तरह जगमगाती है । बीटल 'फिक्सोथिक्स' के लारवा के शरीर से दोनो ओर हरी रोशनी तथा सिर से लाल रोशनी उत्सर्जित होती है । नोर्टोन, क्या तुमने किसी जीव द्वारा जैविक-प्रतिदीप्ति के रूप मे मेटिंग के लिये सेक्स सिगनल देते हुए सुना ।"

"नही।"

"बरमुडा मे समुद्री कृमि की एक जाति मादा 'ओडोन्टोसिलिस' पूर्णमासी चन्द्रमा के उगने के तीन दिन के भीतर प्रतिदीप्त पदार्थ का एक चक्र समुद्री सतह पर स्रावित करती है तथा नर को आकर्षित करती हैं तत्पश्चात् से वे शुक्राणु तथा अण्डे जल मे छोडते है। स्क्वीड की एक जाति 'थूमेटोलेम्पस डियाडेना' शत्रुओ से छिपने के लिये प्रतिदीप्त नीले बादल छोडती है।"

"हाँ, मुझे याद है द्वितीय विश्वयुद्ध मे शत्रुओ से चौकस रहने के लिये जापानी योद्धा फ्लेश लाईट के स्थान पर सूखे सिप्रिडिना (क्रस्टेशियन) काम मे लेते थे। सिप्रिडिना नम पाउडर की किंचित मात्रा से उत्सर्जित रोशनी एक नक्शा पढने के लिये काफी होती थी। पिलेट, ल्यूसिफेरिन के ऑक्सीकरण से उत्सर्जित जैविक प्रतिदीप्ति भविष्य मे भी उपयोगी हो सकता है।"

'लेकिन नोर्टोन, गेस्टोपा से भी ल्यूसिफेरिन के ऑक्सीकरण के कारण ही प्रकाश निकलता होगा, यह नही कहा जा सकता।"

अब हम गेस्टोपा से केवल सौ फीट की दूरी पर रह गये थे। गेस्टोपा अभी भी बादलो के बीच उड रही थी। अचानक हमारे यान मे तीव्र कम्पन प्रारम्भ हो गये।

"नोर्टोन, गेस्टोपा से रेडियो तरगो का उत्सर्जन हो रहा। पिलेट, डेन्जर!"

यान मे खतरे की घटी बज चुकी थी बीप बीप .. की ध्वनि तीव्र होती जा रही थी।

"हो सकता है नोर्टोन कि इन्स्ट्रूमेंट पेनेल के स्वचालित उपकरण बद हो गये हो।"

"थैंक्स गॉड! हमारे सभी उपकरण यथावत कार्य कर रहे हैं। कम्पन की तीव्रता इतनी अधिक थी कि लैंडिंग केप्स्यूल नष्ट हो जाता जो कि कुछ समय पूर्व ही ऑर्बिटर से अलग हुआ था। हमारे उपकरण स्ट्रोग स्टेटिक तरग अकित कर रहे थे।

"पिलेट, कृत्रिम रेडियो सदेश सदेश अचूक तथा नियमित क्रम से आ रहे हैं।"

"हाँ, नोर्टोन! एक विशाल मीटर बेंड रेडियो प्रणाली! क्या गेस्टोपा एक बौद्धिक प्राणी है?"

"हाँ, वह स्वेच्छा से रेडियो तीव्रता बदल सकती है। कोई भी प्राणी जो निम्न तरगदैर्घ्य एन्टेना प्रणाली अपनाता हो, बुद्धिजीवी हो सकता है।"

"वो देखो कणलता (ईअर टेंड्रिल)! नार्टोन का ध्यान ईअर टेंड्रिल की ओर खिच गया। बादलो के कारण ईअर टेंड्रिल स्पष्ट दृष्टिगोचर नही हो रहे थे।"

"शायद हम ईअर टेंड्रिल पहचान नही पाते यदि उससे स्ट्रोग 'इड' कम्पन उत्सर्जित नही होते।"

"बायो एन्टेना! कभी बायो एन्टेना के बारे मे सुना हाँ, आनरेट टेसिली से प्राप्त रॉक-पेंटिंग मे एक ऐसे व्यक्ति का चित्र है जिसके कधो तथा जाघो से एन्टेना सदृश्य उभार (एक्सक्रीसेन्स) निकलते हुए दिखाये गये हैं।"

गेस्टोपा से अचानक स्क्वीड की तरह प्रतिदीप्त बादल निकले।

"नोर्टोन, शायद गेस्टोपा लेंडिंग केप्स्यूल से कम्पित हो गई हो और बचाव के लिये प्रतिदीप्त बादल उत्सर्जित कर रही हो।"

"यह भी हो सकता है कि उसका रुख आक्रामक हो। इड कम्पनो की तीव्रता हमारे केप्स्यूल की चद्दर को पिघाल कर सकती है। हमे खतरे से सावधान रहना चाहिये।"

"लेकिन हमारा लेंडिंग केप्स्यूल स्ट्राग चुम्बकीय क्षेत्र से ढका हुआ है। एम्बीप्लाज्मा से उत्पन्न कम्पन काउन्टर प्रणाली का काम कर सकते हैं।"

केप्स्यूल मे उत्पन्न लाल सूचक बद हो चुके थे, अत हम सभावित खतरे से निश्चित हो चुके थे।

गेस्टोपा के आक्रमण का खतरा टल चुका था।

कुछ क्षणो के पश्चात् हम कोवेन की धरती पर थे। □□

अन्तरिक्ष नरशिप

15 सितम्बर 2062 की एक शाम । हल्का धुंधलका गहराता जा रहा था । तभी एक युवक ने आर्डरली के एक रिजर्वायर मे गोल आकार के एक यान को डूबते और बाद मे बाहर निकलते हुए देखा जिसमे से हरी-नीली किरणे निकल रही थी ।

तभी उस युवक ने ट्रासमीशन सदेश भेजे ।

'हैलो । मैं हेनरी बोल रहा हूँ ।" उधर से किसी ने कहा ।

"मैं एन्ड्रयू हूँ मि हेनरी, शीघ्रता कीजिये एक सिगार के आकार की तश्तरी आपकी ओर ही आ रही है । वह कुछ सेकिन्ड पहले रिजर्वायर से निकली और अब वह केलिफार्निया के साँता-आना के खेतो का चक्कर लगा रही है, तथा हो सकता है कि उसका इरादा समीप की ही किसी झील मे गोता लगाने का हो ।" मि एन्ड्रयू आई टी टी फोन के चोगे को पकडे हुए थे । उन्होने हेनरी को आश्चयचकित होकर कहा जो कि एस सी ओ आर (साइटीफिक कमेटी फार ओसनोग्राफिक रिसर्च) के अनुभवी सदस्यो मे से एक थे ।

मि हेनरी इस समय केलिफोर्निया मे समीप की ही शहर की पचपन मजिल ऊँची बिल्डिग मे ठहरे हुए थे, जो साताआना से 150 मील दूर था । तभी उन्होने 'ब्रिटेन के दो मस्तूलो वाले जलपोत 'विक्टोरिया' के कोमोडोर को रेडियो सदेश भेजे जो इस समय केलिफोर्निया की झील का सर्वेक्षण कर रहा था । और अब विक्टोरिया जलपोत उडन-तश्तरियो का पीछा करने के लिए उत्सुक था ।

अनेक ओसनोग्राफर विक्टोरिया की छत पर दौडे । उन्होने दूरबीन लगा रखी थी । अचानक उन्हें उडन तश्तरी उसी प्रकार का नीला हरा प्रकाश निकलता दृष्टिगोचर हुआ जैसा कि एन्ड्रयू ने कहा था । उसमे से किसी प्रकार की ध्वनि नही निकल रही थी । उसकी गति ध्वनि की गति से भी तेज थी । वह उडन तश्तरी अब नीचे की ओर उतर रही थी । उन्हें पलक झपकते देर भी नही हुई थी कि उस

उडन तश्तरी ने अथाह झील मे डुबकी लगायी जो उनसे करीब 150 फीट की दूरी पर थी। अचानक उठे भयकर तूफान ने जहाज को हिचकोले देना शुरू कर दिया। लेकिन जिस तेजी से तूफान आया, उस तेजी से वह खत्म हो गया।

तभी अचानक 'ओसनाग्राफर' एक छोटी पालरिस मिसाइल युक्त पनडुब्बी मे जा बैठे और उन्होने उस उडन तश्तरी का पीछा किया। लेकिन उनके आश्चर्य की कोई सीमा नही रही जब उन्होने उडन तश्तरी को अचानक अपनी दृष्टि से ओझल होते हुए देखा। उन्होने झील की तलहटी से लेकर सतह तक का तेजी से चक्कर लगाया किन्तु उन्हें उडन तश्तरी के कोई चिह्न नही मिले।

आखिर उडन तश्तरी कहाँ गायब हो गयी? उन्होने ग्रेविटी मीटर, मैग्नेटो मीटर, सीस्मिक रिफ्लेक्शन पद्धति और तलहटी मे काम करने वाले यत्रो पर अनेक प्रकार के परीक्षण किये किन्तु उनसे उन्हे किसी तरह के परिणाम प्राप्त नही हुए और न ही उनके स्वचालित कम्प्यूटरो द्वारा परिणामो के रिकार्ड प्राप्त हुए। आखिर उनके सब यत्र ठीक तरह से सर्वेक्षण करने पर भी उपयोगी साबित क्यो नहीं हुए?

तभी वह उडन तश्तरी झील मे से निकली और वायुमडल की पर्तों मे चक्कर काटने लगी। कोमोडोर का मस्तिष्क एकदम शून्य हो गया जब उसने उडनतश्तरी को अपने पोत के चारो ओर चक्कर काटते हुए देखा। क्या पनडुब्बी मे वैज्ञानिक सोये हुए थे? अब वह स्वय को काबू मे नही रख सका। उसने अपने कट्रोल रूम से जलपोत के कर्मचारियो को आदेश दिया। और तब छत पर रखी हुई मशीनगनो का मुँह आकाश की ओर हो गया। वे अब इस बात की प्रतीक्षा कर रहे थे कि प्रथम आक्रमण उडन तश्तरियो की ओर से हो। उडन तश्तरी ने यान के दो तीन चक्कर काटे और फिर वह आकाश की सघन पर्तों को पार करती हुई अतरिक्ष मे विलीन हो गयी। वे लोग 'तश्तरी' के आक्रमण की प्रतीक्षा करते रह गये लेकिन वह अब तक उनकी दृष्टि से ओझल हो चुकी थी।

जिस समय उडन तश्तरी झील से बाहर निकली उस समय विक्टोरिया जलपोत के कैप्टिन तथा लेफ्टीनेंट ने एक विचित्र दृश्य देखा। सर्च लाइट फेंकने पर उन्हें झील के एक हिस्से मे पानी से बुलबुले और पीले रग के झाग निकलते हुए दृष्टिगोचर हुए।

कोमोडोर अब बुरी तरह से झल्ला उठा। उसने छत पर लगे हुए 'रोलिंग घाटर्स' के दरवाजे को खोला और वह जहाज के नीचे बने घट-घरे में उतर गया। तब उसने वहाँ पर रखे हुए टेलिफोन के चोगे को उठाकर 'वैज्ञानिक भाषा' में तथा निराश होकर भरी आवाज में कुछ घोषणा की। शीघ्र ही पनडुब्बी जलपोत 'विक्टोरिया' के समीप आ गयी और वे लोग पुन जलपोत में जा बैठे।

और यही सब सन्देश मि एड्र्यू और हेनरी को अपने-अपने निवास स्थान पर प्राप्त हो गये थे।

मि एड्र्यू, "क्या ये उडन तश्तरियाँ समुद्र में जाकर अदृश्य हो जाती हैं ? लेकिन रेडार की तरगें सीधे लक्ष्य पर जाकर टकराती हैं तो क्या वे उडन तश्तरियाँ नहीं हैं ? यदि ऐसा है तो वह अजीब दृश्य क्या था ?" हेनरी ने प्रश्न किया।

"यह उनका एक दृष्टि भ्रम था।" अनेक वैज्ञानिको ने इस घटना से पूर्व यही कहा था।' एड्र्यू ने प्रत्युत्तर दिया।

"नहीं, उन्हें दृष्टिभ्रम कभी नही हो सकता, और यदि ऐसा होता तो क्या वे लोग एस सी ओ आर के सदस्य बन सकते हैं ? क्या ये वैज्ञानिक दृष्टिभ्रम के शिकार हो सकते हैं, जिन्हें समुद्र के 'ओसनो-ग्राफिक' रिसर्च (सामुद्रिक खोज) करते हुए दस वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। और जिनकी तीक्ष्ण दृष्टि से सूई की नाक के समान कण भी ओझल नहीं हो सकते। क्या उन्हें गलत सूचना भेजने पर नौकरी से वचित होने का खतरा नहीं रहता ? नहीं नही, उन्हें एस सी ओ आर की सदस्यता से भी वंचित होना पड सकता है। "मि हेनरी ने इस बात का कडा विरोध करते हुए दृढ़ शब्दों में कहा।

और आज उन्होंने फिर वैज्ञानिको के सदेह का निराकरण किया तथा दृढ विश्वास के साथ कहा कि उडन तश्तरियो के अस्तित्व को अस्वीकार नही किया जा सकता। और न ही इसे कपोल कल्पना समझ कर इसका मजाक उडाया जा सकता है। कुछ दिनो पश्चात् उन्होंने एस सी ओ आर की कान्फ्रेन्स में यह विचार प्रकट किये कि यदि हम उडन तश्तरी के अस्तित्व को स्वीकार करले तभी हम एक नये मार्ग की ओर अग्रसर हो सकते हैं और ठीक ढग से इस पर अनुसधान कर सकते हैं। मुझे दृढ विश्वास है कि हम ओसनोग्राफर रिसर्च में सफलता प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि अधिकतर उडन तश्तरियाँ समुद्र और झील में ही उतरती हैं और एक दिन हम उडन तश्तरी को पकडने में कामयाब हो सकते हैं।

मि एड्रयू ने हेनरी के विचारो का समर्थन किया। अब उनका एकमात्र उद्देश्य किसी भी तरह उडन तश्तरी के रहस्य को समझना रह गया था। तब उन्होने विभिन्न सामुद्रिक रिसच इन्स्टीट्यूट अर्थात इटरनेशनल कमेटी फॉर साइटिफिक यूनियन, इटरनेशनल गवनमेटल ओसनोग्राफिक कॉमेटी, डिपाटमेट ऑफ एज्यूकेशन और साईंस, मिनस्ट्री ऑफ डिफेन्स, जल भौतिक प्रयोगशाला, हाइड्रोलिक रिसच स्टेशन, नेशनल इस्टीट्यूट ऑफ ओसनोग्राफी और नेशनल एनवायरोमेटल रिसच कान्सिल को अपने लक्ष्य के बारे मे बताया—

मि एन्ड्रयू का निवास स्थान सॉतोआना मे ही था। अभी वह बेड रूम मे बैठे हुए थे। तभी बाहर कॉलबेल बजती है। एन्ड्रयू दरवाजा खोलते हैं और हेनरी अन्दर प्रवेश करते हैं। जिस कमरे मे हेनरी ने प्रवेश किया वह विशेष ढग स सजा हुआ था। कमरे मे गहरे हरे रग का कालीन बिछा हुआ था। फ्रॅच खिडकी (वेलेन्स), हरे और गहरे पीले रग की पॉलिस से चमक रहे थे। दीवारो पर बेडकवर के कलर से मैच करते हुए ऑय-नॉइलॉन के पर्दे लगे हुए थे जिस पर लेम्प की शेडो पड रही थी।

मि हेनरी न केवल एस सी ओ आर के अनुभवी सदस्य थे वरन् एन्ड्रयू के भी गहरे दोस्त थे।

"हैलो मि हेनरी! उडन तश्तरियो को नियत्रण में लेने का क्या उपाय सोचा?" एन्ड्रयू ने ए एम एफ एम रेडियो का बटन बन्द करते हुए कहा जिसमे से हल्की धुन आ रही थी।

"यही कि हम भी समुद्र मे इतनी अधिक शक्ति सचय करलें कि उडन तश्तरियो को अपने कब्जे मे क[illegible]।" हेनरी ने [illegible] म चेयर' पर बैठते हुए कहा।

"वह उपाय क्या है और वह शक्ति क्या है, जिससे हम अपने लक्ष्य की सफलता का अनुमान लगा सकते है ?"

"इससे पूर्व कि मैं तुम्हे इसका उपाय बतलाऊ, मैं यह चाहता हूँ कि हम उडन तश्तरी की बनावट पर विचार करें। और इसके लिये हमे अपने समक्ष पुन उसी घटना को प्रस्तुत करना होगा। यही नही इससे पूर्व की अनेक घटनाओ के बारे मे विस्तार से सोचना होगा।" मि हेनरी ने 'फिलिप मोरिस' का धुआँ छोडते हुए कहा। एन्ड्रयू उनके कहने का आशय समझ गये। उन्होंने समीप के ही शेल्फ मे रखे हुए टेप-रिकार्ड को निकाल कर उसे गोल मेज पर रख दिया।

तब हेनरी ने उसे चला दिया। इसमें केवल समुद्र मे गोता लगायी हुई उडन तश्तरियो का उल्लेख था। यह रिकाड उन्होने आइ सी एस यू से प्राप्त किये थे। तब टेप-रिकाड मे एक के पश्चात एक अब तक की उडन तश्तरी से सम्बन्धित सामुद्रिक घटनाओ का जिक्र शुरू हो गया।

18 जून, 1845 को दो मस्तूलो वाला पोत 'विक्टोरिया' माल्टा से सौ मील दूर भूमध्य सागर की छाती पर चल रहा था। तभी पोत के कप्तान और सहायक कर्मचारियो ने तीन उडन तश्तरी समुद्र से निकलते हुए देखी। उनमें से एक का आकार सिगार के समान और दो का गोल तश्तरियो के समान था। वे शीघ्र ही वायुमडल की सघन पर्तों मे विलीन हो गयी। इससे आँखो को चौंधिया देने वाला तेज प्रकाश निकल रहा था।

12 अगस्त, 1825 की अधेरी रात उस समय करीब तीन बजकर सत्ताईस मिनट हुए थे। ब्रिटेन का एक जलपोत अथाह समुद्र की छाती पर बढता जा रहा था और तभी रात ड्यूटी के कर्मचारियो की आँखे तीव्र प्रकाश से चकाचौंध हो गयी। यही नही जहाज की हर वस्तु उस घने अधकार मे चमकने लगी। उन्होने पूर्व की ओर आँखें घुमायी तो उन्हे विशाल, गोल और विचित्र प्रकार का प्रज्वलित यत्र समुद्र से बाहर निकलता हुआ दिखायी दिया। उसका रग लाल था और नाइट ड्यूटी के कर्मचारी एक प्रकाश पुज के देखने के अतिरिक्त कुछ नही कर सके।

1945 की गर्मी की एक शाम ! अमेरिका के जहाज 'पोत-अलास्का' मे भूविज्ञानी राबर्ट एस क्राफर्ड एक रेडियो रूम के समीप थे, तभी उन्होने स्टेवेडोर और अन्य कर्मचारियो के चिल्लाने की आवाज सुनी

ग्रौर जैसे ही वह पीछे मुडे उन्होंने समुद्र से निकलते हुए उडन तश्तरी को देखा, जो एक विशाल सिगार की तरह थी। डूबते हुए सूय के समक्ष अन्धेरा करके वह ऊपर ग्रौर फिर नीचे ग्राकर 'ग्रलास्का' के दो तीन चक्कर काट ग्राकाश मे विलीन हो गयी। उससे किसी प्रकार की ध्वनि नही निकल रही थी। लगता था वह स्वय इंधनपूरक है, ग्रन्यथा तेज ग्रांधियो ने उसे कभी का उडा दिया होता। उस उडन तश्तरी का व्यास करीब 150 से 250 फीट के बीच रहा होगा।

1950 के उत्तराध मे स्कॉटलेंड के एक झरने के पानी पर एक उडनतश्तरी तैरती हुई गुजरी, इसके पश्चात् ऊपर उडकर वह समुद्र मे विलीन हो गयी। उससे लाल किरणें निकल रही थी ग्रौर झरने पर लाल प्रकाश फैल गया था। 22 जुलाई 1955 को केलिफोर्निया के एक स्थान पर कर्मचारियो न चाँदी जैसी उडन तश्तरी को पानी से बाहर निकालते हुए देखा।

ग्रौर उसके पश्चात् 2062 की घटना का जिक्र जो उनके साथ घटित हुई टेप-रिकार्डर से गूज उठी। इसके ग्रतिरिक्त भी ग्रनेक घटनाग्रो का जिक्र टेप-रिकार्डर से सुना गया। इसके पश्चात् एन्ड्रयू ने टेप-रिकार्डर उचित स्थान पर रख दिया।

"मि हेनरी इससे ग्राप क्या निष्कष निकालते हैं ?" एन्ड्रयू ने मेज पर रखी हुई घटी बजाते हुए कहा। इसके साथ ही मिस रोजा ने ग्र दर प्रवेश किया।

मिस रोजा हेनरी की 18 वर्षीय नौजवान लडकी थी जिसकी जिंदगी किसी ग्लिमरिंग लाइफ से कम नही थी। उसने लाल रग के जूते पहन रखे थे ग्रौर हाथ मे शॉपेन ह्विस्की की बोतल पकड रखी थी। वह इस समय 'ड्रेसिंग रूम' मे बैठे हुए डिजिटल क्लॉक स्टीरिग्रो से निकला हुग्रा मधुर सगीत सुन रही थी।

"हैलो एन्ड्रयू। मिस रोजा ने 'वेल्वेट चेयर' पर बैठते हुए कहा। उसने शॉपेन को मेज पर रख दिया था।

"क्या ग्राज 'विन्की' नही ग्राया ?" एन्ड्रयू ने प्रश्न किया। विन्की इनका निजी सेवक था।

"उसकी छुट्टी का समय हो गया ग्रत वह चला गया।" रोजा ने ग्रपने कोट के कालर को नीचे करते हुए कहा।

"खैर ठीक है ग्राज तुम्हे ही हमारे लिये चाय बनानी होगी।" हेनरी ने 'फिलिप मोरिस सिगरेट का कश लेते हुए कहा।

"पापा, क्या आप ह्विस्की नहीं पीयेंगे ?" रोजा ने हेनरी के चेहरे की ओर देखते हुए कहा।

"नही हम ह्विस्की नही पी सकते।" एन्ड्रयू ने रोजा के हसमुख चेहरे की ओ देखते हुए कहा।

"क्यों एन्ड्रयू, क्या ह्विस्की आपके गले मे नही उतर सकती ?"

रोजा ने मिठास के साथ अपनी नीली आँखों को घुमाते हुए कहा। उसने मेज पर रखी शैंपेन उठायी और उसका ढक्कन खोलने लगी।

"रोजा, क्या तुम्हे पता नहीं है कि हमे ह्विस्की पीने की इजाजत नही है और यदि हमने ऐसा किया तो हमे न केवल एस सी ओ आर की सदस्यता से ही वचित नही होना पडेगा, बल्कि हमे अपनी सर्विस से भी हाथ धोना पडेगा।" एन्ड्रयू ने रोजा की ओर दृष्टि टिकाते हुए कहा।

"ठीक है, मैं अभी आपके लिये चाय बनाकर लाती हूँ।" रोजा ने कहा।

वह कुर्सी हटाते हुए 'किचन-रूम' मे चली गयी। तब हेनरी ने पुन उडन तश्तरी का सिलसिला जारी रखते हुए कहा—

इन घटनाओ के अनेक निष्कर्ष निकल सकते है—

(1) हो सकता है कि उडनतश्तरियाँ समुद्र मे परीक्षण करने आती हैं और यह भी हो सकता है कि उनमे इस प्रकार के यत्र हो जो उन्हें नियत्रित कर सकें। यह एक अत्यन्त तकनीकी कुशलता का परिचायक है।

(2) हो सकता है कि समुद्र की तलहटी मे उनके छोटे-छोटे अड्डे हो। वे किसी अति विकसित ग्रह से आती हो और उन्होने गुप्त रूप से यहाँ के कई वैज्ञानिको (गुप्त) से सम्बन्ध स्थापित कर लिये हो।

(3) उडन तश्तरिया स्वईंधनपूरक हैं अत वे आवाज नही करती। यही नही उसके विभिन्न आकार और रग है, और उनमे से विभिन्न प्रकार की आँखो में चकाचौंध करने वाली किरणें निकलती हैं।

(4) वे इस समय गुप्त रहना चाहती हैं। यदि वे किसी तरह का खतरा अनुभव करती हैं तो वे तुरन्त अदृश्य हो जाती है।

हो सकता है कि वह पृथ्वीवासियो के जल, थल और वायु सैनिक अड्डो से पूर्णत परिचित होना चाहती हो अत वे आक्रमण नही करती।

हेनरी ने उक्त घटनाओ से निष्कर्ष निकालते हुए कहा।

"हेनरी, क्या वह अदृश्य होने के लिये किसी किरणो का उपयोग करती है ?"

'हाँ, ऐसा हो सकता है, अभी हाल ही मे वैज्ञानिकों ने इस समस्या का समाधान करने का प्रयत्न किया है। वे लेसर किरणो पर आशा सजोय हुए बैठे है। हो सकता है कि उन किरणो का इस्तेमाल करने से वस्तु अदृश्य हो जाय।"

"लेकिन हेनरी ऐसा भी तो हो सकता है कि विलोम-गुरुत्वाकर्षण के कारण उडन तश्तरियाँ अदृश्य हो जाती हो, यही नही वह विलोम-गुरुत्वाकर्षण के कारण पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के प्रभाव से भी मुक्त हो जाती हैं।"

'हाँ, ऐसा हो सकता है कि उडन तश्तरी के बहुत तेज घूमने से उनमे विलोम गुरुत्वाकर्षण उत्पन्न हो जाता है, किन्तु एन्ड्रयू तुम्हे 21 जनवरी 1955 की हाप्किन्स के समीप के ही छोटे शहर केन्टुकी मे हुई बिली सटन के साथ घटना याद नही है जिसके अनुसार 'चमकीले बौने' पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण भार से मुक्त रहते हैं, उन्हें तो बहुत तेज नही घूमना पडता, फिर भी वे हवा मे तैरते थे।"

"हाँ, यदि सूक्ष्म रूप मे सोचे तो यह भी एक जटिल समस्या है। तब तो हम ऐसी ही कल्पना कर सकते हैं कि उडन तश्तरियाँ विलोम गुरुत्वाकर्षण से मुक्त होकर उडती है, और इस कारण अदृश्य हो जाती हैं और पृथ्वी के परे के लोग विशेष प्रकार की किरणो का उपयोग करते हो जिसके कारण वे अदृश्य हो जाते हो।" एन्ड्रयू ने उक्त गुत्थी को ठीक ढग से सुलझाते हुए कहा।"

कुछ क्षणो के लिये वे दोनो चुप्पी साध लेते है। फिर एन्ड्रयू ने प्रश्न किया "क्या हमारे यान उडन तश्तरियो की गति के समान नही चल सकते ?"

"न ही हमारे यान समुद्र मे उडन तश्तरी की गति के समान चल सकते और न ही अन्तरिक्ष मे, क्योंकि पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति उनकी सबसे बडी बाधक है। हाँ, यदि वे किसी तरह पृथ्वी की आकर्षण शक्ति से मुक्त हो जायें तो हमारे यान उससे करीब आधी स्पीड के साथ चल सकते हैं।"

बाह्य अन्तरिक्ष वासी किस तरह कम समय मे इतना अधिक फासला तय करते है, जबकि वे पृथ्वी से कम से कम ग्यारह-बारह

प्रकाश वर्ष दूर होगे।" एन्ड्रयू ने प्रश्न किया।

प्रकाश के द्वारा एक वर्ष मे तय की गई दूरी एक प्रकाश वर्ष होती है।

"आपेक्षिक गति के सिद्धान्त के अनुसार। इसी सिद्धान्त के द्वारा वे दस हजार वर्षों की दूरी बीस वर्षों मे तय कर सकते हैं।" हेनरी ने प्रत्युत्तर देते हुए कहा।

"किन्तु वे जब बहुत तेज गति से चलते है तो क्या वे जलकर भस्म नही होते, जबकि हमारे यान इतनी तेज गति से चले तो यान-चालक ही नहीं स्वय यान का भी एक पुर्जा बिना राख हुए नही बचे।"

"हो सकता है कि उन उडन तश्तरियो पर 'आइन्सटीन का सिद्धान्त' लागू नही होता हो। यदि उनका नियम वहां प्रतिपादित होता तो कोई भी उडन तश्तरी प्रकाश की गति से तेज नही चल सकती।" हेनरी ने स्पष्ट शब्दो मे एन्ड्रयू के समक्ष अपने विचार रखे।

"लेकिन फिर भी उन्हे अन्तरिक्ष-ग्रह से यहां तक आने मे सौ वर्ष तो लग ही जाते। यदि ऐसा है तो पृथ्वी के परे के यात्री किस तरह जीवित रहते होगे?"

"हो सकता हो उन्होने बुढापे पर विजय प्राप्त करली हो। तुमने सुना नही कि 'जरावस्था' के वैज्ञानिक बुढापे को एक रोग मानने लगे हैं। यही नही, हो सकता कि उन्होने मृत्यु पर भी विजय प्राप्त करली हो। यहां पर भी डॉ एलेक्स कम्फर्ट निमेटोड नामक सूक्ष्म कृमियो मे जरा के कारणो की खोज, चूहे, खरगोश आदि स्तनधारियो की मासपेशी की कोशिकाओ के केन्द्रका पर जरा का प्रभाव आदि पर कार्य कर रहे है।"

"इसका अर्थ तो यह हुआ कि जो चीज पृथ्वी पर फिलहाल असम्भव है वे वहां पर सम्भव हो चुकी है। किन्तु मुझे समझ मे नही आता कि वे बाह्य-अन्तरिक्षवासी किस तरह यान मे जीवित रहते होगे। वे सौ वर्षों तक यान मे बैठे हुए क्या करते होगे? किस तरह वहां पर अपना समय व्यतीत करते होगे?"

"वे लोग अनेक 'बायो-एस्ट्रौनोमस' के अनुसार शीत निष्क्रियता (हाइबरनेशन) की स्थिति मे ही यहां की यात्रा करते हैं। और यहां आकर पुन इस अवस्था मे मुक्त हो जाते हैं। उन्हे इस तरह प्रतीत होता है मानो वे कल रात का सोये हो और दूसरे दिन प्रात उठ हो और अपने मे ताजगी महसूस करते हैं।" पृथ्वी पर भी इस तरह के प्रयोग सफल

हो चुके हैं। वैज्ञानिकों द्वारा अनेक चूहों, छिपकली, बिल्ली, खरगोश और अनेक जानवरों को रेफ्रीजिरेटरों में जमा दिया जाता है। वे पत्थर की तरह कड़े हो जाते हैं और विद्युतीय तरगों के द्वारा उन्हें पुन उसी स्थिति में लाया जा सकता है। यही नहीं, अब तो आदमी की लाश को भी एक विशेष क्रिया के जरिये सड़ने से बचाया जा सकता है और वैज्ञानिको को दावा है कि वे उन्हें पुन एक न एक दिन जीवित कर लेंगे। इस आधुनिकतम पद्धति को हाइपोथर्मिया कहते हैं। अनेस्थेटिक का प्रयोग करके प्राणी को शीत निद्रा की अवस्था में लाया जा सकता है। 39 से 30 डिग्री सेल्सियस तक उष्णता कम होने पर प्राणी को 'आपरेशन टबुल पर रखा जाता है। उसके बाद यह उष्णता और थोड़ी कम होकर 29 से 28°C पर आ जाती है। प्रोफेसर नेगोवोस्की ने एक सोवियत समाचार पत्र में मनुष्य की पुनर्जीवन की एक घटना का जिक्र किया था।

"किन्तु मनुष्य का शीत निष्क्रियता में तभी लाया जा सकता है जबकि मनुष्य के शरीर में से रक्त कणों को निकाल दिया जाय और इन रक्त कणों की जगह पर सश्लिष्ट रक्त का शरीर में समावेश करा दिया जाय। (इस सश्लिष्ट रक्त का निर्माण कृत्रिम रूप से नमक के घोल, ग्लूकोज और अन्य आवश्यक रासायनिक तत्वों से किया जाता है।) अभी हाल ही में वैज्ञानिकों को एक हिमायनरोधी रसायन डी मिथाइल सल्फो आक्साइड (डी एम एस ओ) का पता चला है जिससे जीव की अतिशीतलन अवस्था की उपलब्धि हो सकती है और मनुष्य सौ दिन तक इसी अवस्था में रह सकता है। अब यदि मनुष्य सौ दिन तक शीत निष्क्रियता में रह सकते है तो यह भी हो सकता है कि इस पृथ्वी के परे के निवासियों ने एक ऐसे हिमायनरोधी तत्व का पता लगा लिया होगा जो अन्तरिक्ष यात्री को सौ से अधिक वर्ष तक शीत निष्क्रियता में रख सके, यह उनके लिये अधिक आश्चर्य की बात नहीं।' मि हनरी ने विस्तार से उक्त समस्या का समाधान करते हुए एन्ड्रयू को समझाया।

"इसका आशय तो यह हुआ कि इस पृथ्वी के परे के निवासी हमसे अधिक विकसित प्राणी हैं।" एन्ड्रयू ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा।

"रूसी खगोलविद आइ एम श्लोकवस्की ने अपनी विद्वतापूर्ण कृति 'इन्टेलिजेण्ट लाइफ इन द यूनिवर्स' में दृढ़ विश्वास के साथ कहा कि इस आकाश गंगा में, जिसमें हमारा सौर मण्डल पड़ता है, यदि अधिक

नही तो कम से कम दस लाख ऐसे ग्रह होंगे जो हमसे अधिक सुरुचिपूर्ण और बौद्धिकता समन्वित सभ्यता के स्वामी होंगे।' हेनरी ने फिलिप मोरिस का धुंआ छोड़ते हुए कहा।

"जब वे हमसे अधिक बुद्धिमान है, और उनके पास हमसे अधिक शक्ति है तो किस तरह हम समुद्र मे उडन-तश्तरियो पर नियन्त्रण कर सकते हैं ?" एन्ड्रयू ने अपना शरीर मेज की ओर झुकाते हुए कहा।

हेनरी कुछ देर सोचते रहे फिर उन्होने सामुद्रिक-खोज के बारे मे कहना शुरू किया।

"इसके लिये हमे समुद्र में ही रहना होगा। हमे अपनी सभी दैनिक क्रियाएँ वही पर करनी होगी और एक विशाल शक्तिशाली सैनिक अड्डे को स्थापित करने के अतिरिक्त सामुद्रिक-अनुसधान मे जुट जाना होगा।"

"किन्तु किस तरह वहाँ हम आवास का प्रबन्ध कर पायेंगे?" एन्ड्रयू ने कहा।

जिस योजना को हम अपनाने जा रहे हैं वह है—'बीटन पारकिन्स का फर्स्ट नियम', जिसका उद्देश्य न केवल रान्सटीडल पावर स्टेशन का निर्माण करना ही होगा बल्कि कोस्टयू की समुद्र के अन्दर घर निर्माण की विधि को भी अपनाना होगा और यह काय एस ओ सी आर, इ ए एन तथा एन इ वाइ आर पी आइ सी (नैरपिक) नामक सस्था के द्वारा होगा तथा गहरे पाइप डालने के साधन हाइड्रौलिक प्रयोगशाला की मदद से प्राप्त होगें। उन्हें ओसनोग्राफिक इन्डेक्स छपवाना होगा जिसका सम्बन्ध अनेक जनरलो से होगा। इस प्रयोगशाला के लिये कुछ प्रमुख आर्थिक सहायता के अतिरिक्त, कॉमर्सियल ओसनोलोजी स्टेडी ग्रुप के लिये एयर क्राफ्ट कारपोरेशन को भी समुद्र में ओसनोग्राफर की सहायता के लिये भेजना होगा। यह योजना कारगर हो सकती है जब विभिन्न सस्थाएँ एक साथ जुट कर काय करें।

"क्या इसके अतिरिक्त किसी दूसरी योजना को नहीं अपना सकते क्योकि उक्त विधि न ही केवल जटिल है अपितु वह आर्थिक रूप मे बहुत खर्चीली भी होगी।"

एन्ड्रयू ने उक्त विधि पर तनिक असतोष प्रकट करते हुए कहा।

"हा, ऐसा हो सकता है कि हम कॉमेक्सो साइटिफिक कमेटी की डेलीगेशन जेनरेल ए ला रिसर्च साइटिफिक टेक्नीक की सहायता

ले सकते हैं जिसके विभिन्न उद्देश्यो के साथ एक उद्देश्य उडन-तश्तरियो को नियत्रण करने का भी जोड दें। वैसे कामेक्सो का प्रमुख उद्देश्य मल्टी परपज रिसंचशिप 'पालोमस' के निर्माण करने का है किन्तु हम उसके सेकेन्डरी उद्देश्यों मे 'थ्री वी' डिजाइन पर आधारित जहाज 'रिब्नेली वार फील्ड' का उपयोग केवल उडन तश्तरियो के रहस्य को समझने के लिये जोड दे। इस जहाज का मॉडल जोन्स होप्किन्स यूनिवर्सिटी ने किया था। कामेक्सो के सेकेन्डरी कार्यों को करने के लिये निम्न साधनो का होना आवश्यक है—गहरायी तक ज्वार नापने, स्वचलित यत्र, अधिक दाब पर इन्स्ट्रूमेन्ट के कार्य करने की क्षमता आदि।"

"क्या कामेक्सो स्थाई रूप से कार्य करेगी ?"

"नही, यह एक अस्थायी सस्था है, क्योंकि यह डेलीगेशन कुछ समय तक कार्य करेगा और इसके पश्चात् इसकी जिम्मेदारी किसी स्थायी सस्था को सौप दी जायेगी। और यह सस्था है 'सेन्टर नेशनल पावर एक्सप्लॉइटेशन कमेटी।' इस सस्था का उद्देश्य उक्त कार्यों के अतिरिक्त वी टी ओ एल, का मॉडल तैयार करना होगा जो धरती पर दौड कर ऊपर उठने अथवा उतरने पर दौड कर रुकने के बजाय लम्ब रूप में समुद्र में ऊपर चढता और नीचे उतरता है। यह वी टी ओ एल यान वायु में चक्कर काटता है किन्तु हम चाहते है कि सी एन ई एक्स ओ इस तरह के जल पोत तैयार करे जो समुद्र की सतह के समानान्तर और लम्ब रूप दोनो में चल सकें। अर्थात् उसे चालक की इच्छा के अनुसार मोडा जा सके। और उसका नाम होगा फ्लिप-यान जिसमे हाइड्रोडिस्ट (माइक्रोवेव प्रणाली पर आधारित) के उपयोग से समुद्र की हरेक स्थिति का सही ज्ञान हो सके।' हेनरी ने अपनी योजना का विस्तार से बखान करते हुए कहा।

"हेनरी मया, इतनी बडी योजना के पश्चात् आपको दृढ विश्वास है कि हम उडन तश्तरियो को अपने नियत्रण मे ले सकेंगे।"

"कुछ अशो तक। ऐसा हो सकता है हमारे सैनिक अड्डो और रिसर्च-शिप से उडन तश्तरी किसी तरह घिर जाय और सब तरफ से आक्रमण करने के कारण उडन तश्तरी का द्वार खुल जाय और यही एक मौका होगा जब हम उडन तश्तरी के रहस्य को किसी हद तक समझ पायेंगे। हेनरी ने सिगरेट निकालते हुए कहा। अब तक वे पाच सिगरेट के कश ले चुके थे।

तभी रोजा ने चाय की ट्रे हाथ मे थामते हुए अन्दर प्रवेश किया। उसने विशेष प्रकार के उत्तम कपो मे चाय डाल कर एक प्याला हेनरी को दिया और एक प्याला एन्ड्रयू ने थाम लिया। वह स्वय भी मखमली कुर्सी पर बैठ गयी।

"रोजा, तुम्हे भी उडन तश्तरियो मे गहरी दिलचस्पी रखनी चाहिये।" एन्ड्रयू ने चाय की एक चुस्की लेते हुए कहा।

"क्या आपने उडन तश्तरियो के अस्तित्व को स्वीकार कर लिया?" रोजा ने मुंह बनाते हुए कहा।

"क्या कोई वस्तु आंखो से देखने के पश्चात् भी वह वस्तु नही हो सकती?" हेनरी ने प्रश्न किया।

"तब हावड आब्जर्वेटरी के भूर पूव निदेशक डोनाल्ड मेन्जल इस विश्वास पर क्यो डटे हुए हैं कि घुमडती चक्करदार हवा, गर्द और सूय की चमकती रोशनी के साथ तारो को निकलती किरणे मिलकर एक सिगार के शक्ल की चमकती वस्तु का आभास दे देती हैं, ठीक वैसे ही जसे रेगिस्तान मे ऊट पर बैठे हुए यात्री को दूरी पर पूण आवतन के कारण पानी नजर आता है।" रोजा ने चाय की चुश्की लेते हुए कहा।

"किन्तु क्या उन्होने कभी यह सोचा कि पानी के अन्दर से निकलती हुई 'वह चीज क्या थी? पानी मे चलते हुए जहाजो के स्वचालित यत्र अचानक वद क्यो हो गये? पानी से निकलते हुए वे झाग क्यो हुए? क्यो उसी क्षेत्र मे तूफान उत्पन्न हो गया? उन चमकीली वस्तुओ के रग विभिन क्यो दिखायी दिये? एन्ड्रयू क्या तुम्हे 10 जनवरी 1961 की घटना याद है?"

"हा, केप केनेडी से एक पोलरिस प्रक्षेपणास्त्र छोडा गया। कुछ ही देर मे विशाल विचित्र उडती चीज पोलरिस की दिशा मे बढी। वह इतनी समीप आ गयी कि राडार के यत्र गल्ती से पोलरिस के बजाय उसी विचित्र वस्तु का बिम्ब उतारने लगे। अध्ययन के बाद वह चमकती वस्तु इतनी तेजी से भाग गयी कि राडार उसका पीछा नही कर सका। पर्दे पर से जब अज्ञात वस्तु का बिम्ब हटा तब कही अधिकारियो को पता चला कि रेडार पोलरिस का पीछा नही कर रहा था।'

"अमरीकी वेधशालाओ ने उस समय इस बात को गुप्त क्यों रखा? क्यो नही उन्होने इस बात का स्पष्टीकरण किया कि वह वस्तुत क्या थी?" इन सब प्रश्नो को देखते हुए एक ही जवाब है—

कि वे उडन तश्तरिया थी और उन्ही के कारण उक्त उलझने हुई।"
हेनरी ने चाय की घूट निगलते हुए कहा—

"आपको मेरी चाय का स्वाद कैसा लगा ? ' रोजा ने तुरन्त बात को बदलते हुए कहा। रोजा इस बात को अच्छी तरह जानती थी कि हेनरी से बहस करके वह जीत नही सकती थी। यही नही उसकी इच्छा हो रही थी कि हेनरी स्वय उसके चाय की प्रशसा करे, किन्तु अधिक समय हो जाने के उपरान्त भी उन्होंने कुछ नही कहा तो स्वय ही प्रश्न किया। अधिकतर विन्की ही चाय बनाकर उन्हे पिलाता था किन्तु कभी-कभी वह स्वय भी चाय बना लेती थी। उसे इस बात पर तनिक क्रोध भी आया कि अब उन्होने हर दैनिक क्रिया मे उडन तश्तरियो को जोड दिया, लेकिन वह इस बात से प्रसन्नता का भी अनुभव कर रही थी, क्योंकि उसे दृढ विश्वास था कि एक दिन हेनरी अवश्य उडन तश्तरियो को अपने नियन्त्रण मे कर लेंगे। यह कल्पना करके तो उसका भी दिल नाच उठता था।

"रोजा, क्या बात है आज चाय का रग और स्वाद दोनो ही बदले हुए नजर आ रहे हैं।" एन्ड्रयू ने चाय के प्याले को मेज पर रखते हुए कहा।

"ओ माई गॉड, यदि आपने यह प्रश्न पहले किया होता तो कितना अच्छा होता ?" रोजा ने प्रसन्नता का अनुभव करते हुए कहा।

"रोजा, क्या तुमने इसमे कोई दूसरी पत्ती डाली है ' हेनरी ने रोजा से कहा।

"हा पापा, मैंने इसमे 'रिज वेज फाइव ओ क्लॉक' पत्ती डाली।" रोजा ने स्मार्ट बनते हुए कहा।

विन्की हमेशा 'आरेन्ज लेबल' चाय का इस्तेमाल करता था। केलिफोर्निया में रहते हुए भी हेनरी ने इसी चाय को पसद किया।

"तब तो इस पत्ती की चाय तुम्हे पाच बजे ही बनानी चाहिये।" एन्ड्रयू ने हसते हुए कहा तभी हेनरी का अट्टहास बेडरूम मे गूज उठा।

"रोजा, अब हम शीघ्र ही तुम्हे समुद्र के भीतर का दृश्य दिखायेंगे। हमारा आवास भी वही पर होगा। और अब हमारा प्रयत्न यही होगा कि किसी तरह हम उडन तश्तरियों का अपने नियन्त्रण मे लें। अब यह तुम्हारी इच्छा पर निभर है कि क्या तुम समुद्र मे रहना पसन्द करोगी या नही।" एन्ड्रयू ने रोजा चेहरे की ओर देखते हुए कहा।

"तुमने क्या तय किया रोजा ?" हेनरी ने उठते हुए कहा ।

"अभी मैंने कुछ भी तय नहीं किया है, और तय करने की आवश्यकता भी क्या है ? जहा कही भी आप और एन्ड्रयू जायेंगे वहाँ मैं भी चली चलूगी ।" रोजा ने मखमली कुर्सी पर से उठते हुए कहा ।

"अच्छा एन्ड्रयू, अब हम चलें । समय बहुत अधिक हो गया है ।" हेनरी ने अपनी घडी देखते हुए कहा । अभी रात्रि के साढ़े ग्यारह बजे चुके थे । इसके पश्चात् वह एन्ड्रयू से विदा लेते हुए अपनी स्कोटिश कार 'डाटसन' मे जा बैठे और उसे स्टाट करके सातोआना की चौडी गलियों मे खो गये ।

ठीक छ वर्ष पश्चात् मि एन्ड्रयू और हेनरी के साथ एक रहस्य और रोमाच से परिपूण घटना घटित हुई जिससे न केवल उनकी कल्पना ही सत्य साबित हुई, अपितु समस्त विश्व मे एक सनसनी फैल गयी ।

उस रोज रात्रि के करीब दो बज कर पेंतालीस मिनट हुए थे । मि० एन्ड्रयू इस समय 'थ्री बो डिजाइन' रिमच पोत 'रिजेली वार फील्ड' की छत के रोलिंग शटस के दरवाजे को खोल रहे थे कि उन्होंने नाइट ड्यूटी के कमचारियों का शोर सुना । तभी वे जहाज की छत पर दौडे । अचानक उन्हें एक विशाल और विचित्र प्रकार की उडन तश्तरी दिखायी दी जो नीले हरे तीव्र प्रकाश से चमक रही थी और उसका रग 'सफद चादी' के समान था । वे तेजी से कटघरे मे उतरे और उन्होंने सेन्टर नेशनल पावर एक्सप्लाइटेशन कमेटी के अध्यक्ष मि० हेनरी को कुछ आवश्यक सूचना भेजी । यहाँ उन्होंने जहाज चालक को इसकी गति तेज करने को कहा ।

इधर पोत रिजली वार फील्ड अलामोगार्डो मे तेजी से चक्कर लगा रहा था और उधर समीप ही न्यूमेक्सिको क्षेत्र में 'रेजील्यूशन' मिसाइलयुक्त पनडुब्बी सागर में मन्थर गति मे चल रही थी । इसके कन्ट्रोल रूम मे मि० हेनरी उठ हुए थे । यह करीब आठ हजार फीट नीचे थी । 'परिस्कोप' की सहायता से उन्हे एक लाल रग की गोल, चमकीली उडन तश्तरी वायुमण्डल मे नीचे उतरते हुए दिखायी दी । यही नही उन्हे एक एक्स —22 ए विमान उडन तश्तरी का पीछा करता दिखायी दिया । उडन तश्तरी की गति बहुत तेज थी किन्तु इस पृथ्वी के परे के निवासियों के लिये यह गति अत्यधिक

मद थी। एक्स-22-ए के कप्तान ने विमान की गति उच्चतम कर दी थी। वह हर सैकिन्ड के अन्तराल मे अपनी दिशा बदल देती थी, इससे विमान चालक बौखला उठा। इस समय विमान क्षतिज उडान भर रहा था। दिशा बदलते समय स्लिप स्ट्रीम मे एलीवोन का प्रयोग करके विमान की विभिन्न स्थितियो मे नियन्त्रित किया गया। उस विमान मे चार इलैक्ट्रिक टी-58 टर्बोशैफ्ट इजन प्रोपेलरो को चला रहे थे। अब वह लम्ब रूप से नीचे उतर रहा था क्योंकि उडनतश्तरी एकदम 90° के कोण पर घूम गयी। अभी यह विमान अपनी उच्चतम गति 500 मील प्रति घटा की गति से उड रहा है। कैप्टिन का क्रोध के कारण चेहरा लाल हो गया, लेकिन वह विवश था। अचानक उसे क्षैतिज उडान करनी पडी। लिफ्टिंग सरफेसेज पखो का काम देने लगे। प्रोपेलरो के 'स्टेटिक थस्ट' को बढाकर विमान की स्थिति को नियन्त्रित कर लिया। वह चालक 'शेफ्ट' और 'गियर बाक्स' का उपयोग ले रहा था, किन्तु उसे समझ मे नही आ रहा था कि वह उडनतश्तरिया किस पद्धति का उपयोग कर रही थी। इस तरह उसने करीब दस मिनट तक आकाश मे उडन-तश्तरी का बीस हजार किलोमीटर की ऊँचाई तक पीछा किया। इसके पश्चात वह उडन तश्तरी अचानक विमान चालक की दृष्टि से ओझल हो गयी।

मि० एन्ड्रयू तुरन्त 'एल्विन' पनडुब्बी मे जा बैठे। देखते ही देखते न्यूमेक्सिको के समुद्र मे उस लाल उडन तश्तरी ने गोता लगाया। उसकी गति एक हजार मील प्रति घण्टे से भी अधिक थी। वह उनसे करीब सौ फीट दूर थी। एन्ड्रयू ने उसी ओर उडन तश्तरी का पीछा किया। उन्होने 'एल्विन' की दिशा बदल दी और अब वह लम्ब रूप से पानी मे उतर रही थी। उन्हे कुछ आशा बधी कि उडन तश्तरी अभी अदृश्य नही हुई थी। उनका साथ देने के लिय 'टनस' और 'डायस' विध्वसक थे। बेथी-फोटोमीटर पानी मे दो मील दूर तक के फोटो ले रहे थे। यही नही टेलीविजन कैमरा भी उन उडन तश्तरियो के फोटो हर कोण से ले रहा था। और सब स्वचालित यन्त्र ठीक ढग से काय कर रहे थे। हेनरी का अट्टहास गूज उठा

एल्विन पनडुब्बी के खोल पर जडित विशाल हाइड्रोफोन सवेदित सोनार प्रणाली द्वारा उडनतश्तरी की गतिविधि को अकित कर रहे थे। हाइड्रोफोन वे से-सस उडन तश्तरी मे पानी की लहरो में उत्पन्न सूक्ष्म

ध्वनि (अकौस्टिक) दाब परिवर्तन को अंकित कर रहे थे। कम्प्यूटर उनका विश्लेषण कर रहे थे। लेकिन यह क्या ? अचानक ध्वनि दाब मे परिवतन बंद हो गया। कम्प्यूटर किसी प्रकार का विश्लेषण नही कर रहे थे। ऐसा लगा कि उडन तश्तरी वहाँ से गायब हो चुकी है। यह तो हमारा सौभाग्य था कि आकाश मे घूमते कृत्रिम उपग्रह मोलिनिया के दर्पण से परावर्तित नीली-हरी लेसर से हमे फिर सदेश मिलने लगे।

अब तक सवाद-सचरण की पद्धति बदल चुकी थी। रेडियो-सकेतो का स्थान नीली-हरी लेसर ने ले लिया था। यह नई पद्धति इमरल्ड के नाम से जानी जाती थी। इमरल्ड का पूरा नाम है—एक्साइमर मोडरेट पॉवर रमन शिफ्टेड लेसर डिवाइस। यहाँ 'एक्साइमर लेसर के विशिष्ट प्रकार का तकनीकी नाम है तथा 'रमन शिफ्टेड लेसर किरण की तरग दैर्घ्य (वेव लेंथ) की ट्यूनिंग के लिये प्रयुक्त हुआ है। इमरल्ड की नई पद्धति मे अतरिक्ष मे घूमते हुए उपग्रह के दर्पण द्वारा लेसर को उछाला जाता है।

दपण से उछाल भरती हुई इस नीली-हरी लेसर से पनडुब्बी को सदेश मिलना पुन प्रारम्भ हो गया। समुद्र के भीतर बने हुए सैनिक अड्डे हर तरह से उडन तश्तरी पर आक्रमण करने के लिये तयार थे। अलामा गार्डो, तथा न्यू मेक्सिको क्षेत्र के समुद्र मे हलचल मच गई। मि एंड्रयू न विध्वंसको से आक्रमण का आदेश दे दिया। तुरन्त मिसाइलें कायरत हो गई। टोरपीडो ने फायर किया। लेकिन उडन तश्तरी बच गई। उडन तश्तरी से अचानक घातक किरणे निकली। उसने एंड्रयू की पनडुब्बी को डुबो दिया। एन्ड्रयू बाल-बाल बचे। लेकिन उडन तश्तरी से निकली एक ट्रेक्टर किरण एन्ड्रयू से टकराई। बाह्य अन्तरिक्षवासियो ने उन्हें इस किरण के सहारे उडन तश्तरी की ओर खेंच लिया। इस बीच हेनरी अपनी पनडुब्बी को 'अकोस्टिक ब्लाइन्ड स्पोट' मे ले गये। इस स्थान ने पनडुब्बी को छिपाने का कार्य किया। क्योंकि इस स्थान से सोनार के द्वारा पनडुब्बी का पता नही लगाया जा सकता। कुछ क्षणो के लिये बाह्य अतरिक्षवासी समझ नही पाये कि दूसरी पनडुब्बी कहा गई। हेनरी के लिये इतना समय काफी था।

उन्होने मिसाइल द्वारा उडन तश्तरी पर फिर आक्रमण किया। इस बार उनका निशाना अचूक था। उडन तश्तरी के चिथडे-चिथडे नही हुए लेकिन वह नीचे डूबने लगी थी। एंड्रयू ट्रेक्टर किरण के सहारे उडन तश्तरी के निकट पहुच चुके थे। इस किरण ने उनके लिये

'फील्ड फोर्स' (जैविक आवरण) का काम किया अत वह जीवित बच निकले। लेकिन अतरिक्ष वासियो को इस फील्ड फोर्स से ढकने का समय नही मिला अत वे हेनरी के आक्रमण के आगे नही टिक सके तथा तुरन्त इनकी मृत्यु हो गई।

अचानक उडन तश्तरी स्थिर हो गई। इसके छिद्र खुल चुके थे। ये छिद्र अत्यन्त छोटे थे तथा अतरिक्षवासियो के द्वार के रूप मे थे। इसमे से छोटे आकार के प्राणी गुजर सकते थे।

एन्ड्रयू भी उडन तश्तरी के निकट पहुच चुके थे। तब उन्होने उन छिद्रो मे बौने बाह्य अतरिक्षवासियो के शव पाये। इनकी आकृति हमसे मिलती जुलती थी। इन प्राणियो ने किसी धातु का पारदर्शी सूट पहन रखा था। जिस पर किसी कैंची या ज्वलनशील टाच का कोई प्रभाव नही होता था। बाह्य अन्तरिक्षवासियो के शव मिलने से उडन-तश्तरी का नाम 'अतरिक्ष नरशिप' पड गया।

हम पनडुब्बियो की सहायता से किसी तरह इसे समुद्र की सतह पर लाये। समुद्री छोर पर इन अतरिक्षवासियो को देखने के लिये भीड उमड आयी थी। आकाश मे कई हेलीकाप्टर चक्कर काट रहे थे। साझ का समय था। डूबते हुए सूरज का लाल गोला समुद्र की लहरो से अठखेलिया कर रहा था। वातावरण मे हर्षोल्लास छाया हुआ था।

उडन तश्तरी जलपोत के डेक पर रखी हुई थी तथा बाध्य अतरिक्षवासी की लाशें भी उडन तश्तरी से बाहर लेकिन उसके समीप ही रखी हुई थी। समुद्री छोर पर खडे हुए लोग इन्हे अपनी अपनी दूरबीनो से निहार रहे थे।

तभी अचानक उडन तश्तरी से लाल 'ट्रेक्टर' किरण निकली। इसने तुरन्त अन्तरिक्ष वासियो को छिद्रों में खेंच लिया तथा बिना कोई ध्वनि किये वह उठी तथा वायु मडल की सघन पर्तो को चीरते हुए अतरिक्ष मे विलीन हो गई।

पूरे वातावरण मे आश्चर्य की लहर फल गई। उसके साथ ही कई प्रश्न वातावरण मे तिर गये। क्या उडन तश्तरी क्षतिग्रस्त नही हुई थी ? क्या उडन तश्तरी मे बाह्य अन्तरिक्षवासी पुनर्जीवित हो गये या फिर क्या वे मरे ही नही थे ? क्या बाह्य अतरिक्षवासी केवल रोबोट थे ? क्या यान में अन्य रोबोट भी थे जिन्हें अपने नक्षत्रो से उडन तश्तरी को पुन लाने के सदेश प्राप्त हुए हो ? या फिर क्या

उडन तश्तरी स्वचालित थी ? क्या इस स्वचालित यान को सुदूर नक्षत्रो से निरन्तर निर्देश मिल रहे थे ?

दर्शको के देखते ही देखते उडन तश्तरी अचानक अदृश्य हो गई। बाह्य अतरिक्षवासियो ने अपने अस्तित्व का कोई सबूत पृथ्वी पर नही छोडा। वे चमत्कारिक तरीके से पुन चले गये।

एन्ड्रयू तथा हेनरी सोचने लगे, क्या कभी ऐसा एक और अवसर आयेगा जब उनका सामना बाह्य अतरिक्षवासियो से पुन होगा।

□□

परखनली डाइनोसॉर

डाइनोसॉर की खोज मे हम घने जगल मे बढे जा रहे थे। आप सोच रहे होगे कि हम किसी जीवित डाइनोसॉर की तलाश करेगे। नही, हम आपको आश्चर्यचकित नही करना चाहते, हम तो केवल उनके अवशेष ही तलाशने निकले थे। प्रोफेसर सुधाशु की आज्ञा को हम टाल नही सकते थे। वह हमे हमेशा कहते है, "तुमने यदि जीवन मे जोखिम भरी यात्रा नही की तो कुछ नही किया।"

हम उनकी बातो से काफी प्रोत्साहित हुए थे। उन्होने इस अभियान की भूमिका बनाई।

हम कुल चार सदस्य थे। रजन, सुधीर, अजू और मैं। सूरज आसमान मे चढ रहा था। धुध छटती चली जा रही थी। घने वृक्ष के बावजूद पत्तो से छनते हुए प्रकाश चकते के रूप मे धरती पर बिखर रहा था। धुध के छटने से हमे आगे का माग इस तरह लगा मानो वह किसी ठूठ की तरह कट गया हो। हमे यात्रा प्रारम्भ किये हुए चार दिन बीत चुके थे।

हम कोई खास आगे नही बढे होगे कि आगे का माग फिर अवरुद्ध हो गया। चारो तरफ वृक्षो की टहनिया आपस मे इस तरह सटी हुई थी जैसे धागे गुथकर कपडे का रूप ले लेता है। रजन ने मुझसे कहा, "रोहित, ऐसा लगता है कि यह माग यही समाप्त हो गया है।"

"रजन, केवल एक ही तरीका है जिसके द्वारा सभावित माग का पता लगाया जा सकता है। मुझे वृक्ष के शिखर पर पहुचकर सर्वेक्षण करना चाहिये।" मैंने वृक्ष के झुरमुटे की ओर देखते हुए कहा।

"लेकिन हम बहुत थक चुके हैं। शायद तुम्हारा भी यही हाल होगा।" अजू ने मेरी ओर मुखातिब होते हुए कहा।

"यहा हमे थोडा सुस्ता लेना चाहिये।" सुधीर ने कधे से लटके हुए सामान को उतारते हुए कहा। "मुझे प्यास बहुत लग रही है।'

अजू ने मेरे कंधे पर लटके हुए जल के 'कूलजग' की ओर संकेत करते हुए कहा ।

हम सभी थक कर चूर-चूर हो रहे थे, प्यास से हमारे गले सूख चुके थे । गर्मी इतनी तेज थी कि हम सभी पसीने में नहा रहे थे ।

"ओह ! कूलजग मे जल बहुत कम रह गया है । यदि समीप ही कही पानी का सोता नही हुआ तो प्यास से हमारा हाल बेहाल हो जायेगा ।" अजू ने कूलजग मे पानी की मात्रा देखकर कहा ।

हम केवल घूंट भर ही पानी पी सकते थे । हमने वहा उपयुक्त जगह तलाशी और सुस्ती मिटाने लगे ।

थोडा आराम करने के पश्चात् मैं वृक्ष पर चढ गया । वृक्ष एक दूसरे से इस कदर जुडे हुए थे कि यह कहना कठिन था कि मुख्य तना कौनसा होगा । टहनियो के सहारे मैं न जाने कितने वृक्ष पार कर चुका था । यद्यपि मैंने आधी चढाई ही की थी लेकिन डालियो के जाल तथा वृहत घने पत्तो के कारण नीचे का दृश्य ओझल हो चुका था । मैंने ऊपर की ओर दृष्टि डाली । ऊपर पत्तो की इतनी घनी छतरी थी कि इसके पार का दृश्य दिखाई नही पड रहा था । पत्तो की सघनता के कारण छाया इतनी थी की चौतरफा घना अधकार छा गया था ।

मुझे अचानक पत्तो मे बीच सरसराहट सुनाई पडी । मैंने ध्वनि की ओर दृष्टि घुमाई । जैसे ही मेरी दृष्टि ऊपर की एक टहनी पर टिकी तो मेरी पुतलिया फैली की फैली रह गई ।

कोबरा फन फैलाये मुझ पर आक्रमण की फिराक मे था । उसके और मेरे बीच फासला केवल दस फीट रह गया था । मैं एक ऐसी स्थिति मे था कि मेरे हथियार भी उस समय मेरे रक्षक साबित नही होते । मैं बेबस और लाचार था । तभी अचानक गोल्डन टेल्ड मर्मोसेट बन्दर बीच मे आ गया तथा सर्प के फेंग का शिकार हो गया ।

इस बीच मुझे इतना समय अवश्य मिल गया कि मैं बायी ओर की डाली मे झूल गया । स्कूल में किये गये जिम्नास्टिक के अभ्यास से मुझे यह लाभ अवश्य मिला कि मैंने खतरनाक स्थिति सभाल ली और मैं साक्षात् काल के जबडे से बाल-बाल बच निकला । मने तुरन्त पिस्तौल निकाली और उस खखार सर्प पर फायर कर दिया । लेसर किरण के फायर के आगे उसने दम तोड दिया । फायर की आवाज से भयाक्रान्त जानवर इधर-उधर भागे । कुछ भयाक्रान्त पक्षी उड गये तथा कुछ नीचे जा गिरे ।

कुछ समय पश्चात् मैं वृक्ष के शिखर पर पहुच गया। चारो तरफ का दृश्य स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा था। दूर-दूर तक प्रकृति की मनोरमा छटा बिखरी हुई थी। चारो तरफ दृष्टि घुमाने से ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो हम घाटी के उच्च शिखर से कुछ ही दूरी पर हो। जिस वक्ष पर म बैठा था, वह मुख्य तना जिससे कि मने चढ़ना प्रारम्भ किया था, से करीब सौ फीट आगे था। मेरे आगे कुछ वृक्ष और होगे। और फिर ढलान प्रारम्भ हो गया था। यह ढलान आगे चलकर एक विशाल कैनियन (खाई) मे बदल गया था। लेकिन मैं यह समझ नही पा रहा था कि उस अवरुद्ध स्थल से घाटी के शिखर तक का मार्ग कौनसा है? लेकिन सूक्ष्म अवलोकन करने पर मुझे माग निकालने का उपाय सूझ गया।

मैंने पुन लौटने का इरादा किया लेकिन उस समय मेरी स्थिति अत्यन्त विकट हो गई जब मै किसी अन्य जगह पर उतर गया। मैं वक्ष पर पुन चढा, लेकिन मुझे वह माग नही दिखाई दिया जहा मेरे साथी रुके हुए थे।

वृक्षो के बीच भटकने से मेरी स्थिति अत्यन्त सोचनीय हो गई थी। मेरे शरीर से पसीना बहने लगा। हृदय की धडकन बढ गई थी। मैने अन्य साथियो से मिलने का भरसक प्रयत्न किया लेकिन मेरे प्रयास निरथक रहे। मैंने आवाजे दी लेकिन मेरी आवाज घाटी के जगली जानवरो की आवाजो के बीच विलीन हो गई। वानरो तथा वनमानुषो की आवाजे भी सुनाई पड रही थी। आरगउटान, बेबिन, गोरिल्ला, कम्पूचियन बदर, लॉर गिबन, स्पाइडर बदर की चीखे दिल को दहला रही थी। ये आवाजें साथियो के बीच मुझे कभी इतनी भयकर पतीत नहीं हुई थी।

अन्त मे हार-थक कर मैं घाटी के शिखर के अतिम वृक्ष पर पहुच गया था। आगे ढलान प्रारम्भ हो गया था। ग्राड कैनियन' अत्य त भयावना प्रतीत हो रहा था। मैं वृक्ष से उतर कर ग्राड कनियन की ओर बढा। मैं इसकी एक चट्टान पर बैठ गया

कैनियन नीली हरी लाइमस्टोन, भूरी सेन्ड स्टोन तथा गहरी लाल शेल चट्टानो की बनी हुई थी। जो कि बीच बीच मे हल्की लाल शले चट्टानो ने घेरे हुए थी। यहा सेडिमेट ग्लेशियर एक 'ड्रिफ्ट' के रूप मे जमा हो चुके थे। मैं दो तीन घटे विशाल खाई के किनारे बैठा रहा

लेकिन मेरे साथियो का कही अता-पता नही था। हो सकता है कि वे रास्ता खोजलें और यहा तक पहुच जाय। मैं एक क्षीण आशा संजोये हुए था। एक दो घटे और गुजरे लेकिन वे लोग नही आये। इस भयावह जगह पर केवल लेसर पिस्तौल ही मेरा एकमात्र साथी थी। दोपहर की तपन कुछ कम हो चुकी थी, साझ ढल चुकी थी। अस्त होते सूरज से आसमान मे रग-बिरगी आभाए छिटक रही थी। श्वेत पक्षी लाल, पीली, नीली, हरी तथा बेंगनी रोशनियो के बीच परबाजी कर रहे थे। ग्राड केनयन का यह सूर्यास्त मुझे माउट आबू की याद दिला रहा था।

मैंने खाई मे उतरने के बजाय चट्टान के सहारे चक्कर लगाना ही उचित समझा तथा बायी ओर बढा। कोई चार किलोमीटर का फासला ही तय किया होगा कि मुझे नरभक्षी बाघ की दहाड सुनाई पडी। कोई सौ फीट नीचे से यह आवाज सुनाई पड रही थी। मैंने दूरबीन से नीचे की ओर देखा। मेरे आश्चर्य का ठिकाना नही रहा। मेरे साथी बाघ से कोई चालीस फीट दूर चट्टानो के सहारे आगे बढ रहे थे। मुझे आश्चर्य हुआ कि वे वहा कैसे पहुच गये, लेकिन लगता था कि वे बाघ की घात से अनभिज्ञ थे।

मैंने तुरन्त बाघ की ओर लेसर पिस्तोल का निशाना साधा। लेसर किरणो के लिये दूरी कोई मायना नही रखती। वह बिखरती नही अत उसकी शक्ति मे कोई कमी नही होती। निशाना अचूक था। बाघ एक तेज दहाड के साथ उन पर झपटा लेकिन तब तक फायर की आवाज उन तक पहुच चुकी थी। वे बाल-बाल बचे। लेसर किरण उसके मस्तिष्क को बेधकर पार कर गई थी अत वह ज्यादा नही उछल सका तथा एक फायर मे ही ढेर हो गया था। लेकिन मरने से पहले उसकी दहाड ने विशाल खाई को गुजा दिया।

मैंने आवाज लगाई "अजू रजन सुधीर लेकिन ओरागउटान तथा अन्य जानवरो की आवाज मे मेरी आवाज दब गई।' फिर वे लोग इतनी दूर थे कि उन तक मेरी आवाज नही पहुँच सकती थी। उन्होने फायर की आवाज अवश्य सुनी। आवाज की दिशा मे उन्होने दूरबीन घुमाई। उन्होने हाथ हिलाये, इससे स्पष्ट था कि वे मुझे देख चुके थे। मैंने भी प्रत्युत्तर मे हाथ हिलाया। मुझे देखकर उनके चेहरो पर मुस्कराहट दौड गई। जिस जगह मैं खडा था वह एक सपाट तथा खडी चट्टान थी। इसके सहारे नीचे उतरना असम्भव था। लेकिन वे लोग चट्टान की तलहटी तक चढ आये थे। उन्होंने रस्सा चट्टान मे

फँसा कर मुझे नीचे उतारा। हम तेजी से बडी खाई मे नीचे उतरते चले गये। हमें इस बात की खुशी थी कि हम बहुत अधिक समय तक नहीं बिछडे थे। हम नरभक्षी बाघ को निहारते रहे। हमें दुख भी हुआ कि हमने एक ऐसे बाघ को मार डाला जो घाटी मे स्वच्छन्द रूप से अपनी नर्सगिक छटा बिखेर रहा था।"

हम कैनयन मे चलते हुए काफी नीचे उतर आये थे। तलहटी अब स्पष्ट नजदीक दिखाई पड रही थी। हम अब अवसादी शैलो के काफी निकट आ गये थे। एक जगह हमे लगा कि हमे उस स्थान को थोडा खोदना चाहिये। लेकिन खुदाई करने पर हमे कुछ हाथ नहीं लगा। यह भी आवश्यक नही था कि खुदाई करने पर हमे डाइनोसॉर के अवशेष प्राप्त हो जाते। रास्ते मे कई जगह हमने खुदाई की लेकिन निराशा ही हाथ लगी।

अब हम तलहटी मे आगे बढ रहे थे—हमे अवसादी शैल स्पष्ट दिखाई पड रहे थे। कही-कही हड्डियो के ढेर भी दिखाई पड जाते लेकिन यह स्पष्ट था कि ये हड्डियाँ नवजीवी युग से पुराने जीवो की नही होगी।

ग्राड कैनियन मे हम तनिक आगे बढे होगे कि हमे एक विचित्र धब्बा दिखाई पडा। हमने वहाँ खुदाई प्रारम्भ की। इस बार हमें पूरी आशा बध गई थी कि हमे डाइनोसॉर के अवशेष प्राप्त होगे। क्योंकि खुदाई के लक्षण इसी बात को प्रकट कर रहे थे। खुदाई करने पर प्रागैतिहासिक काल की मिट्टी तथा हड्डियाँ निकली। मैं स्वय एक जीवाश्म विज्ञानी था। यह मिट्टी तथा हड्डियाँ स्पष्ट रूप से क्रिटेशस पीरीयड की रही होगी।

इस ढेर के हटने पर एक चट्टान का उभार दिखाई दिया। इसकी मिट्टी हटाने पर चिपकी हुई हड्डी उभर आई। हड्डियो तथा मिट्टी हटाने से एक तरफ रखे ढेर ने एक तिकोने प्लास्क का रूप ले लिया था।

हम बडी सावधानी से चट्टान के टुकडे से मिट्टी तथा कीचड हटाते रहे। चट्टान के टुकडे पर हड्डी उभर आने से यह स्पष्ट रूप से दिखाई पडने लगी थी। इसे देखकर हमारी आँखें फटी रह गई। यह स्पष्ट किसी डाइनोसॉर की हड्डी थी।

"रजन! इस हड्डी की ओर देखो क्या तुम नही सोचते कि यह हड्डी क्रिटेशश काल के किसी भारी भरकम पशु की रही होगी।" मैंने हड्डी की ओर सकेत करते हुए कहा।

"हाँ, रोहित ! यह हड्डी वर्तमान युग के किसी भी प्राणी से नहीं मिलती है।" रजन ने सावधानीपूर्वक इस कंकाल पर से मिट्टी हटाते हुए कहा।

"लेकिन यह किस जन्तु की होगी ?" सुधीर ने चट्टान से उभरे हुए कंकाल के हिस्से की ओर देखते हुए कहा।

"यह तो मैं नहीं कह सकता कि किस जन्तु की यह हड्डी होगी जब तक यह पूरी तरह नहीं उभर जाये।" मैंने जवाब दिया।

"लेकिन यह शरीर के किस भाग की हड्डी है ?" मंजु ने उत्सुकता जाहिर की।

"यह कोई 'गडल' हो सकता है, शायद कूल्हे का हो।" मैंने गडल के किनारे-किनारे आहिस्ता से हाथ घुमाते हुए कहा।

इसके पश्चात् हमने सावधानीपूर्वक चट्टान की खुदाई करना प्रारम्भ कर दिया। हमारे पास खुदाई के लिये आधुनिकतम उपकरण थे। हड्डी पर से मिट्टी व कीचड हटाने पर गडल का एक हिस्सा अपने सम्पूर्ण आकार मे दिखाई पडने लगा। हड्डी का एक तरफ का हिस्सा चट्टान से पूरी तरह चिपका हुआ था। अन्य तीन तरफ का हिस्सों पर मिट्टी, पत्थर व कीचड की अनेक परते था। इन परतो को हटाने मे हमे अधिक कठिनाई नही हुई लेकिन चट्टान वाले भाग से हड्डी अलग करने मे काफी समय लग गया। हमे सबसे बडा डर यह था कि कही हड्डी चट्टान से पृथक् करने समय चूर-चूर होकर बजरा की भाति ही बिखर जाये। लेकिन हमार यह भय निर्मूल साबित हुआ जब हमने बिना किसी नुकसान के इसे चट्टान स पृथक् कर लिया। लम्बे काल का इस हड्डी पर कोई विशेष प्रभाव नही पडा। हड्डी वसी की वैसी सख्त थी, हड्डी को चट्टान से पृथक् करने पर वह हमे सब तरफ से दिखाई पड रही थी। सर्वप्रथम हमने हड्डी का फोटो लिया, क्योकि किसी दुघटनावश यदि हम हड्डी को प्रयोग-शाला तक नही ले जा सके तो फोटोग्राफ का प्रमाण तो रहेगा ही।

"रजन, मेरा अनुभव कहता है कि यह हड्डी अवश्य डाइनोसॉर 'टाइरेनो सौरस रेक्स' की 'एसिटाबुलम' है।" मैंने रजन की ओर सिर घुमाते हुए कहा।

"कितनी विशाल एसिटाबुला। मैंने इतनी विशाल कूल्हे की हड्डी अपनी आखो से नही देखी।"

"इसका वजन कम से कम-दस टन होगा ।"

एक तरफ उसका जबडा पडा मिला । मिट्टी तथा कीचड हटाने से वह स्पष्ट उभर आया था यद्यपि उसके जबडे का आधा हिस्सा ही मिला ।

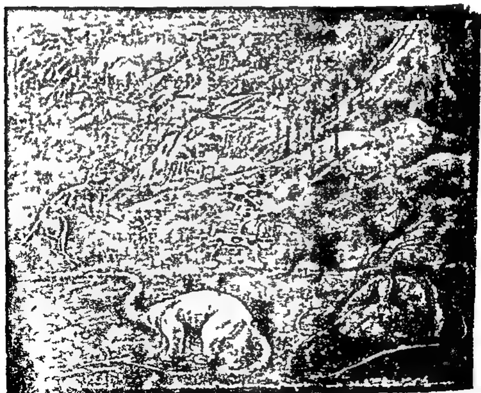
"रोहित, यह जबडा कितना विशाल होगा ! इसका आधा भाग ही हमे बहुत बडा लग रहा है ।" अजु ने प्रश्न किया ।

"हा टाइरेनोसौरस रेक्स का जबडा इसके शरीर के अनुपात मे अत्यन्त विशाल था ।'

"इसके जबडो मे कई नुकीले दात दिखाई पड रहे हैं ।' सुधीर बोला ।

"हा, इसके जबडो मे हजारो रदनक दन्त थे । ये दात चीरने-फाडने के उपयुक्त थे ।"

"तब तो यह काफी खूखार होगा ?" अजू ने प्रश्न किया ।



"हा, यह अत्यन्त खूखार था। इसीलिये यह टाइरेन्ट लिजर्ड कहलाता है। भारी-भरकम ब्रोटोसॉर तथा डिप्लोडोकस को यह यू चीर-फाड देता था जैसे वो खिलौने हो।" मैंने टाइरेनोसौरस के दातो पर उगली फेरते हुए कहा।

"आश्चर्य होता है इसकी फुर्ती की बात सुनकर।" अजू उसके खखार दातो की ओर देखकर बोली।

हम थोडा और आगे बढे। हमे इतना अहसास अवश्य हो गया था कि यहा हमे अन्य डाइनोसॉर के जीवाश्म भी मिल सकते है। ड्रिफ्ट मे जहाँ भी हमे डाइनोसॉर के जीवाश्म मिलने की सभावना थी, हमने वहाँ खुदाई की। जहाँ हमे चट्टान उखाडने की आवश्यकता हुई, हमने पेंसिल डायनेमाइट का उपयोग किया।

इसी प्रकार से जब हमने एक अवसादी चट्टान के टुकडे उखाडे तो हमे गड्ढे मे कुछ अण्डे दिखाई पडे। हमे आश्चर्य हुआ लाखो वर्ष बीतने पर भी ये अण्डे कसे सुरक्षित रहे। मैं समझता हू कि इन अण्डो के चारो ओर कीचड तथा मिट्टी की एक परत चढ गई थी। इस परत ने एक कठोर कवच का कार्य किया ,तथा हवा एव जल से इनकी सुरक्षा की। गड्ढे मे रहने से चट्टान का बोझ इन पर नही पडा। मिट्टी की परत हटाने पर ये साफ चमक रहे थे। हमे लगा जैसे ये तरोताजा हो और अभी फूटने वाले हो और हमे शायद जीवित डाइनोसॉर दिखाई पडे।

"रोहित ये अण्डे किस प्राणी के होगे।" अजू ने अण्डा की ओर देखते हुए मुझसे कहा।

"ये प्रोटोसिरेटोप्स के अण्डे हो सकते हैं। प्रोटोसिरेटोप्स इन अण्डो को इस प्रकार गड्ढो मे छिपा दिया करते थे।"

"प्रोटोसिरेटोप्स ?"

"प्रोटोसिरेटोप्स एक टोर्ड डाइनोसॉर है। यह करीब छ से आठ फीट लम्बा होगा। तथा इसकी नाक पर छोटे तोते की चोच की तरह के होन पाय जाते थे।"

"क्या इससे पहले भी इनके अण्डे प्राप्त हुए है ?" सुधीर ने मुझसे प्रश्न किया।"

"हा, मगोलिया में केवल इनके अण्डे ही नही बल्कि भ्रूण भी प्राप्त हुए हैं। इससे इस पृथ्वी पर डाइनोसॉर के अण्डे दने का प्रमाण मिला।"

"इसका वजन कम से कम-दस टन होगा।"

एक तरफ उसका जबडा पडा मिला। मिट्टी तथा कीचड हटाने से वह स्पष्ट उभर आया था यद्यपि उसके जबडे का आधा हिस्सा ही मिला।

"रोहित, यह जबडा कितना विशाल होगा! इसका आधा भाग ही हमे बहुत बडा लग रहा है।" अजु ने प्रश्न किया।

"हा टाइरेनोसोरस रेक्स का जबडा इसके शरीर के अनुपात मे अत्यन्त विशाल था।'

"इसके जबडो मे कई नुकीले दात दिखाई पड रहे हैं।' सुधीर बोला।

"हा, इसके जबडो मे हजारो रदनक दन्त थे। ये दात चीरने-फाडने के उपयुक्त थे।"

"तब तो यह काफी खूखार होगा?" अजू ने प्रश्न किया।



"हां, यह अत्यन्त खूखार था। इसीलिये यह टाइरेन्ट लिजड कहलाता है। भारी-भरकम ब्रोंटोसॉर तथा डिप्लोडोकस को यह यूं चीर-फाड़ देता था जैसे वो खिलौने हों।" मैंने टाइरेनोसौरस के दांतों पर उंगली फेरते हुए कहा।

"आश्चर्य होता है इसकी फुर्ती की बात सुनकर।" अंजू उसके खूंखार दांतों की ओर देखकर बोली।

हम थोड़ा और आगे बढ़े। हमें इतना अहसास अवश्य हो गया था कि यहां हमें अन्य डाइनोसॉर के जीवाश्म भी मिल सकते हैं। ड्रिफ्ट में जहां भी हमें डाइनोसॉर के जीवाश्म मिलने की संभावना थी, हमने वहां खुदाई की। जहां हमें चट्टान उखाड़ने की आवश्यकता हुई, हमने पेंसिल डायनेमाइट का उपयोग किया।

इसी प्रकार से जब हमने एक अवसादी चट्टान के टुकड़े उखाड़े तो हमें गड्ढे में कुछ अण्डे दिखाई पड़े। हमें आश्चर्य हुआ लाखों वर्ष बीतने पर भी ये अण्डे कैसे सुरक्षित रहे। मैं समझता हूं कि इन अण्डों के चारों ओर कीचड़ तथा मिट्टी की एक परत चढ़ गई थी। इस परत ने एक कठोर कवच का कार्य किया, तथा हवा एवं जल से इनकी सुरक्षा की। गड्ढे में रहने से चट्टान का बोझ इन पर नहीं पड़ा। मिट्टी की परत हटाने पर ये साफ चमक रहे थे। हमें लगा जैसे ये तरोताजा हों और अभी फूटने वाले हों और हमें शायद जीवित डाइनोसॉर दिखाई पड़ें।

"रोहित ये अण्डे किस प्राणी के होंगे।" अंजू ने अण्डों की ओर देखते हुए मुझसे कहा।

"ये प्रोटोसिरेटोप्स के अण्डे हो सकते हैं। प्रोटोसिरेटोप्स इन अण्डों को इस प्रकार गड्ढों में छिपा दिया करते थे।"

"प्रोटोसिरेटोप्स ?"

"प्रोटोसिरेटोप्स एक टोर्न्ड डाइनोसॉर है। यह करीब छः से आठ फीट लम्बा होगा। तथा इसकी नाक पर छोटे तोते की चोंच की तरह के होर्न पाये जाते थे।"

"क्या इससे पहले भी इनके अण्डे प्राप्त हुए हैं ?" सुधीर ने मुझसे प्रश्न किया।"

"हां, मंगोलिया में केवल इनके अण्डे ही नहीं बल्कि भ्रूण भी प्राप्त हुए हैं। इसमें इस पृथ्वी पर डाइनोसॉर के अण्डे देने का प्रमाण मिला।"

"हा मुझे याद है प्रोटोमिरेटोप्स के बारे मे, कि एक शुतुर्मुर्ग की तरह का डाइनोसॉर इसके अण्डे चुरा लिया करता था। इसी से उस डाइनोसॉर का नाम 'ओवीरेप्टर' पडा। केवल तीन फीट लम्बा यह प्राणी कितना चुस्त था।" रजन ने अपनी बात जोडते हुए कहा।

आकाश मे तारे टिमटिमाने लगे थे। पुन लौटने का कोई सवाल ही नही था, क्योकि हमे कुछ और जीवाश्म प्राप्त करने थे। साझ ढलते ही हमने सग्रह का काय समाप्त कर दिया था। हम तलहटी से कुछ ऊपर आ गये तथा चट्टानो वृक्षो की हमने ओट ली। रात्रिचर की आवाजें गूजने लगी थी। सुरक्षा के लिये हमारे पास आधुनिकतम हथियार थे। रजन के पास न्यूट्रोन पिस्तौल, सुधीर के पास थोरियम गन, अजू के पास निर्वान पिस्तौल तथा मेरे पास लेसर पिस्तौल थी। इसके अतिरिक्त भी हमारे पास अन्य विध्वसक थे। लेकिन फिर भी हम सजग थे।

हमे भूख लग आई थी। आग जलाकर अजू ने खाना पकाया। खाना खाने से हमारी थकान दूर हुई। आग को हमने जलाये रखा ताकि जगली जानवर इससे डरते रहे। एक दो बार बडी-बडी चमगादडो ने झपट्टा मारा। हमे लगा कि प्रागैतिहासिक जीव 'टैरोडकटाइल' हम पर आक्रमण कर रही हो। चमगादड के पखों की विकरालता भयावह थी। लेकिन वे हमारी पिस्तौल की किरण के आगे टिक नही सकी।

दूसरे दिन पौ फटते ही हमने फिर प्रागैतिहासिक जीवो के अवशेष सग्रह करना प्रारम्भ कर दिया था।

'रोहित, ये डाइनोसॉर अचानक पृथ्वी से कसे गायब हो गये ?" अजू ने मुझसे ग्राड केनियन मे आगे बढते हुए प्रश्न किया।

"यह उत्तर क्रिटेशस युग की बात है। सूरज आसमान मे चमक रहा था। आकाश साफ था। दोपहर उजली दिखाई पड रही थी। डाइनोसॉर रक्ततप्त सूरज के नीचे ट्रापिकल झाडियो को शातिपूवक चर रहे थे। एक टाइरेनोसोरस, आहार के हाइड्रोसोर के बच्चो की घात मे बैठा था, जब ये बच्चे अपने घोसलों के आस-पास दौड लगा रहे थे। ट्रकोडोन किसी ब्रोन्टोसॉरस की घात मे था जो साइकेडेल्स की पत्तियो को खाने मे तल्लीन था। स्टैगोसोरस तथा ट्राइसिरेटोप्स घास की लम्बी-लम्बी ब्लेड पर स्वतत्रतापूर्वक

विचरण कर रहे थे। स्पिनोसॉरस तथा इलेफ्रोसॉरस घास की लम्बी ब्लेडो पर दौड लगा रहे थे। अचानक इनकी मस्ती गायब हो गई। पहाड जितनी एक बडी चट्टान आकाश से भारी गर्जना के साथ पृथ्वी को प्रकपित करते हुए गिरी। धरती से एक अशुभ धूलि बादल मशरूम की शक्ल लेता हुआ आकाश मे उठा। कुछ दिनो मे ही सारी पृथ्वी पर काले बादल छा गये। यहा तक कि उन्होने सूय को भी ढक लिया। सवत्र अधेरा छा गया। वायुमडल ठडा हो गया। इस ठड को डाइनोसॉर नही सह सके। तुषारपात होने से सारी पृथ्वी बफ से ढक गई। चारो तरफ बफ ही बर्फ थी। यह ठड तथा अधेरा पृथ्वी को कई सप्ताहो तक जकडे रहा। पेड-पौधे सूय की रोशनी पाने से वचित हो गये। वे भोजन बनाने से वचित रह गये। अत इनका अस्तित्व समाप्त हो गया। अनेक डाइनोसॉर इन पेड-पौधो पर निभर थे। वे तुरन्त समाप्त हो गये। मासाहारी डाइनोसॉर जो इन पर निभर रहते थे वे भी इस पृथ्वी पर ज्यादा नही टिक सके। उनका भी अस्तित्व समाप्त हो गया।

"रोहित, वह बडी वस्तु क्या हो सकती है जिससे डाइनोसॉर का समस्त ससार नष्ट हो गया ?" अजु ने अपनी जिज्ञासा प्रकट की।

"वह डाइनोसॉर पर कहर गिराने वाली वह वस्तु धूमकेतु या क्षुद्र तारा या फिर बाह्य अतरिक्ष का कोई अन्य पिंड हो सकता है। यह घटना कोई छ करोड पचास लाख वप पूव घटी होगी तथा इसने डाइनोसॉर के कोई सोलह करोड वर्षों के प्रभुत्व को एक झटके मे खत्म कर दिया। "आश्चय होता है डाइनोसॉर का केवल एक झटके मे खात्मा हो गया ?"

"हाँ, नॉबल पुरस्कार से सम्मानित विज्ञानी ल्यूइस अल्वरेज के द्वारा प्रतिपादित 'एस्टरॉइड-इम्पेक्ट' सिद्धान्त को वैज्ञानिक जगत मे काफी बल मिला। क्षुद्र तारे के गिरने से डाइनोसॉर का सामूहिक नरसहार हो गया था।"

"रोहित, यह बात कम गले उतरती है कि बाह्य-अतरिक्ष के पिंडो द्वारा डाइनोसॉर का सामूहिक-सहार हुआ होगा ?" रजन ने सारकोसोरसें के हाथ की हड्डी को घुमाते हुए मुझसे प्रश्न किया।

"इस बात के स्पष्ट प्रमाण है। विज्ञानियो के एक दल ने क्रिटेशस युग की अवसादी चट्टान, की सबसे ऊपरी परत मे एक दुर्लभ पदार्थ पाया। यह दुर्लभ पदार्थ था 'इरिडियम'।—यह पदार्थ पृथ्वी पर नही के बराबर पाया जाता है लेकिन यह पदार्थ उल्कापिंड तथा क्षुद्रतारो मे दस हजार गुणा अधिक पाया गया है। क्रिटेशस से ऊपरी अवसादी पत टशरी मे इरिडियम की बहुत कम मात्रा पायी गई। क्षुद्र तारा पृथ्वी से इतनी जोर से टकराया कि इरिडियम वाष्पित होता हुआ समस्त आकाश मे फैल गया। जब इरिडियम जमीन पर बैठा तो वह अवसादी परतो मे समा गया। इस क्षुद्र तारे के धमाके से पृथ्वी से इतनी मिट्टी उडी कि उसने सूर्य को ढक लिया तथा हरे पत्तो मे प्रकाश सलेषण की क्रिया बद हो गई। विज्ञानियो ने इरिडियम की मात्रा को पृथ्वी के अलग-अलग अस्सी स्थानो पर पाया।

"लेकिन रोहित यह इरिडियम पृथ्वी के गर्भ से भी निकल सकता है। 'हवाई के किलिया' ज्वालामुखी से भी इरिडियम की कुछ मात्रा निकली है।" सुधीर ने प्रश्न किया।

'किन्तु इसी क्रिटेशस-टरशरी अवसादी परत की सीमा पर रसायनविद् जेफी नेन्सोली ने एक विशिष्ट प्रकार का अमीनो अम्ल 'अल्फा-एमीनो आइसो ब्यूटाइरिक एसिड' भी पाया जो किसी ज्वालामुखी-उद्‌गार मे नही निकला। यह अमीनो अम्ल पृथ्वी के एक-आध किस्म के जीवाणु के अतिरिक्त केवल उल्कापिंड मे ही पाया गया और वह भी 'कार्बोनीशस कोन्ड्राइट' किस्म की उल्का पिंड मे या फिर वह इन अवसादी पर्तों मे पाया गया। क्या यह इस बात को सिद्ध नही करती कि पृथ्वी से एक विशाल उल्कापिंड या किसी क्षुद्र-तारे की टकराहट से डाइनोसॉर हमेशा के लिये गायब हो गये?" मुझे एक जगह डाइनोसॉर का अवशेष मिलने का सदेह हुआ। हम वही रुक गये और अवसादी चट्टानो को खोदने लगे। अवसादी निक्षेप (मिट्टी) हटाते हुए मैंने यह बात कही।

"इसका आशय तो यह हुआ कि डाइनोसॉर का सामूहिक सहार आकस्मिक हुआ। अत्यन्त दुर्भाग्यशाली रहे ये डानोसॉर।" अजू ने चट्टान से मिट्टी हटाते हुए कहा।

"हा, लेकिन इस तरह के सामूहिक सहार पृथ्वी पर कई बार हुए। और तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि ये सामूहिक सहार नियमित काल मे हुए।"

"नियमित काल से ?"

"हा पृथ्वी पर जीवो का सामूहिक सहार निश्चित काल से हुआ। प्रत्येक 2 करोड साठ लाख वष या छब्बीस मिलियन वर्ष मे पृथ्वी पर भूचाल आया। वातावरण मे अचानक परिवतन हुआ। बाह्य अतरिक्ष से कोई पिंड गिरा था। पृथ्वी पर बफ छा गई। सूर्य धूल के कोहरे से ढक गया। वनस्पति समाप्त हो गई और फिर जीव-जतु की अधिकाश जातियाँ विलुप्त हो गईं। इससे पूव जीवो का सामूहिक सहार परमिअन युग के अतिम दिनो हुआ था जबकि उभयचारी वर्ग का विनाश हुआ था। ऐसा नही था कि सामूहिक-सहार की गति स्थिर रही हो। कम्प्यूटर सगणना यह दर्शाती है कि इस विनाश से कुल बारह शिखर बने, लेकिन आठ ऐसे शिखर थे जो छब्बीस मिलियन वप चक्र के निकट थे। विज्ञानी रॉप तथा सेपकोस्की ने इस प्रकार प्रमाणित किया कि इस पृथ्वी पर सामूहिक सहार निश्चित समय मे हुआ।

"क्या विज्ञानी यह निश्चित रूप से नही कह सके वह बाह्य अतरिक्ष का कौनसा पिंड होगा ?" सुधीर ने प्रश्न किया। अब तक काफी मिट्टी हटाई जा चुकी थी। डाइनोसॉर की हड्डी उभरने लगी थी।

"हाँ, कुछ विज्ञानियो ने अनुमान लगाया है। उनका कहना है कि यह सामूहिक सहार हमारे सूय के साथी तारे 'निमेसिस' के कारण हुआ।"

"बडा आश्चर्य है कि सूर्य का भी कोई साथी तारा है ?" अजू ने विस्मित होते हुए कहा।

यह निमेसिस सूय का कोई वास्तविक साथी तारा नही है बल्कि एक सैद्धान्तिक, अदृश्य, तथा अज्ञात तारा है। यह अपनी दीघ वृत्ताकार कक्षा मे चक्कर लगाता हुआ प्रत्येक दो करोड साठ लाख वप मे हमारे सौर मडल के निकट आ जाता है तथा धूमकेतुओ की वर्षा प्रारम्भ कर देता है। आप लोग जानते ही हैं कि धूमकेतुए प्रचुर मात्रा मे प्लूटो के बाहर अपने अडाकार कक्षा मे सूय का चक्कर लगाती है। निमेसिस तारा सौरमडल के इतना निकट आ जाता है कि धूमकेतुओ की कक्षाए इसके गुरुत्वाकषण पाश से विघटित हो जाती हैं। इन धूमकेतुओ की वर्षा प्रारम्भ हो जाती है और कोई न कोई टुकडा पृथ्वी पर पहुँच कर कहर बरपा देता है।

"लेकिन यह घटना निश्चित काल मे होती है। यह बडे आश्चय की बात है।" रजन ने अपने काम मे सलग्न रहते हुए कहा।

"हाँ, विज्ञानी डॅनियल व्हिटमाइर तथा जोन मेटसे तो एक कदम और आगे बढे । उन्होने हमारे सौर मडल मे दसवे ग्रह की कल्पना की थी । उनके अनुसार यह ग्रह धूमकेतुओ के बादल के बीच बनी सुरग से गुजरता हुआ सूर्य के चारो ओर चक्कर लगाता है । आश्चर्य तो यह है कि हमारे सौर मडल का यह दसवाँ ग्रह प्रत्येक दो करोड साठ लाख वर्ष मे धूमकेतुओ को अपनी कक्षा से खदेड देता है । और इनमे से एक टुकडा पृथ्वी से टकराकर जीवो के सामूहिक सहार का कारण बनता है ।

"क्या ही अच्छा होता यदि दसवें ग्रह का पता चल गया होता ?" अजू ने मुझसे कहा ।

"हाँ, एक अन्य विज्ञानी माइकेल रोम्पिनो तथा रिचर्ड स्टोथस ने धूमकेतु को अपनी कक्षा से खदेडने का एक अन्य कारण बताया । उनके अनुसार हमारा सौरमडल जैसे ही आकाश गगा के केन्द्र के निकट चक्कर लगाता है तो वह चकरी की तरह घूमने की बजाय ऊपर-नीचे भटकने लगता है । यह आकाश गगा के केन्द्रीय तल मे प्रत्येक तीन करोड तीस लाख वर्ष मे गुजरता है । आकाश गगा का तल केन्द्र मे घुमडती गैस तथा धूलि बादलो से घनीभूत होता है अत हमारे सौर मडल का कुल गुरुत्वाकर्षण खिंचाव धूमकेतुओ को पृथक् करने मे समक्ष होता है । कुछ विज्ञानियो ने तीन करोड वर्ष का समय आंका । आशा है अन्य विज्ञानी इस काल को अपने परीक्षणो से और निकट ले आयेगे ।

"इसका मतलब है पृथ्वी पर जीवो का सामूहिक सहार प्रत्येक दो करोड साठ लाख वर्षों मे हुआ है ।" रजन ने निष्कर्ष निकालते हुए कहा ।

"रोहित, यह बात तो भगवान शिव के काल-चक्र के समान हुई । पहले जीवो का सहार और फिर पुनर्निर्माण ।" अजू ने पूर्ण रूप से उभर आये डाइनोसॉर की ओर देखते हुए कहा ।

"यह डाइनोसॉर बडा विचित्र दिखाई पड रहा है ।" सुधीर ने डाइनोसॉर की ओर देखते हुए कहा 'यह टार्चिया है ।'

हम तनिक आगे बढे होगे कि हमे डाइनोसॉर के जीवाश्म मिलने का सयोग हुआ । खुदाई करने पर हमे डाइनोसॉर के अण्डे झुड के रूप मे मिले । इस प्रकार आगे भी हमे उनके अण्डे प्राप्त हुए ।

"रोहित, लेकिन 'सामूहिक सहार' की धारणा का विरोध करने वाले विज्ञानियो का कहना है कि प्राणियो का विलोप धीरे-धीरे हुआ । क्रिटेशस के अतिम काल मे जातियो के विनाश की गति बढ गई थी

जो क्रिटेशस टर्शरी की सीमा पर उच्चतम हो गई थी। उसके बाद इनका विनाश सामान्य गति से हुआ।' अजू अण्डो को उठाते हुए बोली।

"अजू, तुम इन अण्डो को देख रही हो न। ये धीरे-धीरे नष्ट होने लगे। क्योंकि गम तापक्रम के कारण इनके आवरण पतले होते गये। अधिक गर्मी के कारण चूजे भी अण्डे सेना बद कर देते हैं क्योंकि चूजे के केल्शियम उपापचय क्रिया पर प्रभाव पडता है।" सुधीर ने इस सिद्धान्त को बल देते हुए कहा।

"लेकिन केवल डाइनोसॉर की एक जाति से प्राप्त तथ्यो के आधार पर हम इस बात की पुष्टि नही कर सकते। फिर अन्य डाइनोसॉर के अण्डे पतले क्यो नही हुए। अत अधिकाश जीवाश्म विज्ञानियो ने धीमी गति से प्राणियो के विनाश की धारणा को नकार दिया।"

मैंने एक अण्डे को अपने हाथ मे लेते हुए आगे कहा "सामूहिक विनाश होने वाली जातियो तथा सामान्य अवस्था मे समाप्त होने वाली जातियो मे मूलभूत अतर है। सामूहिक विनाश के कारण मरने वाली जातियाँ की किस्मे एक दूसरे के अत्यन्त निकट होती हैं—जेनेटिक आधार पर ये जातियाँ एक सीमित पर्यावरण के लिये अनुकूलित होती है। निकट सम्बन्धित इन जातियो मे पर्यावरण मे बदलाव को सहन करने की क्षमता कम होती है। वातावरण मे बदलाव को सहन करने की क्षमता कम होने के कारण ही सामूहिक विनाश के ये शीघ्र लपेट मे आते हैं। लेकिन जो जातियाँ सख्या मे कम होती है, उनमे वातावरण मे बदलाव को सहने की क्षमता अधिक होती है और वे सामूहिक विनाश से बच जाते हैं। और यह भी स्पष्ट है कि डाइनोसॉर की अधिकाश जातिया निकट सम्बन्धी थी अत उनका सामूहिक विनाश हुआ। इससे जीवो के सामूहिक विनाश के सिद्धान्त को ही बल मिला।

"इसका मतलब तो है कि हमे विकास क्रम के सिद्धान्त को नये परिप्रेक्ष्य मे देखना होगा।" अजू ने डाइनोसारिक अण्डो को सगृहीत करते हुए कहा।

अब तक हम "डाइनोसॉर की बहुत-सी जातियो के अण्डे एकत्रित कर चुके थे। हमारे लिये डाइनोसॉर के अण्डे सगृहीत करना अत्यन्त आवश्यक था। प्रोफेसर सुधाशु को इन्ही अण्डो की आवश्कयता थी।

अब हमने डाइनोसॉर के जीवाश्म एकत्रित करने का अभियान समाप्त कर दिया था। हम पर्याप्त मात्रा मे इनके जीवाश्म एकत्रित कर चुके थे। इसके बाद हमने घर लौटने का प्रोग्राम बनाया।

हम विज्ञानी सुधाशु के निवास स्थल विभिन्न जीवाश्मो सहित पहुचे। जब हमने उन्हे डाइनोसॉर के विभिन्न जीवाश्म सौंपे तो उनकी खुशी का पारावार नही रहा।

विज्ञानी सुधाशु कृत्रिम जीन का निर्माण करने मे निष्णात थे। उन्होने अनेक प्राणियो को परखनली मे तैयार किया था। यहाँ तक कि मानव बेबी को भी।

लेकिन वे अभी विश्व के समक्ष यह उद्घोषणा नही करना चाहते थे कि वे जीवाश्मिक अण्डो का क्या करने जा रहे हैं। जीवाश्मिक अण्डो को प्राप्त करने के पश्चात् उन्होंने अपनी दिनचर्या बदल दी थी।

कान्फ्रेंसो मे भाग लेना उन्होंने बन्द कर दिया। यहाँ तक कि अन्तर्राष्ट्रीय 'कान्फ्रेंस' के निमन्त्रण को भी अस्वीकार कर दिया। हम लोगो से भी उन्होने मिलना-जुलना बद कर दिया था। वह नितात अकेलेपन का जीवन व्यतीत करने लगे थे। प्रयोगशाला से निकले हुए उन्हे कई कई सप्ताह निकल जाते। जहाँ वे पहले हँसमुख थे। अब उनके चेहरे से गभीरता झलकने लगी थी। उन्होने अपनी दाढी काफी बढा ली थी। अजू जो कि उनकी प्यारी लाडली बेटी थी, प्रयोगशाला मे ही खाना ले जाती। अजू ने कई बार यह जानना चाहा कि उसके पिता किस प्रयोग मे इतने अधिक व्यस्त हो गये हैं, लेकिन उसे सफलता नही मिली। हम अभी उनके कार्य से अनभिज्ञ थे। केवल इतना ही समझ सके कि विज्ञानी सुधाशु किसी महान् उद्देश्य की प्राप्ति मे लगे हुए हैं, अत हमने भी कभी उनके कार्य मे बाधा पहुचाने की कोशिश नही की। जब कभी भी उन्हे किसी उपकरण अथवा सामान की आवश्यकता होती, वह हम उन्हे प्रयोगशाला मे जुटा देते। जब भी हम उनसे बात करना चाहते तो वे इतना अवश्य कहते कि उन्हे कम्प्यूटर ग्राफिक्स पर भरोसा है। यह उनके लिये तीसरी आँख थी। अनेक आधुनिकतम कम्प्यूटर उनकी प्रयोगशाला मे थे। बिहेव कम्प्यूटर से लेकर 'नोवेट' तक।

उन्हे इस बात का भरोसा था कि एक न एक दिन उन्हे अवश्य सफलता मिलेगी। उन्हे इस तरह प्रयोग करते हुए पाच वर्ष बीत चुके

थे। फिर भी उन्होंने यही कहा कि मैं नही जानता कि इस अनुसंधान मे मुझे कितनी सफलता मिली है। यहाँ तक कि यह सफलता 'नही' के बराबर हो सकती है।

दिन बीतते चले गये फिर वर्ष दस वर्ष बीत चुके थे। हमारे धैर्य का बाँध टूट चुका था। हमने विज्ञानी सुधाशु की ओर ध्यान देना बद कर दिया था क्योंकि और अधिक प्रतीक्षा करना हमारे लिये असह्य हो गया था। हम सब अपने-अपने कार्यों मे लग चुके थे। हम सभी का ध्यान उनसे हट चुका था। अजू का विवाह हो चुका था। अजू के विवाह के समय अवश्य उन्होंने अपनी बेटी का कन्यादान किया था लेकिन पुन वे अपनी दुनिया मे खो गये। तत्पश्चात एक सहायक को उन्होंने अवश्य रख लिया जो उनके काम मे हाथ बटाती थी। कुछ वर्ष पश्चात् हम उन्हे भूल चुके थे। हम सभी पारिवारिक जीवन यापन करने लगे थे। सरकारी पदो पर होने के कारण हमारा ज्यादा ध्यान अनुसधान की अपेक्षा परिवार मे, तथा सरकारी पदोन्नति के राजनीतिक दाव-पेच मे चला जाता था।

पन्द्रह वर्ष बीत चुके थे। हम सुधाशु को भूल चुके थे लेकिन एक भोर के समय जबकि मैं अपने निवास स्थल के लॉन मे बेंत की कुर्सी मे धसा अपनी नन्ही सी प्यारी बिटिया को खिला रहा था, अखबार वाले ने दैनिक पत्र फेंका। मेरी निगाह अखबार मे बडे-बडे अक्षरो वाली हैड लाइन्स पर टिक गई। भारत की जेनेटिक इजीनिरिंग मे अभूतपूर्व सफलता के कारण डॉ सुधाशु कृत्रिम जीव से जीवित डायनोसॉर निर्मित करने मे सफल हो गये। इसे आगे समझाया गया था कि डॉ सुधाशु को प्राप्त जीवाश्म अण्डो के जीव का उन्होंने गहन अध्ययन किया। कम्प्यूटरो की सहायता से वे एक जीवनमय घोल हुवहू 'जीवाश्म-जीन' की कॉपी करने में सफल हो गये थे। यह जीन प्राणमय था। इस जीन के सश्लेपण से उन्होंने 'जर्म सल' का निर्माण किया जो कि अत्यन्त दुष्कर कार्य था। इस स्टेज तक आने मे उनको दस से बारह वर्ष लग गये। एक बार 'जम सैल' के सश्लिष्ट हो जाने के पश्चात् सेल विभेदीकरण की बैटरी प्रारम्भ हो गई और कुछ ही समय पश्चात् अण्डे से भ्रूण प्राप्त हुआ, जिसे कृत्रिम गर्भाशय मे परिवर्द्धित किया गया और इसी का परिणाम था शिशु डायनोसॉर-साल्टोपूकस।

साल्टोपूकस वास्तव मे डायनोसॉर के पूवज थे। यही नही ये विकास की महत्वपूर्ण कडी थे जिससे कालान्तर मे घडियाल तथा पक्षी

के साथ-साथ डाइनोसॉर तथा विग्ड रेप्टाइल विकसित हुए। साल्टो, पूकस एक थीकोडोन्ट डाइनोसॉर है। विश्व के ख्याति प्राप्त विज्ञानियो ने इसे जेनेटिक इजीनियरिंग का सबसे बडा कमाल कहा है।

अखबार पढने के पश्चात मुझे समझ मे आया कि हमसे डायनोसॉर के अण्डे एकत्रित करवाने का प्रयोजन क्या था? लेकिन यह प्रयोजन हमे पहले बताया गया होता तो हम डा सुधाशु को सनकी तथा जिद्दी कहते और शायद उनके काय मे रुकावट डालने का भी प्रयत्न करते क्योकि जो असभव है वो कभी सभव नही हो सकता। लेकिन उन्होंने इस चमत्कारपूण कार्य को कर दिखाया। मेरे अन्य साथियो ने भी इसे अवश्य पढा होगा। अखबार पढने के तुरन्त पश्चात् मैंने डा सुधाशु से मिलने की तैयारी प्रारम्भ कर दी। मेरे अन्य साथी भी उनसे मिलने के लिए उत्सुक हो रहे होगे। हो सकता है कि डा सुधाशु सश्लिष्ट जीन से अन्य प्रागैतिहासिक जीव उत्पन्न कर चुके हो। □□

नाभकीय शीत

मैं उन सौभाग्यशाली लोगो मे से एक था जो ध्वस्त होते शहर मे बाल-बाल बचे थे। पूरा का पूरा शहर पलक झपकते ध्वस्त हो चुका था। फिर एक के बाद एक पूरे के पूरे शहर ताश के पत्तो की भाति तडातड ध्वस्त होने लगे। नगर ध्वस्त होते होते राष्ट्र धराशायी हो गये। परमाणु बम विस्फोटो की ऐसी दावानल आग लगी कि उसमे पृथ्वी का सब कुछ होम हो गया। देवी पृथा रो पडी। उसके आंसू थमने का नाम नहीं लेते ।

मैं सौभाग्यशाली था या दुर्भाग्यशाली ? मुझे उन लोगो से ईर्ष्या हो चली जो पलक झपकते इस ससार से चले गये। उन्हे कुछ सोचना नही पडा। उन्हे कुछ देखना नही पडा। वे बिना कुछ सोचे समझे विदा हो लिये और छोड गये हमारे लिये अथाह दुख का सैलाब। कितना अच्छा होता यदि हम भी चले गये होते।

यह दुखभरी गाथा केवल मेरी नही है, यह कहानी हम सबकी 'कॉमन' कहानी है। मैं तो केवल 'स्पोक माउथ' हू।

□□

मैं शहर के पाक की मुख्य सडक पर आगे बढ रहा था।

मेरी आंखें अचानक बिजली के प्रकाश मे कौंध गईं। स्वच्छ नीलाभी आकाश मे कोई वस्तु तीव्र गति से नीचे की ओर बढी जा रही थी। मैं समझ नही पाया कि यह ध्वनिरोधित वस्तु क्या है। कुछ ही क्षणो के पश्चात् आकाश मे भयकर विस्फोट हुआ। मेरे पाव के नीचे की जमीन प्रकम्पित हो उठी। लगता था कोई भूकम्प आ गया। दरख्त इतनी तेजी से हिल रहे थे कि जमीन को छूते प्रतीत होते। हवा ने बवडर का रूप धारण कर लिया था। मुझे अपना शरीर उडता प्रतीत हुआ। मैं तेज गति से दौडने लगा। प्रकृति का चीखना मैंने पहली बार

महसूस किया। हवा, दरख्त, पृथ्वी और आकाश सभी चीख रहे थे। धमाकों की आवाज से कान फटने लगे थे। एक तरफ धरती में प्रकंपन तो दूसरी ओर आकाश में कृत्रिम बिजली की गड़गड़ाहट। आकाश में अचानक तेज रोशनी फैल गई।

फिर स्वच्छ आकाश नीले से हरा लाल बैंगनी होता हुआ काला हो गया। सर्वत्र अंधकार छा गया। आग की लपटें अब और स्पष्ट दिखलाई पड़ने लगी। अचानक जलती आग का एक टुकड़ा मुझसे केवल दो किलोमीटर की दूरी पर गिरा। धमाका हुआ। दरख्तों में आग लग गई। मुझे लगा कि अब मैं इस आग में झुलस जाऊंगा। मेरे नीचे की जमीन आग की गर्मी से तपने लगी थी। समीप के दरख्तों से चड़-चड़ की आवाज आ रही थी। तने तथा पत्तियों के जलने की गंध से मेरा दम घुटने लगा था। पार्क की दूब या सपाट सड़क पर दौड़ने की अपेक्षा मैंने किसी घने वृक्ष की ओट ली। थैंक्स गोड! कि उस वृक्ष पर आग नहीं लगी और मेरी जान बच गई।

पूरा का पूरा शहर चीत्कार कर उठा था। मानव, पशु-पक्षी सभी की दर्दनाक चीत्कार तथा कराहटें आकाश में उठ रही थी। यह सौभाग्य था कि विस्फोट शहर से बहुत दूर हुआ था और उसने शहर का केवल आधा हिस्सा ही अपने लपेट में लिया था। वह सम्पूर्ण हिस्सा ध्वस्त हो चुका था। मानव का नामोनिशान वहां से मिट गया था। सब कुछ पलक झपकते घट गया था।

यह प्रश्न अभी भी बना हुआ था कि वह कौनसी वस्तु थी जिसने पलक झपकते सब कुछ समाप्त कर दिया।

□□

मैं सीधा पेट्रिक ली रावस के घर पहुंचा। धमाकों की आवाज थम चुकी थी लेकिन वातावरण में बहुत अधिक गर्मी बढ़ गई थी। हमें लगा कि हम किसी आग की भट्टी में झोंक दिये गये हों और हमारी खाल किसी भी क्षण शरीर से अलग होकर लटक जायेगी। कहीं ऐसा तो नहीं कि किसी राष्ट्र ने परमाणु बम गिराया हो। यह गर्मी तो ठीक हिरोशिमा पर गिराये परमाणु बम जैसी थी खौलती-सी।

मैंने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा—"पेट्रिक! यह कैसा नरक है? शहर का आधा हिस्सा नष्ट हो चुका है।"

पेट्रिक वातायन से बाहर देख रहा था वातावरण में धुन्ध फैली हुई थी। सर्वत्र अंधेरा व्याप्त था। अचानक फैले इस खौफनाक अंधेरे

से ऐसा लगता था जैसे किसी ने सूय देव को समूचा ग्रास लिया। आकाश मे अचानक फैली इस काली स्याही से मन मे शकाए उठने लगी थी। आकाश मे गन्धकीय वर्षा होने लगी थी।

पैट्रिक ने मेरी ओर मुखातिब होते हुए कहा—

"लगता है किसी ने हमारे उपग्रह को मार गिराया है।"

"नही, ऐसा नही हो सकता यह उपग्रह स्वाभाविक रूप से गिरा है।"

"नही, मैं नहीं मानता इसे जानबूझ कर गिराया गया है।"

"कोई आधार ?"

मैंने इसमे अचानक विस्फोट होते देखा है। कोई लेसर किरण इसमे टकराई तथा इसमे विस्फोट हो गया।

कुछ समय बाद ही हमारे सदेह का निराकरण हो गया। सम्पूर्ण विश्व मे यह सनसनीखेज खबर फैल गई कि अमरीका ने आकाश मे स्थापित हमारा कृत्रिम उपग्रह मार गिराया है। आरोप यह लगाया गया कि हमारा यह उपग्रह 'नाटो' सदस्य देश के विरुद्ध जासूसी मे सग्लन है तथा रूस के लिये जासूसी कर रहा है। हमारे देश के इस उपग्रह ने सामुद्रिक खोज—ओसेनोग्राफिक सर्विलेंस के बहाने न हीं केवल नाटो सदस्य देश की जासूसी की है, बल्कि अमरीका के गुप्त सैनिक ठिकानो का भी पता लगाने की भी कोशिश की है। अमरीका इसे बर्दास्त नही कर सकता। फिर भी अमरीका की इच्छा इस उपग्रह को मार गिराने की नही थी वह तो सिफ उसकी मशीनरी ठप्प करना चाहता था ताकि यह समुद्र मे गिर जाये लेकिन दुर्भाग्य से इसमे विस्फोट हो गया।

अमरीका ने इसे गुप्त रखना चाहा था। उसने सोचा कि दुनिया यह समझेगी कि यह उपग्रह स्वाभाविक रूप से या बिजली की गडबडी से गिरा है और अमरीका अपनी चाल मे सफल हो जायेगा। उसे पूण विश्वास था कि इसे रूस से गुप्त रखा जा सकेगा लेकिन हुआ उल्टा ही। रूस के 'मोलिनिया' उपग्रह को इस बात का तुरत पता चल गया। तीस हजार किलीमीटर ऊँची कक्षा मे घूमते इस कृत्रिम उपग्रह का मिशन ही क्विक अलाम देना था। मोलिनिया उपग्रह की यह विशेषता होती है कि इसकी कक्षीय ऊँचाई की सीमाए बदली जा सकती है। सामान्यतया इसकी कक्षीय ऊँचाई की सीमा पाच सौ से चालीस हजार किलोमीटर के बीच होती है।

अमरीका की इस अदूरदर्शितापूर्ण तथा घिनौनी चाल का पता चलते ही तृतीय विश्व युद्ध के शोले भड़क उठे। यह ठीक वैसे ही हुआ जैसे द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान एक मामूली-सी घटना को लेकर जापान ने चीन पर आक्रमण कर दिया था।

हर शाम की तरह आज भी मैं पेट्रिक ली राक्स के निवास-स्थल पहुँचा। 'गुड इवनिंग, राक्स।'

राक्स ने मेरी ओर मुखातिब होते हुए प्रत्युत्तर दिया।

"राक्स, उस दिन तुम्हारा अनुमान कितना सही निकला। कौन सोच सकता था कि अमरीका इतना घिनौना कदम उठा सकता है?"

"लेकिन ऐसा पहले भी हो चुका है जब उसने चुपचाप हिरोशिमा व नागासाकी पर परमाणु बम गिराया। उस समय कौन सोच सकता था कि प्रेसिडेंट ट्रूमेन इसके लिये हरा सकेत दे देंगे।"

"लेकिन किस प्रकार अमरीका ने हमारे उपग्रह को मार गिराया होगा?"

"एन्टी सेटेलाइट आयुध द्वारा।"

"एन्टी सेटेलाइट आयुध?"

"हाँ एन्टी सेटेलाइट आयुध के द्वारा किसी भी कृत्रिम उपग्रह को नष्ट किया जा सकता है।"

"लेकिन किस एन्टी सेटेलाइट आयुध के द्वारा अमरीका ने प्रहार किया होगा?

"अमरीका ने एम एच वी यानी मेन्यावरिंग होमिंग विहिक्ल एन्टी सेटेलाइट अस्त्र से प्रहार किया।

हम एन्टी सेटेलाइट प्रक्षेपास्त्रों के बारे में बतिया रहे थे तभी खबर आई कि रूस के 'सिस' एन्टी सेटेलाइट प्रक्षेपास्त्रों ने अमरीका के 'नेवस्टार' उपग्रह को प्रतिक्रियास्वरूप मार गिराया है।

'नेवस्टार' उपग्रह पृथ्वी की 'सेमी सिन्क्रोनस' कक्षा में अवस्थित होते हैं।

हमारे देश पर हवाई हमले प्रारम्भ हो चुके थे। लेकिन हमारे देश पर नक्षत्र युद्ध की, की गई यह पहली घटना थी।

राक्स को हमारे आर्मी कमांडर ने तुरन्त बुलवा लिया। राक्स ने एन्टी सेटेलाइट प्रक्षेपास्त्र को ऑपरेट करने का [illegible] था। यह तय हो चुका था कि उसका दल कल प्र[illegible]

के 'नेवस्टार' उपग्रह पर प्रहार करेगा। क्योंकि अमरीका ने हमारे एक और कृत्रिम उपग्रह को नष्ट किया था।

पृथ्वी से दो हजार किलोमीटर ऊँचाई पर स्थापित 'नेवस्टार' का प्रमुख कार्य 'नेवीगेशन' का है।

पेट्रिक रावस के कारण मुझे अपने देश के गुप्त सनिक अड्डे पर पहुँचने की अनुमति मिल गई थी। हमारे देश ने भी परिष्कृत एन्टी सेटेलाइट प्रक्षेपास्त्र निर्मित करन प्रारम्भ कर दिये थे। कुछ परिष्कृत प्रक्षेपास्त्रो का रूस, फ्रास तथा ब्रिटेन आदि देशो से आयात किया गया था। हमारे देश मे ही निर्मित एन्टी सेटेलाइट प्रक्षेपास्त्रो को भूमिगत गुप्त सैनिक अड्डा पर पहुँचाया गया था।

मैं 'थ्री डी' पर्दे पर हमारे देश के एन्टी सेटेलाइट अस्त्र का सचालन दख रहा था। हमारे देश द्वारा एन्टीसेटलाइट प्रक्षेपास्त्र अब से कुछ देर बाद ही छोडे जाने वाला था। हमारे देश के एन्टी सेटेलाइट प्रक्षपास्त्र का नाम 'आई ए एस -2' रखा गया था।

हमारे इयरफोन मे विभिन्न 'कोड' की आवाज स्पष्ट सुनाई पड रही थी। तभी ध्वनि आयी—

"आई ए एस —2 इज रेडी।"

हमारा एन्टी सेटेलाइट प्रक्षेपास्त्र आई ए एस -2 छूटने के लिये तैयार था। आगे कोड सुनाई पडा—

"माच टू न अठारह—चौबीस ।"

यह नम्बर अमरीका के 'नेवस्टार' उपग्रह का था जिसे मार गिराया जाना था।

"प्रडियेट-63 ।'

यह नेवस्टार की कक्षा की स्थिति थी।

"बारह-एक ।'

इससे आशय था कि नेवस्टार बारह घट मे पृथ्वी का एक चक्कर लगा लेता है।

कोड निरन्तर चले आ रह थे। थ्री स्टेज राकेट प्रक्षेपण के लिये तयार था।

एन्टी सेटेलाइट आई ए एस -2, राकेट के अग्र भाग मे अवस्थित था। उल्टी गिनती प्रारम्भ हो चुकी थी। स्क्रीन पर राकेट स्पष्ट दिखाई पड रहा था। विभिन्न कम्प्यूटर नियमित रूप से कार्यरत थे।

"पांच चार तीन दो एक शून्य....।"

शून्य की ध्वनि के साथ ही रॉकेट तीव्र गति से आकाश की ओर उठा। कुछ ही सेकिंडों मे वह वायुमण्डल के पार चला गया। यद्यपि इस एन्टी सेटेलाइट को द्वि-स्तर रॉकेट मदद कर रहा था, लेकिन ऐसा नही प्रतीत हो रहा था कि वह एक राकेट प्रक्षेपण है, बल्कि वह एक निर्देशित मिसाइल दिखाई पड रहा था। सीधा लक्ष्य (टारगेट) की ओर लपकता हुआ।

आई ए एम-2 के सभी भाग ठीक से कार्य कर रहे थे। हमें स्पष्ट सुनाई पड रहा था मानो रोबोट बोल रहे हों कोड भाषा मे।

"साम-एस आर ए एम इज वर्किंग एक्यूरेटली ।"

साम एक पेनीट्रेशन मिसाइल यूनिट थी जो राकेट के पश्च भाग—पूछ मे कायरत थी। प्रारम्भ मे साम का उपयोग शत्रु के 'एन्टी एयर डिफेन्स' के विरुद्ध बम्वस के रूप मे हुआ करता था। आज पेनीट्रेशन यूनिट इसकी एक परिष्कृत प्रणाली है। तभी कोड आये।

"आल्टेअर इज इन्क्रीजिंग स्पीड प्रोपरली।"

'आल्टेअर' एक प्रोपेलर इंजिन है।

आल्टेयर यान के मध्य भाग मे अवस्थित होता है। यह स्वनिर्देशित यान रेंज बदलने तथा उसकी घूणन गति बढाने मे सहायता कर रहा था। घूणन गति से यान को स्थायित्व प्रदान करने मे मदद मिल रही थी। इससे ऑपरेशन की अंतिम स्थिति मे महत्वपूर्ण निर्देश प्रसारित होते थे।

तभी कोड आये—

"आल्टेअर इज रॉटेटिंग विथ ट्वेंटी आर पी एम ।"

एंटी सेटेलाइट आइ ए एस 2 शीघ्र द्वि-स्टेज राकेट से पृथक् हो गया।। इस द्वि-स्टेज रॉकेट का ईंधन समाप्त हो चुका था। एंटी-सेटेलाइट आइ ए एस-2 का वजन बीस किलो ग्राम से अधिक नही था।

अब तक एंटीसेटेलाइट अपने लक्ष्य (टार्गेट) के अत्यन्त निकट आ चुका था। आइ ए एस-2 की बाह्य परिधि मे स्थित 'प्रोपरगोल' ट्यूबो ने अपना काय करना प्रारम्भ कर दिया था।

फायरिंग की शुरुआत हो चुकी थी। ये प्रोपरगोल ट्यूबें लेटरल एडजस्टमेंट द्वारा यान को निश्चित दिशा प्रदान कर रही थी तथा अमरीकन उपग्रह नेवस्टार की ओर साधे हुए थी।

हमे ध्वनि स्पष्ट सुनाई पड रही थी ।

"गाइडेंस सिस्टम इज कीपिंग टेक ऑफ फुल सप्लाई पाजीशन इन वेरियस ट्यूब ।"

गाइडेंस सिस्टम प्रोपरगोल ट्यूबो की सप्लाई की स्थिति का भी ध्यान रख रहा था।

कम्प्यूटर से ध्वनि सुनाई पड रही थी—

"आई आर डिटेक्टर इज डिटरमाइनिंग द पाथ ।"

आई आर एक इन्फ्रारेड डिटेक्टर था जिससे यान का पथ सुनिश्चित होता था।

कोड निरन्तर आ रहे थे ।

"एल जी इज एस्टेबिलिशिंग द पोजीशन प्रीसाइजली ।"

एल जी एक लेसर गाइरोस्कोप था जिससे यान की स्थिति का अचूक निर्धारण हो रहा था।

हमारा एन्टी सेटेलाइट यान अमेरिकन उपग्रह नेवस्टार के अत्यन्त निकट पहुँच चुका था। अचानक हमारे यान ने अमरीकन उपग्रह पर प्रहार किया। इससे उपग्रह मे विस्फोट हो गया तथा उसके टुकडे समुद्र मे जा गिरे।

अमरीका को आश्चर्य हुआ कि हमारे देश ने इतनी परिष्कृत तकनीक कहा से प्राप्त की। उसका यह भ्रम भी दूर हो गया कि रूस के पास केवल क्रूड (घटिया) 'सिस' एन्टीसेटेलाइट है।

'सिस' इन्टरसेप्टर किलर सेटेलाइट के रूप मे प्रख्यात था। प्रारम्भ मे इसका भार कम से कम दो टन तथा ऊचाई करीब छ मीटर थी। पृथ्वी की कक्षा मे जाने के लिये सिस को द्रव ईंधनयुक्त विशाल रॉकेट की आवश्यकता होती थी। इसलिये अधिक एन्टीसेटे-लाइट का उपयोग नही किया जा सकता था। अमरीका समझता था कि सिस केवल साठ से छियासठ डिग्री कक्षा के मध्य स्थापित उपग्रहो पर ही आक्रमण कर सकता है। जो कि उपग्रहो की दृष्टि से एक अत्यन्त सकुचित खिडकी है। सिस इन्टरसेप्टर की ग्रेडियेन्ट की सीमा कम होने के अतिरिक्त ऊचाई की सीमा भी बहुत कम थी यानि कम ऊचाई के उपग्रहो पर ही प्रहार किया जा सकता था।

"पांच चार तीन दो एक शून्

शून्य की ध्वनि के साथ ही राकेट ती
उठा। कुछ ही सेकिंडो मे वह वायुमण्डल
इस एन्टी सेटेलाइट को द्वि-स्तर रॉकेट मद
नही प्रतीत हो रहा था कि वह एक राके
निर्देशित मिसाइल दिखाई पड रहा था
ओर लपकता हुआ।

आई ए एम-2 के सभी भाग ठी
स्पष्ट सुनाई पड रहा था मानो रोबो
मे ।

"स्राम-एस आर ए एम इज व

स्राम एक पेनीट्रेशन मिसाइल
भाग—पृष्ठ मे कायरत थी। प्रारम्भ मे
एयर डिफेन्स' के विरुद्ध बम्बस के रूप
ट्रेशन यूनिट इसकी एक परिष्कृत प्रणा

"आल्टेयर इज इन्क्रीजिंग स्पीड
'आल्टेयर' एक प्रोपेलर इंजिन है

आल्टेयर यान के मध्य भाग मे
यान रेंज बदलने तथा उसकी घूणन ग
था। घूणन गति से यान को स्थायित्व
थी। इससे ऑपरेशन की अंतिम
होते थे।

तभी कोड आये—

"आल्टेयर इज रोटेटिंग विथ ९५

एन्टी सेटेलाइट आइ ए एस 2 शी
गया।। इस द्वि-स्टेज रॉकेट का ईंधन
सेटेलाइट आइ ए एस-2 का वजन
था।

अब तक एन्टीसेटेलाइट अपने लक्ष्य (
चुका था। आइ ए एस-2 की वाह्य
ट्यूबो ने अपना काय करना प्रारम्भ कर दि

केवल तेरह किलो टन का था तथा नागासाकी पर गिराये गये बम की शक्ति इक्कीस किलो टन की थी। लेकिन आज इन राष्ट्रो के परमाणु बम की ताकत एक सौ मेगाटन हो गयी थी। कहा किलोटन मे शक्ति थी और कहा मेगाटन मे शक्ति पहुच गई।

केवल दसमलव पाच मेगाटन के परमाणु बम के विस्फोट से पाच किलोमीटर के क्षेत्र मे निहित राइनफोर्स्ड ककरीट की सभी इमारतें ...स्तुए तुरन्त नष्ट हो सकती थी। हवा की गति एक किलोमीटर ...रह सौ किलोमीटर प्रति घटा तक बढ जाती है जो किसी भी ...धिक भयानक एव सहारकारी होती। इसी शक्ति के भूमि ... दो सौ पचास मीटर व्यास का तथा दो सौ पचास ...ा सकता था तथा वह आठ सौ करोड टन के ...े जाते। इसकी ताकत इतनी अधिक थी कि ...मीटर ऊचे उछाल दिये जाते। केवल ... से भूमि को दस हजार से तीस हजार टन ...मत मडल (स्ट्रेटोस्फीयर) में पहुच ... कर सकते कि सौ-सौ मेगाटन परमाणु ... मे धूलि कण हमारे समताप मडल से

हाँ, यह बात बहुत समय पहले की थी जब रूस के पास दसियों एन्टी सेटेलाइट थे। उस समय रूस ने निरस्त्रीकरण के लिये एक तरफा घोषणा की थी लेकिन अमरीका को पसन्द नहीं आई। वह रूस पर निरन्तर संदेह करता रहा। वह नक्षत्र युद्ध योजना के बहाने परमाणवीय हथियारों के जखीरे खड़ा करता गया तथा निरन्तर परीक्षण करता चला गया। हालांकि उसके पास एम एच वी जैसे परिष्कृत तथा घातक एन्टी सेटेलाइट आयुध थे। नतीजा यह हुआ कि रूस ने की हुई एकतरफा घोषणा को वापस ले लिया।

तत्पश्चात् रूस निरन्तर प्रगति करता गया और अब उसके पास अमरीका से श्रेष्ठ तकनीक है। वह इन्फ्रारेड की जगह पार्टिकल किरण का उपयोग करने लगा है। अब तो उसके पास अमरीकन एम एच वी जैसे अनेक एन्टी सेटेलाइट यान उपलब्ध हैं जो मिसाइल की तरह आसानी से गमन करते तथा सीधी मार करते हैं।

हमारा आइ ए एस यान रूस के सहयोग से निर्मित हुआ था तथा सुपर तकनीकयुक्त था।

जैसे ही आइ ए एस-2 ने अमरीकन उपग्रह नेवस्टार को मार गिराया, हम खुशी के मारे झूमने लगे। यह पहला मौका था जब हमारे देश ने एक अमरीकन उपग्रह को प्रतिक्रियास्वरूप मार गिराया।

इस एक घटना ने विश्व युद्ध का रूप ले लिया था। रूस और अमरीका दोनों आमने सामने आ चुके थे। निरस्त्रीकरण सम्बन्धी संधियां सतही साबित हुईं। नक्षत्र-युद्ध चरम सीमा पर पहुँच चुका था जहां एन्टी-सेटेलाइट द्वारा उपग्रहों को मार गिराया जा रहा था, वहां दूसरी ओर परमाणु बम गिराये जा रहे थे। धरती और आकाश दोनों में उथल-पुथल मची हुई थी। इधर धरती पर पूरे-पूरे शहर ध्वस्त हो रहे थे, तो उधर आकाश में रेडियो सक्रिय कणों के विकराल मश-रूम बादल तिरने लगे। परमाणु आयुधों के प्रयोग से पृथ्वी पर त्राहि त्राहि मची हुई थी।

उस समय राष्ट्रों ने क्यों नहीं समझा था कि परमाणु आयुधों का जखीरा खड़ा कर वे किसी शत्रु देश का दमन नहीं बल्कि समस्त मानव जाति का विनाश कर रहे थे। वे स्वयं को शक्तिशाली समझते थे लेकिन वे भूल चुके थे कि पृथ्वी का समस्त वातावरण प्रदूषित हो जायेगा।

शक्तिशाली होने के चक्कर में अमरीका तथा रूस ने परमाणु बमों की क्षमता को बढ़ाया। हिरोशिमा पर जब बम डाला गया था, वह

केवल तेरह किलो टन का था तथा नागासाकी पर गिराये गये बम की शक्ति इक्कीस किलो टन की थी। लेकिन आज इन राष्ट्रो के परमाणु बम की ताकत एक सौ मेगाटन हो गयी थी। कहा किलोटन मे शक्ति थी और कहा मेगाटन में शक्ति "हुच गई।

केवल दसमलव पाच मेगाटन के परमाणु बम के विस्फोट से पाच किलोमीटर के क्षेत्र मे निहित राइनफोर्स्ड ककरीट की सभी इमारतें तथा वस्तुए तुरन्त नष्ट हो सकती थी। हवा की गति एक किलोमीटर क्षेत्र मे बारह सौ किलोमीटर प्रति घटा तक बढ जाती है जो किसी भी चक्रवात से अधिक भयानक एव सहारकारी होती। इसी शक्ति के भूमि पर विस्फोट से दो सौ पचास मीटर व्यास का तथा दो सौ पचास मीटर गहरा गड्ढा बन सकता था तथा वह आठ सौ करोड टन के द्रव्य को उखाड फेंक दिये जाते। इसकी ताकत इतनी अधिक थी कि दो टन भारी पत्थर एक किलोमीटर ऊचे उछाल दिये जाते। केवल एक मेगाटन के परमाणु विस्फोट से भूमि को दस हजार से तीस हजार टन धूलिकण हमारे वातावरण के समताप मडल (स्ट्रेटोस्फीयर) मे पहुच सकती थी। हम कल्पना भी नही कर सकते कि सौ-सौ मेगाटन परमाणु बमो के विस्फोट से कितनी मात्रा मे धूलि कण हमारे समताप मडल से जा मिले होगे?

इससे हमारे वायुमडल का सतुलन बिगड गया। वायुमडल से भीतर प्रवेश करने वाली विकिरणो की मात्रा (इन्सोलेशन), बहिर्गमन करने वाली विकिरणो की मात्रा के समान थी। इससे 'ग्रीन हाउस' प्रभाव बना रहता। इसी प्रभाव के कारण वातावरण मे सतुलन बना रहता था।

लेकिन परमाणु विस्फोटो से करोडो टन धूलि कणो के आकाश मे पहुचने से यह सतुलन बिगड गया था। कणो के समताप मडल मे मिलने से आकाश मे धूलि कणो के बादल बन गये। इन धूलि कणो के बादलो से केवल इन्फ्रारेड विकिरण समताप मडल से छन सकते थे। लेकिन प्रकाश की किरणें नही। इससे पृथ्वी की सतह पर प्रकाश की किरणें नही पहुच पायी तथा पृथ्वी पर सर्वत्र अधकार छा गया।

इस अधकार मे योगदान दिया — धुएँ ने। दानवीय आग ने हर जीवित व निर्जीव वस्तु को भस्मीभूत कर दिया। विस्फोटो से उत्पन्न अग्नि ने ताडव नृत्य रचाया—घने जगलो मे, घास के मदानो मे, गावों, शहरो तथा महानगरो मे। आकाश मे आग ही आग बरसती दिखाई पड रही थी। हर तरफ धुआ ही धुआ उठ रहा था। दानवीय आग

हर वस्तु को लील रही थी। इससे आकाश मे इतना धुआ उठा कि आकाश धुए के बादलो से पट गया। इस धुए की घनी चादर ने सूरज की रोशनी को सोख लिया। दहन से उत्पन्न कार्बन-डाइ ऑक्साइड ने शेष इन्फारेड विकिरणो को सोख लिया तथा उन्हे पृथ्वी की सतह तक नही पहुचने दिया।

अत पृथ्वी पर सर्वत्र अधकार छा गया। दोपहर भी हम चादनी रात की तरह दिखाई पडती।

पृथ्वी की सतह का तापक्रम भी चालीस डिग्री नीचे जा गिरा, पृथ्वी की सतह का सामान्य तापक्रम शून्य से पच्चीस डिग्री नीचे हो चला था। अत पृथ्वी पर ठड व्याप्त हो गई। पृथ्वी की सतह तथा वातावरण दोनो ठडे हो गये। हवाओ का चलना थम गया। लगातार अधेरा ठडी जलवायु तथा जहरीला धुआं लगता था जैसे इस धरित्री की स्थाई विशेषताए बन गई हो। ऐसी भयावह नाभकीय शीत' (न्यूक्लियर विंटर) इस पृथ्वी पर व्याप्त होगी, इसकी हमने कभी कल्पना नही की थी। और यदि राष्ट्र इसे जानते भी थे तो वे जानबूझ कर अनजान बने रहे। लगता था उन्होने मानव के अस्तित्व को मिटाने का सकल्प ले लिया था।

उस काली रात को मैं नही भूल सकता हूँ जब अमरीका ने हमारे शहर पर बम गिराया था। वह शहर इस देश की राजधानी भी था।

आकाश से 'रेडियो फाल आउट' हो रहा था। गधक की घातक वर्षा हो रही थी। आकाश मे कभी घने अधकार की चादर फैल जाती तो कभी इतनी तेज रोशनी होती कि आंख चुधिया जाती। कोशिश यह होती कि हम आकाश की ओर नही देखे। आंखें हमेशा के लिये चली जाने का डर बना रहता। क्षितिज की ओर दृष्टि जाती तो ऐसा लगता सपूर्ण क्षितिज जल रहा हो। आसमान में आग की लपटें फैली हुई थी।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान छ अगस्त पैंतालीस को ठीक 8 15 17 सुबह के समय पाच सो नोवें ईनोला गे यान से मेजर थोमस डब्ल्यू फरेबी ने जैसे ही परमाणु बम हिरोशिमा पर गिराया तो आकाश मे तुरन्त दो सो पचास फीट व्यास का आग का गोला फैल गया। तत्काल लगभग चौसठ हजार जापानी स्वाहा हो गये। अन्य छब्बीस हजार निवासी न्यूट्रॉन तथा गामा किरणो की मार सहते कुछ मिनटो, कुछ दिनो और शेष कुछ महीनो मे चल बसे थे। लगभग छ हजार आठ सौ बीस मकान एक झटके मे ध्वस्त हो गये थे। ध्वस्त होते इन मकानो की आवाज को लगभग 15 किमी दूर तक सुना जा सकता था। हमारे यहाँ नगर का भी यही हाल था।

जसे ही परमाणु बम का विस्फोट हुआ, इससे उत्पन्न हुई ऊष्मा तरगो ने शहर को घेर लिया। उसके बाद हुए धमाके से उग्र हवा वही। इससे हवा के दाब मे तीव्रता से परिवतन हुआ तथा इमारतें धडाधड गिरने लगी। घातक विकिरणो की वर्षा होने लगी। बम से उच्च-आवृति की रेडियो तरगें उत्पन्न हुई जिन्हे 'इलेक्ट्रोमेग्नेटिक पल्स' कहा जाता है। इससे हमारे शहर की विद्युतीय तथा इलेक्ट्रोनिक प्रणालिया नष्ट हो गई।

आकाश मे फैला आग का गोला इतना गम था जितना कि सूरज। शहर के दस किलोमीटर का तापक्रम एक करोड डिग्री से टीग्रेट पहुँच चुका था। उस उष्ण धुध मे शहर की घनी आबादी वाले इलाके के लोग तुरन्त वाष्पित हो गये। उनको यह भी पता नही चला होगा कि क्या हुआ।

यहाँ तक कि स्टील, पत्थर, काच भी पिघल गये तथा ककरीट मे विस्फोट हो गया।

बीस पच्चीस किलोमीटर मे लकडी, प्लास्टिक तथा फेब्रिक्स जलने लगे। जो लोग बिल्डिंग के बाहर थे वे तीसरी डिग्री तक जल गये यानी उनमे से कोई कठिनाई से बचा। पच्चीस किलोमीटर दूर लोग पहली डिग्री तक जले। ये अधजले लोग थे।

आकाश मे वायु तथा राख का दानवीय गुबार उठा। यह राख थी मकान, मानव, पशु तथा दरख्त की। यह राख मशरूम के आकार मे चपटी होकर फैल गई। इस अग्निमय मशरूम बादल के पाव तले शीत वायु शून्य को भरने के लिये झपटी और शीघ्र ही यह अग्नि के

प्रचंड झक्कड मे बदल गई। आग्नेय झझावात ने प्रत्येक वस्तु को भुन दिया। उसकी प्रचण्डता बढती जा रही थी। ऐसा लगता था मानो वह आग धरती को तोडकर ऊपर उठ रही हो।

शहर की हर वस्तु भुन रही थी—निर्जीव तथा सजीव मानव पशु चिडिया और इनसे उठा धुआँ चटपटाती तड तड करती गलियो को घने अधकार मे डुबो रहा था।

गली के मकान, स्टोर्स, टेलिफोन, खभे, दरख्त उडे जा रहे थे। दरवाजे उडे जा रहे थे बेशक्ल होतो खिडकिया हवा के बहाव मे अपने अस्तित्व को समाप्त करने के लिये बेचैन थी।

आदमी का भी यही हाल था। वे वाष्पित हो रहे थे। जल रहे थे। राजधानी की तीन चौथाई आबादी राख के ढेर में परिणत हो चुकी थी।

शहर की खौलती नदो से वाष्प के रूप मे उठता कीचडयुक्त जल ओलो की शक्ल लेता हुआ बादलो से बरस रहा था। आयनीकृत हवा से अत्यन्त तीव्र गध आ रही थी जैसे यह बिजली गिरते समय या वेल्डर की आक के निकट आती है।

झझावात के किनारो से उठते लघु टोरनेडो (बवन्डर) खडहरो तथा ध्वसावशेषो को तितर-बितर कर रहे थे एव दरख्तो को जड सहित उखाडते हुए उडाये ले जा रहे थे।

परमाणु विस्फोट के केन्द्र के निकट के भौंचक्के अद्र्ध जले मानव भाग्य से किसी प्रकार मौत के क्रूर पजो से बच निकले थे, व भयकर रूप से झुलसे हुए प्रेतो के एक काफिले के सग हो लिये थे। हा, खुले आकाश ने फैली आग से बुरी तरह झुलसे ये लोग प्रेत ही तो थे जिन्हें केवल इतनी-सी जान बख्श दी थी कि चल सकें।

मैं भी आग से झुलसा हुआ उन लोगो के साथ ही हो लिया था जो कि अपने परिजनो को तलाश रहे थे ओह! इस भयानक नरक मे उन्हें ढूढना, आकाश मे तारे तोडने के समान है। हमने उन्हे तलाश करना बद कर दिया। चौतरफा दानवीय आग की क्रूर लपट ताण्डव-नृत्य कर रही थी। रेडियोधर्मिता ने अपने क्रूर जबडो को सपूर्ण आकाश में फैला दिया था। इस रेडियो धर्मिता ने किसी को नही बख्शा। मानव पशु पक्षी दरख्त घास सभी.. । मानव के लिये केवल दसमलव

चार से दसमलव पाँच किलो रोटजन विकिरण ही प्राणघातक थे। पक्षी भी इसी सीमा में आते थे। सरीसृप के अतिरिक्त अन्य प्राणी भी इसी सीमा में आते थे। उच्च श्रेणी के द्विबीजपत्री पौधे अधिकतम दसमलव आठ रोटजन विकिरण सहन कर सकते थे। घास के बजाय कोनिफर्स विकिरणों के प्रति अधिक संवेदनशील थे।

हमारे शहर के ऊपर करीब दस हजार रेम विकिरण फैले हुए थे। नदी पूर्णतया प्रदूषित हो चुकी थी। यही हाल कमोबेश पृथ्वी के सभी शहरों का था।

हम साक्षात् दांते का 'इन्फर्नो' देख रहे थे। ताण्डव नृत्य करता आग का इन्फर्नो। हमने अपने परिजनों की तलाशना बंद कर दिया जो कि हमारा पहला कर्तव्य था। जो लोग हमारी तरफ आ रहे थे, वे आग में बुरी तरह झुलस चुके थे। उनकी खाल काली पड़ चुकी थी या फिर खौलती हुई या भूरी पट्टियों में शरीर से लटकती हुई दिखाई पड़ रही थी।

काफिले के साथ आगे बढ़ते हुए मुझे अपनी पत्नी स्वाति तथा बच्चों नेहा व सुमीता के चेहरे उभरते व खंडित होते दिखाई पड़ रहे थे। उनका क्या हाल हुआ होगा? इसकी कल्पना मात्र से ही मैं सिहर उठा। क्या वे जिंदा बचे होंगे? इसकी आशा बहुत कम थी। अब तक तो वे निसंदेह आग की लपटों द्वारा भून दिये गये होंगे या फिर वे ध्वस होती इमारत के नीचे दब गये होंगे सुन्दर पत्नी मासूम चेहरा मासूम बच्चे। उनका शून्य में उभरता चेहरा देखकर मेरी झुलसी पुतलियां नम हो आई थीं झुलसे चेहरे की खाल पर अश्रु ढरक आये हां अश्रु ही तो शेष रह गये थे, शेष सब तो विकृत स्वाहा हो चुका था।

लेकिन मन का एक कोना कहता था कि वे अवश्य जीवित बचे होंगे। हो सकता है कि वे मौत से जूझ रहे हों मुझे वहां जाना होगा वे कराहते हुए मुझे पुकार रहे होंगे उनके अन्तस में भी एक क्षणिक आशा बंधी होगी कि मैं जीवित होऊंगा वे अश्रुपूरित नेत्रों से ईश्वर से कामना कर रहे होंगे कि मैं उनका देवता बनकर पलक झपकते पहुंच जाऊं और उन्हें काल-कलवित होने से बचा लूं हां, मैं ही तो उनकी आशा का दर्द हूं मुझे वहां हर हाल में पहुंचना होगा।

चौतरफा आग की दावानल लपटें फैली हुई थीं। इस खौफनाक आग से शायद ही कोई बचा होगा। हम बेबस थे लाचार थे हम

एक-एक कदम बड़ी मुश्किल से बढ़ा पा रहे थे। मुझे फिर पत्नी का मासूम चेहरा दिखाई पड़ा। उसके सुन्दर कपोलों पर निर्झरणी निरन्तर बह रही थी। हाथ फैलाये मुझे पुकार रही थी। बच्चे बिलख बिलख कर रो रहे थे। मुझसे और अधिक नहीं रुका गया। मैं उस आग के दरिया में कूद पड़ा मैं दौड़ता रहा। यदि मेरी पत्नी और बच्चे जीवित नहीं रहे तो मेरा जीवन किस काम का। मैं उन्हें ढेर सारा प्यार दे पाऊँ, यही मेरी एक लालसा बची थी मैं किसी तरह उनके पास पहुँच पाऊँ। उनसे मिलने की लालसा इतनी तीव्र हो उठी थी कि मैं भूल गया कि मैं स्वयं इन दावानल लपटों में भस्म हो जाऊँगा।

आकाश से अचानक नाभकीय वर्षा होने लगी। बड़े-बड़े ओले आकाश से गिर रहे थे। भूमि पर अंधकार छा गया था। मैं आग से बुरी तरह झुलसा हुआ घर पहुँचने में सफल हो गया। हमारा मकान धराशायी हो चुका था। मुझे अचानक धक्का-सा लगा। मेरी पत्नी और बच्चे कहाँ होंगे? मेरे दिल की धड़कन बढ़ गई थी मैंने सारा घर छान मारा लेकिन वे कहीं दिखाई नहीं पड़े। कहीं वे पत्थरों के नीचे तो नहीं दब गये? दिल धक-धक कर रहा था। ईश्वर करे मेरा दिल इतना कमजोर नहीं हो कि उन्हें देखते ही रुक जाये। मैंने एक बार और उन्हें तलाश किया। मुझे एक कोने में एक बुत बनी एक आकृति दिखाई पड़ी। निकट जाने पर मैं समझ पाया कि वह मेरी पत्नी थी। वह एक कोने में सटी पड़ी थी। उसका चेहरा तथा कुरूप चेहरा देख कर मैं चीख उठा सु मी।

वह कोने में पड़ी हुई तथा अचेत थी। एक पल को मुझे लगा कि वह स्पन्दनविहीन हो चुकी है लेकिन उसे छूने पर भ्रम दूर हुआ।

मैंने स्वच्छ जल की तलाश की। अब तक सारे शहर की जलराशि प्रदूषित हो चुकी थी। पानी यदि मिलता भी तो रेडियोधर्मी जहरीला। सौभाग्य से मुझे किसी बंद बर्तन में जल की कुछ मात्रा मिल गई। इस अमूल्य जल की सहायता से पत्नी की मूर्छा दूर हुई। होश आने पर वह मुझे पथराई दृष्टि से देखने लगी। फिर वह अचानक चीख उठी।

उसने रोता हुआ चेहरा ढांप लिया। [illegible] कितना [illegible] थी। [illegible] की कुरूपता को भूल [illegible]।

वह तुरन्त बच्चो के लिये चीख उठी। हमने उन्हे तलाश किया। वे खडर हुए मकान के पत्थरो के नीचे दबे मिले निस्पंदित प्राण-विहीन वह जोर-जोर से विलाप करने लगी । उसकी चीखें खडहर से प्रतिध्वनित होते हुए आकाश म उठ रही थी तथा शहर से उठ रही 'विराट चीख' का एक हिस्सा बन गई थी जो मशरूम बादल की तरह आकाश मे तिर रही थी। मैं सज्ञाशून्य हो चुका था।

आकाश में एन्टी सेटेलाइट आयुधों द्वारा उपग्रह निरन्तर गिराये जा रहे थे। शहर के शहर परमाणु तथा अणु बमो से राख के ढेर मे बदल रहे थे। जल, थल तथा आकाश, रेडियोधर्मिता से प्रदूषित हो रहे थे जलवायु तेजी से बदल रहा था इसने 'नाभकीय शीत' का रूप ले लिया था।

अब राष्ट्र का सवाल ही कहा था। अब तो मानव जाति को बचाने का सवाल था। ईश्वर ही हमारी रक्षा कर सकता था। लेकिन हम तो सभी सज्ञा शून्य थे। ईश्वर को याद करने की ताकत हम मे नही रही।

मेरी पत्नी गोद मे विकलाग बच्चा हाथ मे लिये हुए आई। उस बच्चे के सिर पर बाल नही थे। पत्नी ने जब उसके गेशूओ को हाथ मे लेने की कोशिश की तो हमारी तरह ही उसके सारे बाल खोपडी की खाल सहित उखड़ आये थे। हमने कितना जघन्य अपराध किया था कि विकलाग बच्चे को जन्म दिया। लेकिन हम तो मानव जाति के एक हिस्सा मात्र थे। सारी धरती इस अपराध के बोझ से दब रही थी।

आकाश मे स्फुरदीप्ति की ओढनी ओढे यह धरती हमारी 'गेलेक्सी' का एक गर्व थी। पृथ्वी से सौन्दय की वर्षा होते देख गेलेक्सी भी अघाती नही थी। लेकिन अब इस धरती पर कालिख पुत चुकी थी। देवी पृथा के आसुओ से भी वह कालिख छुप नही रही थी।

दद का यह दरिया सपूण गेलेक्सी मे फल गया।